श्री धर्मचन्द सरावगी
प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी

•

सम्पादक :

दीपचन्द नाहटा

☐ प्रकाशक

श्री धर्मचन्द सरावगी अभिनन्दन-समिति

श्री जैन सभा, ७, शम्भू मल्लिक लेन, कलकत्ता-७००००७

☐ प्रकाशन-तिथि

रविवार, ९ नवम्बर, १९८६ ई०

☐ मुद्रण

एसकेज

८, शोभाराम बैसाक स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

☐

मूल्य . रु० ५०) रुपये पचास मात्र

दो शब्द

यह अभिनन्दन ग्रन्थ आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करना स्वाभाविक है। अभिनन्दनीय वे होते हैं, जो जीवन मे कुछ करते हैं—समाज के लिए, धर्म के लिए, राष्ट्र के लिए। जो व्यक्ति दूसरों के लिए कुछ करता है, वही दुनिया मे प्रशसा का पात्र होता है। जिनके-जिनके भी अभिनन्दन हुए हैं, या हो रहे हैं, निश्चय ही उनसे राष्ट्र को, समाज को कुछ मिला है। अभिनन्दन-ग्रन्थों मे संकलित उनकी जीवनी तथा उनके कृतित्व से आनेवाली पीढी प्रेरणा या शिक्षा ग्रहण करती है।

प्रस्तुत अभिनन्दन ग्रन्थ, प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी श्री धर्मचन्द सरावगी के जीवन-यात्रा को रेखांकित करता हैं। सरावगीजी ने बचपन से स्वाभिमान सहित अपने पाँव पर खडे होने के लिए रास्ते मे खड़े होकर अखबार भी बेचा है। उन्होने उस समय विदेश यात्रा की जब समाज मे वर्जित थी। अपने समाज के प्रथम वायुयान चालक भी बने, यहा तक प्रगति पथ पर आगे बढे कि कलकत्ता पौर प्रतिष्ठान के पार्षद बने। अपने कार्यकाल मे "नो स्मोकिंग इन पब्लिक प्लेकल्स एण्ड सिनेमा" का प्रस्ताव रखा जो सर्वसम्मति से पारित हुआ एव आजतक लागू है। आप राज्यसभा के चुनाव मे सफल हुए तथा अन्य सहयोगी को अवसर देने के लिए उस आकाक्षित पद को स्वेच्छा से त्यागा भी। विभिन्न सस्थाओ मे जब भी जहा रहे, कुछ किया, यथा मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, दिगम्बर जैन नया मन्दिर, जैनभवन, बडाबाजार युवक सभा, प्राकृतिक चिकित्सा तथा गो सेवा आदि के क्षेत्र मे स्वय कार्य तो किया ही बल्कि अपने साथ काम करने वालो के प्रेरणास्पद भी बने। प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार मे इनका योगदान ऐतिहासिक महत्व रखता है। इसके ये प्रेरक रहे हैं और स्वय भी अपने जीवन मे इसे उतारा है। इनका रहन-सहन, खानपान मर्यादित है।

हमने नजदीक से इन्हे देखा है इतनी लम्बी आयु मे भी ये स्वस्थ एव कर्मठ हैं। आपने जैसा कि डा० राधाकृष्णन् ने एक दफे कहा था कि "Goddies and Politicians should retire in time" के अनुसार आपने अनेक सस्थाओं के ट्रस्टी एव सम्माननीय पद से स्वय विराम ले लिया तथा पदाधिकारी रहते हुए भी पद की मर्यादा की रक्षा में बराबर सलग्न रहे हैं—जैसे एक दफे शादी के उपलक्ष्य मे जैनभवन धर्मशाला के लिए सिफारिश का हमने अनुरोध किया, तो इन्होने कहा मैं ट्रस्टी हू, मेरे कहने से शायद आपको धर्मशाला मिल भी जाए, मगर यह मन्त्री का अधिकार है। अत: आप उनसे ही मिलें। हम उनके अधिकार मे हस्तक्षेप करना उचित नही समझते।

शेखावाटी

इतिहास की लम्बी यात्रा में पूरे राजस्थान की पहचान शाश्वत रणस्थली के रूप मे ही होती रही है। यहां पैदा होने वाले इन्सान के पांवों तले तलवार की धार रही या बबूलों और केर-कांटों से भरे बियावान। भभकती बालुका मे बनते-बिगडते ऊँचे-नीचे धोरों का असीम विस्तार या सुलगती चट्टानों का ऊबड़-खाबड़ अटूट सिलसिला। अनवरत युद्ध और अविश्रान्त सघर्ष—बस यही नियति बनी रही इस धरती की। पानी पीना हो तो पाताल फोड़ कर निकाल लो, स्वाभिमान से जीना हो तो पीठ पर ढाल और कमर में तलवार लटका कर चलो। इसी राजस्थान के पुरखों ने सतत् प्रहारों और चुनौतियों को झेलते हुए काल के भाल पर अपने ज्वलंत अस्तित्व और अजस्र ऊर्जा के अमिट लेख लिखे। श्रद्धा से नमन करता है प्रत्येक भारतीय आज भी माटी की इस मरोड़ को।

कालान्तर में युद्धों और संघर्षों का रूपान्तरण होता रहा। अनेक लोगों ने विभिन्न स्तरों पर संघर्ष करते हुए अपने को उजागर किया।

शेखावत राजपूतों की बीरता और शूरता की गाथाओं से जुड़ा राजस्थान का उत्तरी-पश्चिमी प्रदेश आज शेखावाटी के नाम से पहचाना जाता है। शेखावाटी,

साहसिक अभियानों की सुरभि से सुरभित चन्दन-माटी ! यहीं से हुआ वणिक-पुरखों की ऐतिहासिक यात्राओं का श्रीगणेश, बिणज व्यापार के उपयुक्त नये-नये क्षितिजों को खोज निकालने वाले जोखम भरे अभियानों का आरम्भ। निरन्तर लड़ाई और मारकाट, रक्त स्नान और अग्नि-दाह से भरी जीवन-यात्रा से ऊबे हुए क्षत्रियों को यह एहसास होने लगा था कि हिंसा और युद्धो से किसी समस्या का समाधान सम्भव नही है। अतः जीने की भावना से अभिभूत हारे-थके लोगों ने बिणज-व्यापार का शातिमय पथ अपना लिया था।

शेखावाटी राज्य का उद्भव कब हुआ यह इतिहासवेत्ताओं के लिए शोध का विषय ही रहा है। कहा जाता है कि महाभारत काल मे महाराजा विराट के विराट वैभवपूर्ण साम्राज्य के अन्तर्गत ही रहा था यह राज्य। इसके बाद ढाई हजार वर्षों का इतिहास अज्ञात काल के घने अन्धकार में गुम हो रहा। आगे चलकर इस पर क्रमशः गुप्त, हूण, गुर्जर, वैश्य, मौर्य, चौहान और जोर वश के शासकों का शासन रहा। वस्तुतः शेखावाटी राजपूताना प्रान्त के जयपुर राज्य के अन्तर्गत आने वाला एक जिला है, जिसका गठन बारह मुख्य शहरो को मिलाकर हुआ है। फतहपुर इस जिले के बीचो-बीच बसा सबसे पुराना और बड़ा शहर है। अपनी विशेष भौगोलिक स्थिति के कारण यही शहर इस जिले की राजधानी बना रहा। सवत् १५०८ में नवाब फतहखा ने इस शहर को बसाया था। उसी के नाम पर इस शहर का नाम फतहपुर रखा गया। फतहपुर के उत्तर मे रामगढ, पूर्व मे मण्डावा, दक्षिण में लक्ष्मणगढ सात-सात कोस की दूरी पर स्थित हैं।

सोलहवी शताब्दी के प्रारम्भ मे कायमखानियो ने जोरवंशी राजपूतो से शेखावाटी का अधिकार छीन कर अपनी सल्तनत कायम कर ली थी। इन नवाबों ने सम्वत् १७८७ तक, २७९ वर्षो तक, राज्य किया। यहां शासन करने वाले नवाबों का दिल्ली के दरबार में भी आना-जाना रहता था। करीब १२ नवाबों ने इस पर शासन किया। इस बीच फतहपुर की धरती ने अनेक बार वीरता पूर्वक लड़ाइया देखी। जाने कितनी बार फतहपुर बसा, उजड़ा और फिर बसा।

सूर्यवंशी क्षत्रियों की कछवाहा शाखा में से ही शेखावत राजपूतों का आविर्भाव हुआ। उनके आदि पुरुष राव शेखाजी थे। उन्ही की दसवी पीढ़ी में सीकर

के शासक शिवसिंहजी ने लाडखाना और कुँवर रामसिंहजी काशलीवाले के साथ दो हजार सेना लेकर फतहपुर पर धावा बोला। इधर फतहपुर का नवाब सरदारखां भी अपने सेनापति कायमखां के साथ ३५० घुड़सवार और ग्यारह सौ पैदल सैनिकों के साथ शिवसिंहजी की सेना के साथ भिड़ गया। इस घमासान लड़ाई में दोनों ओर के अनेक योद्धा काम आगए। अन्त में नवाब सरदारखां घायल हो गए। उनकी सेना का मनोबल गिर गया और सेनापति कायमखां भी मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

सम्वत् १७८८ की चैत्र शुक्ला १ को फतहपुर की गद्दी पर राव शिवसिंहजी अधिष्ठित हुए। तबसे फतहपुर की राजधानी सीकर ही रही। रावराजा कल्याणसिंहजी इस परम्परा के अन्तिम राजपूत शासक थे। नवाबों, राजाओं और नामी-गिरामी सेठों का निवास रहने के कारण फतहपुर में अनेक महत्वपूर्ण भवनों का निर्माण भी हुआ।

दर्शनीय स्थान

प्राचीन काल में शारीरिक बल और शस्त्र-युद्ध में रक्षा की दृष्टि से सुदृढ़ दीवारों से घिरे किले का होना सामरिक व्यूह रचना का एक अनिवार्य अंग समझा जाता था। फतहपुर पर होने वाले निरन्तर आक्रमणों से सुरक्षा-व्यवस्था का विचार कर नवाब फतहखां ने शहर से दक्षिण तीन कोस की दूरी पर रिणाऊ नाम के छोटे से ग्राम में एक सुदृढ और सुन्दर किले का निर्माण करवाया और उसके चारों ओर नगर बसा कर उसे आबाद कर दिया। इस किले के निर्माण में दो वर्ष लग गए। सम्वत् १५०७ में दिल्ली का स्वामित्व स्वीकार न करने के कारण बहलोल लोदी द्वारा नवाब फतहखां को हिसार से निकाल दिया गया। तबसे नवाब इसी किले मे आकर रहने लगे।

फतहपुर का यह किला प्राचीन शिल्प-कला का एक अद्भुत नमूना है। चारों ओर गहरी खाई और मजबूत परकोटे से घिरे किले के भीतरी भाग में बने भवन अत्यन्त सुन्दर और कलापूर्ण बने हुए हैं। विशेषकर 'तोलिन का महल' देखने योग्य है। नवाब ने अपनी विवाहिता तेलिन के लिए इसे बड़े मनोयोग से बनवाया था। फतहपुर के इतिहास में होने वाले निरंतर परिवर्त्तनों का साक्षी यह

किला आज उपेक्षित और सूना पड़ा हुआ है। थोड़ी बहुत टूट-फूट के अतिरिक्त आज भी यह किला अपनी खुबसूरती और बुलन्दी का एहसास करवा रहा है—

खण्डहर बता रहे है, इमारत बुलन्द थी।

नवाबी बावड़ी

चतुर्वेदी द्वाराकाप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित 'आश्चर्य सप्तदशी' नामक पुस्तिका में इस बावड़ी को ससार के सत्रह आश्चर्यों मे से एक माना गया है। सवत् १६७१ में नवाब आलिफखा के लड़के दौलतखा की देखरेख में नागौर के शेख महमूद ने इस बावडी का निर्माण करवाया था। इस बावड़ी का निर्माण इतना पेचीदा है कि आज भी यह लोगो के लिए एक रहस्यमय तिलस्म बना हुआ है। कहते है कि इस बावडी मे अनेक सुरगे बनी हुई है जिनमे से एक सुरग फतहपुर के किले तक गई है। सम्भवतः नवाब की बेगमें इसी सुरग के रास्ते बावडी तक नहाने के लिए आती रही होंगी। बावड़ी से सटा एक कुआ भी है जिसे अब अलग कर दिया गया है। कहते है एक डाकू इस बावड़ी में बारह वर्षों तक छिपा रहा और पुलिस उसका पता नही लगा सकी। पुरातत्व की खोज करने वाले विद्वानो के लिए यह बावड़ी आज भी जिज्ञासा का केन्द्र बनी हुई है।

बावडी के चारों ओर एक विशाल बगीचा था जिसके सघन और छायादार वृक्षों के तले गुरु पाठशालाए चला करती थी। इस रम्य और दर्शनीय बगीचे की कल्पना कर प्राचीन ऋषिकुलो का चित्र आखों के सामने उभर आता है। कितना रमणीय स्थान रहा होगा यह किसी जमाने मे। सचमुच यह प्राचीन भवन-निर्माण कला का एक अद्भुत नमूना है, जिसकी सुरक्षा और देखभाल नितान्त आवश्यक है।

दिगम्बर जैन मन्दिर

सफेद सगमरमर से बना यह लुभावना मदिर ऐसा लगता है जैसे किसी योग-सिद्ध जैन मुनी का अलौकिक स्वप्न साकार होकर स्थापित हो गया है। नक्श और तराश का जादू देखना हो तो यह मन्दिर उस कला का जीता-जागता नमूना है।

हिसार से जब नवाब फतहखां फतहपुर आए थे तो उनके साथ उनके प्रधान मुसाहिब सेठ तुहिनमल्लजी भी हिसार से फतहपुर आ गए थे। ईश्वरदासजी भोजक भी इनके साथ थे। वे अपने साथ दो सुन्दर प्रतिमाएं भी लेकर आये थे। एक सप्त धातु से बनी चौबीस महराज की तथा दूसरी काले पाषाण से निर्मित तीर्थंकर चन्द्रप्रभु की प्रतिमा थी। भट्टारकजिन चन्द्रदेव के उपदेश से प्रभावित होकर सेठ तुहिनमल्लजी ने सवत् १५०८ में इस मदिर का निर्माण करवा कर इसमें दोनों प्रतिमाओं की प्रतिष्ठित की।

कालान्तर में यह मन्दिर जमीन में धसता चला गया। संवत् १८६१ में भट्टारक श्री ललित कीर्तिजी के उपदेश से प्रभावित होकर जैन-समाज ने इस मदिर के ऊपर एक और नया मंदिर बनवा दिया और नीचे का मंदिर बन्द करवा दिया। आज यही मदिर लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। मदिर के सभा मण्डप का तिबारा कुशल राज-चित्रकारों की अद्‌भुत कारीगरी का प्रतीक है। उसमें किया गया सोने की पच्चीकारी का काम, सुनहरे अक्षरो मे दीवारो पर अकित धार्मिक श्लोक और शिला-लेख पुरातत्व और प्राचीन इतिहास की अमूल्य थाती है। इसी प्रकार इस मदिर मे बहुत से प्राचीन ताम्रपत्र और यन्त्र-लेख भी सुरक्षित है।

लक्ष्मीनाथजी का मदिर

लक्ष्मीनाथजी का मदिर फतहपुर के बड़ेबाजार के बीचों-बीच बना हुआ है। सफेद सगमरमर से बने इस मदिर मे भी जैन मदिर की तरह ही सोने की पच्चीकारी का काम देखने लायक है। इस मदिर का इतिहास भी विचित्र है। कहा जाता है कि अलवर के किसी पठान को हल जोतते समय जमीन में गड़ी हुई कोई मूर्ति दिखाई दी। उसने उसे निकाल कर अपने पास रख लिया। सवत् १५८८ मे गौरीदत्तजी भोजक उस मूर्ति को फतहपुर ले आए। वही मूर्ति लक्ष्मीनाथजी की प्रतिमा के रूप मे मदिर मे प्रतिष्ठित है। इस मदिर के निर्माणार्थ भूरियां (एक अग्रवाल जाति) ने अपनी खरीदी हुई जमीन दान में दे दी। तत्कालिक नवाब नाहरखा ने इसके लिए सगमरमर की व्यवस्था की। बाकी खर्च के लिए चिट्ठा किया गया जिसमे ऊँची कलम दो पैसे की थी। आगे चलकर सवत् १८०८ मे इस मंदिर के आकार को और भी विशाल रूप दे दिया गया। आज यह

मंदिर वैष्णव-भक्तों के लिए श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है। दूर-दूर से आने वाले दर्शनार्थियों की इस मंदिर में भीड़ लगी रहती है।

पीरजी की दरगाह

फतहपुर के दक्षिण में नवाब जलालखा द्वारा छोड़ी गई बीहड़ मे स्थित पीरजी की दरगाह किसी विशाल किले से कम शानदार नही है। सवत् १९२७ में रावराजा माधवसिहजी के समय उस दरगाह का निर्माण ख्वाजा हाजी नजमुद्दीन चिश्ती (पीरजी) के मकबरे के चारो ओर उन्ही के उत्तराधिकारी पीर हाजी मुहम्मद नासिरुद्दीन ने किया। ग्यारह बीघा जमीन और एक नवाबी जमाने का कुंआ भी इसी के अन्तर्गत है। प्रतिवर्ष इस दरगाह मे उर्स का बड़ा भारी मेला लगता है। उस समय दूर-दूर से हजारो मुसलमान जियारत (तीर्थयात्रा) करने यहां आते है। कव्वालो और सगीतज्ञो का उस समय यहां जमघट लगता है। नगर के हिन्दू, मुस्लिम सभी इस उत्सव का आनन्द उठाते है।

रामगोपालजी गनेड़ीवाला की छतरी

श्री रामगोपालजी गनेड़ीवाला ने यह छतरी अपने पिताश्री हीरालालजी की स्मृति में बनवाई थी। सफेद संगमरमर के पत्थर से निर्मित और सोने की चित्रकारी से सज्जित इस छतरी के निर्माण मे दो लाख रुपये खर्च हुए थे। इसी में बद्रीनारायण का खूबसूरत मदिर बना हुआ है जिसके मुख्य दरवाजे पर एक समय नौबत बजती रहती है। इसी दरवाजे पर एक विशाल घडी लगी हुई है जिसे देख कर समय-सूचक घडियाल बजाया जाता है जो सारे शहर मे सुनाई देता है। इसमें प्रतिवर्ष योग, उत्सव और कर्मचारियो का खर्च चलाने के लिए एक ट्रस्ट बना हुआ है। पाच सौ बीघा जमीन भी इसी छतरी के अन्तर्गत है जिसमे सुन्दर बगीचा भी बना हुआ है। अपनी कलात्मक सुन्दरता, सुव्यवस्था और धार्मिकता के कारण यह स्थान नागरिको के लिए श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है।

सेठ घरानो की परम्परा में—सेठ तुहिनमल्लजी, सेठ रामदयालजी नेवटिया, सेठ सुखानन्दजी सरावगी, बासुदेवजी गोयनका, बजरंगलालजी लोहिया, कन्हैया लालजी चितलागिया, सोहनलालजी दुग्गड़, गगाप्रसादजी भोतिका अपने समय के प्रभावशाली और प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। फतहपुर केवल रणस्थली और

लक्ष्मीपुत्रों की निवास स्थली ही नहीं आध्यात्मिक पुरुषों और सन्तों की साधना स्थली भी रहा है। संत गंगादासजी, सत प्रागदासजी, संतदासंगी, सुन्दरदासजी आदि सनातनी महात्माओं ने इसी पुण्य भूमि को अपनी अमृत-वाणी से कृतार्थ किया। इसी नगर में जैन मुनी भीखजनजी, जैनाचार्य भट्टारक ललित कीर्त्तिजी, यतिकर हरजीमलजी आदि ने भगवान महावीर के अहिंसा और सत्यधर्म के संदेशों को घर-घर पहुँचाया। □

वंश परिचय

जोखीरामजी के दादाजी श्री नानगरामजी साधारण स्थितिवाले सरल और सात्विक व्यक्ति थे। फतहपुर के सरागी मोहल्ले मे पत्थरों को कच्ची मिट्टी से जोड़कर और मिट्टी से ही लीप-पोत कर एक तल्ले का मकान, जिसमे बीच मे चौक, चारों तरफ चार परिवार रहने के लिए कमरे, कमरो के सामने बरामदे मे एक तरफ रसोई बनाने की जगह और एक तरफ दिन में धूप से बचकर बैठने का स्थान आदि बने थे। कमरे की फर्स साधारण काले पत्थरों की और बाहर बरामदे और चौक सब कच्चे थे। चारों ओर चारो परिवारो को छत पर जाने के लिए चार सीढियाँ बनी थी। मकान की ऊँचाई मुश्किल से १२ फीट होगी। मकान के बाहर, जितना बड़ा मकान था उतनी ही, खाली जगह भी थी जिसकी दीवाल केवल मिट्टी से ही ऊँची कर थोड़ी आड़ बना दी गई थी। वह जगह भविष्य मे किसी उपयोग में आये यही सोचकर ले ली गई थी।

श्री नानगरामजी के तीन पुत्र हुए—हरनामदासजी, चुन्नीलालजी और वृद्धिचन्दजी। हरनामदासजी के दो पुत्र—गणेशदासजी व तनसुखदासजी हुए। गणेशदासजी के कोई सन्तान नही हुई। तनसुखदासजी उज्जैन आकर बस गए और वही उनका स्वर्गवास हुआ। उनके पुत्र जयगोविन्ददासजी भी अनेक वर्षों

तक उज्जैन में ही रहे। कोई विशेष उन्नति न करने के कारण वे कलकत्ते आये लेकिन फिर भी कोई उल्लेखनीय प्रगति नही कर सके। उनकी कोई सन्तान नहीं हुई।

चुन्नीलालजी के भी दो पुत्र हुए—नौलीरामजी और दौलतरामजी। नौलीराम के कोई सन्तान नही हुई। दौलतरामजी के पुत्र बलदेवदासजी हुए। बलदेवदास जी बिहार मे मोतीहारी जाकर रहने लगे। बलदेवदासजी के मरने के बाद उनके पुत्र गीगराजजी मोतीहारी से कलकत्ते और फिर १९२५ में रांची आकर रहने लगे। उनके दो लड़के सत्यनारायणजी और राजकुमारजी आज भी रामगढ मे निवास करते है और उन्होने अच्छी प्रतिष्ठा और सम्पदा अर्जित की है।

वृद्धिचन्दजी के तीन पुत्र-जोधराजजी, रामरतनदासजी और जोखीरामजी हुए। जोधराजजी को कोई सन्तान नही हुई।

रामरतनदासजी के दो पुत्र—रामकिशनदासजी और जुहारमलजी हुए। रामकिशनदासजी कोई विशेष प्रगति नही कर सके। जुहारमलजी ने अपने जीवन-काल में अच्छा पैसा कमाया तथा अपने रहने के लिए एक पक्की हवेली भी बनवाई। वह हवेली आज भी बावड़ी दरवाजे के पास स्थित है और उसमे उनकी सन्ताने निवास करती हे। उनके एक लड़के महादेवजी को एक लड़का हुआ वह कोई उन्नति नही कर सका। वंश आगे नही बढा। दूसरे लड़के रगलालजी के एक लडके शिखरचन्दजी हुए। उनके दो लड़के है, वे आसाम में व्यापार करते है। तीसरे लडके रामेश्वरजी हुए, वे फतेहपुर छोड़कर रांची आए और उनके लडके और पोते राची मे व्यापार करते हैं।

जोखीरामजी के पहली पत्नी से एक पुत्र - दानमलजी, दूसरी पत्नी से ६ पुत्र भीमराजजी, खीमराजजी, मूंगराजजी, केदारनाथजी, बैजनाथजी, गोवर्द्धनदास जी तथा एक पुत्री गंगाबाई हुई।
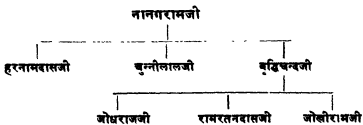
पुराने जमाने में विवाह छोटी उम्र में हो जाया करते थे। दानमलजी विवाह के कई वर्षों बाद केवल २१ वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हुए। उनके कोई सन्तान नहीं हुई।

भीमराजजी ने दो विवाह किए। पहली पत्नी से दो पुत्र हुए। दूसरी पत्नी से कोई सन्तान नहीं हुई। सयोग की बात है पहली पत्नी से जो दो पुत्र हुए बड़ा पुत्र विवाह के दो वर्ष बाद ही गुजर गया और दूसरा लड़का विवाह के ६ महीने बाद ही परलोक सिधार गया। इस धक्के को वे नही संभाल सके और केवल ३६ वर्ष की आयु में ही स्वर्गवासी हुए।

खेमराजजी के दो पुत्र हुए पर वे चीनी की बीमारी के मरीज थे इसलिए केवल ३३ वर्ष की आयु मे ही स्वर्गवासी हुए। उनके पहले पुत्र पूरनमलजी को कोई लड़का नही हुआ, दो पुत्रियाँ हो हुई। उन्होंने ५६ वर्ष की आयु पाई। दूसरे पुत्र छगनलालजी हुए और उनके पुत्र सूरजमलजी हैं। इनके तीन लडके हैं— ओमप्रकाशजी, राजेन्द्रकुमारजी कमल कुमारजी। ये लोग रांची में अच्छा व्यापार करते हैं। छगनलालजी ने ६० वर्ष की आयु पाई।

मूंगराजजी ने ७० वर्ष की आयु पाई, उन्हें कोई सन्तान नही थी। उन्होने एक लड़का गोद लिया उनका नाम गुलराजजी है। उन्हें एक पुत्र है जिसका नाम दीनानाथजी है। ये रांची मे अच्छा व्यापार करते हैं।

केदारनाथजी बड़े मेहनती और साहसी व्यक्ति थे। उन्हें एक लड़की और एक लड़का हुआ जिनका नाम नन्दलालजी था। सयोग की बात है नन्दलालजी विवाह के दो वर्ष बाद ही गुजर गए एव केदारनाथजी धक्के को सम्भाल न सके और ४६ वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधारे।

बैजनाथजी को एक पुत्री हुई उसने ५० वर्ष की आयु पाई और एक पुत्र श्रीधर्मचन्दजी हैं। बैजनाथजी ने परिवार मे सबसे अधिक आयु पाई। वे ८३ वर्ष की उम्र में स्वर्गवासी हुए।

जगन्नाथजी को एक पुत्री और चार पुत्र हुए। बड़े पुत्र गुलराजजी मूंगराजजी के गोद चले गए। उनसे छोटे शिवभगवानजी छोटी उम्र में ही गुजर गए। उनके एक लड़का हुआ—हरचन्दजी। ये भी छोटी उम्र में गुजर गए।

तीसरे दुर्गादत्तजी—उनके दो पुत्र—महाबीरजी और मानिकचन्दजी रांची में ही बहुत बड़ा व्यापार करते हैं। चौथे पुत्र रिखबचन्दजी, इनके पांच पुत्र हैं—विजयकुमारजी, सज्जनकुमारजी, प्रकाशचन्दजी, रामअवतारजी और सतोषकुमार जी रांची मे व्यापार करते है।

गोवर्द्धनदासजी—ये जोखीरामजी के सबसे छोटे पुत्र थे पर उन्होंने अधिक आयु नही पाई, केवल ३८ वर्ष की आयु में ही स्वर्ग सिधारे। उन्हें एक लड़की थी और तीन लड़के। बड़े लड़के मदनलालजी छोटी उम्र में ही गुजर गए। उनके तीन लडके हुए—प्रेमचन्दजो, सत्यनारायणजी और ताराचन्दजी जो रायपुर में काफी बडा व्यापार करते है। दूसरे नेमिचन्दजी ५० वष की आयु पाई, उन्हें कोई लडका नहीं हुआ। तीसरे मोतीलालजी आजकल कोडरमा में रहते है। उनके तीन पुत्र है—अशोक कुमारजी, पवनकुमारजी और विमलकुमारजी। ये कोडरमा मे ही व्यापार करते है। □

जोखीरामजी कलकत्ते आए

जोखीरामजी की पढ़ाई विशेष नही हुई। उन दिनों अक्षर ज्ञान होना ही पढा लिखा समझा जाता था। इस सम्बन्ध मे एक दिलचस्प घटना का उल्लेख कर देना उचित होगा।

सगाई से पहले कन्या पक्ष के लोग जोखीरामजी को देखने आए। किसी ने जोखीरामजी के परिवार वालों से पूछा—लड़का पढा-लिखा है ? सिर हिलाकर किसी ने उत्तर दिया—हां। जोखीरामजी को जब परीक्षा लेने के ख्याल से लिखने को कहा गया तो वे बडी मुश्किल से ज और ख अक्षर ही लिख पाये थे कि सबने कहा—ठीक है और लिखने की जरूरत नही है। बस जोखीरामजी की सगाई पक्की हो गई।

उस जमाने मे छोटी उम्र मे यानी १०-१२ वर्ष की उम्र मे विवाह होकर २-३ वर्ष बाद मुकलावा हो जाता था और घरवाले जल्दी ही आगन मे बच्चो को खेलते देखना चाहते थे। जोखीरामजी को पहली पत्नी से एक लडका हुआ जिसका नाम दानमल रखा गया।

उन दिनों भारत में अंग्रेजी हुकूमत थी तथा कलकत्ता नगर उसकी राजधानी थी। राजधानी होने के कारण कलकत्ता बहुमुखी विकास की ओर अग्रसर हो

रहा था। उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल के व्यापारी अंग्रेजी कम्पनियों के साथ अपना तालमेल बिठाकर धन कमाने में लगे हुए थे। समुद्री रास्ते में दूसरे देशों के साथ अपने व्यापारिक सम्बन्ध जोड़ने के कारण कलकत्ता अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र बनता जा रहा था।

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में थोडे बहुत मारवाड़ी भी कलकत्ते पहुँचने लगे थे। कलकत्ते मे धन की नदी बहती है ऐसी आम आदमियो की धारणा बनी हुई थी। धन कमाने की प्रबल आकांक्षा से प्रेरित होकर जोखीरामजी ने भी कलकत्ते की यात्रा करने का निश्चय किया।

आवागमन के साधन अभी विकसित नही हो पाए थे। रेल, सडकों और बसों की कोई सुविधा नहीं थी। मारवाड़ से कानपुर तक की दूरी ऊँटों की पीठ पर लदे तथा हिचकोले खाते तय करनी पडती थी। रास्ते चलते जाने कब चोर-डाकू और धाड़ायतियो से मुठभेड हो जाने की सभावना और आतंक हरक्षण बना रहता था। जोखीरामजी ठहरे जीवट वाले व्यक्ति। एक बार जो निश्चय कर लिया उसको पूरा किये बिना उनको चैन कहाँ। आखिर माया-ममता का मोह-पाश टूटा और वे कलकत्ते की यात्रा पर चल पडे।

फतेहपुर से कानपुर तक की लम्बी दूरी उन्होने ऊँटो की पीठ पर सवार होकर ही पूरी की। यहाँ से नाव द्वारा नदी के रास्ते कलकत्ता पहुचा जा सकता था। परन्तु अब जोखीरामजी की अटी मे इतना जोर कहाँ था कि नाव वालों को पूरा किराया दे सके। आखिर चढनदारी करते हुए किसी प्रकार कलकत्ता पहुंच पाये। इस व्यवस्था के अनुसार रात को जब नाविक सो जाते तो जोखीरामजी को जागते रहकर नाव पर पहरा देना पडता था। भोजन खर्च के लिये दिन में वे गमछे बेच लिया करते थे।

कलकत्ता पहुंचने वालो में जोखीरामजी पांचवे या छठें मारवाड़ी रहे होगे। यहाँ आकर जोखीरामजी काम की तलाश में भटकते रहे। उस समय तक मारवाड़ियों का कोई अपना बड़ा उद्योग नही था। उत्तर प्रदेश और बिहार से आए हुए व्यापारी तथा बंगाल में बस गए खत्री अंग्रेज कम्पनियों या व्यापारियों की दलाली और ब्रोकरी का धन्धा करते थे।

पर कलकत्ते पहुँचना जोखीरामजी की यात्रा की समाप्ति नहीं थी। वस्तुतः यहीं से उनकी वास्तविक जीवन यात्रा का प्रारम्भ हुआ। वे पारिवारिक सुख-सुविधाओं का त्याग कर निकले थे। जोखीरामजी ने अपने प्रारब्ध की आड़ी-टेढ़ी लकीरें खींचना प्रारम्भ किया। गिने-चुने लोगो से परिचय कर उन्होने अपने रहने-खाने की व्यवस्था की और कलकत्ते की दृष्टि से किराने की दलाली करने लगे। दलाली की सफलता परिश्रम की अपेक्षा प्रारब्ध पर ही अधिक निर्भर करती है। परिश्रम करने की क्षमता तो जोखीरामजी मे थी पर प्रारब्ध को पकड़ रखना उनके वश मे नही था।

किराने की दलाली के दलदल में निरतर हाथ मारते रहने पर भी जोखीराम जी को कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि नही हुई। निराश और हताश होकर वे किसी काल्पनिक चमत्कार की आशा में जुआ खेलने लगे। जुए ने उनकी बची-खुची कार्यक्षमता को और भी कमजोर किया। दलाली के खेल मे बाजार के घटते-बढ़ते रुख का आधार तो रहता है, जुआ तो निपट भाग्य का खेल है। प्रकृति से परिश्रमी और कर्मवीर जोखीरामजी ने जब-जब भाग्य का सहारा लिया, उन्हें निराशा और नुक्सान के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नही लगा।

जुए से हारकर जोखीरामजी फिर परिश्रमपूर्वक दलाली में ध्यान लगाते और थोड़ी कमाई होने पर वे फिर जुए मे दांव लगा देते। फलतः कश्मकश और अभाव सदा बना रहता। न तो वे अपने लिए सुख-आराम का साधन जुटा पाते और न फतहपुर अपने स्त्री-बच्चो के लिए कुछ भेज पाते। कुल मिलाकर जोखीरामजी को कलकत्ते का जीवन रास नही आ रहा था। दूसरा कोई रास्ता नही होने के कारण उधेड़बुन में जोखीरामजी का समय गुजरता रहा।

जोखीरामजी कलकत्ते में पैसा उपार्जन करने की जीतोड़ कोशिश करते रहे। अपनी धर्मपत्नी को खर्चा मुश्किल से ही भेज पाते थे। फतहपुर में उनकी स्त्री किसी प्रकार अपना काम चलाती और अपने लड़के दानमलजी का पालन-पोषण करती रही। दानमलजी का विवाह भी फतहपुर में ही हो गया। पर दुर्भाग्यवश दानमलजी छोटी उम्र में ही गुजर गए। दानमलजी की स्त्री दबंग होने के साथ ही दयालु और धर्मप्राण थी। विधवा होने के बाद उसने अपना जीवन गरीब स्त्रियों की सेवा, सहायता और धर्म साधना में लगा दिया। अपनी उदारता के

कारण उसने अपने जीवन काल में समाज द्वारा यथेष्ट आदर और सम्मान प्राप्त किया। पूरा जीवन उन्होंने फतहपुर में रह कर ही सद्कार्य करते हुए व्यतीत किया।

जवान लड़के की असामयिक मृत्यु से जोखीरामजी के हृदय पर गहरा आघात लगा। काम-काज मे अब उनका पहले जैसा उत्साह नही रहा। वे उदास और मायूस रहने लगे। जोखीरामजी जीवन में बहुत कुछ कर गुजरने की आशा लेकर कलकत्ते आए थे। पर क्रूर काल के थपेड़ों ने उनके स्वप्नमय ससार को जलाकर राख कर दिया। अकेले रहकर जिन्दगी का लम्बा सफर तय करना उनके लिए दूभर हो गया।

जोखीरामजी का दूसरा विवाह भरतिया परिवार मे हुआ। पत्नी का नाम धन्नी देवी था। अब जोखीरामजी के जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। बडाबाजार मे रूपचन्दराय स्ट्रीट में एक छोटे से घर मे वे अपनी नई स्त्री के साथ रहने लगे। धन्नी देवी के रूप मे जोखीरामजी को नई जीवन सगिनी तो मिली, लेकिन जादूलालजी की माली हालत पतली होने के कारण कोई आर्थिक लाभ नही हुआ। दलाली से जो थोड़ी बहुत आय होती उसी मे पति-पत्नी अपना ससार चलाते रहे। धन्नी देवी अपने नाम के अनुसार धन लेकर तो नहीं आई पर मातृत्व की भरपुर सभावनाओ वाली सौभाग्यवती स्त्री होने के कारण वह एक के बाद एक पुत्रों को जन्म देती चली गई। धीरे-धीरे जोखीरामजी का परिवार बढता रहने के कारण उनका आर्थिक संतुलन बिगडता चला गया। कम आय और बड़े परिवार के जो दुष्परिणाम होते है वे सामने आने लगे। यहाँ तक कि कभी-कभी घर मे चूल्हा जलाने की भी स्थिति नही रह पाती थी।

धन्नी देवी भारतीय परिवार मे जन्मी भले सस्कारो मे पली समझदार महिला थी। पारिवारिक गरीबी और भुखमरी को वह अपने पास-पड़ोसियों पर प्रगट नही होने देती थी। जिस दिन खाना पकाने की स्थिति नही होती थी उस दिन भी चूल्हे में लकड़ियाँ जलाकर छोड़ देती थी, ताकि घर पर आने वाले यह नहीं समझें कि आज इनके घर मे चूल्हा ठडा पड़ा है। दिन-रात कठोर परिश्रम कर जोखीरामजी अपनी आर्थिक स्थिति सभाल पाने में सक्षम नहीं हो सके। उनके लड़के भी समझ पकड़ने के साथ-साथ पिता के काम मे हाथ बंटाने लगे। फिर भी

कोई आशाप्रद सुधार नहीं हुआ। आखिर कुछ पटिवालों की राय से धन्नी देवी और उसके लड़के जोखीरामजी को लेकर रांँची चले गये। रांँची जाने के कारण ये भी थे—कलकत्ते की फिजूलखर्ची से छूटकारा, जोखीरामजी की जुए की लत से मुक्ति तथा रांँची में पहले से जाकर बसे हुए जान-पीह्ल वालों की सहायता से कोई छोटा-मोटा धन्धा मिल जाने की आशा।

जोखीरामजी कामकाज की खोज में रांँची आकर रहने लगे। रांँची में उन दिनों बहुत थोड़े मारवाड़ी व्यापारी आए थे। सुविधा की दृष्टि से रांँची अभी अविकसित नगर ही था। सड़कों आदि का निर्माण नहीं हो पाया था। जोखीराम जी ईंट, मिट्टी और खपरैल से बने कच्चे मकान में सपरिवार रहते थे। दिन में सूरज की रोशनी और रात को दीये के प्रकाश से काम चलता था। बिखरे-छितरे मकान, बीच-बीच में पेड़ पौधों और झाड़-झंखाड़ों की हरियाली। आसपास की यात्रा पैदल चलकर और दूर की बैलगाड़ी द्वारा होती थी।

रांँचो का व्यापारिक सम्बन्ध रानीगंज से था। रांँची से रानीगंज माल पहुँ-चाने में बैलगाड़ी को पन्द्रह दिन चलना पड़ता था। रानीगंज से रेल मार्ग द्वारा बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश माल आता-जाता था। सुरक्षा की दृष्टि से भी रांँची कोई उपयुक्त स्थान नहीं था। रांँची के आसपास भयानक जंगल फैला हुआ था। जंगली जानवरों, साँपों और डाकुओं का उपद्रव होता रहता था। फिर भी कच्चे माल की बहुतायत के कारण यह स्थान व्यापार का केन्द्र बनता गया। जोखीरामजी का शेष जीवन रांँची में ही व्यतीत हुआ। जोखीरामजी की कई सन्तानें उनके सामने ही गुजर गई थी। मृत्यु के पहले उनकी आँखें भी चली गई। आँख जाने की एक विचित्र घटना हुई बताई जाती है। एक दिन एक व्यक्ति उनसे मिलने आया, बात करते-करते उसने कहा कि जोखीरामजी अपनी आंख बन्द करो, जोखीरामजी ने उसके कहने के अनुसार आंख बन्द की वह फिर नहीं खुली। वह व्यक्ति कौन था किसी को मालूम नहीं।

जोखीराम अब एक बड़े परिवार के धनी बन चुके थे। उनकी धर्मपत्नी धन्नी देवी ने छ पुत्रों और एक लड़की को जन्म दिया। एक लड़का पहले था ही, इस प्रकार वह आठ सन्तानोंवाली सौभाग्यवती के रूप में समाज में सम्मानित थीं। अपने से बड़ों को प्रणाम करते समय वह पहले ही कह देती थीं कि मुझे सात पुत्रों

की माँ बनने का आशीर्वाद नहीं देना—आपके आशीर्वाद से मैं पहले ही नौ सन्तानों वाली माँ बन चुकी हूँ।

जोखीरामजी के लड़कों ने बड़े होकर विभिन्न काम में अपनी तकदीर आजमाना प्रारम्भ किया। यद्यपि सब सम्मिलित परिवार में ही रहते थे पर कामकाज की दृष्टि से कुछ लड़के राँची के बाहर भी गये। धीरे-धीरे इनका काम बूंडू, रामगढ़, कलकत्ता, कोडरमा आदि स्थानों में फैल गया। बड़ा परिवार होने के कारण जोखीरामजी के लड़कों ने अलग-अलग प्रकार के धन्धे खोल लिए। इससे व्यापारिक केन्द्रों की संख्या तो बढ़ी लेकिन मूल स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। लड़कों के भी अपने-अपने परिवार पालते गये और वे अपना-अपना खर्च किसी प्रकार चलाते रहे।

जोखीरामजी का परिवार जिस तरह बढा उसी गति से टूटता भी चला गया। उनके लड़कों में दानमलजी २१ साल, भीमराजजी ३६ साल और खेमराजजी ३३ साल की उम्र में ही स्वर्गवासी हो गये। सन् १९१३ में खेमराजजी के पुत्रों ने खेमराज पूरनमल नाम से राँची में अपना अलग फर्म कर लिया लेकिन अलग होकर उन्होंने कोई उन्नति नही की। यह देखकर बाकी के भाइयों ने अलग होने का विचार त्याग दिया। मूंगराजजी के कोई पुत्र नहीं था। उन्होंने जगन्नाथजी के पुत्र गुलराजजी को गोद ले लिया।

कारबार की डोर अब केदारनाथजी के हाथ में थी। वे कुशल तथा कार्यदक्ष व्यक्ति थे। इनके समय में व्यापार की सराहनीय उन्नति हुई। आगे चलकर उन्होने राँची में एक धर्मशाला भी बनवाई जो आज भी विद्यमान है। केदारनाथ जी के एकमात्र पुत्र नन्दलालजी का विवाह के कुछ साल बाद निधन हो गया। उस धक्के को वे सह न सके और केवल ४६ वर्ष की आयु में ही २३ अक्टूबर १९१६ में स्वर्गवासी हुए। □

वंश परिचय

जोखीराम सरावगी
दानमल
भीमराज
खेमराज
मूंगराज
केदारनाथ
बैजनाथ
जगन्नाथ
गोरधन दास
गंगा बाई
जयदेव
बाबूलाल
पूरनमल
छगनमल
गुलराज
नन्दलाल
धर्मचन्द
शिवभगवान
रीखबचन्द
गोविन्द प्रसाद
दुर्गादत्त
निर्मल कुमार
चन्द्र कुमार
मदनलाल
नेमीचन्द
मोतीलाल
सिद्धार्थ
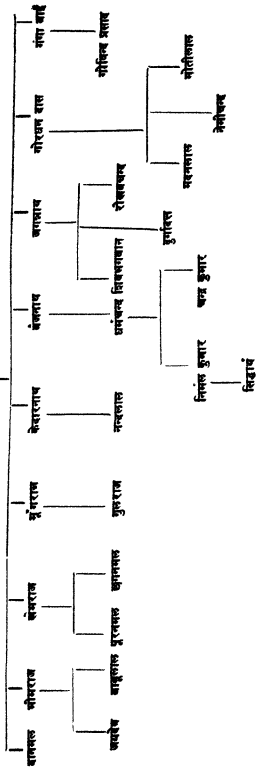
स्व० धन्नी देवी स्व० बैजनाथजी की माताजी
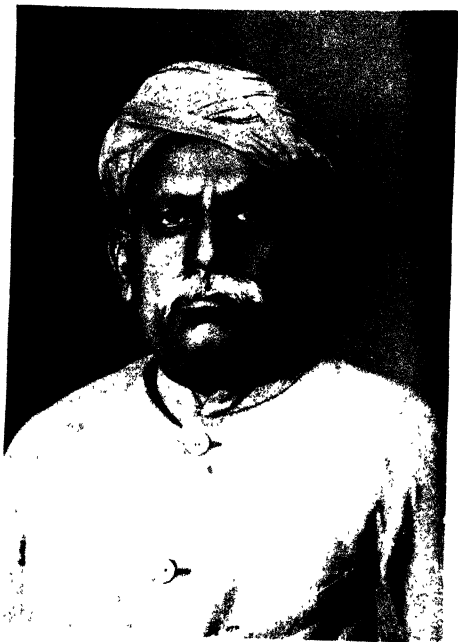
धर्मचन्दजी के स्वनामधन्य पिता स्व० बैजनाथजी सरावगी

जन्म : ५-१-१८७८ ● स्वर्गवास : २-१०-१९६२

धर्मचन्दजी की माताजी स्व० जानकी देवी।
जन्म : १०-७-१८७७ ● स्वर्गवास : ८-५-१९६६

धर्मचन्दजी की प्रथम पत्नी स्व० श्रीमती ज्ञानवती देवी ।

बैजनाथजी

बैजनाथजी अपने आठों भाइयों में सबसे अधिक सुयोग्य साबित हुए। 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' के अनुसार बचपन से ही बैजनाथजी की जन्मजात विशेषताएँ परिलक्षित हुईं। किसी को देखते थे तो ध्यान से, सुनते थे तो मनोयोग से और बोलते थे तो उत्सुकता और जिज्ञासा से भरे-भरे। पिता की अपेक्षा बालक बैजनाथ माँ के सान्निध्य में ही अधिक रहे। माता धन्नी देवी भारतीय संयुक्त परिवार में रहनेवाली मर्यादित महिला थीं। उनके आचार-विचार, रहन-सहन और बोलचाल पर शालीनता की छाप रहा करती थी। बैजनाथजी को अपनी माताजी से जो संस्कार विरासत के रूप में मिले वे ही आगे चलकर उनके व्यक्तित्व के विकास का मूल आधार बने।

बैजनाथजी का जन्म ५ जनवरी १८७८ में कलकत्ते में हुआ था। बैजनाथजी को माँ का लाड़-प्यार तो मिला लेकिन बड़े परिवार और आर्थिक अभाव के कारण उन्हें वे सुख-सुविधाएँ प्राप्त नहीं हो सकीं जो एक बालक के उचित विकास के लिए अनिवार्य होती हैं। उनके पिता जोखीरामजी स्वयं पढ़े-लिखे नहीं थे। बैजनाथजी अधिक नहीं पढ़ सके। उस जमाने की इंगलिश की फर्स्ट बुक में लेमहार्स तक चार-पाँच पाठ ही पढ़ सके। फिर भी उन्होंने जो कुछ थोड़ा-बहुत

पढ़ा वह बड़े मनोयोगपूर्वक पढ़ा और उसी से उनको कामचलाऊ ज्ञान की प्राप्ति हो गई। पढ़ने-लिखने की जो रुचि बचपन से जगी वह जीवन के अन्तिम बेला तक बनी रही।

अभी बैजनाथजी मात्र चौदह वर्ष के ही थे कि उनके विवाह की बात चल पड़ी। जोखीरामजी जब कभी फतहपुर जाते तो वहाँ के निवासी बद्रीदासजी जालान बैजनाथजी से अपनी पुत्री जानकी बाई का सम्बन्ध करने का आग्रह करते। उस जमाने मे विवाह सम्बन्ध में आजकल की तरह सौदेबाजी और लेनदेन की बात नही हुआ करती थी। जान-पहचान वाले परिवार के साथ सम्बन्ध करना अच्छा समझा जाता था। माता-पिता ही सम्बन्ध तय कर दिया करते थे। लड़के-लड़की को आपस में एक दूसरे को देखने-दिखाने का अवसर नहीं मिलता था। ऐसा करना सभ्यता और मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। बद्रीदासजी और जोखीरामजी एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते थे। उस जमाने में बड़ा परिवार अच्छी दृष्टि से देखा जाता था। अतः सम्बन्ध तय हो गया। यद्यपि जानकी बाई रंग-रूप की बहुत सुन्दर थी पर शरीर से थोड़ी भारी थी। उम्र में भी बैजनाथजी से कुछ बड़ी ही थी। जबकि बैजनाथजी रग से गेहुआ, दुबले-पतले बदन वाले युवक थे पर 'सम्बन्ध कीजे जान कर, पानी पीजे छानकर' वाली कहावत के कारण सम्बन्ध करने में किसी प्रकार की बाधा नहीं हुई। लड़के की अपेक्षा लड़की की उम्र बड़ी होने वाली बात को भी लोग अच्छा मानते थे, कहा करते थे—"बड़ी बहू बड़ो भाग, छोटो बनड़ो घनो सुहाग"।

सन् १८९० में बैजनाथजी का विवाह जानकी बाई के साथ कर दिया गया। बैजनाथजी को जब भी समय मिलता वे उस जमाने मे प्रकाशित होने वाले हिन्दी के पत्र अवश्य पढते। इस प्रकार ज्ञानार्जन और गुण-ग्राह्यता उनमे बराबर बनी रहती। उनकी इस प्रवृत्ति के कारण उनके बड़े भाई खीझकर कहा करते थे: "यो बैजियो दिन भर किताबा और छापा में ही सीर घुसायो राख कमानो खानो कँया सीखसी।" बैजनाथजी पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं होता था। वे काम के समय काम करते और बाकी समय में किताबें और अखबार पढते। पढने की इस आदत के कारण बैजनाथजी के बाह्य ज्ञान का विकास तो हुआ ही, साथ साथ मनुष्य को परखने की योग्यता भी बढ़ी।

विवाहोपरान्त बैजनाथजी कलकत्ता और राँची दोनों जगह रहते थे। उनके अन्य भाइयों ने रांची से बाहर बुन्डु, कोडरमा, कलकत्ता, रामगढ़ आदि स्थानों पर छोटा-मोटा धंधा कर रखा था। बैजनाथजी भी उनके काम में हाथ बँटाते। बुद्धिमान होने के कारण कारबार के गुर समझने में बैजनाथजी को कोई कठिनाई नहीं हुई। राँची का काम उन दिनों जगन्नाथजी देखते थे। मूंगराजजी बुन्डु का काम सम्भालते थे। कलकत्ते का काम केदारनाथजी और गोबर्धनदासजी देखा करते थे जहाँ आढ़त का काम होता था। राँची में परिवार में मनिहारी, आटा, मैदा, नमक, किरासन तेल, तेल रंग, अलकतरा, सीमेंट, लोहा, खेती के औजार, मकान मरम्मत के औजार आदि कई तरह के काम होते थे। बैजनाथजी कुछ पढ़े-लिखे होने के कारण एक बार सोडावाटर की फैक्ट्री भी की और ठेकेदारी का काम भी शुरू किया जिसमें सरकारी विभागों के लिए पुल बनाना, मकान बनाना, सड़क बनाना इत्यादि का ठेका लेकर काम कराया करते थे, जिसमें काफी दौड़-धूप होती थी। यात्रा के साधन इतने विकसित नहीं थे इसलिए बैलगाड़ी में यात्रा करनी पड़ती थी। साथ ही जहाँ रहे वहाँ कच्चा-पक्का भोजन बनाकर खाया करते थे। कभी किसी काम में कुछ नफा हो जाता था तो कभी किसी में घाटा भी हो जाता था। बीच-बीच मे शारीरिक श्रम अधिक होने के कारण बीमार भी पड़ जाते थे। उन्होंने अपने सहयोग के लिए ठेकेदारी के व्यापार में कुछ गुजरातियो को भी साथ लिया जिन्हें मासिक तनख्वाह के अलावा लाभ में कुछ अश दिया करते थे। बैजनाथजी को मनुष्य पहचानने की अद्भुत क्षमता के कारण इनलोगों से सम्बन्ध बहुत वर्षों तक बना रहा।

आरम्भ से ही उन्हें सार्वजनिक कामों में भाग लेने की रुचि थी। राँची गो-शाला का गोपाष्टमी पर मेला लगता था उसमें भी व्यवस्था आदि करने में भाग लेते थे। उत्सव पर उस जमाने में हण्डों की रोशनी पर होने वाले नाटकों और व्याख्यानों की व्यवस्था में रात को देर तक जगा करते थे। राँची से ४-६ मील दूर एक पहाड़ी, जहाँ अब एच० ई० सी० का विशाल कारखाना है, पर जगन्नाथजी का मन्दिर था जहाँ रथयात्रा के अवसर पर अषाढ़ महीने में मेला लगा करता था। मन्दिर छोटा था, मेले में काफी भीड़ होती थी। दर्शनार्थियों को असुविधा न हो इसलिए एक बार पुरुष दर्शन के लिए छोड़े जाते थे और दूसरी बार स्त्रियाँ। यह क्रम सुबह से आरम्भ होकर संध्या तक चला

करता था। इसकी व्यवस्था के लिए वे स्वयसेवक का काम बराबर करते थे। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली था। सुडौल शरीर, बुलन्द आवाज, चेहरे पर तेज और आदमी को भीतर तक झाकने वाली तीक्ष्ण दृष्टि के कारण उनमें नेतृत्व की गहरी क्षमता थी। परिवार में उनकी धाक थी। पारिवारिक एकता और अनुशासन को बनाए रखने के लिए भाइयों ने सारी जिम्मेवारी उन्हें दे रखी थी। वे भी अपने भाइयों, उनके परिवार, स्त्री-बच्चों के साथ सदा समानता का व्यवहार करते थे। जो चीज अपने बेटे और पत्नी के लिए खरीदते वहीं सब बच्चों के लिए खरीदने की व्यवस्था थी। किसी प्रकार का भेदभाव रखना उन्हें अच्छा नहीं लगता था। इसीलिए परिवार के सभी लोग उन्हे श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे।

कलकत्ते के काम की देखभाल केदारनाथजी और गोवर्धनदासजी करते थे। कुछ दिनों बाद गोवर्धनदासजी अस्वस्थ रहने लगे। केदारनाथजी ने कलकत्ते में अपना अलग काम कर लिया था अत: बैजनाथजी को कलकत्ते आना पडा। कलकत्ते की गद्दी, जो उस समय १६० सूतापट्टी में थी जिसका वर्त्तमान नाम जमनालाल बजाज स्ट्रीट हो गया है, बहुत वर्षों पुरानी बनी हुई थी। कोठी का नाम फतेद्वारी कोठी था। सूतापट्टी उस समय व्यापार का केन्द्र था। मारवाड़ी व्यापारी सूता, कपडा आदि का व्यापार करते थे। उस समय सराफ, जाजोदिया, पोद्दार, चौधरी, भोतिका, चमडिया आदि बड़े-बड़े व्यापारी थे। यही लोग पंचायत व समाज आदि के कार्यों मे अगुवा रहा करते थे। जाजोदिया के यहाँ सूते की बिक्री इतनी अधिक हुआ करती थी कि, कहा जाता है, दिनभर की बिक्री को बोरे में बन्द कर घोडा गाड़ी मे रख चितपुर पार कर १४०, हरिसन रोड स्थित अपने मकान मे ले जाते थे। उस समय मोटरों का प्रचार नही के बराबर था। किसी-किसी दिन बिक्री इतनी अधिक होती थी कि बोरा भर जाने पर एक आदमी चढकर उसे दबाता और बाकी के बिक्री के रुपये और नोट उसमें भरकर रस्सी से बांधता था। सराफ और पोद्दारों का भी इतना दबदबा था कि बिड़ला परिवार के लोग भी उनकी राय से सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते थे। उसी समय सूतापट्टी में राह चलते किसी पर बनते हुए मकान की ईंट या बाँस का टुकड़ा गिरा और वह बेहोश हो गया। औषधि का समुचित प्रयोग न होने के कारण लोगों ने रिलीफ सोसाइटी नाम की संस्था स्थापित कर इस कमी को

पूरा किया। संस्था का नाम आगे चलकर उस "मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी" हुआ जो आज भी विद्यमान है और जनता की सेवा कर रही है।

बैजनाथजी कलकत्ते में

सन् १९१६ में बैजनाथजी कलकत्ते आए। राँची की तुलना में कलकत्ता बहुत विराट नगर था। व्यापार का प्रमुख केन्द्र और अंग्रेजों की राजधानी होने के कारण कलकत्ते का चहुमुखी विकास हो रहा था। अंग्रेज साहब लोगों के रहने के लिए विशाल कोठियाँ और बंगले बने हुए थे। बड़े-बड़े व्यापारियों और बंगाली जमींदारों के पास भी गाड़ियाँ और विशाल महल थे। कोलतार वाली सड़कों का निर्माण अभी नही हुआ था। पत्थर की रोड़ियो की कच्ची सड़क पर टमटम और घोड़ा गाड़ियाँ दौड़ लगाया करती थीं। हर व्यक्ति को सुबह ७-८ बजे से रात को १०-११ बजे तक काम करना पड़ता था। मुनीम-गुमास्ते, जमादार, नौकर और दल्लाल भी इनमें शामिल थे। आधी रात गए तक गद्दियों मे लेनदेन का काम चलता रहता था। दूकानें सुबह से ही देर रात तक खुली रहती थीं। शहर में बिजली का आगमन अभी नहीं हुआ था। छोटे घरों में सरसों तेल के दीये या मिट्टी के तेल की ढिबरी और बड़े घरों में मिट्टी के तेल से जलने वाले काँच लगे लैम्प रहते थे। मुख्य सड़कों और खास मोड़ पर मिट्टी तेल और बत्ती से जलने वाले लैम्प पोस्ट लगे रहते थे, जिन्हें शाम होते ही कारपोरेशन का कर्मचारी सीढी लगाकर जला जाता था और सुबह होते ही बुझा जाता था। बड़े घरों में कमरों की छतों पर कपड़े की झालर वाले पंखे झूलते थे जिन्हें एक आदमी रस्सी की सहायता से डुलाता रहता था। शहर में मोटर गाड़ियाँ कभी-कभी ही दिखाई देती थी। धूल और धूएँ से भरा धुँधला-धुँधला आकाश। मिलों, कारखानों, गंगाघाट पर स्टीमरों में उतरता-चढ़ता माल और लोगों की चहल-पहल।

प्रथम युद्ध अभी चल ही रहा था। बैजनाथजी मन लगाकर अपना आढ़त का काम करते थे और समय मिलने पर पूजा-पाठ और सार्वजनिक कार्यों में समय देते थे। युद्ध समाप्त होने पर अंग्रेज सरकार ने अपने राज-कोष में एकत्रित सोना बेचने के लिए टेण्डर निकलवाया। बैजनाथजी ने बारह रुपये तोला की दर पर दो सो तोला खरीदने के लिए टेण्डर भर दिया। टेण्डर पास हो गया

और उन्होंने सोना खरीद लिया। उनके साथियों ने कहा सोना खरीदने से क्या फायदा है। सोने का भाव तो आठ-दस रूपये तोला होने वाला है। बैजनाथजी पर इन बातों का प्रभाव पड़ा। उन्होंने अपने मित्रों और परिचितों में, जिसने लेना चाहा, उनमें दस-दस तोला सोना जिस दाम में लिया था उन्हीं दामों में बाँट दिया।

बैजनाथजी आढ़त और चलानी का काम करते थे। इस काम में खर्च निकाल कर वर्ष में २-३ हजार रूपये बच जाते थे पर कोई बड़ी आमदनी नही होती। संयोग की बात है, वे जिस मकान में रहते थे उसमें उनके कुछ पड़ोसी शेयर बाजार मे काम करते थे पर बैजनाथजी को शेयरो के काम के प्रति कोई आकर्षण नहीं था। उनके साथी चाहते थे कि बैजनाथजी भी शेयरों का कार-बार करें। एकबार बैजनाथजी के किसी मित्र ने उनके नाम से ५०० शेयर खरीद लिए। बैजनाथजी के मना करने पर कहा "नफा होगा वह आपका होगा और घाटा होगा तो हम देंगे।" होनहार की बात इस सौदे में बैजनाथजी को हफ्ते भर बाद ही घर बैठे दो सौ रूपये के मुनाफे मिल गए। फिर तो बैजनाथजी शेयरों के कारबार में दिलचस्पी लेने लगे। भाग्य ने भी बैजनाथजी का भरपूर साथ दिया और तीन-चार वर्षों में ही बैजनाथजी ने कोई पाँच लाख रूपये कमा लिए। उन दिनों के पाँच लाख रूपये आज के पाँच करोड़ जितना महत्व रखते है। इस कमाई से बाजार में बैजनाथजी की धाक जम गई। वे एक कुशल और योग्य व्यापारी की तरह अपना कारबार बढ़ाने लगे। आमदनी के साथ ही साथ बैजनाथजी के रहन-सहन का स्तर भी ऊँचा होने लगा। घोड़ागाड़ी खरीदी गई, सार्वजनिक कार्यों और समारोहों में जाते तो पूरे सेठाई ठाट-बाट से जाते थे। कीमती कपड़ों से बनी काले रंग की अचकन, शेरवानी, पगड़ी और एक-आध सोने का जेवर शरीर की शोभा बढ़ाते। संस्थाओं में दान देने की प्रवृत्ति से चारों ओर इनके सम्मान में वृद्धि हुई।

भारतीय व्यापारियों का प्रमुख केन्द्र बड़ाबाजार की सीमा भी उन दिनों छोटी थी। पूर्व में चितपुर रोड, पश्चिम में स्ट्राण्ड रोड, उत्तर में विवेकानन्द रोड और दक्षिण में कैनिंग स्ट्रीट तक ही बड़ाबाजार का फैलाव था। अधिकांश लोग इसी क्षेत्र में निवास करते थे। इनमें बगाली, मारवाड़ी और देशवाली सभी समाज के लोग रहते थे। आजकल जैसे सम्पन्न लोग न्यू अलीपुर, टालीगंज या

बालीगंज क्षेत्र में आकर रहते हैं, उसी प्रकार उन दिनों सेठ लोग चितपुर पारकर नये रास्ते, सेन्ट्रल एवेन्यू, जिसका नाम आज चित्तरंजन एवेन्यू है, तक आकर रहने लगे थे। उस समय के सेठ जाजोदिया, चोखानी, बाजोरिया, सरावगी आदि हरिसन रोड (जिसका नाम आज महात्मा गांधी रोड है) में और जकरिया स्ट्रीट में बिड़ला राजा बलदेवदास के नाम से मकान बनाकर रहते थे। सेन्ट्रल एवेन्यू में मारवाड़ियों ने विशुद्धानन्द विद्यालय की स्थापना की जो आज भी बड़ाबाजार का प्रमुख शिक्षण केन्द्र समझा जाता है। उत्तर में विवेकानन्द रोड के बाद बंगाली जमींदारों की कोठिया थीं जिनमें काफी जगह रहा करती थीं। उनमें टैगोर, मल्लिक, सील आदि रहते थे। दक्षिण में क्लाइव स्ट्रीट (जिसका नाम आजकल नेताजी सुभाष रोड है) में अग्रेजों की आफिसें थीं। फिर डलहौसी, धर्मतल्ला, चौरंगी, पार्क स्ट्रीट आदि में अग्रेजो की दूकानें और निवास स्थान थे। निवास स्थान के साथ काफी बढी जमीनें रहा करती थी।

अच्छी कमाई होने के कारण बैजनाथजी भी सेठों की गिनती में आने लगे थे उन्होने फतेपुर के ही श्री बिलासरायजी चौधुरी, श्री श्रीलालजी चमड़िया आदि प्रसिद्ध सेठों से अपना सम्पर्क बढ़ाया, साथ ही अपने काम को बडा रूप देने का प्रयत्न किया। गद्दियों मे काम-काज देर रात गए तक होता था और दूकाने भी प्राय: देर तक खुली रहती थीं। बैजनाथजी ने—सूतापट्टी के पीछे जिस रास्ते का नाम आरमेनियन स्ट्रीट था—इनमे ३३ नम्बर मकान में रहने के लिए कमरा लिया। इस कोठी का नाम जीरा कोठी है, क्योंकि पास में ही अमरतल्ला स्ट्रीट में किराने के व्यापारी रहते है। इस मकान के गोदामों में व्यापारी जीरे का स्टाक बहुत रखा करते थे और बराबर वजन हुआ करता था। मकान में घुसते ही जीरे की खुशबू आने लगती थी। यह मकान अब भी है। वहीं सोने-चांदी के बरतनों और गहनों की एक बड़ी दूकान भी थी। एक दिन रात को उस दूकान में डकैती हो गई। कुछ सशस्त्र डाकुओं ने दूकान पर हमला किया और माल लूटकर ले गए। बड़ाबाजार की व्यापारिक गतिविधि पर इस घटना का बहुत व्यापक प्रभाव पड़ा। सतर्कता की दृष्टि से रात को रुपयों का लेनदेन करने में लोग परहेज करने लगे। दूकानें भी ग्यारह बजे से पहले बन्द होने लगीं। अत्यधिक परिश्रम और खानपान की गड़बड़ी के कारण बैजनाथजी को बवासीर की तकलीफ रहा करती थीं। कैलाश घोष उनदिनों कलकत्ते के बहुत बड़े अनुभवी और योग्य डाक्टर समझे जाते थे। डाक्टर साहब स्वयं बड़े मोटे थे। किसी के यहाँ

आना-जाना कम ही करते थे। एक तल्ले या दो तल्ले पर रोगी देखना होता तो उन्हें कुर्सी पर बैठाकर चार या छः आदमी कुर्सी पकड़कर ऊपर ले जाते। फीस भी घर आने का सोलह रुपये लिया करते थे जो उस समय बहुत ऊँची समझी जाती थी। बैजनाथजी के इलाज के लिए डा० कैलाश घोष को बुलाया गया। बैजनाथजी की हालत देखकर डाक्टर ने कहा कि इनकी तो हालत बहुत खराब है, आपरेशन करना होगा। मुझे बुलाने से व्यर्थ ही आपके बत्तीस रुपये खर्च हो जायेंगे। सब एक दूसरे का मुँह देखने लगे क्योंकि सोलह रुपये ही निकाल रखे थे पर अब उन्हें बत्तीस रुपये फीस देनी पड़ी। उन्हीं की सलाह से फिर बैजनाथजी ने अपने मस्से की शल्य चिकित्सा भी करवाई।

रुपयों की सहूलियत होने के कारण उन्होंने धीरे-धीरे कई नवीन धन्धे प्रारम्भ किए। कलकत्ते में उन दिनों तालाबों की भरती, सड़कों, भवनों और पुलों के निर्माण का कार्य बहुत व्यापक स्तर पर हो रहा था। ठेके का काम करने वाले राँची के कुछ परिचित गुजराती लोगों को काम में लगाकर बैजनाथजी ने भी कलकत्ते में काम प्रारम्भ किया। कुछ जमीनें खरीदी तथा कुछ जमीन लीज पर भी ली।

सार्वजनिक कार्यों में रुचि रहने के कारण वे कलकत्ते की वैश्य सभा नामक सस्था से सम्बन्धित हो गए और आगे चलकर उसके मन्त्री बने और उन्होंने उसके नाम में भी सुधार कर मर्चेण्ट कमेटी रखा। मर्चेण्ट के मन्त्रित्व का भार उन्होंने ३० वर्ष तक सँभाला। कमेटी की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर अपने पास से उसे कर्ज स्वरूप रुपये दे देते थे। आफिस की जगह न होने पर अपनी गद्दी मे ही उसका कार्यालय रखा करते थे।

उन दिनों हासानन्द नाम के एक आर्य समाजी काले कपड़े पहन गोद में बछड़ा लेकर कोठी-कोठी घूमा करते थे और गायों पर होने वाले भयंकर अत्याचार की करुण कहानी लोगों को सुनाते थे। उनकी बातें सुनकर अनेक लोगों की आंखों में आंसू आ जाते थे। बैजनाथजी पर भी इस प्रचार का गहरा असर पड़ा। उन्होंने अपनी सामर्थ्य के अनुसार गायों की प्राण-रक्षा करने का प्रण किया।

उन दिनों कसाईखाने में कटने आने वाली एक गाय का मूल्य चालीस रुपये होता था। बैजनाथजी दूध देने वाली गायों को चालीस-चालीस रुपयों में खरीद लेते थे। इन गायों को वे रांची या कलकत्ते के लोगों को लागत मूल्य में दे देते थे जिससे वे उनका हजारों कर दूध पीते रहें। लेकिन असख्य गाये अबाध रूप से कटती थीं और अपने सीमित सामर्थ्य के अनुसार सभी की रक्षा कर पाना उनके लिए सम्भव नही था। बैजनाथजी ने निर्णय लिया कि वे कलकत्ते की गायों का दूध, दही और उससे बनी मिठाई नहीं खाएँगे, यदि खाएँगे तो वह अपनी हो गाय हो या कलकत्ता पिंजरापोल की गाय हो जो दूध देना बन्द करने पर कसाई के यहाँ कटने को नही भेजी जाए। यह प्रतिज्ञा उन्होंने आजीवन निभाई।

बैजनाथजी की गो-भक्ति को उस समय और भी गहरा आघात लगा जब उन्हे मालूम हुआ कि कुछ व्यापारी मुनाफा कमाने के लिए घी में चर्बी मिलाकर घी बिक्री करते है। इस घृणित व्यापार के विरुद्ध उस समय जनता में एक प्रचण्ड आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था। बैजनाथजी ने चर्बी-विरोधी आन्दोलन में खुलकर भाग लिया। कुछ व्यापारियो का माल पकड़ा गया और उनको सजा भी मिली। इस प्रकार इस व्यापार का अन्त हुआ। इस प्रकार के साहसिक और लोक कल्याणकारी कार्यों के कारण बैजनाथजी की लोकप्रियता बराबर बनी रही। जब घर मे मोटर गाडी खरीदने की बात चली तो बैजनाथजी ने शर्त रखी कि जितनी गाडियाँ खरीदोगे उतनी गाये रखनी पड़ेगी। गोशाला का भी प्रबन्ध करना होगा। गो-रक्षा के बारे मे ऐसी रचनात्मक दृष्टि आज कहाँ दिखाई देती है।

बैजनाथजी मूलत: धार्मिक प्रवृत्ति वाले आस्थावान व्यक्ति थे। यही कारण था कि वे प्रतिकूल परिस्थितियों और झंझावातो में भी शान्त और स्थिर रहकर कार्य करते रहते थे। प्रतिदिन मन्दिर जाना और पूजा-पाठ करना उनकी दिनचर्या का आवश्यक अग था। धार्मिक प्रचार के प्रति रुचि होते हुए भी वे नए मन्दिरों का निर्माण और मूर्तियों की स्थापना के पक्षधर नहीं थे। उनका विचार था कि जो भी कार्य हो वह व्यवस्थित रूप से होना चाहिए। पुराने मन्दिरों की उपेक्षा और उनकी जीर्ण-शीर्ण अवस्था देखकर उन्हें तकलीफ होती थी। अत: उन्होंने पुराने मन्दिरों और चैत्यालयों का जीर्णोद्धार करवाने और

उन्हें सुव्यवस्थित करने की ओर ही विशेष ध्यान दिया। यात्रियों की सुविधा के लिए धर्मशालाओं के निर्माण कार्य में उनका बराबर योगदान रहा।

बच्चों को प्रारम्भ से ही धार्मिक संस्कार मिलते रहे इसके लिए वे पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था पर जोर देते थे। उन्होंने प्रयत्नपूर्वक जगह-जगह पाठशालाएँ खुलवाईं जहाँ बच्चों को जैन-धर्म की शिक्षा दी जाती थी। लड़कों के साथ-साथ वे लड़कियों की शिक्षा के प्रति भी जागरूक रहे। वे इस तथ्य को भलीभाँति समझते थे कि लडके को शिक्षित करने का मतलब एक आदमी को शिक्षित करना है। लेकिन लड़की की शिक्षा का मतलब पूरे एक परिवार को संस्कारित करना है। इसलिए वे महिलाओं को भी शिक्षा के प्रति प्रेरित करते थे।

राजनीति में बैजनाथजी की विशेष रुचि नहीं थी। फिर भी, गाँधीजी के व्यक्तित्व और उनके नेतृत्व में चलने वाले स्वातन्त्र्य आन्दोलन के प्रति उनका आकर्षण था। देश की बहुमुखी उन्नति और समाज के मुक्त विकास के लिए वे स्वाधीनता का होना आवश्यक समझते थे। अपना देश और अपनी वस्तुओं के प्रति उनके मन में गहरा सम्मान था। यही कारण था कि आगे चलकर उन्होने सेठाई शान-शौकत वाला पहनावा छोडकर खद्दर पहनना प्रारम्भ कर दिया था। आजादी की लडाई में गाधीजी कमजोर नहीं हों इसी भावना से वे समय-समय पर कांग्रेस को यथाशक्ति आर्थिक मदद भी पहुंचाते थे। एक बार तो वे अपनी धर्मपत्नी जानकी देवी की सोने की तगड़ी (करधनी) उतार कर गांधीजी को दे आए थे।

उसी समय उनका परिचय श्री मूलचन्दजी अग्रवाल से हुआ जिन्होंने कलकत्ते की महाविद्यालय की अध्यापन छोड़कर "विश्वमित्र" नामक पत्र निकालना प्रारम्भ किया। यह परिचय इनका बहुत वर्षों तक रहा क्योंकि दोनों सुधारक विचारों के थे। वस्तुतः बैजनाथजी ने कारबार की दृष्टि से कलकत्ते में अनेक पापड बेले। पर जो कमाई उनको शेयरों के कारबार में हुई वैसी और किसी काम में नहीं हुई।

बैजनाथजी की माताजी राँची में रहा करती थीं और बीमार रहती। जगन्नाथजी राँची में, मूँगराजजी बुण्डू में। वे प्रायः बैजनाथजी से कहा करतीं

थीं कि तुम तो कलकत्ते रहते हो और मेरे शरीर का कोई भरोसा नहीं कब धोखा दे जाए। बैजनाथजी के हृदय में गहरी मातृ-भक्ति थी। उन्होंने माताजी को आश्वासन दिया कि समय आने पर मैं हवाई जहाज से उड़कर तुम्हारे पास आ जाऊँगा। यद्यपि उस समय हवाई जहाज की बात सुनी जाती थी पर भारत वर्ष में उनके प्रचार की बात तो दूर, दर्शन तक नहीं होते थे। संयोग की बात है मूँगराजजी, जगन्नाथजी तथा परिवार के कुछ लोग दक्षिण की तीर्थ यात्रा पर एक-डेढ़ महीने के लिए चले गए, कोई लड़का राँची में उनके पास नहीं था। अचानक धन्नी देवी का स्वास्थ्य अधिक खराब हुआ। माताजी की गंभीर बीमारी का समाचार जिस दिन बैजनाथजी को कलकत्ते में मिला वे शीघ्र से शीघ्र राँची पहुँचने के लिए बेताब हो उठे। यद्यपि अंग्रेजों के उस युग में रेलगाड़ी का आना-जाना सदा नियमानुसार होता था। पर होनहार की बात, उस दिन रेलगाडी की हड़ताल हो गई। कलकत्ते के इतिहास में यह पहली और अनहोनी घटना थी। मोटर गाड़ियाँ भी उन दिनों गिने-चुने लोग ही रखा करते थे। बड़ी मुश्किल से उन्होने अपने एक मित्र की गाड़ी मांगकर राँची जाने का प्रबन्ध किया। उन दिनों न तो आजकल की तरह बढियाँ सड़क थी, न ही जगह-जगह पेट्रोल पम्प थे और न रास्ते में कहीं गाड़ी खराब होने पर मरम्मत करने या पुर्जे बदलने का साधन था। बैजनाथजी ने रवाना होने से पहले अपने साथ पूरा पेट्रोल, नये टायर और कुछ आवश्यक पुर्जे और मरम्मत मे काम आने वाले औजार भी साथ ले लिए थे। इस प्रकार वे पूरी तैयारी के साथ रात को दस बजे कलकत्ते से राँची के लिए चल पड़े। घने जंगल, ऊबड़ खाबड़ रास्ते और नदी को पार कर राँची पहुँचना बहुत विकट काम था। फिर भी बैजनाथजी का आत्मबल ऊँचा था और भगवान की कृपा से वे दूसरे दिन दोपहर के समय यानी सोलह घटे की यात्रा कर राँची पहुंच गए। बैजनाथजी की माताजी ने जब देखा कि बैजनाथ पहुँच गया है तो उन्हें आत्मिक सतोष हुआ। इस प्रकार अपनी माताजी की अन्तिम इच्छा पूरी कर पाने का आत्म-संतोष बैजनाथजी को भी जीवन भर बना रहा।

आर्थिक समृद्धि होने पर भी बैजनाथजी की सेवा भावना पर किसी प्रकार का असर नहीं हुआ। वे बड़ी विनम्रतापूर्वक संस्थाओं में अपना योगदान देते रहे।

काम करने का बैजनाथजी का अपना विशिष्ट तरीका था। चन्दे के लिए जब वे किसी से आग्रह करते तो साथ-साथ यह भी कहते थे—"भाई साहब, मैं तो लड्डू खाने वाला हूं और आपको भी जबर्दस्ती लड्डू खिलाने आया हूं। (यानी मैं जो धार्मिक कार्य कर रहा हूं वह लड्डू खाना ही हुआ) आप जितने रूपये मेरी परोपकारी योजना में देंगे, उतने ही रूपये आपके पसन्द की कोई परोपकारी योजना हो तो मेरे नाम से नि.सकोच लिख दें और मुझसे मँगा लें।" ऐसी स्थिति में दान देने वाले व्यक्ति के लिए इन्कार करना मुश्किल हो जाता था। 'पहले करो फिर कहो' वाले सिद्धान्त का पालन करने के कारण वे इस कार्य में सदा सफल रहा करते थे। अपनी इस दान-वृत्ति और विशिष्ट शैली के कारण उन्होंने अपने जीवन काल में अनेक संस्थाओं को उपकृत किया।

रुचि विविधता का नाम है बैजनाथजी। वे न केवल धार्मिक और सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित थे बल्कि अपने मनोरंजन और मनोविनोद के प्रति भी सजग और संजिदा थे। बगला थियेटर देखने का उनको बेहद शौक था। राष्ट्रकवि माधोजी शुक्ल के साथ उनकी गहरी आत्मीयता थी। माधोजी शुक्ल उन दिनों कलकत्ते में ही इलाहाबाद बैंक में नौकरी करते थे। कवि हृदय और साहित्यकार होने के कारण वे भी बंगला मच के प्रति आकर्षित थे। बैजनाथजी उनको साथ लेकर ही थियेटर देखने जाते थे। फिर माधोजी शुक्ल, भोलानाथ बर्मन तथा कई राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं से मिलकर हिन्दी नाट्य परिषद नामक संस्था स्थापित की। उसमें वे 'राणा प्रताप' आदि देशभक्तिपूर्ण नाटक दिया करते थे। थियेटर में पहनने की पोशाक भी मखमल की जगह शुद्ध खादी की बनवाते थे। बैजमाथजी ऐसी संस्थाओं को सहयोग बराबर देते पर उन्होंने स्वयं उसमें अभिनय कभी नहीं किया।

बैजनाथजी जीव-हिंसा को पाप समझते थे। इसलिए चमड़े की वस्तुओं का व्यवहार कभी नहीं करते थे। वे लोगों को चमड़े के जूते पहनने से भी मना किया करते। उस जमाने में लोग घर के बाहर खुले सिर नहीं रहा करते थे। पगड़ी या टोपी आदि में से कुछ अवश्य पहनते थे। खासकर मन्दिर में खुले सिर जाने का नियम नहीं था। इससे लाभ भी था। सिर की वेशभूषा तथा माथ का तिलक देखकर मालूम हो जाता था कि कौन ख्याल किस प्रान्त का है, कौन-सा धर्म मानता है, क्या काम करता है। आजकल की तरह पैंट-बुशर्ट का चलन नहीं था।

बैजनाथजी सुबह के समय मन्दिर में पूजा-पाठ में बिताते थे जब किसी जैन को टोपी में चमड़ा लगा देखते तो उसे बदलकर रेक्सिन या प्लास्टिक लगाने को कहते।

बैजनाथजी जब किसी को पत्र भी लिखते तो प्रायः जवाबी कार्ड ही लिखते थे। इससे उत्तर देने वाले को कोई आलस्य और असुविधा नहीं होती थी और काम भी तेज गति से पूरा हो जाता था। व्यवहार कुशलता के इन्हीं गुणों के कारण वे सबको साथ लेकर चलने में समर्थ रहे। समाज का ऋण वे सदा स्वीकार करते थे और बदले में समाज-सेवा के हर कार्य में योगदान के लिए तत्पर रहते थे। परोपकार के लिए कष्ट उठाने में उन्हें सदा आत्मिक संतोष और सुख मिलता था।

बड़े व्यापारियों के सम्पर्क में आकर बैजनाथजी ने जमीनें खरीदीं, मकान और गोदाम लीज पर लिए, लोहे और सीमेंट का कारबार किया। एक ओर वे अपने व्यापार को बहुमुखी बनाने का जीतोड़ परिश्रम करते और दूसरी ओर दान-पुण्य और धार्मिक कार्यों में भी लगे रहते। इस प्रकार दोहरा दायित्व ग्रहण करते हुए बैजनाथजी ने चार-पाँच वर्षों में प्रचुर धन कमाया। बाजार में अपनी साख जमाई और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की। फतेहद्वारी कोठी के मालिक पंजाबी थे वे पंजाब से आकर फतेहद्वारी कोठी मे रहने वाले व्यापारियों के सामने अपनी योजना रखी कि हम इस जीर्ण-शीर्ण कोठी कों नये ढंग से बना रहे है और आपलोगों को जितना स्थान अभी है बनने के बाद उतनी जगह उसी भाड़े में दे देंगे। परन्तु साल-दो साल आपलोगों को दूसरी जगह बैठकर व्यापार करने का कष्ट करना होगा। उस समय के लोग परिस्थिति को समझकर मकान मालिक को सहयोग देने की भावना रखते थे। सभी लोग अपने-अपने लिए स्थान खोजने लगे। बैजनाथजी और कुछ व्यापारियों को सूता पट्टी के उत्तर तरफ में पास ही १९९ हरिसन रोड में जगह मिली जिसका नाम भोलाराम कटरा था। इसके मालिक भोलारामजी चूड़ीवाला विचित्र व्यक्ति थे, स्वयं साधारण कपड़े पहने गेट पर दरवान के पास बैठे रहा करते थे। कड़े स्वभाव के थे। उनके कड़े व्यवहार के कारण कोई भी व्यक्ति उस कटरे में रहना पसन्द नहीं करता था। उन्होंने अपनी कड़ाई का नमूना तो एक बार टेलीफोन कम्पनी, जो उस समय सरकारी न होकर अंग्रेजों की लिमिटेड कम्पनी थी, उसे भी दिखाया। यानी उस कटरे के कुछ

व्यापारियों ने जब अपने टेलीफोन का कनेक्शन हटाया तो टेलीफोन कम्पनी के कर्मचारी आकर तार खोलकर ले जाने लगे। जिस पर भोलारामजी ने आपत्ति की और तार नहीं ले जाने दिया। फलस्वरूप उस समय की टेलीफोन कम्पनी ने १९९ नम्बर हरिसन रोड की कोठी को ब्लैक लिस्ट में चढ़ाकर भविष्य में उस कोठी में किसी को टेलीफोन कनेक्शन नहीं देने का निर्णय ले लिया। आजकल उस कोठी का नाम सुराना कटरा है।

बैजनाथजी की माता का स्वर्गवास हो गया था। उन्होंने अपनी माताजी का तैलचित्र बनवाने की सोची। व्यापारी बुद्धि होने के कारण उन्होंने एक कालेज से निकले हुए कलाकार, जिसका नाम गोपीनाथ पाल था, से बातचीत की और उससे कहा कि तुम हमारी गद्दी में ही बैठकर माताजी के एक ही तरह के ६ चित्र बना दो। हम तुम्हें कैनवास, फ्रेम, रंग आदि की व्यवस्था कर देंगे। इस तरह बड़े तैल चित्र केवल सौ-सौ रूपये में बनवाए। गोपीनाथ पाल जब गद्दी में आकर चित्रकारी किया करते थे, धर्मा उनके प्रति आकर्षित हुआ। और श्री पाल को अपनी स्कूल में की हुई पेंसिल की चित्रकारी दिखलाई। गोपीनाथ पाल भी उसे थोड़ा शिक्षण देने लगे और धर्मा पेंसिल से चित्रकारी करने लगा। इसी बीच बैजनाथजी के एक मित्र जो चित्रकार भी थे और कलकत्ते में शेयरों का व्यापार करते थे उनसे मिलने आए। बैजनाथजी ने उन्हें धर्मा के बनाए हुए चित्र दिखाए। वे देखकर प्रसन्न हुए पर साथ ही उन्होंने कहा कि तुम्हारे एक ही लड़का है यदि वह चित्रकार बन गया तो तुम्हारा व्यापार कौन सभालेगा। इस तरह धर्मा का चित्रकारी का शौक वहीं बन्द कर दिया गया।

फतेहद्वारी कोठी में ही जगन्नाथजी केड़िया रहा करते थे जिनका अपना मकान, १७३ हरिसन रोड, जनानी बाड़ी था और वह भी जीर्ण-शीर्ण था और बहुत-सा खाली था। उन्हें भाड़े से बहुत थोड़ी आमदनी थी। संयोग से उसी समय सामने फुट पर १५६ नम्बर हरिसन रोड में सुराना ने नई कोठी बनाई और उस समय एक-एक दूकान का भाड़ा दो-दो सौ रूपये आया जो बहुत समझा जाता था। जगन्नाथजी ने भी अपना मकान तोड़कर नया बनाने का निर्णय लिया और एक तल्ले, दो तल्ले के लिए फतेहद्वारी कोठी के परिचित व्यापारियों को राजी किया कि मकान बनने पर वे उसमें आ जाएँगे क्योंकि उस जमाने में

लोग सूतापट्टी छोड़कर दूर जाना कम पसन्द करते थे। उस समय १७३ नम्बर में जाने का रास्ता शम्भू मल्लिक लेन से था। केड़ियाजी ने अपने मकान के पूरब की ओर जो थोड़ी जगह थी, जैसा कि दो मकानों के बीच रखने का नियम है, उसमें कार्पोरेशन की तरफ से पेशाबघर बना हुआ था। जगन्नाथजी ने कार्पोरेशन वालों को कुछ ले-देकर पेशाब घर तुड़वाया और कोठी में जाने का रास्ता बनवाया। फलस्वरूप उस कोठी का नाम मूत कोठी हो गया। उसमे एक तल्ले पर आधा कमरा बैजनाथजी ने भाड़े पर ले लिया।

संयोग की बात है सुख और समृद्धि का यह दौर बहुत लम्बा नहीं चला। शेयरों के व्यापार से धन कमाकर बैजनाथजी साधारण व्यापारी से धनवान बने थे, उसी काम में भयंकर घाटा लगा। घाटा इतना अकस्मात और बड़ा था कि बैजनाथजी को संभलने का भी मौका नही मिला। दो-तीन महीने में लगातार शेयरों के दाम गिरते चले गए।

कहा जाता है कि मनुष्य का भाग्य जब प्रतिकूल हो जाता है तो सारी विपत्तियाँ साथ आती हैं। उसी समय बंगाल में रेन्टकन्ट्रोल जारी हो जाने के कारण लीज पर लिए मकानों का उचित किराया नहीं मिलने के कारण उसमें भी घाटा लगा। गोदामों में नमी होने के कारण सीमेंट पत्थर बन गया। जिस जमीन पर लोहा लक्कड़ का सामान रखा था उसे जल्दी ही खाली कर देने का आश्वासन देकर जमीनें बेंची गईं। लेकिन जब माल उठाने के लिए जमीन के खरीददार के पास गए तो खरीददारों ने कह दिया कि जमीन तो माल सहित हमने ली थी। एक-आध बाहर के व्यापारियों ने अपने खातो में झूठा रुपया नाम में लिख कर अपने शहर मे नालिश कर एकतरफा डिग्री कराई। बैजनाथजी को उसका रुपया देना पड़ा। इस प्रकार इमानदार और सज्जन स्वभाव वाले बैजनाथजी पर चारों ओर से विपत्तियों के पहाड़ टूट-टूटकर गिरने लगे। बैजनाथजी पर करीब चार-पांच लाख रुपयों की देनदारी रह गई। बैजनाथजी के लिए यह समय काफी कठिन अग्नि परीक्षा का रहा। इस भयानक घाटे के कारण बैजनाथ जी के भाई लोग नाराज रहने लगे पर उनके सामने बोलने का साहस किसी को न था।

प्रतिकूल परिस्थितियों के चक्रावात में भी बैजनाथजी ने अपना मानसिक संतुलन नहीं बिगड़ने दिया। उन्होंने धीरज और आत्म-विश्वास के साथ सारी

स्थिति का मुकाबला किया। उनको लगा कि भगवान उनके भीतर के स्वर्ण को घाटे की आग में तपा कर खरा सिद्ध करना चाहता है। उन्होंने धीरे-धीरे सबको कर्जा चुका देने का आश्वासन दिया और कलकत्ता छोड़कर रांँची चले गए।

बैजनाथजी के स्वर्गीय भ्राता केदारनाथजी की विधवा पत्नी जयदेई की इच्छा अपने पति के नाम से जैन-मन्दिर बनवाने की थी। उन्होंने अपना संकल्प राँची के जैन समाज के सामने रखा और जितने रुपये मन्दिर के निमित्त रखे थे समाजवालों को सौंप दिए। मन्दिर बनवाने के लिए जमीन भी केदारनाथजी की खरीदी हुई थी वह दे दी। मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ भी हो गया। पूर्व योजना और सूझबूझ की कमी के कारण मन्दिर बनकर पूरा हो, उसके पहले ही सारा रुपया खर्च हो गया। समाज वालों ने समाज से चन्दा उठा कर मन्दिर को पूरा करवाने का विचार किया। पर, ऐसा करने से मन्दिर केदारनाथजी के नाम से तो बनता नही। उस समय तक बैजनाथजी कलकत्ते से राँची आ गए थे। बैजनाथजी ने जब सारी बात सुनी तो कहा कि जो रुपये लगेंगे वे हमारे फार्म के लगेंगे और मन्दिर केदारनाथजी के नाम से ही बनेगा। खस्ता हालत होते हुए भी बैजनाथजी ने अपनी भाभी के इच्छानुसार अपने भाईजी स्वर्गीय केदारनाथजी की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए मन्दिर बनवाया जो आज भी है और दर्शनीय है और उस अंचल का सबसे बढ़ियाँ मन्दिर माना जाता है।

बैजनाथजी के एक घनिष्ट मित्र शीतल प्रसादजी जैन कलकत्ते मे ही रहते थे। शीतल प्रसादजी पढ़े-लिखे विचारवान और सुधारवादी विचारों के व्यक्ति थे। समाज में उनका बहुत आदर और सम्मान था। सयोगवश कलकत्ता में प्लेग का रोग फैल गया। शीतल प्रसादजी के माता-पिता, उनकी धर्मपत्नी, एक भाई और बहन सभी इस महामारी की चपेट में आकर एक महीने के भीतर ही स्वर्गवासी हो गए। परिवार के पाँच-पाँच सदस्यों की सामूहिक मृत्यु इस प्रकार होने पर शीतल प्रसादजी के हृदय पर गहरा आघात लगा। संसार-सागर की लहरों में थपेड़े खाने के लिए वे अकेले ही पीछे छूट गए थे। इस मर्मान्तिक घटना से उन्हें संसार की असारता का भान हो गया। हृदय में वैराग्य उत्पन्न हुआ और उन्होंने गेरुआ वस्त्र धारण कर लिया और ब्रह्मचारी हो गये। अब वे अपना समय अध्ययन, धर्म-साधना और सामाजिक सुधार के कामों में लगाने लगे। 'जैनमित्र'' नाम की साप्ताहिक पत्रिका में, जो सुधारक विचारों का था,

अपने विचारों का प्रचार करने लगे। बैजनाथजी ने रांची जाने के बाद ब्रह्मचारी शीतल प्रसादजी को रांची बुलाया। उन दिनों बिहार में पुरूलिया के पास बंगला भाषी रहते थे जो अपने आपको सराक कहते थे। ये लोग हिंसा नहीं करते थे। किसी भी खाने की चीज को चाकू से काटने को कहा जाता तो उसे वे वध-क्रिया समझकर खाना निषिद्ध समझते थे। वे कुछ पुरानी मूर्तियों को अपना देवता समझकर सिन्दूर लगाकर पूजा किया करते थे। बैजनाथजी शीतल प्रसादजी को साथ लेकर उस क्षेत्र में गए। छानबीन करने पर पता लगा कि श्रावक शब्द का अपभ्रंश जिस प्रकार राजस्थान में सरावगी हुआ उसी तरह बंगाल में और बिहार में सराक हो गया। जिन मूर्तियों की वे देवता के रूप में पूजा करते थे उनके ऊपर लगे सिन्दूर की सफाई करवाने से वे भगवान पार्श्वनाथ और महाबीर की मूर्तियां ही निकलीं। बैजनाथजी ने अज्ञान के अंधकार में भटकते हुए सराक-जाति के उत्थान के लिए "प्राचीन श्रावकों-धारिणी सभा" की स्थापना की। इसी संस्था के माध्यम से शीतल प्रसादजी ने सराकों में शिक्षा और धर्म प्रचार की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य किया।

बैजनाथजी के एकमात्र पुत्र धर्मा जब आठ वर्ष का था तभी उनकी सगाई मण्डावा निवासी श्री बस्तीरामजी सोंथालिया की तीन वर्षीय पुत्री ज्ञानवती के साथ कर दी गई थी। उन दिनों सगाई सम्बन्ध लड़के-लड़की के माता-पिता ही तय कर दिया करते थे। धन की अपेक्षा बड़े परिवार के साथ सम्बन्ध तय करना अच्छा समझा जाता था। बैजनाथजी का परिवार काफी बड़ा था। सगाई के समय बस्तीरामजी ने बड़ा परिवार देखकर सम्बन्ध कर दिया था। इधर समय ने पल्टा खाया और बैजनाथजी को रुपयों की कमाई हुई। उन्होंने बस्तीरामजी से पाँच-छः वर्ष पहले किया, सम्बन्ध नहीं छोड़ा। फिर बैजनाथजी को शेयरों में घाटा लगा, तब भी बस्तीरामजी ने सम्बन्ध नहीं छोड़ा। एकबार सम्बन्ध तय कर लेने के बाद हर स्थिति में निभाना उस समय लोग अपना धर्म समझते थे। अब धर्मा सोलह वर्षों का हो चुका था। अतः उनके विवाह की तैयारी करनी पड़ी।

धर्मचन्दजी प्रारम्भ से ही क्रान्तिकारी विचारों वाले युवक थे। उन्होंने लड़की को देख लेने की इच्छा प्रकट की, लेकिन बैजनाथजी ने उन्हें और घरवालों को यह

कहकर टाल दिया की लड़की कोई साग-सब्जी नहीं है कि उसे दिखाई जा सके। पिता के सामने धर्मचन्दजी को चुप हो जाना पड़ा। अत्यन्त सादगीपूर्ण समारोह के साथ धर्मचन्दजी का विवाह रांची में सम्पन्न हो गया। लड़की वाले भी विवाह के समय मण्डावा से रांची में ही आ गये थे। धर्मचन्दजी कल्पनाशील और महत्वाकांक्षी युवक थे। वे जिस प्रकार सुन्दर और विचारशील पत्नी का स्वप्न देखा करते थे, ज्ञानवती उन्हें वैसी नहीं लगीं। साधारण सुन्दरता और धनवान घर का अहम वह साथ लेकर आई थी। फिर भी धर्मचन्दजी बड़े धीरज के साथ अपने विचारों के अनुकूल उसे ढालने का प्रयत्न करते रहे। पर्दा प्रथा और पारिवारिक मर्यादा के कारण पत्नी को साथ लेकर बाहर घूमना-फिरना या सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना सम्भव नही था। सम्पन्न घरानो के लाड़-प्यार में पली ज्ञानवती के लिए भी धर्मचन्दजी जैसे प्रगतिशील युवक की आकांक्षा को ठीक से समझ पाना और उनके साथ भावात्मक ताल-मेल बैठा पाना कठिन ही था। दोनो को पारिवारिक अनुशासन और मर्यादा में रहकर ही चलना पड़ता था।

बैजनाथजी करीब दो वर्ष रांची में रहे। इसी बीच उन्हें रांची के लिए टाटा आयरन स्टील कम्पनी की "डीलरशिप" मिल गई। जिसे उन्होंने फर्म "जोखीराम मूंगराज" के नाम से ही लिया। पर भाइयो ने जब डिपोजिट के रुपये देने से इन्कार किया और साथ ही "डीलरशिप" नही लेने के लिए कहा तो उन्होंने अपने उदार स्वभाव के हिसाब से भाइयों के सामने शर्त रखी कि कम्पनी को जो रुपये दिए जाएंगे वे मेरे खाते में नाम लिखकर दिए जाए गे, यदि उसमें घाटा हुआ तो मैं देनदार रहूंगा। पर यदि मुनाफा हुआ तो वे चारों भाइयों का होगा। ऐसी शर्त होने पर भाइयो को चुप रह जाना पड़ा और टाटा का रांची के लिए डीलरशिप ले लिया गया। टाटा कम्पनी के अफसरों ने बैजनाथजी के ईमानदार और सरल स्वभाव को देखकर कई तरह का माल पूरे हिन्दुस्तान में बेचने के लिए अनुमति दी। टाटा का आफिस कलकत्ते में था इसलिए बैजनाथजी कार्य की सुविधा के लिए कलकत्ते आ गए। कलकत्ते में १७३ नम्बर, हरिसन रोड की कोठी में आकर कार्य आरम्भ कर दिया और रहने के लिए बगल में ही ९ नम्बर शम्भू मल्लिक लेन में रहने के लिए दो तल्ले पर चार कमरे भाड़े पर ले लिए।

धीरे-धीरे काम चमकने लगा और क्लर्क आदि के बैठने के लिए जगह की आवश्यकता हुई। फलस्वरूप दो तल्ले का कमरा जो खाली हुआ था भाड़े पर लिया गया। संयोग की बात है कि इस कमरे में मकान बनने के बाद पांच-छः वर्षों में कई करोड़पति और लखपति फर्म आए उन्हें घाटा लगा और उन्हें काम बन्द कर इस कमरे को छोड़ना पड़ा। बैजनाथजी का ध्यान लोगों ने इस ओर आकर्षित किया पर वे अन्धविश्वासी नहीं थे, इसलिए उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और उस कमरे में आफिस रखकर प्रचुर धन कमाया।

बीसवीं शताब्दि के आरम्भ में स्त्रियों में घूंघट का काफी प्रचार था। यह किवदन्ती थी कि "ग्यारह वर्ष भवेत गोरी" इसलिए लोग ग्यारह वर्ष की आयु के पहले ही लड़कियों के हाथ पीले कर देना चाहते थे। बैजनाथजी को एक ही पुत्री भगवान देवी थी। रांची में ही अपने पड़ोस में मोदी परिवार रहता था जो बैजनाथजी की तरह ही कई भाइयों का सम्मिलित बड़ा परिवार था। जगन्नाथजी के पाँच वर्षीय पुत्र निरजनलालजी से भगवान देवी का सम्बन्ध तो जब वह दो वर्ष की थी तभी पक्का कर दिया गया था। पर विवाह, पुत्री ग्यारह और जँवाई राजा पन्द्रह के हुए, तब हुआ। विवाह के बाद भगवान देवी रांची में ही रहीं। निरंजनलालजी को छोटी उम्र में ही चीनी की बीमारी हो गई थी और वे स्वर्ग सिधार गए। उन्हे केवल एक लड़की हुई। भगवान देवी १९४७ में पचास वर्ष की आयु में गुजरीं। उनका परिवार आगे नही बढ़ा।

उस समय विदेश यात्रा पानी के जहाज से होती थी। बम्बई से लन्दन पहुँचने में १७ दिन लगते थे। सप्ताह में एक जहाज आता जाता था जिसमें डाक की चिट्ठियां, पार्सल, सवारियां आदि होती थीं। यह एक दुःस्साहसिक कार्य माना जाता था। उस समय लोगों के दिमाग में गलत धारणा बैठी हुई थी कि विदेश के रहने वाले सभी मांसाहारी होते है। वहां अन्न, फल, दूध कुछ मिलता ही नहीं। इसलिए वहां जाने वाला अपने धर्म की रक्षा नही कर सकता। धर्मचन्दजी ने अपने पिता के सामने विदेश यात्रा की बात रखी तो पहले तो उन्होंने स्वीकृति नहीं दी पर अन्त में १९२९ में स्वयं बम्बई जाकर "रांची" नामक पानी के जहाज में बैठाकर आये फिर धर्मचन्दजी ने यूरप में सात महीने तक खूब भ्रमण किया और अध्ययन किया और अपने पिता को लिखा कि "इम्पीरियल एयरवेज" ने हवाई जहाज से साप्ताहिक लंदन से करांची तक डाक लाने-ले जाने की योजना

कमाई है और उसमें कुछ सीटें यात्रियों के लिए भी है। बैजनाथजी ने उन्हें हवाई जहाज से शीघ्र लौट आने की अनुमति दे दी और साथ ही रुपये भी भेज दिए। इस हवाई यात्रा से धर्मचन्दजी इतने प्रभावित हुए कि १९३१ में कलकत्ते में "बंगाल फ्लाईंग क्लब" नाम की संस्था खुली जो लोगों को हवाई जहाज उड़ाना सिखलाती थी वे उसके सदस्य हुए और हवाई जहाज चलाने का शिक्षण लेने लगे। बैजनाथजी ने उसमें कोई बाधा नही दी।

संयोग की बात है कि १९३४ में बिहार का भूकम्प हुआ। कलकत्ते से जैन सस्थाओं की ओर से वहाँ सेवा-कार्य करने के लिए जाने के लिए युवकों की खोज हुई तो बैजनाथजी ने धर्मचन्दजी को भाग लेने के लिए उत्साहित किया। धर्मचन्दजी वहाँ लगातार एक महीने रहे। वहाँ मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क बढ़ा।

सन् १९३५ में जब धर्मचन्दजी मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की रसायनशाला के मंत्री बने तो बैजनाथजी को प्रसन्नता ही हुई। वे धर्मचन्दजी को सदा सेवा और सहायता कार्यों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते रहते।

कमाई के साथ-साथ दान बृत्ति में भी विकास हुआ। बैजनाथजी ने पहले की अपेक्षा अधिक उदारता पूर्वक धार्मिक और सेवा-कार्यों में योगदान करने लगे। मद्रास में एक जीर्ण-शीर्ण जैन मन्दिर को उन्होने काफी अच्छे रूप में पुनर्निमित करवा दिया था। मन्दिर आज भी मद्रास में देखने लायक जैन मन्दिर है। बैजनाथजी नये मन्दिरों के निर्माण के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने अपना पूरा ध्यान पुराने मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाने और उनकी व्यवस्था ठीक करने में ही लगाया। जयपुर जाकर रहे तो उन्होने अपना अधिक समय वहां के मन्दिरों को मरम्मत करवाने में लगाया। उन्हें जब पता लगा कि नवलगढ़ के मन्दिर की अवस्था अच्छी नही है और वहां बहुत थोड़े सरावगी है, उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, वे वहां गए और उसका जीर्णोद्धार करवाया।

बैजनाथजी बराबर कहा करते थे "कम खाने और गम खाने" से आदमी स्वस्थ और सुखी रहता है। बैजनाथजी ने रांची से कलकत्ते आने के बाद अपने परिश्रम और व्यापारिक सूझ-बूझ के बल पर अच्छा पैसा कमाया। न केवल उन्होंने अपना ब्याज सहित कर्ज चुकाया बल्कि अपने व्यापार का बिस्तार भी

किया। रांची, बुण्डू, रामपुर, कानपुर, रामगढ़, दिल्ली, कोडरमा, जयपुर, मद्रास आदि करीब बारह स्थानों में उन्होंने दूकाने और आफिस खोल ली थी। वस्तुतः यह सारा विस्तार बैजनाथजी की सूझ-बूझ और कठिन मेहनत का फल ही था। उन्होंने भाइयों से अलग हो जाने का विचार रखा लेकिन भाइयों ने अलग होने वाली बात के प्रति कोई उत्साह नही दिखलाया। बैजनाथजी ने अधिक जोर दिया तो भाइयों ने बैजनाथजी के सामने शर्त रखी कि जो जमीन-जायदाद गत् तीस-चालीस वर्षों में खरीदी गई है उसके दाम जो बहियों में लिखे हुए हैं वहीं पकड़ेंगे और वह जायदाद हमलोग लेंगे। बैजनाथजी अलग होने पर तुले हुए थ उन्होंने भाइयों की शर्त सहर्ष स्वीकार कर ली। इस शर्त के अनुसार बैजनाथजी की अधिकांश जमीन-जायदाद, जो रांची के आस-पास ही थी, भाइयों के हिस्से में चली गई। यद्यपि तीस-चालीस वर्ष पहले खरीदी गई इन जमीनों का मूल्य अब कई गुना बढ़ गये थे। भाइयों से अलग होकर उन्होंने 'जोखीराम बैजनाथ" के नाम से अपना अलग फर्म कर लिया और दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति की।

मन की शान्ति और धर्म लाभ के लिए बैजनाथजी प्रसिद्ध जैन-तीर्थ पार्श्वनाथ गए। पहले पार्श्वनाथ स्टेशन का नाम इसरी था। इसरी स्थित आश्रम में बैजनाथजी काफी समय तक रहे। वहीं धर्म साधना में निमग्न रहते हुए अपने विचारों का प्रचार किया करते थे। वहां के एक मन्दिर का जीर्णोद्धार कर सुन्दर मन्दिर का रूप दिया और कुछ जमीन खरीद कर वहां के आश्रम को दान कर दी। वे सदा इस बात पर जोर देते रहे कि धर्मानुकूल आचरण ही मानव जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। अपना सांसारिक कर्तव्य निभाने और धन कमाने का विरोध उन्होंने कभी नहीं किया। उनका कहना था कि आदमी को पैसा कमाना चाहिए और उसे परोपकार और सद्कार्यों में भी खर्च करना चाहिए। समाज से केवल लेना और बदले में कुछ नहीं देना कृतघ्नता है। वे कहा करते थे :

"नौका में पानी बढ़ो, घर में आयो दाम।
दोनो हाथ उछालियों, यही सयानों काम॥"

कुछ समय बाद वे बनारस गए। वहाँ वे बनारस युनिवर्सिटी देखने गए। उन्होंने देखा कि बनारस युनिवर्सिटी शहर से काफी दूर है और वहां पर विद्या-

विद्यार्थियों के निवास के लिए जो होस्टल है उसमें जैन छात्रों के लिए अलग व्यवस्था नहीं है। बैजनाथजी ने विद्यार्थियों की सुविधा के लिए युनिवर्सिटी के बाहर ही जगह खरीद कर छात्रावास बनाने की योजना बनाई। भवन निर्माण का कार्य साहू श्री शान्तिप्रसाद जैन ने वहन किया। धार्मिक दृष्टि रहने के कारण बैजनाथजी की इच्छा थी कि छात्रों के लिए एक मन्दिर भी होना चाहिए जिससे छात्रों के हृदय में धर्माचरण के प्रति झुकाव पैदा किया जा सके। उन्होंने इन्दौर के प्रसिद्ध सेठ सर हुकमचन्दजी से सम्पर्क किया। सारी योजना बताई और स्वयं चलकर सारी परिस्थितियों का अध्ययन कर रुपये लगाने की राय दी। सेठ हुकमचन्दजी की आयु काफी हो गई थी। वे इन्दौर से बनारस तक रेल से जाने-आने का कष्ट सहन करना नहीं चाहते थे। उस समय हवाई सर्विस आज-कल की तरह चालू नही हुई थी। बैजनाथजी ने एक १०-१२ सीट की हवाई जहाज दिल्ली से इन्दौर, इन्दौर से बनारस और बनारस से इन्दौर और फिर दिल्ली के लिए भाड़े पर किया और कुछ मित्रों और सेठजी को छात्रावास और मन्दिर का स्थान बनारस लेजाकर दिखलाया। सेठजी बैजनाथजी की लगन से प्रभावित हुए और वहां सुन्दर मन्दिर बन गया। आज भी बनारस युनिवर्सिटी के बाहर लंका नामक मुहल्ले में छात्रो के लिए छात्रावास और मन्दिर बना हुआ है जिसका नाम जैन छात्रावास है।

बैजनाथजी बनारस के बाद जयपुर गए तो वहां भी उन्होंने धार्मिक गति-विधियों में पूरा भाग लिया। जयपुर जिसे आजकल "पिंकसिटी" कहा जाता है, जैनियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। कहा जाता है कि किसी जमाने में इसका नाम जैनपुरी था जो आगे चलकर जयपुर हो गया।

राजस्थान ही नही पूरे भारतवर्ष में इतना सुन्दर और सलीके से बसा हुआ नगर नही है। सड़कें इतनी चौड़ी और सीधी हैं कि शहर को एक छोर से दूसरे छोर तक चीरती हुई चली गई हैं। सड़क के दोनों ओर बने मकानों और भवनों की एक जैसी डिजाइन और एक जैसा रंग किसी भी नए आने वाले आदमी को दिग्भ्रमित कर देते हैं। इस विराट नगर में जैनियों के अनेक नयनाभिराम मन्दिर और चैतालय बने हुए हैं, जो शिल्प कला के अद्भुत नमूने ही नहीं धर्म प्राण जैन समाज के श्रद्धा के केन्द्र भी हैं। मन्दिरों के दर्शनार्थ बाहर से आने वाले मुसाफिरों को अनावश्यक रूप से इधर-उधर भटकना न पड़े इसके लिए

बैजनाथजी ने बड़ी सुन्दर व्यवस्था की। उन्होंने मुसाफिरों के पथ-प्रदर्शन के लिए निदशिका छपवा दी जिसमें मन्दिरों की क्रम-संख्या अंकित थी। इसकी सहायता से मुसाफिरों को एक ही चक्कर में सिलसिलेवार सारे मन्दिरों और दर्शनीय चैतालयों की परिक्रमा करने में सुविधा होती थी। इन्होंने जयपुर में स्थित अनेक जीर्ण-शीर्ण चैतालयों की मरम्मत करवाई।

गाँधीजी से सम्पर्क के कारण धर्मचन्दजी का प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति लगाव बढ़ने लगा। वे बराबर प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध में अध्ययन और प्रयोग करते रहते। प्रारम्भ में बैजनाथजी को इस चिकित्सा पद्धति में कोई दिलचस्पी नहीं रही। पर एक विशेष घटना ने बैजनाथजी को भी प्राकृतिक चिकित्सा का कट्टर समर्थक बना दिया। बैजनाथजी उन दिनों खिदिरपुर में रहा करते थे। एक रात के समय अचानक बैजनाथजी के पेट में भयंकर दर्द हुआ। सुबह से पहले किसी डाक्टर का उपलब्ध होना सम्भव नहीं था। धर्मचन्दजी ने बैजनाथजी के पेट पर मिट्टी की पट्टी चढ़ाई और एनिमा देकर पेट की सफाई कर दी। बैजनाथजी को इससे बड़ा आराम मिला। इसके बाद तो उनकी निष्ठा प्राकृतिक चिकित्सा में निरन्तर बढ़ती ही गई।

एक बार वे किसी बारात में गए थे। वहाँ खान-पान की गड़बड़ी के कारण उनके पेट मे दर्द होने लगा। लोगों ने डाक्टर को दिखाया पर बैजनाथजी ने उससे कोई औषधि या इन्जेक्शन नहीं लो और धर्मचन्दजी को ही टेलीफोन से बुलाने का आग्रह किया। धर्मचन्दजी प्राकृतिक चिकित्सक को साथ लेकर वहाँ पहुँचे। मिट्टी की पट्टी लगाई व एनिमा दिया, बैजनाथजी के पेट की सफाई हो गई और वे स्वस्थ हो गए।

बैजनाथजी को एक बार ब्लडप्रेशर की शिकायत हुई फिर भी बैजनाथजी ने डाक्टरी इलाज नहीं करवाया। धर्मचन्दजी ने उनके भोजन में नमक खाने का त्याग कराया तो वे ठीक हो गए। इसप्रकार की अनेक घटनाएँ बैजनाथजी के जीवन में घटित होती गईं और प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति उनका विश्वास दिन-दिन दृढ़ होता गया।

कहा जाता है कि एकबार बैजनाथजी को निरन्तर हिचकियों का क्रम चालू हो गया। हालत इतनी गम्भीर हो गई कि उनके बचने की भी आशा नहीं रही।

इस विकट स्थिति में भी बैजनाथजी ने डाक्टरों की शरण नहीं ली। उन्होंने धीरज के साथ धर्मचन्दजी के बताए अनुसार पन्द्रह दिन का उपवास किया। नींबू के पानी का सेवन करते रहे। कुछ ही दिनों में वे पुनः स्वस्थ हो गए। बैजनाथजी की तरह ही उनकी पत्नी जानकी देवी को भी प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति गहरा विश्वास था। बीमारी चाहे कितनी ही गम्भीर क्यों न हो वे बड़े धीरज और विश्वास के साथ प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा ही उससे मुक्त होने का प्रयास करती थी। इस प्रकार प्राकृतिक चिकित्सा बैजनाथजी की पारिवारिक चिकित्सा पद्धति बन चुकी थी।

बैजनाथजी नए-नए कामों में दिलचस्पी लेते थे। एकबार इकमीककूकर में पकाया हुआ खाना उन्होंने खाया तो उन्हे बड़ा स्वादिष्ट लगा। उन्होंने कूकर की बनावट को ध्यान से देखा। उसकी बनावट में कोई पेंचीदगी नहीं थी। चार चीजें एक साथ और अल्प समय में पकाई जा सकती थीं। भाप से पकने के कारण चीजों का गुण और स्वाद भी बना रहता था। बैजनाथजी को कूकर बहुत उपयोगी लगा। उन्होने स्वय उसका निर्माण करना प्रारम्भ किया। गेलवेनाइज्ड स्टील के कूकर बनवाकर उन्होने अपने अनेक मित्रों को बिना मूल्य बांटा। जुगलकिशोरजी बिड़ला और सर सेठहुकमचन्दजी को उन्होने चांदी के कूकर बनवाकर भेंट किए।

बैजनाथजी को सफल जीवन यात्रा के पीछे उनको धर्मपरायणा पत्नी श्रीमती जानकी देवी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। छोटी उम्र में ही वे कुछ भारी शरीर की थीं। कुछ फोड़ा-फुंसी होते तो जल्दी नहीं सूखते। वह कहतीं मेरी पाचनी छोड़ी है। पर संयुक्त परिवार मे रहने के कारण पांच-सात सेर आटा हाथ की चक्की से पीसना नित्य का कार्य था। इससे उनका मोटापा बढ़ा नहीं और-फुंसी होने भी बन्द हो गए। वे बैजनाथजी द्वारा किए जा रहे धार्मिक और सामाजिक कार्यों में कभी बाधा नहीं डालती थी। एक समझदार गृहिणी की तरह वे व्यवस्था की भी सफलता पूर्वक देखभाल किया करती थीं। स्वावलम्बी होने के कारण वह प्रत्येक कार्य के लिए नौकर-चाकरों पर अपने को निर्भर नहीं करती थीं। प्रायः घर का काय वह अपने हाथों से ही पूरा करती थीं। बैजनाथजी के साथ कोई न कोई ब्रह्मचारी, साधू या अतिथि प्रतिदिन घर पर आ ही जाते थे। जानकी देवी उन सबका अतिथि सत्कार किया करतीं। आलस्य को अपने पास

फटकने नहीं देती थीं। मन्दिर जाना, पूजा-पाठ करना और घर की देखभाल करना उनका प्रतिदिन का नियमित कार्य था।

पढ़ी-लिखी नहीं होने पर भी वह बैजनाथजी के जीवन में समय-समय पर आने वाले उतार-चढ़ाव को अच्छी तरह समझती थीं। खर्च कम हो और घरेलू व्यवस्था का स्तर भी प्रतिष्ठाजनक बना रहे इस बात का वह बराबर ख्याल रखती थीं।

बैजनाथजी को जब कारबार में घाटा लगा था तब वे सोचा करते थे कि भारत में तीर्थ स्थान के पास कोई छोटी-मोटी दूकान करके किसी प्रकार बाकी जीवन बिता देंगे। आगे चलकर जब बैजनाथजी को टाटा कम्पनी का काम मिला और जब उन्होंने फिर से अपने कारबार का विस्तार करके रांची, बुण्डू और कोडरमा के अतिरिक्त मद्रास, रायपुर, कानपुर, दिल्ली और जयपुर में दूकानें खोलीं। काम की जिम्मेवारी उनपर ही थी तो जानकी देवी कहा करती थीं, "कहाँ तो आप मन्दिर के पास छोटी-सी दूकान करके जीवन बिताना चाहते थे और अब काम का जगह-जगह फैलाव करके भी आपको सन्तोष नहीं हो रहा है। इस प्रकार जानकी देवी निराशा के समय बैजनाथजी का उत्साहवर्द्धन भी करती थीं और दूसरी ओर उनकी अनावश्यक महत्वाकांक्षा को भी मर्यादित करने की सलाह देती थीं। जानकी देवी ने बैजनाथजी के साथ प्रायः भारतवर्ष के प्रमुख सिद्ध क्षेत्रों और अतिशय क्षेत्रों तथा तीर्थस्थानों की यात्रा कई बार की। एक बार "जैन बाला विश्राम आश्रम" आरा की रजत-जयन्ती जानकी देवी की अध्यक्षता में ही मनाई गई थी। उस अवसर पर जानकी देवी ने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षा और धर्म से जुड़े रहकर उन्हें अपना जीवन आदर्शमय बनाने का प्रयास करना चाहिए। आगे चलकर परिवार में प्राकृतिक चिकित्सा का व्यवहार होने लगा तो उन्होंने उसे अपनाया। वे जीवन में जैनियों की धार्मिक तिथियां, दूज, पंचमी को हरी सब्जियां नहीं खाती थीं और साथ ही अष्टमी और चतुर्दशी को पूर्ण उपवास करती थीं। जैनियो के भादो महीने में होने वाले दसलक्षणी पर्व पर भी कई बार कई दिनों का उपवास करती थीं। घर में बच्चों पर और नौकरों-चाकरों पर बिना औषधि के केवल मिट्टी, पानी, एनिमा, उपवास से रोगों के ठीक होते देखकर काफी प्रभावित हो गई थीं। एकबार की घटना है कि जैन हाउस से मेट्रो सिनेमा, जो लगभग एक फर्लांग की दूरी पर है,

कोई धार्मिक फिल्म देखने परिवार वालों के साथ गई। संयोग की बात उस वक्त तक कलकत्ते में घोड़े गाड़ियों का कुछ प्रचार था। जानकी देवी मेट्रो की गली के पास पहुँची ही थीं कि एक घोड़ा गाड़ी के घोड़े के पाँव उनके पैर पर लगा, कुछ चोट आई। भाग्य से हड्डी वगैरह नहीं टूटी। सिनेमा का प्रोग्राम कैंसिल हुआ और उन्हें घर पर लाकर गर्म पानी से पैर धोकर मिट्टी का उपचार शुरू हुआ व साथ ही उपवास भी शुरू हुआ। वह ठीक होने लगी। इसी बीच कोई रिश्तेदार उन्हें बिना पूछे अपने मित्र डाक्टर को ले आए। डाक्टर ने चोट का मुआयना कर जानकी देवी से पूछा कि आप क्या खाती हैं। उन्होने जब उपवास करने की बात कही तो डाक्टर ने उनसे कहा कि आपको भोजन तो अवश्य करना चाहिए नही तो आप कमजोर हो जाएँगी। इसपर वे हँसकर बोली कि 'डाक्टर साहब यदि मैं भोजन नही करूँगी तो कमजोर हो जाऊँगी और साथ ही यह घाव भी कमजोर हो जाएगा और मैं भोजन करूँगी तो मेरे में शक्ति बढ़ेगी और घाव भी बढ़ेगा। डाक्टर बेचारा क्या बोलता, चुप रह गया।

बजनाथजी की बीमारी के समय धर्मचन्दजी ने उनको उपवास वगैरह कराया तो वे बिल्कुल नहीं घबड़ाई। एकबार मन्दिर जाते समय बैजनाथजो ने उनसे कहा कि तुम्हारी उम्र हो गई है, तुम लकड़ी लेकर चला करो तो गिरने-पडने का डर नहीं रहेगा। इसपर वे हँसते हुए बोलीं कि, मैं बूढ़ी थोड़ी हो गई हूं जो लकड़ी लेकर चलूँ। वे परिवार के रिश्तेदारो के यहां होने वाले सभी उत्सवों मे भाग लिया करती थीं।

जानकी देवी गरीबों में काफी दान किया करती थीं। रिश्तेदारों में भी जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी उनको चुपचाप सहयोग दिया करती थीं। सुबह उठकर अपना नित्य कर्म खुद किया करती थी। जीवन के अन्तिम दिनो में तो उन्होंने चर्खा काटना भी सीख लिया था। वे रोज इतना सूत कात लेती थीं कि धर्मचन्दजी के पहनने लायक धोतियां उससे बन जाती थी। वे सुबह संध्या सामयिक किया करती थीं। भजन बोला करती थीं। सुबह ६ बजे ही स्नान कर मन्दिर के दर्शन रोज किया करती थीं। रात्रि भोजन कभी नहीं करती थीं। पिछले तीस वर्षों से केवल एक बार अन्न खातीं, संध्या को दूध और फल लेती थीं। फलों में उन्हें बगाल का केला पसन्द था। खान-पान और संयमी जीवन के कारण उनका स्वास्थ्य अन्त तक ठीक रहा। वे अपना भोजन खुद बनाती और आँटा

पीसतीं। मृत्यु के एक दिन पहले वे बेहोश हुई, उन्हें कोई डाक्टरी दवा, सूई आदि नहीं दी गई, घर के लोगों ने उनकी सेवा की।

जोखीरामजी के परिवार की महिलाओं में वे सबसे अधिक सुन्दर महिला थीं साथ ही जोखीरामजी के परिवार की महिलाओं और अपने पीहर के परिवार की महिलाओं में जानकी देवी ही ऐसी सौभाग्यवती महिला हुई जिसने तिरासी वर्ष की आयु तक सुहाग सुख भोगा व लम्बी उम्र पाई। ८ मई १९६६ को सायं ६ बजे कलकत्ते के जैन हाउस में अपना पार्थीव शरीर ८६ वर्ष की आयु में उन्होंने त्याग दिया।

राजभवन से बीस किलोमीटर दूर डायमण्ड हार्बर रोड पर इक्कीस विघा जमीन में धर्मचन्दजी ने एक सुन्दर आकर्षक बगीचा बनाया था जिसमें कई तालाब आदि थे, जिसका नाम "जैन उद्यान" था। बैजनाथजी बीच-बीच में वहाँ जाया करते थे।

१९६० की बात है – कलकत्ते में प्राकृतिक चिकित्सा के लिए विद्यापीठ बनने की बात चली। श्री मोरारजी देसाई उस समय भारत सरकार के अर्थ मन्त्री, श्री श्रीमन्नारायण और ढेबर भाई, कांग्रेस के प्रेसिडेन्ट ने सुझाव रखा कि इस बगीचे का नाम "जैन उद्यान" की जगह "प्रकृति निकेतन" रखा जाए और प्रकृति निकेतन ट्रस्ट बनाकर उसे दान कर दिया जाये। बैजनाथजी प्राकृतिक चिकित्सा से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने तुरन्त इसके लिए स्वीकृति दे दी। साथ ही डेढ़ लाख रुपया नगद भी दिया। १९६२ में अचानक उनका स्वास्थ खराब हुआ तो उन्होंने जयपुर जाने का प्रोग्राम बनाया। वहाँ मोती डूमरी के आस-पास बापूनगर में प्राकृतिक चिकित्सालय के पास एक मकान खरीदा, वहीं प्राकृतिक इलाज कराया। उस वक्त उनके साथ जानकी देवी, धर्मचन्दजी की पत्नी मोती देवी, उनकी छोटी पुत्री लक्ष्मी देवी ने रहकर उनकी सेवा-सुश्रुषा की। बैजनाथजी वहाँ प्राकृतिक चिकित्सा कराकर ठीक हो गए। महाबीरजी नामक तीर्थ स्थान का मोटर से यात्रा कर दर्शन कर आए। धर्मचन्दजी के बड़े पुत्र निर्मल कुमार की पहली लड़की संगीता का जन्म दिन ४ नवम्बर को कलकत्ते में था इसलिए ३ नवम्बर को हवाई जहाज द्वारा जयपुर से सुबह रवाना होकर ३ नवम्बर को ही कलकत्ते पहुंचने का प्रोग्राम बना। इस बीच कुछ आवश्यक

काम के लिए २८ अक्टूबर को धर्मचन्दजी कलकत्ते आ गए। संयोग की बात है कि एक नवम्बर को जयपुर से टेलीफोन आया कि पिताजी की तबीयत अचानक कुछ विशेष खराब हो गई है। धर्मचन्दजी को उसी समय संध्या के हवाई जहाज की टिकट मिल गई और वे दिल्ली रात्रि ७ बजे पहुँच गए। उस समय रात्रि को दिल्ली से जयपुर हवाई जहाज की सर्विस नहीं थी। दिल्ली से जयपुर जाने वाली ट्रेन छूट चुकी थी। धर्मचन्दजी ने हवाई अड्डे से ही टैक्सी ली और रिंगस नामक स्थान पर पहुँचकर गाड़ी पकड़ी और सुबह ही जयपुर पहुँचे। धर्मचन्दजी के पहुँचने पर बैजनाथजी को बहुत संतोष हुआ और फिर उन्होंने शरीर त्याग दिया। बैजनाथजी ने भी जोखीरामजी के परिवार में सबसे अधिक उम्र पाई और काफी दान-पुण्य किया। समाज में आज भी उनका नाम गो-भक्ति और मन्दिरों के जीर्णोद्धारक के रूप में स्मरण किया जाता है। □

बालक धर्मा
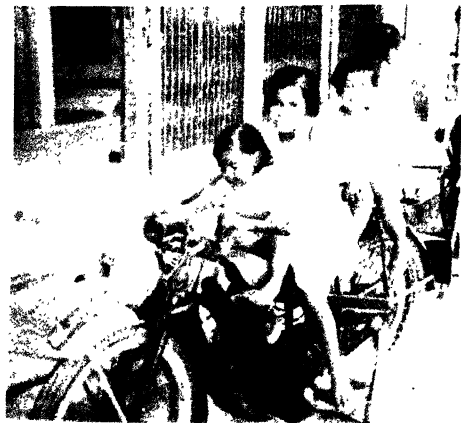
बानर सेना, मोटर साइकिल पर श्री चन्द्रकुमार, कुमारी शान्ति,
कुमारी लक्ष्मी, श्री निर्मलकुमार।

घुड़सवारी की तैयारी में धर्मचन्दजी

धर्मचन्दजी की दूसरी पत्नी श्रीमती मोती देवी ।

धर्मचन्द सरावगी

सन् १९०५, गोपाष्टमी के शुभ दिन २,००० की आबादी वाले रांची नामक गांव में जोखीरामजी के पुत्रों द्वारा खरीदे हुए मकान में उनके छठे पुत्र बैजनाथजी की पत्नी जानकी देवी ने अपने पहले लड़के को जन्म दिया। उसके पहले उन्हें एक लड़की भगवान देवी की प्राप्ति हो चुकी थी।

पुराने जमाने में प्रसव के लिए नर्सिंग होम या मातृ सेवा सदन आदि नहीं थे। प्रसव दाइयाँ ही कराया करती थीं। जहाँ बड़ा परिवार होता था वहाँ बड़ी-बूढ़ी तथा इस काम में दक्ष औरतें भी रहती थी। उस जमाने में स्त्रियाँ घर के काम-काज खूब करती थीं। गर्भवती रहने पर भी अन्त तक काम-काज करती रहती थीं, केवल भारी बोझ नहीं उठाती थी इसलिए उनको प्रसव में कष्ट नहीं होता था, न ही चीर-फाड़ की जरूरत होती थी। जानकी देवी को जब प्रसव हुआ, बड़े आराम से हुआ, घर की स्त्रियों ने समझा कि एक लोथड़ा-सा हुआ है, कुछ ने कहा भाठा हुआ है। पर दूसरी समझदार बड़ी औरतों ने कहा कि यह लोथड़ा नहीं है इसको ऊपर से चीरो लड़का निकलेगा। जानकी देवी बताया करती थीं कि वैसा ही किया गया, उसमें लड़का जन्मा।

बैजनाथजी गोपाष्टमी मेले में थे। उस जमाने में किरासन तेल से जलने वाले हण्डों की रोशनी में एक नाटक राँची में पिंजरापोल के मेले में हो रहा था, उसे देखने में व्यस्त थे। बैजनाथजी को मेले में खबर भेजी गई, वे समाचार सुनकर तुरन्त घर आये और जच्चा और बच्चा मजे में हैं सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

धीरे-धीरे बालक बड़ा होने लगा पर बचपन से ही कमजोर था। लड़के का नाम धर्मचन्द रखा गया। पुकारने का नाम धर्मा पड़ गया। वह पाँच वर्ष की आयु तक माता का स्तन पान किया करता था। बैजनाथजी काम-काज में व्यस्त रहते थे, राँची के बाहर भी यात्रा करते रहते थे। पर उनके छोटे भाई गोबर्द्धनदासजी को बच्चे का स्तन पान अच्छा नहीं लगता था। इसके लिए वे बराबर अपनी भाभी (जानकी देवी) को टोका करते थे। मातृ हृदय तो मातृ हृदय ही होता है, वे यह कहकर अपने देवर को समझाती कि बच्चा है मानता नहीं है। वे कई बार टोकते, कभी-कभी तो काली मिर्च पीसकर अपनी भाभी को लाकर देते कि वे अपने स्तन पर लगा लें जिससे बच्चे की स्तन पान की आदत छूट जाए। पर धर्मा कब मानता वह मिर्च पोछकर भी स्तन पान करता था। जिस मकान में वे रहते थे नीचे के तल्ले मे गोबद्धनदासजी को कमरा मिला हुआ था और वही रसोई, स्नान घर, पुराने ढग के पायखाने जिन्हें उन दिनों मेहतर आकर साफ किया करता था, बने हुए थे। एक तल्ले पर बैजनाथजी और केदारनाथजी को कमरा मिला हुआ था। एक बार धर्मा सिढ़ी चढते-चढते ऊपर पहुँचने के पहले ही लुढ़क कर वापस नीचे आ गिरा पर सौभाग्य से अधिक चोट नही आई। धर्मा को माता का प्यार तो मिला ही पर भीमराजजी की पत्नी (धर्मा की ताई चाँद बाई) जो बिना सन्तान ही विधवा हो गई थी, धर्मा को बहुत लाड़-प्यार करती थीं और अपने पास ही सुलाती थी।

परिवार में शिक्षा का प्रचार बहुत नहीं होने के कारण धर्मा की पढ़ाई छँ वर्ष की उम्र में आरम्भ हुई। जिस मकान में बैजनाथजी रहते थे उसके सामने ही एक सरकारी नार्मल स्कूल भी था, उसकी दीवार जरूर पक्की थी पर छत खप-रैल की थी जिसमें हिन्दू, मुसलमान, मारवाड़ी, हिन्दुस्तानी, बंगाली, सभी जाति के बच्चे पढ़ते थे, पर भाषा हिन्दी ही थी। आगे चलकर बड़ी क्लासों में अंग्रेजी आरम्भ होती थी। क्लासें भी दसवीं, नौवीं, आठवीं अन्त के पहली जिसे उस

समय टेन्थ, नाईन्थ, एइट्थ और अन्त में फर्स्ट कहा करते थे। हिन्दी पढ़ाने के लिए एक पण्डित थे जिनका नाम ठाकुर पण्डित था। गौर वर्ण मोटे-सोठ सफेद अँगरखा और सर पर टोपी पहनते और कभी-कभी तिलक भी लगाते थे। अंग्रेजी के लिए एक कायस्थ बृजमोहन बाबू थे, दुबले-पतले। मुसलमान बच्चे को उर्दू पढ़ाने के लिए मुसलमान मास्टर थे। संयोग से हेडमास्टर भी मुसलमान ही थे। मुसलमान बच्चों को शुक्रवार को मस्जिद में जाकर नमाज पढ़ने की आधे घटे की छुट्टी मिलती थी। मस्जिद स्कूल के पास ही आधे फलांग की दूरी पर था। स्कूल में बच्चों से पढ़ाई के लिए दो आना, चार आना, छह आना, दर्जा के हिसाब से मासिक फीस ली जाती थी। समय से फीस न देने पर एक पैसा रोज का जुर्माना होता था। बच्चों की पढ़ाई न करने पर, समय पर न आने पर, बेंत से पिटाई होती, नील डाउन किया जाता। पर धर्मा अपने समय पर जाता और पढ़ाई में बहुत तेज न होते हुए भी पीछे नहीं था इसलिए मारपीट की नौबत नहीं आती थी। स्कूल का नाम नार्मल स्कूल था। सामने मैदान में ईमली का पेड़ था। छुट्टी के बाद बच्चे पत्थर मारकर ईमली तोड़ा करते थे। एक दिन धर्मा भी बच्चो के साथ ईमली तोड़ने गया, दूसरे लड़के द्वारा फेंका गया पत्थर धर्मा के माथे पर लगा और खून बहने लगा। सारे लड़के 'फटलई कपार' कहकर भाग गए। धर्मा घर पर आया उसे कपड़ा जलाकर पट्टी बांधी गई। उस चोट का निशान अबतक माथे पर है। घर के लोग कहा करते थे कि यह तो इतना सीधा-सादा है फिर यह घटना कैसे घटी।

पास ही जिला स्कूल था जो बड़ी क्लास के लड़कों के लिए था और जो लग-भग चालीस-पचास एकड़ जमीन घेरे था। बच्चों के पढ़ने के कमरे भी बढ़ियां ऊँची फर्स पर बने थे, जिनके दरवाजों में कांच लगे थे, बेंच-टेबल भी अच्छे थे। व्यायाम करने के लिए व्यायामशाला थी। फुटबाल खेलने के लिए ग्राउण्ड भी था और साथ ही चारों तरफ चार फुट ऊँची पक्की दीवार भी बनी थी। फिर तो रांची में कालेज भी बन गया। उसके ठाट और सजावट तो और भी आलीशान थे पर धर्मा को न तो जिला स्कून जाने का सौभाग्य मिला, न कालेज जाने का, वह तो कलकत्ता आ गया था।

रांची उन दिनों २००० लोगों की बस्ती थी जिसमें जालान, मोदी, खेमका, रूइया, बुधिया, पोद्दार आदि जाति के दो-दो चार-चार परिवार थे। जैनियों में

जोखीरामजी का परिवार और रतनलालजी का परिवार था। राँची समुद्रतल से २५०० फुट ऊँचा होने के कारण वहाँ का मौसम गर्मियों में भी ठढा रहता था। बिहार की राजधानी पटना में रहने वाले अंग्रेज गवर्नर महोदय के लिए गर्मी से बचने के लिए वहाँ कोठियाँ, बंगले आदि बनाए गए थे। साथ ही राँची के चारों तरफ जंगल होने के कारण आदिवासी रहा करते थे। उस समय मजदूरी राजमिस्त्री की पांच आने रोज, कुली का काम करने वाले की तीन आने रोज और काम करने वाली औरतों की दो आना रोज थी। राँची में जो आदिवासी काम करने आते उनकी वेष-भूषा विचित्र होती थी। पुरुषों के बड़े बाल, जिन्हें वे घुँघराले कर के सजाते थे। कानों में बड़े छेद जिसमें बाँस की पेंसिलनुमा लकड़ी छोटी-बड़ी-मोटी-पतली शौक के अनुसार पहने रहते थे। गले और हाथ में कौडी, मूँगा या कांसे आदि के गहने बने होते थे। कमर में एक फुट चौड़ी सूती पट्टी चार-पांच हाथों का लंगोटानुमा पहनते थे। ऊपर चद्दर से बदन ढँके रहते थे जो बच जाता आगे पीछे या बगल मे लटका लेते। आत्म रक्षा के लिए साथ में एक लकड़ी रखते। कोई-कोई तीर-कमान भी रखता। काम के समय उतार कर अलग रख देते। वे बड़े मेहनती होते थे। सुबह सात-आठ बजे ही काम पर आ जाते थे और सध्या को पाँच-छह बजे तक काम करते थे। सुबह वे अपने घर से खा कर आते और काम पर से जाने के बाद अपने घर पर भोजन करते। दोपहर टिफिन के समय अपने साथ लाया हुआ सत्तू पानी में घोलकर पीते या सत्तू में हरी मिर्च और कच्चा आम या इमली डालकर उसके लड्डू बनाकर खाते त्योहारों और छुट्टी के समय मनोरजन और अपनी स्फूर्ति के लिए अपने घर मे चावल हाँड़ी मे कई दिन सड़ाकर बनाई हुई शराब पिया करते थे जिसे वे हड़िया कहते थे। काम करते समय जब भूल होती तो आपस में एक दूसरे को ताना देते कि आज हड़िया पीकर आया है। इनके नाम भी हमलोगों के दिनों के नाम पर होते जैसे सोमरा, मगला, बुधवा, शुका, शनीचरा इत्यादि। इनकी स्त्रियाँ काम पर आती वे भी काफी मेहनती होती थीं। नाम भी उसी तरह होते केवल पुलिंग की जगह स्त्रीलिंग हो जाते यानी सोमरी, मंगली, बुधनी, शनीचरी इत्यादि। वेश-भूषा भी पुरुषों जैसा होता। कमर में लंगोटनुमा वस्त्र की जगह घुटनों से थोड़ा नीचा लुंगीनुमा कपड़ा पहनती थीं और शरीर पर चद्दर ओढ़ती पर उसकी चौड़ाई कम होती थी जिसे वे अपने कन्धे पर इकट्ठा कर जनेऊनुमा गांठ बांधकर लटका देती जिससे उनके दोनों हाथ कामकाज करने के लिए खाली हो जाते।

उनके यहाँ ब्लाउज का व्यवहार शुरू नहीं हुआ था। आदीवासियों की जाति उरांव आदि कई तरह की थी।

मजदूर सस्ते मिलते थे इसलिए चाय बगान की अंग्रेज कम्पनियाँ राँची में अपना कई एजेन्ट रखा करती थीं और बुधिया, खेमका आदि परिवारों के मार्फत कुली भर्ती करती थीं और उन्हें कमीशन देती थीं। उसी तरह पोद्दार परिवार की नागपुर में टाटा कम्पनी के सूता मिल की एजेन्सी थी। रतनलालजी के परिवार की किराशन तेल की एजेन्सी थी। राँची के मारवाड़ी लोग दूकानदारी किया करते थे। वहाँ उस समय कोई इण्डस्ट्री नहीं थी। व्यापार में ही पैसे कमाते और पारिवारिक जीवन सस्ते में चलाते और बचे पैसे से मकान, जमीन आदि खरीदते। उस समय कलकत्ता, पटना आदि से रेल की लाईन पुरूलिया तक बिछी थी। पुरूलिया से राँची तक छोटी लाईन थी। स्टेशन से गवर्नर के बंगले तक बढ़ियाँ सड़कें थीं जिस पर अंग्रेजों की क्लबें, अंग्रेजों की आवश्यकता के सामान बेंचने वालों की दूकानें, गिरजाघर आदि थे। आदिवासियों में क्रिश्चियन धर्म का प्रचार करने के लिए संस्थाएँ भी बन गई थीं। मारवाड़ी मोहल्ले में एक ठाकुरबाड़ी थी। पास ही खाली मैदान जिसे "पीठिया टांड़ याने वह जगह, जहाँ सप्ताह मे दो दिन। बुधवार और शनिवार को बाजार लगता था। वह बाजार अब भी है। बाजार भी उसी तरह बुधवार और शनिवार को लगता है जिसमें आदीवासी आकर अपनी जरूरत की चीजें—तेल, नमक, आंटा, चावल, सूता आदि—ले जाते और अपने यहाँ पैदा होने वाली शाक-सब्जी, फल लाकर बेंचते। मारवाड़ियों ने राँची के पास की पहाड़ी पर मन्दिर भी बनवाया और गोशाला भी स्थापित की जो गोरक्षा के साथ गांव के लोगों को दूध बेंचती थी। उस समय पानी की पाईपें न होने के कारण सामर्थ्यवाला व्यक्ति अपने घर में ही कुँआ खुदवाता था या जहाँ कुँआ होता उसके पास ही मकान बनवाते। उस जमाने में मकान अधिकतर एक तल्ले का बनता और ऊपर में खपरैल होती थी या जो परिवार अधिक रुपया कमा लेता वह उसपर पक्की छत ढलवाकर एक तल्ला और उठवा देता। लोगों में आपस में बहुत प्रेम था।

चार कोस की दूरी पर रातू महाराज रहा करते थे। इनकी बहुत बड़ी जमींदारी थी। उनसे ही अंग्रेजों ने बहुत-सी जमीन खरीद कर गवर्नर के लिए कोठियाँ आदि बनाई थीं। रातू महाराज पढ़े-लिखे नहीं थे। अपनी बड़ी

जमींदारी का काम सम्भालने के लिए, अंग्रेजों से बात करने के लिए एक अंग्रेज को नौकर रखा था जिसका नाम पी० पी० साहब था। ये बड़े मिलनसार थे। महाराज का जन्म दिन होता, उनके यहाँ शादी-विवाह होता या कोई उत्सव होता तो वे भारतीय वेश-भूषा पहनकर हाजिर रहते और महाराज का सारा काम बड़ी इमानदारी से करते। सब जगह उसकी साख और इज्जत थी। महाराज ने भी तनख्वाह और सामान के अलावा हजारों बीघे जमीन उन्हें दे रखी थी।

रातू महाराज अपने भोजन का सामान बैजनाथजी के परिवार से खरीदा करते थे। इससे कुछ मासिक बँधी आमदनी उन्हे हो जाती थी। जिस साल धर्मा जन्मा उस साल केदारनाथजी ने रांची मे पहला धर्मशाला बनवाया और लोगों की सलाह से, कम खर्च की दृष्टि से पक्की ईट की न बनाकर कच्ची ईट, जो उस समय पांच रुपये हजार में मिलती थी, बनवाई, या दीवार कच्ची ईट की और उसपर चूना सुर्खी का पलस्तर करवाया। वह धर्मशाला आज भी विद्यमान है। धार्मिक विचारों के होने के कारण बैजनाथजी ने जैन मन्दिर बनवाया और जब धर्मा बड़ा हुआ तो उसे भी अपने साथ पूजन करवाया करते थे। उस जमाने में स्वास्थ्य के प्रति विशेष जानकारी न होने के कारण धर्मा बराबर रोज दाल-भात खाया करता था और उसमे चीनी खूब दिया करता था। सयुक्त परिवार मे जिस दिन रसोई में भात नहीं बनता वह खाने से इन्कार कर देता। माता का प्रेम यह कैसे बर्दाश्त करता, पास पड़ोस में जहाँ कहीं भात बनता वहाँ से लाकर उसे खिलातीं। कभी-कभी तो किसी मारवाड़ी परिवार मे न मिलता तो पास ही कहारों की बस्ती से छूआछूत का विचार न करके चावल लाकर धर्मा की इच्छा पूरी करती थी। फलस्वरूप धर्मा बीमार रहता था। फोड़े-फुन्सी, खाँसी-बुखार आदि लगे रहते। फिर जानकी देवी डाक्टर, वैद्यों से हाथ जोड़ती और कहती महाराज यह आपका ही बच्चा है इसे बचाइए। कड़वी दवा धर्मा नहीं लेना चाहता तो एक वैद्यजी अपने हाथ पर स्प्रीट डालकर आग लगाकर जादुई खेल दिखाते और फुसलाकर धर्मा को दवाई पिला देते। आगे चलकर धर्मा की हिन्दी पढ़ाई अच्छी हो इसलिए पास के मोदी परिवार के कुछ बच्चे और जगन्नाथजी के कुछ बच्चे गोपीलाल, मदनलाल, शिवभगवान गुलराज एक जगह एकत्रित होते और ठाकुर पण्डित आकर उन्हें हिन्दी सिखाते। एक रुपया महीना लेते। सुबह की पढ़ाई में तो कष्ट नहीं होता था पर संध्या की

पढ़ाई मोमबत्ती या लालटेन की रोशनी में होती थी। एक दिन बैजनाथजी से उनके मित्र डोमन मास्टर, जो जाति के कायस्थ थे और रेलवे में काम करते थे, कड़े स्वभाव के कारण अपने अफसर की पिटाई कर दी और नौकरी से हटा दिये गए, मिले और कहा कि तुम यदि मुझे तीन रुपये मासिक दो तो मैं धर्मा को अंग्रेजी सिखा दूंगा। बैजनाथजी ने उनकी शर्त्त स्वीकार करली। उस जमाने में तीन रुपये एक लड़के पर खर्च करना चर्चा का विषय बना।

रांची में उस जमाने में मुसलमानों के साथ जैसे स्कूल में बच्चे पढ़ते थे वैसे ही मुहर्रम पर निकलने वाले ताजियों में सम्मिलित होते। मुसलमान घरों में भी काम-काज के लिए रखे जाते थे। घोड़ा गाड़ी में कोचवान, सईस मुसलमान रहते। घरो में भी आदिवासी स्त्रियां बहुत सस्ते में काम के लिए मिल जाया करती थीं। बीच-बीच में नटों के खेल देखने को मिलते। सर्कस भी साल में एक दो बार आया करते थे। आन्ध्र प्रदेश का राममूर्ति भी रांची आया और उसने लोहे की सांकल तोड़ी और अपनी छाती पर से हाथी गुजरवाया, धर्मा को यह सब देखने को मिलता था।

आदिवासियों के यहां जन्मे छोटे घोड़े १०-१५ रूपये में मिल जाते थे और गाड़ियों के लिए अच्छे घोड़े १०० रूपये में मिलते थे। रांची में जब पहली बार सिनेमा आया तो जनता को मुफ्त दिखाया गया था—यह एक आश्चर्य की बात थी। "पीठिया टांड़" जहां हर बुधवार और शनिवार को बाजार लगता था, उसमें ही चार बाँसों को खड़ा कर सफेद कपड़ा बांधा गया और चलते-फिरते दृश्य दिखाए गए। ये रंगीन भी नहीं थे और बोलते भी नहीं थे फिर भी जनता के लिए आश्चर्य की चीज थी जिसे देखने के लिए बहुत भीड़ इकट्ठी हुई। घर में घोड़ा गाड़ी आ गई थी, कोचवान को दस रूपये और साईस को पाँच रूपये महीना दिया जाता था। जगन्नाथजी शौकीन तबीयत के आदमी थे। उन्होंने एक फिटन भी खरीद ली थी जिसमें घोड़ा गाड़ी का घोड़ा ही उपयोग में लाया जाता था। रांची के आस-पास इमली बहुत होती थी जिसे आदिवासी बाजार के दिन बेचने के लिए लाया करते थे। रांची के व्यापारी उसे खरीदकर सफा कर, बीज निकाल कर बंगाल और दक्षिण भारत, जहां इसका उपयोग होता है, भेजा करते थे। रांची के आस-पास महुआ भी बहुत होता है जिसका शराब बनाकर उपयोग करते

हैं। जगलों में लाख पेड़ों पर बहुत लगती है जिसे बनाने में कमी होती है इसलिए शराब और लाख बनाने का काम मारवाड़ी व्यापारी नहीं करते थे।

धर्मा जब बीमार चलता था तब मूंगराजजी, केदारनाथजी आदि कहा करते थे "बैजिओ को छोरो इतनो बिमार चाले हैं, बैजियो न के निहाल करसी" मूंगराजजी को लड़का नहीं था, केदारनाथजी को एक लड़का था, बैजनाथजी को एक लड़का था। जगन्नाथजी को चार लड़के थे, उन्होंने एक लड़का मूंगराजजी को गोद दिया और एक अपने भतीजे जयदेव की विधवा को गोद दे दिया। राँची में अधिकतर परिवार वैष्णव धर्म को मानने वाले थे इसलिए बैजनाथजी के घर में मरने-जीने, शादी-ब्याह के नेगचार जैन परम्परा से न होकर वैष्णव परम्परा से हुआ करता था। इसके शुभ मुहुर्त देखने, शादी-ब्याह का काम व पूजा-पाठ कराने का काम श्रीनारायणजी पण्डित किया करते थे। लोगो की उनपर बड़ो श्रद्धा थी। ये थे भी बड़े सात्विक व्यक्ति। उनको एक लड़का और चार लड़कियां थीं। संयोग की बात है श्रीनारायणजी ने स्वय लम्बी उम्र पाई पर उनका लड़का तीस वर्ष की उम्र में ही मर गया और चारो लड़कियाँ विवाह के पाँच-पाँच दस-दस वर्ष बाद विधवा हो गई। धर्मा को इससे जन्म-पत्री, मुहुर्त आदि दिखने में उनसे श्रद्धा कम हो गई। दूकान में बिलायतूमियाँ नाम का मुसलमान नोकर काम करता था। वह मेहनती और होशियार था, झाडू-बुहारू, रंग, काट-पीट आदि करना, माल वजन करना सब जानता था और नि:सकोच कर लिया करता था। दूकान और घर एक ही जगह होने के कारण दूकान के साथ घर में भी काम होता था तो कर लिया करता था।

पहला विश्व युद्ध छिड़ चुका था। लोगों के सामने झूठी-सच्ची खबर आया करती थीं। साथ ही लोगों मे साधारण ज्ञान का इतना अभाव था कि जब बगाल को खाड़ी मे "एमडन" नामक पानी का जहाज आया तो रांची में रात्रि को लोग लालटेन लेकर जहां कोई कहता वहाँ देखने को जाते मानो वह कोई चिड़िया हो। बद्रीदासजी जालान (बैजनाथजी के श्वसुर) की दो लड़कियाँ थीं। वे लड़कियों का विवाह करने के बाद फतेहपुर छोड़कर उज्जैन और इन्दौर की तरफ कमाने के लिए गए। कई वर्षों तक प्रयत्न करने के बाद संतोषजनक सफलता नहीं मिली तो वे राँची चले आए। तब तक उन्हें एक पुत्र भी हो गया था। वहाँ कई वर्षों तक रहे, अपने खर्च चला लेने लायक कमाई कर लेने के बाद अधिक कमाकर

कोई जायदाद नहीं बना सके। संयोग की बात है उनका पुत्र राँची में तालाब में तैरते हुए एक दिन डूब गया। इससे उनको बहुत आघात पहुँचा और कुछ वर्षों के बाद वे भी स्वर्ग सिधार गए। उनकी पत्नी लड़की के पास रहना अच्छा न समझकर फतेहपुर चली गई। बैजनाथजी की धर्मपत्नी जानकी देवी को भी अपने भाई की दुर्घटना से बड़ा आघात लगा और वे बच्चों के तैरने की बात सामने आते ही कांप जाती थीं।

मूंगराजजी कुछ भारी शरीर के थे। वे धूम्रपान किया करते थे, अधिकतर हुक्का पीते और चीलम भी पिया करते थे। वे फिर बुण्डू रहने लगे जो राँची से बीस मील दूर पड़ता है। उस जमाने में यातायात का साधन न रहने के कारण बैलगाड़ी से जाने में ६ घन्टे का समय लगता था। इसलिए यात्रा रात्रि का भोजन करके की जाती थी जिससे सुबह लोग वहाँ पहुँच जाते थे। पैदल जाने वाले सड़क का घुमावदार रास्ता न पकड़कर पगडण्डी के रास्ते से जाते और तीन-चार घन्टे में ही दूरी तय कर लेते थे। केदारनाथजी कलकत्ते में रहकर "जोखीराम मूंगराज" के नाम से आढ़त का काम किया करते थे। बैजनाथजी दुबले-पतले थे और साइकिल चलाना जानते थे। उस जमाने में साइकिल के पीछे आजकल की तरह कैरियर नहीं बना था इसलिए धर्मा को कभी-कभी सामने ही बैठाकर ले जाया करते थे। धर्मा ने भी साइकिल चलाना सीख लिया था। उस वक्त तक बच्चों की दो पहिए की छोटी साइकिल परिवार में नहीं आई थी इसलिए धर्मा बड़ी साइकिल को ही भीतर से पैर डालकर और पैंडल पर ही बैलेन्स कर चलाया करता था। राँची का स्टेशन बाजार से ३ मील दूर था। पोस्ट आफिस आधा मील पर था। व्यापारिक खबरें कलकत्ता समय पर पहुँच सके इसके लिए यह प्रयत्न रहता था कि चिट्ठी को पोस्ट बाक्स में न डालकर पोस्ट आफिस में डाक निकलने के पहले डाल दी जाए और वहाँ से यदि डाक निकल गई हो तो फिर स्टेशन जाकर रेलवे के स्टेशन वाले पोस्ट बाक्स में लोग डालते थे जहाँ की चिट्ठियाँ गाड़ी रवाना होने के १० मिनट पहले निकाली जाती थीं। चिट्ठियाँ भेजने के लिए विलायतूमियां, लक्ष्मण महाराज आदि लोगों को काम में लिया जाता था जो अन्य कामों के अलावा साइकिल चलाना भी जानते थे। धर्मा ने जब साइकिल चलाना सीख लिया तब उसकी इच्छा रहती थी कि पोस्ट आफिस जाकर चिट्ठी छोड़ने का काम उसे मिले तो वह साइकिल पर चढ़कर बड़ी

आसानी से जा सकता है। पर न तो घर वाले उसे यह काम करने को कहते और न ही उसका साहस होता कि घरवालों से कहे।

जगन्नाथजी दुबले-पतले थे और स्वास्थ्य के प्रति बहुत ध्यान रखते थे। वे धूम्रपान नहीं करते और सुबह उठकर घर से तीन मील दूर 'मोहराबादी" नामक स्थान पर लगे बगीचे मे पंदल जाते। वहां स्नान आदि कर बगीचे में लगे साग-सब्जी लेकर घर आते। घर मे घोड़ा गाड़ी आ गई थी। कोचवान की तनख्वाह दस रुपये मासिक और सईस की तनख्वाह पाँच रूपये मासिक थी। कोचवान का नाम इस्माइलमियाँ था और सईस का लतीफमियाँ था। राँची में बुधिया, मोदी और पोद्दारों ने पक्की हवेलियाँ बनवा ली थीं। पोद्दारो के सम्बन्ध में एक किंवदन्ती प्रचलित थी कि उनके पूर्वज हुकमचन्दजी जब रांची आए तब उन्होंने पहाड़ी पर बने मन्दिर में धरना दिया। पहाड़ी माता उनके स्वप्न में आई और बोली कि जाओ तुम अन्याय नहीं करोगे तो तुम और तुम्हारा परिवार कभी गरीब नहीं होगा। पोद्दारों का परिवार बहुत वर्षों तक राँची के जाने-माने परिवारो में अग्रणी रहा। साथ ही उनके बेटे पोते भी सार्वजनिक कार्य में बहुत वर्षों तक दिलचस्पी लिया करते थे। केदारनाथजी की लड़की किशनदेई बाई और बैजनाथजी की लड़की भगवान देई बाई का विवाह एक साथ ही कर दिया गया। संयोग से मकान में दो चौक थे इसलिए मण्डप दो जगह बधा और दो दरवाजों पर अलग-अलग बारात आई। किशनबाई का सम्बन्ध कलकत्ते के खेमका परिवार में हुआ था। वे लोग बारात लेकर रांची आए थे। भगवानबाई का विवाह पड़ोस के मोदी परिवार में हुआ। साधारण तरीके से कम खर्च में विवाह सम्पन्न हुआ।

परिवार में मूंगराजजी के लड़के गुलराज का विवाह हुआ, यह लड़के का पहला विवाह था इसलिए बहुत उत्साह था। उस समय समाज मे विवाह के समय वेश्याओं का नाच कराने की परिपाटी थी पर इस विवाह में हाथरस से नौटकी पार्टी बुलवाई गई जो कि लोगों के यानी गाँव वालों के मनोरंजन के लिए कई रोज पीठियाटांड़ के मैदान के खुली स्टेज पर हण्डों की रोशनी में नौटंकी के खेल नगाड़ों की ताल पर कराए गए। यह रात ८ बजे से शुरू होकर रात २-३ बजे तक होता। उस समय स्वर्गीय गगाबाई के लड़के गोबिन्द प्रसाद को भी हैदराबाद से बुलाया गया था।

गंगाबाई का विवाह हैदराबाद के एक बहुत धनी गनेड़ीवाला परिवार में हुआ था। पर वे अधिक दिन जीवित नहीं रहीं और एक पुत्र गोबिन्द प्रसाद को जन्म देकर ही स्वर्गवासी हो गईं। गोबिन्द प्रसाद जब हैदराबाद से आए तो उनकी आयु ८ वर्ष की थी उनकी देखभाल के लिए एक नौकर और उनकी पूजा-पाठ आदि की सँभाल के लिए एक ब्राह्मण साथ में आए। गोबिन्द प्रसाद ने हैदराबाद से रांची तक की यात्रा रेल के पहले दर्जे में की साथ ही उनके रहन-सहन, कपड़े-लत्ते आदि बहुत ऊँचे स्तर के थे, जो जोखीरामजी के परिवार में और रांची में एक चर्चा का विषय बना। उस जमाने में कोई कन्ट्रोल नहीं था इसलिए विवाह पर अलग-अलग दिन अलग-अलग सम्प्रदायों को भोजन कराया गया जिसे उस जमाने में जोमनवार कहा करते थे। कई तरह की मिठाइयाँ व नमकीन बने। वर की बारात के लिए रातू महाराज से मांग कर हाथी मँगाया गया। बारात के समय कागज के फूलों की फुलझड़ियाँ बनाकर सजाई गई जो महीनों पहले कारीगर आकर बनाया करते थे। फुलझड़ियाँ बारात के साथ लड़की वाले के मकान तक जाती फिर बाद में लड़के वालों के यहाँ। गुलराज का विवाह पोद्दारों के यहाँ हुआ। पर ये रांची के पोद्दारों के रिश्तेदार थे जो रतलाम में रहा करते थे और अच्छा सम्बन्ध मिलने के कारण उन्होंने रांची आकर ही अपनी लड़की की शादी अपनी परिस्थिति के अनुसार कर दी। इसके बाद जगन्नाथजी के लड़के शिवभगवान का विवाह हुआ। इसके लिए भी रघुनाथपुर से सिंघानिया परिवार रांची आकर ही विवाह कर गए।

उस जमाने में स्त्रियों की वेश-भूषा पर काफी नियन्त्रण था। घर के बाहर निकलने पर उन्हें घाघरा और ओढ़नी पहननी पड़ती थी। विधवा औरतें ही केवल साड़ी पहनकर घर के बाहर निकल सकती थी। पर इसपर भी उन्हें ओढ़नी ओढ़नी पड़ती थी। घूंघट काफी लम्बा होता था। पैर में चांदी का एक गहना पहनाया जाता था जिसे कड़ी कहते थे। वह जितना भारी हो उतना अच्छा समझा जाता था और मरने पर ही निकलता था। इससे उनके एड़ी के ऊपर का हिस्सा और पिंडली के नीचे का हिस्सा बहुत पतला हो जाता था। नाक में तो छेद होता ही था कान में भी चार-पांच छेद होते थे। इसे सौन्दर्य की निशानी समझी जाती थी। धर्मा का भी कान छेद दिया गया था। और उसमें एक मोटी बाली पहना दी गई थी।

मारवाड़ी टोला के पास ही एक दुर्गा मन्दिर भी था। उसमें हिंसा नहीं होती थी इसलिए बंगालियों के अलावा मारवाड़ी तथा अन्य जाति के लोग भी आया करते थे। भगवान देवी का विवाह पास के मोदी परिवार में हो गया था। वे रांची में ही रहती थी। उनके पति निरजनलालजी अपने परिवार का सूते आदि का व्यापार देखा करते थे। उनको भी साइकिल चलाना आता था। धर्मा ने जब अन्य साथियो को हाफ पेंट पहने देखा तो अपनी माँ जानकी देवी से इसकी चर्चा की। जानकी देवी ने धर्मा की बात बैंजनाथजी से कही। पर बैंजनाथजी ने यह कहकर टाल दिया कि क्या यही एक बच्चा है, सब बच्चों के जब हाफ पेंट बनेंगे तब ही बनेगा। पर जब भगवान देवी को यह बात मालूम हुई तो उसने निरजनलालजी से इसकी चर्चा की और उन्होने धर्मा के लिए अग्रेजों को सप्लाई करने वाली कम्पनी के यहाँ ले जाकर उसके नाप का हाफ पेंट बनवाया जिसे पहनकर धर्मा को बहुत खुशी हुई।

जानकी देवी पुरानी चीजों को फेका नहीं करती थीं। उन्हें ठीक से सुरक्षित रखा करती थी। याददाश्त भी उनकी बहुत अच्छी थी, जब घर में कोई चीज की जरूरत होती तब वे निकालकर दे देतीं। कोई-कोई चीज तो तीस-तीस चालीस-चालीस वर्ष पुरानी होती थी जो कौड़ियों के दाम में खरीदी हुई होती थी। पर यदि नई लेनी होती तो काफी दाम लगते। यही चीज धर्मा को विरासत में मिली।

धर्मा बैंजनाथजो के साथ रांची से कलकत्ते आया। उस समय रांची से पुरूलिया तक छोटी लाईन और पुरूलिया से कलकत्ते तक बड़ी लाईन थी इसलिए पुरूलिया से गाड़ी बदलनी पड़ती थी। यह यात्रा तीसरे दर्जे मे बैठकर की। उस समय भी कलकत्ते के स्टेशन का नाम हवड़ा था। सूता पट्टी में जोखीराम मूंगराज के नाम से गद्दी थी। जहाँ गद्दी थी उस कोठी का नाम फतेद्वारी कोठी था। वह अब बदलकर पंजाबी कटरा हो गया है। इसमें नीचे के तल्ले में गोदामें और एक तल्ले पर २२ कमरे थे। पूरब में १०, दक्षिण में २ और पश्चिम में १० जिनमें लोग अपनी तिजोरी, आलमारी, रेंक आदि रखकर आवश्यक सामान रखा करते थे। और कमरो के सामने लम्बा दालान था जिसमें गद्दियां बिछी रहतीं और उसी पर बैठकर लोग काम करते रहते। उस समय टेबुल-कुर्सी का प्रचलन नहीं हुआ था। अलग-अलग व्यापारियों ने अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार एक कमरा

बा दो कमरा ले रखा था। गद्दियों पर कोई पार्टिशन नहीं था। दिन में अपना काम करते और रात में वहीं सो जाते। दो तल्ले पर एक तरफ ठाकुर बाड़ी थी दूसरे तरफ एक वैद्यजी रहते थे जो लोगों को मुफ्त दवाइयां देते थे, वहीं कई बासे थे जिनमें लोग अपना भोजन करते। साथ ही लोगों के शौच करने के लिए पखाने बने हुए थे और स्नान करने के लिए जगह बनी हुई थी। पानी के पम्प का प्रचलन नही हुआ था इसलिए नीचे से नौकर लोग कलशों से पानी भर कर दो तल्ले में जाकर बड़े-बड़े मट्टी के जालों (मटकों) को भरते थे। इतनी बड़ी कोठी में जहां सैकड़ों लोग रहते थे वहाँ सिर्फ ६ पखाने थे इसलिए लोगों को नम्बर लगाना पड़ता था। हाथ धोने के लिए, स्नान करने के लिए नौकरों से सहायता लेनी पड़ती थी। सस्ती का जमाना था इसलिए ८-१० रुपया मासिक पर नौकर मिलते थे। और बासे में भी दोनों समय का भोजन केवल १० रुपये मासिक में ही मिल जाता था। फतेह्वारी कोठी काफी पुरानी बनी हुई थी। सीढ़िया भी अच्छी नहीं थी। उसी रास्ते नौकर लोग पानी ऊपर ले जाते इसलिए कई बार लोग फिसल जाते। कबूतर बहुत रहा करते जिनकी "गुटरगूँ" सुनने को मिलती। पहली यात्रा में धर्मा को गद्दी में ही रहना पड़ा उसके लिए वह सारा नया अनुभव था। फिर बैजनाथजी ने अपने रहने के लिए नजदीक में ही आरमेनियन स्ट्रीट में अपने परिचित गणपतरामजी बजाज के कहने पर एक छोटा कमरा ११ रुपये महीने भाड़ा पर लिया जो पखाने के पास था और संतोष किया कि शौच जाने की सुविधा है। इसके व्यवहार के लिए नम्बर नहीं लगाना पड़ेगा।

फतेह्वारी कोठी में स्नेहीराम डूंगरमल नाम का फर्म था जिनका व्यापार आसाम में भी था। उनके मालिक डूंगरमलजी लोहिया स्वास्थ्य के प्रति बहुत रुचि रखते थे। नित्य गंगाजी जाते और कुछ व्यायाम भी करते। धर्मा उनके साथ गंगा स्नान को जाता और गंगा में तैरना सीखने का प्रयत्न करता। किन्तु तैरने की बात अपने माताजी को कभी नहीं बताई। डूंगरमलजी लोहिया सार्वजनिक कार्यों में भी काफी रुचि रखते थे। वे मारवाड़ी रीलिफ सोसाइटी के पदाधिकारियों में थे। आगे चलकर गोबिन्द भवन बना तो वहां के कीरतनों में भी भाग लिया करते थे। स्वास्थ्य भी उनका बहुत अच्छा था। बैजनाथजी धार्मिक विचारों के थे इसलिए दिगम्बर जैन मन्दिर के सामने मियां कटरा के

पीछे रहने के लिए २ कमरे लिए। उस गली का नाम नाई टोला था और वहीं फलों का थोक व्यापार हुआ करता था। थोक का काम करने वाले व्यापारी पेशावरी तथा अन्य मुसलमान थे। वे व्यवहार में बड़े नम्र और अच्छे थे। भीड़ के समय जब महिलाएँ उस रास्ते से जातीं तो वे खुद एक किनारे होकर रास्ता दे देते। उस मकान के मालिक झुनझुनवाला थे जिनके यहां शेयरों का काम होता था। संयोग से उसी मकान में बैजनाथजी के साढ़ू श्री जयदयालजी सराफ रहा करते थे। वे कानपुर के प्रख्यात फर्म जुगीलाल कमलापत के हेड मुनीम थे जिनका उस समय कलकत्ते में विदेशों से धोती, कपड़ा आदि मंगाकर थोक व्यापारियों को गाँठ की गाँठ बेचने का काम था। धर्मा यहाँ आकर विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय में भर्ती हुआ। राँची की नार्मल स्कूल के सामने विद्यालय का महान, ठाट-बाट याने खेलने का मैदान, व्यायाम की जगह, बेंच टेबुल आदि की बड़ी अच्छी व्यवस्था थी। साथ ही टिफिन के समय बच्चों को खान-पान के लिए शुद्ध घी की बनी चीज भी बिकती थी जिसे छात्र अपनी शक्ति के अनुसार खरीद कर खाया करते थे।

नार्मल स्कूल में मासिक पढ़ाई की फीस नहीं देने पर छात्रों को जुर्माना होता था और छात्रों से जुर्माना वसूल किया जाता था। वहां भर्ती होने के एक साल बाद धर्मा को एक पुर्जा दिया गया उसमे लिखा था एक रुपया मासिक १२ महीने के १२ रुपये। धर्मा ने विशुद्धानन्द विद्यालय में २-३ वर्ष शिक्षा पाई। उस जमाने में छात्रों को किताबों आदि का बोझ इतना नही ढोना पड़ता था। धर्मा कभी हरिसन रोड के रास्ते या कभी मछुआ बजार के रास्ते विद्यालय रोज पहुँच जाता उसे टिफिन के लिए चार पैसे नित्य मिलते थे। पर अन्य पैसे वाले छात्रों को आठ आना, एक रुपया रोज मिलता था। उनके सामने उसकी हेठी न हो वह पैसे को बचाकर रखता और कभी-कभी उनके साथ बैठकर उतना खर्च करता। इन सत्तर वर्षों में मछुआ बाजार रास्ते के मकान वैसे के वैसे है और रास्ता और भी गन्दा हो गया है। हरिसन रोड पर आठ-दस मकानों के अलावा बाकी के सब मकान वैसे ही है। बांगड़ बिल्डिग जहां है वहाँ पहले कच्चे मकान थे। उस स्थान को कौक्स किंग कम्पनी ने खरीद कर बड़ा मकान बनाना आरम्भ किया पर कई कारणों से न बना सकी और अधूरे मकान को बांगड़ो को बेच दिया। उन्होंने उसे पूरा कर उसका नाम बांगड़ बिल्डिग रखा।

कलकत्ता आने पर डूंगरमलजी लोहिया तथा कई अन्य लोगों का स्वास्थ्य देखकर धर्मा की भी इच्छा हुई कि वह अपना स्वास्थ्य सुधारे। उस समय शोभा राम बैशाख स्ट्रीट में माहेश्वरी व्यायामशाला का अखाड़ा चलता था। धर्मा ने वहाँ नाम लिखाया और व्यायाम करने जाना आरम्भ किया। उस जमाने में व्यायाम करना गुण्डे-बदमाशों का काम समझा जाता था। पड़ोस के कुछ लोग अपने बच्चों को धर्मा से दूर रहने के लिए कहा करते थे। धर्मा को नई चीजों की जानकारी और उसके सीखने की उत्सुकता बराबर रहा करती थी। उन दिनों महर्षिदेवेन्द्र रोड में शाल बल्लों से बनी गोदामें थीं जहाँ मैदा, तेल आदि का काम हुआ करता था और उसे लोग मैदा पट्टी कहते थे। एक दिन संध्या को वहां आग लगने की खबर आई। धर्मा भी आग देखने पहुँचा। देखते देखते धर्मा ठीक जहां आग लगी हुई थी वहाँ पहुँच गया। उस समय दमकलें भी कम थी व साधन भी बहुत कम थे। आग के पास एक दमकल वाला आग बुझा रहा था। उसे पाइप का हैण्डल पकड़ कर लम्बी भारी पाइप को खींच कर लाना था। उसने अपने अन्य साथियों के अभाव में इधर-उधर किसी से सह-योग के लिए दृष्टि दौडाई। धर्मा ने उसका पाइप का हैण्डल पकड़ा और वह मोटी पाइप को टानकर ले आया। सयोग से उसी बीच जलती लकड़ी का टुकड़ा धर्मा के ऊपर गिरा जिससे उसका कपड़ा थोड़ा जल गया पर विशेष कोई क्षति नही हुई। यह बात घर आकर धर्मा ने किसी को नहीं बताई। मैदा पट्टी की आग ने इतना जोर पकड़ा कि वह १०-१२ दिनों तक रही। दूर-दूर के लोग उसे देखने के लिए आते रहे। और सारा का सारा मैदा पट्टी जलकर नष्ट हो गया। फिर इम्प्रूभमेंट ट्रस्ट ने उसे खरीदकर नये ढग से बनाकर उसका नाम महर्षिदेवेन्द्र रोड रखा जहां बड़ी-बड़ी इमारतें बनी हुई है।

धर्मा स्कूल से आता था फिर भोजन करके सूता पट्टी की गद्दी में आ जाता और वही सोया करता था। बैजनाथजी धार्मिक विचारो के थे इसलिए धर्मा को साधारण पढ़ाई के साथ-साथ जैन धर्म की पढ़ाई के लिए झमनलालजी पण्डित को रख दिया वे उसे सुबह पढ़ाने आते। धर्मा सुबह नहा-धोकर मन्दिर जाता भोजन करता और फिर स्कूल चला जाता। यह क्रम २-३ वर्ष चला फिर राजा कटरा के पास हुक्का पट्टी में कुछ लोगों ने महाविद्यालय नाम से स्कूल खोला। बैजनाथजी को कुछ मित्रों ने उस विद्यालय की शिक्षा की प्रशंसा की तो उन्होंने

धर्मा को वहां भर्ती करा दिया। वहां के प्रिन्सिपल मूलचन्दजी अग्रवाल थे जो पढ़ाई के साथ-साथ सार्वजनिक कामों में भी रुचि रखते थे इसलिए बैजनाथजी से उनका परिचय था। धर्मा वहां दो वर्ष पढ़ा। पढ़ने के सभी विषयों में उसकी रुचि थी पर संस्कृत उसको बहुत कठिन जान पड़ती थी क्योंकि विभक्तियों के हिसाब से शब्दों को रटाया जाता था वह उसको कठिन जान पड़ता था। स्कूल में बहुत से बच्चे पढाई से बचने के लिए "माथे" में दर्द है कहकर छुट्टी लेकर घर जाना चाहते थे। उस समय आज-कल की तरह माथे के दर्द की गोलियों का प्रचलन नहीं था। मूलचन्दजी को किसी ने कह दिया कि धर्मा माथे के दर्द को हटाने का मंत्र जानता है इसलिए वे उसे बुलाते और लड़के का माथा दर्द मंत्र द्वारा दूर करने को कहते थे। धर्मा अंगूठा और मध्य की अगुली से लडके का माथा जोर से दबाकर धीरे-धीरे दोनों अगुलियों को सामने ले जाता और मन ही मन "काली ककलकत्ते वाली तेरा मन्त्र न जाये खाली" कहकर फूंक मारता। इस तरह लड़के का माथा ठीक हो जाता और उसे घर जाने की छुट्टी नही मिलती थी। उस समय फतेद्वारी कोठी में ही द्वारका प्रसाद जालान ने जो बैजनाथजी के मित्रों में थे, बैजनाथजी से सलाह की कि बच्चों को स्कूल की वनिस्पद घर पर ही पूरे टाइम मास्टर रखकर पढाया जाये तो पढ़ाई अच्छी होगी। द्वारका प्रसादजी के भी दो लड़के थे। एक का नाम रघुनाथ, दूसरे का श्री था। इसलिए उन्होंने एक मास्टर रखा जो उन दोनों लड़को और धर्मा को अंग्रेजी पढाया करते थे। धर्मा की मित्रता लड़कों से बहुत दिनों तक रही इन्होने उम्र कम पाई। मास्टर का नाम देवेन्द्रनाथ घोष था। वे क्रान्तिकारी विचारों के थे। धर्मा को क्रान्तिकारियो का किस्सा सुनाया करते थे।

बैजनाथजी के मुकाबले द्वारका प्रसादजी की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी साथ ही वे शौकीन भी थे। तीनों बच्चों की पढाई उनकी गद्दी के कमरे मे हुआ करती थी। दो-चार बार धर्मा को उनके मकान पर जाने का मौका मिला तो उसने देखा कालीतल्ला मे उन्होने अपने रहने के लिए एक-दो कमरे न लेकर एक पूरा मकान ही भाड़े पर ले रखा था और रईसी ठाट लगा रखे थे। एक कमरा बैठक के रूप में था, एक कमरा जूते रखने के लिए था जहां बीस-तीस जोड़े जूते अलग-अलग समय पर पहनने के हिसाब से अलग तरह के रखे रहते थे। एक कमरा ठाकुर बाड़ी, एक कमरा रसोई के लिए था, एक नौकरों के लिए। एक

बार धर्मा उनके यहाँ गया उस दिन खूब पानी बरसा की चारों तरफ के रास्ते पानी से भर गए। ट्राम चलनी बन्द हो गई इसलिए दरवान भाड़े की घोड़ा गाड़ी ले लाया और उसने धर्मा को उसपर बैठाकर सूतापट्टी पहुँचाया। धर्मा को आश्चर्य हुआ कि उस समय भी कालीतल्ला में कमर जितना पानी इकट्ठा होता था। यह बात सन् १९१९ की है। जब धर्मा घोड़ा गाड़ी मे बैठा तो देखा घोड़ा गाड़ी के भीतर पानी तो घुसा हुआ ही है, उसकी सीटें भी पानी में तैर रही हैं। धर्मा के लिए यह नया अनुभव था क्योंकि राँची में उसने ऐसा कभी नहीं देखा था।

रांची से धर्मा जब कलकत्ता आया तो उसे यहां कई चीजें नई दिखलाई दीं। जिस तरह रांची में दूध के दाम २ आना सेर था वह कलकत्ते में ४ आना सेर था। जलेबी पैसे में २, दही बड़ा पैसे में चार मिलते थे। यहां कलकत्ते में जलेबी दो पैसे मे एक और दही बाड़ा पैसे मे एक मिलता था। फतेहारी कोठी के सामने मल्लिक कोठी के बीच कानिया हलवाई की बिख्यात दूकान थी जहाँ सुबह से लेकर रात तक बराबर कचौड़ी तथा अन्य मिठाइयों की बिक्री होती थी।

काली गुदाम के पास राम प्रताप हलवाई की एक जलेबी की दूकान थी जिसमें सुबह ५-६ बजे से ९-१० बजे तक केवल जलेबी ही बिका करती थी। वह दूकान आज भी उसी प्रकार चलती है। पुराने जमाने में यातायात के लिए घोड़ागाड़ी का प्रयोग होता था। माल ढोने के लिए बैल गाड़ी या भैंसा गाड़ी काम में आती थी। उस समय तक मोटरों और लारियों का प्रचार नहीं हुआ था। इसलिए सड़कों पर घोड़ो की लीद, बैलों का गोबर, भैंसों का गोबर चारो तरफ बिखरा रहता था। राँची में सुबह मेहतर आकर मुख्य रास्तो पर झाड़ू दे जाते पर कलकत्ते में झाड़ू तो दिया ही जाता था और सड़कों की धुलाई भी होती थी। उस समय कलकत्ते की आबादी १० लाख थी। भारत की आबादी ३३ करोड़ थी इसलिये पण्डित लोग जब चर्चा करते तब कहा करते ३३ करोड़ देवी-देवता हैं।

धर्मा को पैदल चलने का बहुत अभ्यास था। घर का सामान अनाज, मसाला आदि दरवान लोग खरीद कर लाते। जब कभी दरवानों को समय नहीं मिलता तो धर्मा को कहने पर वह बड़ी प्रसन्नता से कई बाजारों यानी मछुआ बाजार, राजा कटरा, तुला पट्टी आदि स्थानों में जाँच पड़ताल कर के जहां सस्ता

होता वहीं से खरीदता। धर्मा ने जैन पण्डित से जो शिक्षा ली उससे उसका अभ्यास इतना बढ़ा कि जैनियों की शास्त्रीय सभा में जब भी बैठता तो इस तरह के प्रश्न करता और तर्क-वितर्क करता कि लोग देखकर और सुनकर चकित रह जाते। कलकत्ते में उस समय ४ मन्दिर थे :—एक-नया मन्दिर चितपुर रोड पर दो-बड़ा मन्दिर, १ बैसाख लेन, तीन-पुरानी बाड़ी, ३५, बृज दुलाल स्ट्रीट, चार-बेलगछिया मन्दिर, बेलगछिया ट्राम डिपो के पास। साल में एक बार कार्तिक पूर्णिमा को रथ यात्रा का जूलूस चावल पट्टी के मन्दिर से निकलकर बेलगछिया जाया करता था। उसे देखने के लिए कलकत्ते के आस-पास के मुहल्लों से तथा दूर-दूर से लोग हजारों की सख्या में लोग आते। जिस रास्ते से यात्रा निकलती उसमें लाईन लगाकर देखते और यात्रा में भी शामिल होते। स्त्रियाँ मकानों के बरामदे में बैठकर देखतीं। उस जमानें में दिगम्बरियो में दयाचन्दजी, बृद्धिचन्दजी रामजीवनदासजी और सरावगी का बोलबाला था। उनके परिवार के लोग विशेष प्रकार का कपड़ा पहनकर अगुवाई में रहा करते थे और श्वेताम्बरियों में बद्रीदासजी जौहरी के परिवार के लोग जवाहरात पहनकर निकला करते थे। उनके चारों तरफ उनको रक्षा के लिए हथियार लिए चौकीदार रहा करते थे।

धर्मा भी इस यात्रा में सभी के साथ बेलगछिया पैदल जाया करता था। यह यात्रा सैकड़ों वर्षो से आज भी निकलती है। पहले श्वेताम्बरियो की यात्रा निकलती है जो मानिकतल्ला में बद्रीदासजी के बगीचे जाती है। पीछे दिगम्बरियों की जो बेलगछिया जाती है।

भादो सुदी पचमी से चतुर्दशी तक जैनियों का विशेष पर्व माना जाता है। इन १० दिनों में पूजा-पाठ, व्रत-उपवास लोग अपनी शक्ति के अनुसार करते हे। धर्मा भी पूजा-पाठ करता। शास्त्र-सभा में बहस करता। चतुर्दशी के दिन सारे मन्दिरों के दर्शन कर बाली और उत्तरपाड़ा के दर्शन के लिए स्टीमर, से जाता। पैदल चलने का अभ्यास इतना अधिक था उसे कि जगन्नाथ घाट से बाली तक स्टीमर पर, बाली से उत्तरपाड़ा पैदल जाता, उत्तरपाड़ा से जगन्नाथ घाट स्टीमर से आता। चतुर्दशी के दिन घर के सभी लोग उपवास करते थे, धर्मा को भी उपवास करने को कहा जाता पर वह नहीं करता।

पढ़ाई के बाद धर्मा को लोगों की जीवनी और यात्रा सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ने का शौक था। उस समय स्वामी सत्यदेव परीब्राजक की कई पुस्तकें, खासकर

अमेरिका यात्रा का अनुभव उसने पढ़ा। इससे उसके मन में विदेश भ्रमण की अभिलाषा जागी। यद्यपि उसके दूसरे साथी उपन्यास पढ़ने में रुचि लिया करते। पढ़ने के लिए दिगम्बर जैन युवक समिति द्वारा स्थापित महावीर पुस्तकालय, पास में ही, मियाकटरा के एक तल्ले पर था। आगे चलकर महावीर पुस्तकालय के जीर्णोद्धार में धर्मा का बहुत बड़ा हाथ रहा। मनोहरदासजी जालान कलकत्ते में बांसतल्ला गली में रहा करते थे। कपड़े के व्यापारी थे साथ-साथ सट्टे का व्यापार भी करते थे। बैजनाथजी जब कलकत्ते आए तो मनोहरदासजी ने बैजनाथजी को सट्टे से दूर रहने की सलाह दी। एकबार बद्रीदासजी जालान की पत्नी हरियादेवी जो फतेहपुर में अकेली रहा करती थी, गंगासार की यात्रा करने कलकत्ते आई और मनोहरदास जी के पास ठहरीं। मनोहरदासजी ने उनके सामने एक प्रस्ताव रखा कि गंगासागर की यात्रा के बाद वह देश न जाए कलकत्ते में ही रहे। मनोहरदास के चार पुत्र थे—माधव प्रसाद, मदनलाल, नन्दलाल, और गौरीशंकर। नन्दलाल को उन्होंने अपने छोटे भाई दुर्गादत्त की विधवा पत्नी को गोद दे दिया और अब छोटे पुत्र गौरीशंकर को उन्हें गोद देना चाहते थे। उनका कहना था इस बच्चे को तुम पालो तुम्हारा मन लग जाएगा साथ ही तुम्हारे वंश का नाम भी चलेगा।

बद्रीदास की पत्नी ने कहा मेरे पास कोई धन-दौलत नहीं है, मैं इस बच्चे को गोद लेकर इसका भविष्य खराब नहीं करना चाहती। इस पर मनोहरदासजी ने स्पष्ट किया कि यह बात मुझे मालूम है। मै लिखा-पढी में स्पष्ट कर दूंगा कि लड़का तुम्हें गोद तो दे रहा हूँ पर मेरी सम्पति में इस लड़के का अन्य लड़कों की तरह बराबर का हिस्सा रहेगा। इस पर उन्होंने मनोहरदासजी से कहा कि मेरी दोनों लड़कियां कलकत्ते में हैं मै उनसे सलाह कर बात पक्की करूंगी। फिर उन्होंने गगासागर यात्रा के बाद अपनी लड़की मोहरी देवी से, जो जयदयालजी सराफ को व्याही थीं, जानकी देवी जो बैजनाथजी को व्याही थीं, सलाह की। उन्हें मनोहरदासजी का प्रस्ताव बड़ा अच्छा लगा क्योंकि उनके इस प्रस्ताव से कलकत्ते में ही मां और भाई दोनों घर बैठे मिल गए। संयोग से मोहरी देवी ज्यादा उम्र नहीं पा सकी और ५-७ वर्ष बाद ही संग्रहणी रोग से ग्रस्त होकर स्वर्ग सिधार गई। जयदयालजी भी मधुमेह के रोगी थे अधिक उम्र नहीं पा सके। धर्मा ने मनोहरदासजी, माधवप्रसादजी, मदनलाल, नन्दलाल आदि ममेरे

भाइयों के जीवन में बहुत उथल-पुथल देखी। माधव प्रसादजी और गौरीशंकर मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मन्त्री चुने गए।

प्रथम विश्व-युद्ध समाप्त हुआ इससे बाजारों में बहुत उलट-पलट आई। धर्मा ने बैजनाथजी की बहुत अच्छी अवस्था और खस्ता अवस्था दोनों देखी। देश में स्वतन्त्रता का आन्दोलन भी छिड़ गया था। एनीबेसेन्ट, जो भारतीयों को स्वतन्त्रता दिलाने की पक्षधर थीं, उनका जुलूस देखा, साथ ही गांधीजी का जुलूस भी देखा। गांधीजी की मीटिंग जाजोदिया के प्रयत्न से उनके मकान के बगल में ही पश्चिम की ओर साथ ही बांगड़ बिल्डिंग के दक्षिण फुट पर राजेन्द्र मल्लिक के छोटे से मकान के बैठक खाना में जो आज भी उसी हालत में है—एक बड़े कमरे के नीचे गांधीजी की बैठक हुई। गाधीजी ने अपने भाषण के बाद लोगो से स्वराज फण्ड के लिए रुपये मांगे, लोगों ने यथाशक्ति, जिनके पास जो था, दिया। धर्मा पीछे कैसे रहता उसके पास कुछ नही था, हाथ में अनन्त पहने था। उसने उसे उतार कर दे दिया। घर आकर जब उसने बताया तब बैजनाथजी नाराज होने की बनिस्पद खुश हुए। कलकत्ते में उस समय 'भारत मित्र' और 'कलकत्ता समाचार' दो दैनिक चलते थे। 'भारत मित्र' पुरातन विचारों का समर्थक था। मूलन्दजी सुधारक विचार के थे इसलिए उन्होने महाविद्यालय का काम छोड़कर "विश्वमित्र नामक" एक दैनिक और प्रकाशित कर दिया। इसका दाम एक पैसा था और कार्यालय नारायण प्रसाद बाबू लेन में था। बैजनाथजी ने जब रुपय कमाया तब एक घोड़ा गाड़ी भी खरीदी।

घटना १९२६ की है

कलकत्ते का बड़ाबाजार और बड़ाबाजार की सूता पट्टी, इसी सूता पट्टी के सूत के व्यापारियों के सम्मिलित प्रयास से राजराजेश्वरी की भव्य पूजा हरिसन रोड स्थित बाबूलाल अग्रवाला की धर्मशाला में वर्षों से हुआ करती थी। दूर-दूर से लोग दर्शन के लिए आते थे। कई दिनों तक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ करते थे। पूजा के शेष दिन, विसर्जन के पहले, उस वर्ष, जब नगर परिक्रमा के लिए झाँकी निकली और हरिसन रोड एवं सेन्ट्रल एवेन्यू के बीच भगवानदास बागला के अस्पताल के सामने पहुंची तो सामने के फुट पर एक छोटा-सा मस्जिद था, जिसका नाम दोना मस्जिद था। जो अब भी है, वहीं मस्जिद के सामने मुसलमानों ने

बाधा पहुंचाई और दंगा शुरू हो गया। दंगा बड़ा ही भयंकर था और बीस-पच्चीस दिन तक चलता रहा। मस्जिद के पीछे मुसलमानों की बस्ती और बागला पुस्तकालय के पीछे हिन्दुओं की बस्ती। इसी तरह चितपुर रोड और हरिसन रोड की मोड़ के दक्षिण जामा मस्जिद, लालबाजार तक मुसलमानों की बस्ती और इधर उत्तर तरफ हिन्दुओं की बस्ती थी।

संयोग की बात है, उस समय मियाँ कटरा के पीछे बगल की गली बाबूलाल लेन यानी नाईटोला में, झुनझुनवाला के मकान में अपने माता-पिता के साथ धर्मा रहा करता था। उसी गली में पेशावरी व्यापारी फलों का थोक व्यापार करते थे। धर्मा के पिता और परिवार के लोगों के सामने वहां रहना एक आतंकपूर्ण समस्या थी। जब पेशावरी व्यापारियों को उनकी घबराहट का पता चला तो उन्होने बहुत भरोसा दिया, हिम्मत बधाई, कहा, जबतक हमलोगों की जान रहेगी तबतक आपलोगों का बाल भी बांका नहीं होगा। पर विपत्ति कब, कैसे, किस रूप में आए, यह कौन जानता है। इसी विचार से धर्मा के पिताजी बैजनाथजी वह मकान छोड़ कर १७३ हरिसन रोड के पीछे ६ नम्बर शम्भू मल्लिक लेन वाले मकान के दो तल्ले पर रहने लगे।

यह दंगा काफी दिनों तक चला। उस समय धर्मा पर विदेश यात्रा की धुन सवार थी—कैसे जाया जाए, कपड़े क्या हों, वहां रहाव के लिए क्या करना पड़ता है आदि आदि बातों की जानकारी के लिए वह बासुदेवजी सराफ से समय-असमय मिलने जाया करता था। बासुदेवजी सराफ धर्मा की तरह ही परिवार और घरवालों के विरोध की परवाह न कर विदेश यात्रा कर चुके थे। सराफजी कोलुटोला के पास १४४, सेन्ट्रल एवेन्यू मे रहा करते थे। धर्मा दंगे के विकट दिनों में भी निर्भय उनसे मिलने जाया करता था।

उस दगे में समाज के नवयुवकों ने हिन्दू मुहल्लों मे मुसलमानों को और मुसलमान मुहल्लो में हिन्दुओं को बचाने का अद्‌भुत साहसपूर्ण कार्य किया था। साथ ही बिना किसी भेद-भाव के क्षतिग्रस्त हिन्दू मुसलमानों की डट कर सेवा की थी। उन व्यक्तियों में पद्मराजजी जैन, राष्ट्रकवि माधवजी शुक्ल, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, घनश्यामदासजी बिड़ला, बसन्तलालजी मुरारका, रामकुमारजी भुवालका आदि थे। धर्मा इस सेवा कार्य में सहयोग नहीं दे पा रहा था।

बैजनाथजी से परिचय के कारण एकबार घनश्यामदासजी ने धर्मा को टोका। आप एक नवयुवक हैं, समाजसेवा के कार्यों से अलग रहने से कैसे काम चल सकता है। धर्मा ने उनसे उत्तर में निवेदन किया : आप यह मानकर चलें कि हमारे बीच एक व्यक्ति अस्वस्थ है। और फिर आपलोग जैसे अनुभवी काम में लगे हैं तो सफलता मिलेगी ही।

आठ साल की अल्पायु में ही धर्मचन्द की सगाई किसी तीन साल की बच्ची के साथ कर दी गई थी। सन् १९२० में धर्मचन्द को विवाहसूत्र में बांध देने का निश्चय किया गया। धर्मचन्द अब निरा बालक नहीं रह गया था। भावों और आवेशों से भरा सोलहवा साल लग चुका था उसे। आंखों में इन्द्रधनुषी सपने संजोए, यौवन की देहरी पर खड़ा था धर्मचन्द। वैवाहिक जीवन का पूरा अर्थ न समझने पर भी कोई चांद-सी सुन्दर बहू शर्म से घूंघट निकाले उसके मन-मन्दिर में प्रवेश कर चुकी थी। पिता ने जिस लड़की के साथ उसका भविष्य जोड़ना चाहा था उसकी एक झलक देखे बिना धर्मचन्द विवाह करना नहीं चाहता था। दबी जबान से धर्मचन्द ने अपने मन की बात मां के आगे सरका दी। पर पिता के दबदबे के आगे उसकी बात भला कौन सुनता। लोगों ने जब लड़की देखने की बात सुनी तो नाई ब्राह्मण जो सगाई कराते हैं उनके विवाह बिना देखे होते हैं, यह सगाई तो घर वालों ने देख सुनकर आज से आठ साल पहले की थी। अब लड़की कोई गाजर मूली, साग-भाजी का सौदा थोड़े है जो दिखाई जाए। मन की उधेड़बुन के साथ धर्मचन्द ने विवाह की रस्म अदा कर दी। जिसे आना था वह बहू बनकर घर में आ गई।

पिता ने सोचा था कि पत्नी का मोह और काम की जिम्मेवारी से धर्मचन्द की चंचल प्रकृति को लगाम लग जाएगी। पर विधि के विधान को कौन टाल सकता है। इतने सारे बन्धनों के बावजूद धर्मचन्द का घुमक्कड़ मन दुनिया की सैर करने के लिए उतावला होता गया। नन्हे मन की यह महत्वाकांक्षा सचमुच अद्भुत थी। उस जमाने में देश में भी एक प्रदेश से दूसरे की यात्रा करना जोखम से खाली नहीं था। ऐसी अवस्था में समुद्र के रास्ते दुनिया की यात्रा के लिए निकलने की बात कोई सिरफिरा ही सोच सकता था। कहां उत्ताल तरंगों से आलोड़ित महासागर का अनन्त विस्तार और कहां उसके पार जाने का एक

नन्हें-का बाल-संकल्प। पर होनहार की असाधारण शक्ति बचपन में ही प्रकट होने लगती है। आखिर बड़े साहस और आत्म विश्वास के साथ धर्मचन्द ने अपने योरप भ्रमण के संकल्प को पिता के सामने रख ही दिया। सुनकर बैजनाथजी तो अवाक् रह गए।

धर्मचन्द अपने पिता का आदर तो करता था, किन्तु उसकी गहरी समझ ने उसके विद्रोही मन को यह भी एहसास करवा दिया कि रूढ़िग्रस्त जड़ परम्पराओं से बंधे पिता के अनुशासन को स्वीकार कर लेने से वह अपनी महात्वाकांक्षाओं की पूर्ति नहीं कर सकेगा। प्रगतिशील युग की दौड़ मे पिछड़ कर रहना उसको स्वीकार नही था। अतः प्रारम्भ से ही उसने स्वावलम्बी होने का रास्ता अपना लिया था। विवाहोपरान्त वह उस समय महात्मा गांधी रोड और रवीन्द्र सरणी की मोड़ के पास जैन मन्दिर के सामनेवाली गली में ही रहता था। पास ही श्री महावीर पुस्तकालय में जाकर भ्रमण सम्बन्धी पुस्तकें पढता और प्रातः उठकर "विश्वमित्र" कार्यालय जाता जो उस समय कालेज स्ट्रीट मार्केट के पास ही था। श्री मूलचन्दजी वहां रहा करते थे और अपनी देख-रेख में पत्र निकलवाते थे। धर्मचन्द "विश्वमित्र" की कुछ प्रतियां लाता और महात्मा गांधी रोड और रवीन्द्र सरणी के मोड पर खड़ा होकर बेच देता। एक बार श्री मूलचन्दजी ने उसे देखा, श्री बैजनाथजी से भी उनका परिचय था, बैजनाथजी की आर्थिक स्थिति को वे जानते थे। जब धर्मचन्द से उन्होंने बातें की तो उसने उनसे अपने स्वावलबी जीवन के विचार बताए। रहने का स्थान, खान-पान कपड़े तो घरवाले देते ही थे। कुछ हाथ खर्च निकाल लेने की योजना धर्मचन्द ने उनसे बताई।

आगे चलकर जोखीराम मूंगराज को टाटा की एजेन्सी मिली, उसके माल बेचने के लिए बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब आदि प्रान्तों में घूमना पड़ता था। उस काम को उसने कई वर्षों तक वेतनभोगी कर्मचारी के रूप मे किया और हर महीने अपने वेतन के रुपये लेकर बैंक में जमा करता रहा।

जब धर्मचन्द ने योरप भ्रमण पर जाने का प्रस्ताव पिता के सम्मुख रखा तो पिता ने इस कार्य को पारिवारिक और सामाजिक मर्यादा के विपरीत समझ कर उसको किसी भी प्रकार की आर्थिक मदद करने से इन्कार कर दिया। धर्मचन्द तो यह बात पहले से ही जानता था। उसने अपनी स्वयं की कमाई के

बल पर ही योरप भ्रमण करने की तैयारी की। वह टाईपिंग, फोटोग्राफी, मोटर चलाना आदि कई हुनर जानता था। उसके मन में यह विश्वास था कि जरूरत पड़ने पर अपनी इस जानकारी के सहारे कमाता हुआ वह अपनी यात्रा पूरी कर लेगा। आत्मविश्वास की यह पराकाष्ठा थी।

मात्र बीस वर्ष की अल्पायु में योरप भ्रमण का यह निश्चय साधनहीन धर्मचन्द की प्रौढ मानसिकता और प्रखर आत्म-विश्वास का द्योतक था। यह यात्रा किसी अड़ियल बच्चे की सनक मात्र नहीं थी, बल्कि अधेरी गलियों में भटकते हुए पुरातनपथी मारवाड़ी समाज के अवचेतन में नए प्रकाश की प्राप्ति के लिए चलने वाली कसमसाहट का प्रचण्ड विस्फोट था। यह नियति की असीम अनुकपा ही रही होगी कि मध्यवित्तीय घराने में जन्मा सीकिया (धर्मचन्द) का इतिहास को यह कठिन मोड़ देने वाला सकेत-बिन्दु बन सका। कौन कह सकता है कि नई दुनिया क़ी खोज में निकले इतिहास-प्रसिद्ध वास्कोडिगामा के मनोबल से धर्मचन्द का मनोबल कुछ कम था।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में इस घटना के विस्तार मे जाने का न यहां अवकाश है, न आवश्यकता। यह अद्‌भुत बालक धर्मचन्द ही था जो समस्त बाधा-निषेधों की अवहेलना करता, ताल ठोंक कर अकेला ही चल पड़ा। अजनबी दुनिया की सैर करने। धर्मचन्द से पहले जी० डी० बिड़ला जैसे समृद्ध घराने के कुछ एक मारवाड़ी योरप-यात्रा पर गए अवश्य किन्तु अपनी औकात की सीमा लांघ कर दुस्साहसिक यात्रा पर निकलने वाला उस समय तक प्रथम युवा धर्मचन्द ही था। यह यात्रा अजीब इस रूप में भी थी कि न कोई विदाई-समारोह, न किसी की शुभकामना, न किसी के द्वारा उत्साह-वर्द्धन। उस समय तक हवाई जहाज की यात्रा आरम्भ नही हुई थी। पानी के जहाज से यात्रा करनी पड़ती थी। बम्बई से हर सप्ताह जहाज जाया करते थे। लन्दन तक १२ दिन लगते थे। रांची नामक जहाज में सीट रिजर्व हुई। १ जनवरी, १९२६ को जहाज रवाना होने वाला था। बैजनाथजी पहुंचाने गए थ। वे अन्तिम समय तक उसे समझाते रहे कि विदेश-यात्रा न करे। धर्मचन्द अपने विचार बदलने को तैयार नहीं था। उसने यात्रा खर्च के लिए रुपये नहीं मांगे केवल पैर छूकर आशीर्वाद लिया और लम्बी यात्रा के लिए रवाना हो गया।

विक्षोभ और बौखलाहट

विदेश-यात्रा समाप्त कर धर्मचन्द २९ जुलाई, १९२९ को करांची के हवाई अड्डे पर उतरा। करांची में सरावगी तथा मारवाड़ी समाज के अन्य लोगों ने धर्मचन्द का उत्साह-जनक स्वागत किया। करांची में धर्मचन्द सेठ ताराचन्द घनश्यामदास के यहाँ ठहरा। दूसरे दिन रायबहादुर चम्पाराम मोतीराम के मन्दिर में बड़े प्रेम से पूजन किया। पहली अगस्त को स्थानीय मारवाड़ी युवक-सभा की ओर से पार्टी दी गई जिसमें अच्छी तादाद में युवकों ने भाग लिया। दूसरे दिन सेठ शिवरतनजी मोहता ने अपने बगीचे में पार्टी दी जिसमें सरावगी, अग्रवाल और माहेश्वरी समाज के सैकड़ों सम्माननीय व्यक्ति उपस्थित थे। उसी दिन संध्या को रायबहादुर सेठ मोतीलाल गोवर्द्धनदास की गद्दी में मारवाड़ी युवक सभा द्वारा आयोजित गोष्ठी में धर्मचन्द ने अपनी विदेश-यात्रा के अनुभव सुनाए। वहीं से वे तीर्थ-यात्रा करते हुए कलकत्ता के लिए रवाना हुए।

इधर कलकत्ता के सरावगी समाज में, धर्मचन्द के वापस आने की खबर स भीषण हलचल मची हुई थी। खण्डेलवाल पंचों ने धर्मचन्द को जाति से बहिष्कृत कर देने के इरादे से पंचायत बुलाई। कहते हैं श्री बलदेवदासजी सरावगी पचायत बुलाने वालों में प्रमुख थे। धर्मचन्द को समाज-बहिष्कृत करने के लिए तात्कालिक धर्म और समाज के ठेकेदारों ने जो जोरदार मुहिम चलाई थी उससे सम्बन्धित कुछ सामग्री हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे उस समय की सामाजिक मानसिकता को समझने में सहायता होगी—

पंचायत की कार्यवाही रात को तीन बजे तक चली और बिना किसी निर्णय के समाप्त हो गई। "स्वतंत्र' का संवाददाता लिखता है—"लोगों के विचारों से जान पड़ा कि जैन धर्म उदारतापूर्वक विलायत यात्रियों को शरण देता है। विलायत यात्रा से सनातन धर्म भले ही डूबता हो, जैन धर्म नहीं डूबता। अन्त में रात को तीन बजे पंचायत समाप्त हुई। बहिष्कारवादियों की दाल न गली। विलायत यात्रा के विरोध में चलने वाले इस आन्दोलन का साथ देनेवाले कुछ स्वयंभू धर्म-रक्षकों और समाज सेवियों ने अपना अलग मंच तैयार किया।

'अग्रवाल महापंचायत' के मंच से अशान्ति और फूट के बीज बोए जाने लगे। कलकत्ता से 'मारवाड़ी अग्रवाल-सरावगियों की घोषणा' शीर्षक से एक परचा

निकाला गया जिसमें विलायत यात्रा से लौटे धर्मचन्द के साथ किसी प्रकार का खानपान तथा जातीय सम्बन्ध न रखने का अनुरोध किया गया। इस परचे पर फतेहपुर, रामगढ़, सुजानगढ़, गुड्ढा, रतनगढ़, लक्ष्मणगढ़ और अलवर आदि स्थानों के करीब ८० लोगों के हस्ताक्षर थे। यह अपील 'भारत-मित्र' में दिनांक ११-११-२९ को छपी। धर्म भीरू लोगों द्वारा चलाए गए इस आन्दोलन की पृष्ठभूमि में कोई सैद्धान्तिक तर्क न रहकर कुछ बहके हुए लोगो का ईर्ष्या और द्वेष भरा दुराग्रह ही अधिक था।

कलकत्ते के जैन समाज में विलायत की बात करने वाले धर्मचन्दजी को अशांति की सम्भावना थी। उसे दूर करने के लिए का० सु० वर बुधवार सं० १९८६ को कलकत्ता निवासी समस्त दिगम्बर जैन धार्मिक जातियों की पंचायत बैठी जिसमें बैजनाथजी सरावगी ने अर्जी पेश की कि मेरे पुत्र धर्मचन्द के अनार्य देशों में गमन के निमित्त जो समाज में हलचल मच रही है उसके दूर करने के लिए जो हुक्म आप देवेंगे वह मुझे व मेरे पुत्र के लिए नम्रतापूर्वक पालनीय होगा। इस अर्जी पर बैजनाथजी तथा धर्मचन्दजी दोनों की सही थी।

इस पर पंचायत में युक्ति प्रत्युक्ति पूर्वक बहुत देर तक मंथन होता रहा, जिसका निर्धारण हुआ कि उक्त व्यक्तियों को प्रायश्चित-विधान से निर्दोष कर लिया जाए, इसके लिए हम दोनों को नियत किया अतः हम ने आगे लिखा प्रायश्चित विधान दोनों के लिए नियत करते है। सरावगी गृहस्थ के लिए यह आवश्यक है कि गृहस्थाश्रम का पालन करने के लिए देश, नगर, घर तथा भोजनशाला, शयनघर ऐसे हों जहां पर आर्य पुरुषों का पड़ोस और संगति हो, जहां पर अनार्य म्लेच्छों की सगति निरतर हो वह देश, स्थान योग्य नहीं। उसमें रहने से धार्मिक आश्रमों की जड़ खराब हो जाती है जिससे धर्म-संस्कारों के बिना धार्मिक व्यवस्था बिगड़ जाती है। धर्मचन्दजी के सस्कार और धर्माचार कई प्रकार के अनार्यों की संगति से, खान-पान की व्यवस्था ठीक न होने से निर्दोष समझे गये हैं अतः उनके दोषों को हटाने के लिए प्रायश्चित-विधान की आवश्यकता है जिससे उनका साहस ऐसी प्रवृत्तियों में फिर न होवे। प्रायश्चित का अर्थ पापों को दूर करना है। अतः धर्मचन्दजी को नीचे लिखा प्रायश्चित विधान करना होगा।

यह प्रायश्चित कम-से-कम एक वर्ष में पूर्ण करना होगा—

उपवास ५, नीरस एकासन ५०, एकासन १० तथा सम्मेद सिखरजी, गिरनारजी और सोजा गिरिजी इन तीर्थ क्षेत्रों की वन्दना। प्रतिदिन णमोकार मन्त्र की एक-एक जाप एक वर्ष करना, कबूतरों के लिए पाँच मन दाना गेरना, अपाहिजों के लिए रोटी पांच मन की, अनार्य देश गमन निषेध, ट्रस्ट के लिए ३१) रु० और जैन औषधालयों के लिए ५१) रु०, दिगम्बर जैन धार्मिक संस्थाओं के लिए तथा जैन समाचार पत्रों के लिए ३०१) रु० (इनकी नामावली नीचे दी गई है) कलकत्ते के चारों श्री दि० जैन मन्दिरों के लिए १०८) रु०।

उपर्युक्त प्रायश्चित विधान पूर्ण होने पर ही धर्मचन्दजी को निर्दोष माना जाएगा। अन्त में कर्म दहन पाठ पूजन, हवन और शान्ति विधान किया जाए। धर्मचन्द के विलायत यात्रा को लेकर जो आन्दोलन कलकत्ते के जैन समाज में चला वह एक व्यक्ति विशेष की कहानी मात्र न रहकर इतिहास का एक ऐसा दस्तावेज बन गया है जिसमें तात्कालिक समस्त जन समाज की धार्मिक मान्यता, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक व्यवस्था और सम्पूर्ण जीवन-दर्शन प्रतिबिम्बित होता है। जड़-संस्कारों से मुक्त होकर नई चेतना और प्रकाश की प्राप्ति के लिए समाज के भीतर ही भीतर जो कसमसाहट और भावात्मक द्वन्द्व चल रहा था उसको अभिव्यक्ति देने का माध्यम बना धर्मचन्द के विलायत प्रवास को लेकर होने वाला संघर्ष। न केवल विलायत यात्रा बल्कि विधवा-विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, छूआछूत और जातिगत ऊँच-नीच जैसे अनेक प्रश्न इस संघर्ष के साथ जुड़े और मुखरित हुए। यह एक भावनात्मक विस्फोट था जिसने सुसुप्त समाज को झकझोर कर जगा दिया और सामूहिक विचार-मन्थन को एक नई दिशा दी। नई चेतना की इस ऊष्मा ने जैनेतर समाज में भी गरमाहट पैदा कर दी थी। फिर भी जड़ परम्परावादी लोगों की पकड़ समाज पर इतनी मजबूत थी कि उससे निकल पाना बड़ी-बड़ी हस्तियों के लिए भी दुरूह कार्य था। बहुचर्चित खेतान और बिड़ला जैसे परिवारों को भी साधारण कारणों को लेकर सामाजिक बहिष्कार का अभिशाप वर्षों झेलना पड़ा।

इन्दौर के प्रख्यात सेठ सर हुकमचन्दजी जैसे व्यक्ति को कलकत्ते आकर समाज के सामने इस बात की सफाई पेश करनी पड़ी कि उन्होंने विलायत यात्रा

से लौटे धर्मचन्द को अपने रंगमहल में ठहरने की सम्मानजनक सुविधा कैसे और क्यों दी ? वस्तुतः यह शुभ संयोग और सौभाग्य ही कहा जाएगा कि धर्मचन्द जैसा साधारण हैसियत का आदमी ऐसी प्रचण्ड सुधारवादी मुहिम का अगुआ हो गया। अब बचकाना समझा जाने वाला धर्मचन्द बहुचर्चित व्यक्ति धर्मचन्द सरावगी बन चुका था। समाज द्वारा होने वाले इस अन्याय और अविवेकपूर्ण व्यवहार ने धर्मचन्दजी को और अधिक झुझारू व्यक्ति के रूप में खड़ा कर दिया। निरन्तर होने वाले प्रहारों और अत्याचारों की आग में तप-तप कर सोना कुन्दन बनने लगा।

१९२९ में जब धर्मचन्दजी स्वजन, परिजन, समाज के मना करने पर भी योरप गए, लौट आए, यात्रा से रहन-सहन का ज्ञान बढ़ा। उस समय धर्मचन्दजी ९, शम्भू मल्लिक लेन में रहते थे। यह मकान १७३, हरिसन रोड की गद्दी के पीछे ही है। २ तल्ले पर ४ कमरे ४० रुपए महीने किराया पर थे। एक कमरा माताजी के लिए, एक कमरा धर्मचन्दजी के लिए, एक भण्डार घर और एक कमरा आने-जाने वाले मेहमानों के लिए खाली रहता था। कमरे किराए पर थे पर धर्मचन्दजी ने मकान मालिक से बात कर अपने कमरे में अपने खर्च से पाइप लगाई, आधुनिक रग करवाया। कमरे के पीछे बरामदे में टाइल लगवाकर नहान घर बनवाया उसमे फौवारा लगवाया, टोटी लगवाई जिससे हर समय पानी आता रहे। मकानों में उस जमाने में बिजली के पंप से पानी नीचे से ऊपर नहीं ले जाया जाता था। नहान घर में लगी टोटियों और फुहारो में हर समय पानी आता रहे इसलिए बगल के भण्डार घर में थोड़ी ऊँची जगह पर एक टकी बैठा दी थी और काम करने वाले नौकर से व्यवस्था कर ली थी कि घर के लिए आवश्यक पानी भरने के अलावा टंकी में ८ कलशी रोज पानी डाल दिया करे। इस तरह धर्मचन्दजी का कमरा आकर्षक बन गया था। मिलने-जुलने वाले आते तो मुग्ध हो जाते।

१९३१ की १ जनवरी को प्रथम पुत्री शान्ति का जन्म हुआ। लड़की का जन्म उस जमाने में खुशी की बात नहीं मानी जाती थी। लोग लड़के के जन्म पर कई दिनों तक ताश, चौपड़ खेलकर खुशियां मनाते थे। खेल खिलाते थे। जिसके घर पुत्र जनमता था उनका घर हंसी की गूँज से गुलजार रहता कई

दिनों तक। और लड़की के जनमने पर यह सब जैसे वर्जित था। लड़की जनमी है बस जनम गई है। मगर जिसकी लगी लगन पुरानी मान्यताओं को तोड़ने और नए रिवाजों को जोड़ने में थी वह इस स्थिति को कैसे मानता।

धर्मचन्दजी ने पुत्री के जन्म पर उतनी ही खुशी मनाई जितनी समाज पुत्र के जन्म पर मनाता है। वह सब कुछ उन्होंने किया ताश, चौपड़, गाना-बजाना, स्वागत-सम्मान यहां तक कि अखबारों में समाचार-सूचनाएं भी छपवाई। ताकि अपने-पराए, गांव, समाज यह जान लें कि क्या लड़की क्या लड़का संतान संतान है।

धर्मचन्दजी नित्य दिगम्बर जैन नया मन्दिर जाया करते थे जो हरिमन रोड के चौराहे पर बांगड़ बिल्डिंग की बगल में चितपुर रोड पर हैं। और जब मन्दिर से लौटते तो शम्भू मल्लिक लेन की गली में सैकड़ों भिखारी उनके आने की प्रतिक्षा में बैठे रहते थे। क्योंकि धर्मचन्दजी उन्हें पराठे बांटकर फिर भोजन करने जाते। यह उनका नित्य का नियम था। वे रोज दो रुपया के पराठे बांटते। उस जमाने में दो रुपए के आधा मन पराठा दाल, साग-सब्जी मुफ्त में मिला करते थे।

क्योंकि आटा का भाव चार रुपया मन था। पराठे बांटने का क्रम कई वर्षो तक चलता रहा। अचानक एक दिन यह पराठे बांटने का सिलसिला टूट गया। बात यह हुई कि भिखारियों में एक भिखारी अपनी लाठी सड़क पर सामने रखकर बैठा था जिससे एक वृद्ध टकरा कर गिर पड़ा और गिरे हुए उस वृद्ध से सहानुभूति दरसाने के बजाए भिखारी उस पर टूट पड़े थे। बुरी तरह उसे लांछित कर रहे थे। उसी दिन से धर्मचन्द ने यह पराठा बांटने के क्रम बन्द कर दिया।

इधर परिवार और परिजन के लाड़ प्यार में शांति ५ वर्ष की हुई। तब १९३५ में द्वितीय संतान निर्मल कुमार का जन्म हुआ। परिवार की, दादा-दादी, की, माता-पिता की खुशी जहां द्विगुणित हुई, वहीं शांति की शिक्षा-दीक्षा का दायित्वबोध धर्मचन्दजी को हुआ। शान्ति को पढ़ने के लिए घर पर एक शिक्षिका नियुक्त हुई जिसका नाम शान्ति ही था। ये वे दिन है जब लड़कियों की शिक्षा अनुचित नहीं तो उचित भी नहीं मानी जाती थी। स्त्री शिक्षा नारी

में उजागर थी पर प्रथा में दुविधाजनक। शान्ति पढ़ रही थी निर्मल परिवार के पलकों के पालने में झूल रहे थे।

अचानक एक दुःसंवाद धर्मचन्द को व्याकुल कर गया। धर्मचन्द की बड़ी बहन भगवान देवी जो राँची के मोदी परिवार में व्याही थी उनका पति डायबीटीज जैसे भयानक रोग से दिन-प्रति दिन क्षीण होते जा रहे थे। रांची में इस रोग के इलाज की समुचित व्यवस्था नहीं थी इसलिए उन्हें कलकत्ता बुला लिया गया। शम्भू मल्लिक लेन वाले मकान के चौथे खाली कमरे में उन्हें रखा गया। डाक्टरी शुरू हुई मगर रोग सुधरने के बजाय इतनी बिगड़ी कि भगवान देवी के पति, परिवार के जमाई को गेग्रीन का फोड़ा हो गया जिसका इलाज कठिन था। दिन भर में तीन-तीन सुइयां पड़ती, नर्स घाव की सफाई के लिए आती। उनके दुःख में परिवार दुःखी और चिन्तित रहने लगा था। सभी भगवान देवी के सौभाग्य की कामना में लीन थे।

धर्मचन्दजी जब अपने पिताजी के साथ आरमनी स्ट्रीट के मकान से उठकर मियां कटरा के पीछे नाई टोला में झुनझुन वाले के मकान में आए तो हरिसन रोड के भगवानदास अस्पताल के डाक्टर नवरतन मल बर्मन जो बड़े बाबू के नाम से प्रसिद्ध थे आया-जाया करते थे। वे एलोपैथिक चिकित्सक थे। मारवाड़ी समाज में काफी धाक थी। परिवार में भी छोटी-बड़ी बीमारियां या दुर्घटना होती तो एलोपैथिक इलाज, होता। शान्ति और निर्मल जन्मे तब भी उन्ही की सलाह से लेडी डाक्टर द्वारा घर में ही प्रसव कराया गया। भगवान देवी के पति रांची से कलकत्ते आए तब भी उन्हीं की सलाह से चिकित्सा कराई। वे मिष्ट-भाषी, व्यवहार कुशल तो थे ही रुपया कमाने में भी बहुत उस्ताद थे। दवाइयों के जो नुस्खे लिखते थे वह इस तरह से लिखते थे कि दूसरे किसी दवाखाना मे दवाइयां नहीं मिलती। उन्होंने अपना एक दवाखाना तुलापट्टी में खोल रखा था वहीं मिला करती थी। उन्हीं दिनों जब धर्मचन्दजी बड़े हो गए एक बार यौगिक व्यायाम का प्रदर्शन देखा और उसके लाभ से बहुत प्रभावित हुए तो अपने पारिवारिक डाक्टर नवरतन से योगासनों के साथ शीर्षासन की चर्चा की और उनसे राय चाही। डाक्टर साहब बड़े होशियार थे उन्होंने सोचा अपने हाथ की सोने की चिड़िया भागना चाहती है। उन्होने गंभीर मुद्रा बनाकर कहा, धर्मचन्दजी, आप पढ़े-लिखे हैं, विदेश जाकर आए हैं। टाइप राइटर सीधे रखकर

टाइप की जाती हैं, उसे उलट कर टाइप करेंगे तो वह खराब होगी। आप साधु संन्यासियों की बात करते हैं। ये पैसा कमाने के लिए उल्टी-सीधी हर तरह के तमाशा दिखाते हैं और पैसा कमाते हैं। डाक्टर साहब के कहने का ढंग ऐसा था कि कुछ वर्ष के लिए शीर्षासन आदि से धर्मचन्दजी का ध्यान हट गया।

धर्मचन्दजी के जीवन में ऐसे संयोग आते रहे जो उनके जीवन-क्रम को विकसित करते रहे। बड़ाबाजार उस समय तक फैला पसरा नही था और नहीं सिमटा-सिकुड़ा ही था। फिर भी देश त्यागकर अन्य प्रान्तों से लोग आ रहे थे। आबादी बढ़ रही थी। बड़ाबाजार जनसंकुल होता जा रहा था। बड़ाबाजार उस समय हरिसन रोड और चितपुर रोड, तुला पट्टी, बड़तल्ला, बांसतल्ला में बसा था। बड़ाबाजार के आगे जोड़ासांको, द्वारकानाथ ठाकुर की राजबाड़ी आदि थी। राम बगान के पास जो गन्दी बस्तियां थी उसे इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट खरीद कर तोड़ रही थी। बंगाली जमीन्दारों के मुंशी, नायबो की बड़ाबाजार में जो कच्ची-पक्की कोठियां थी वह बिक रही थी। बड़ाबाजार के बहुसंख्यक निवासी मारवाड़ी खरीद रहे थे। ऐसे में धर्मचन्दजी को यह अवसर मिला कि वे शम्भू मल्लिक लेन के मकान में रहते हुए नन्दो मल्लिक लेन में चार तल्ले पर पांच कमरे का एक फ्लेंट बिना सलामी के दो सौ रुपये माहवार पर मिला। नन्दो मल्लिक लेन की बड़ी जमीन पर एक परिचित सज्जन ने नया बना मकान आधुनिक ढंग से बनाया था जिसमे लिफ्ट लगाई, जमीन मे सीमेंट की जगह मारबल लगाया। हर तल्ले पर स्नान घर और रसोई घर भी बनाए थे।

धर्मचन्दजी जैसे सुरुचि सम्पन्न व्यक्ति के सामने जब इस फ्लेंट का प्रस्ताव आया तब भला वह कैसे हाथ से निकलने देते। एक माह का किराया देकर ले लिया मगर बड़े बाबू अर्थात् पिताजी नाराज हुए क्योंकि ४० रुपया महीने से बढ़कर २०० रुपया महीने का खर्च शुरू हो रहा था। धर्मचन्दजी ने समझाया दो सौ हो रुपये तो लगे है। पुराने कमरों को अभी नहीं छोड़ेंगे। एक बार चलकर वहां रहेंगे। वह जगह पसंद नहीं आएगी तो वापस आ जाएंगे। घर की गाड़ी हो गई थी गद्दी से नन्दो मल्लिक लेन जाने के अन्य साधन सुलभ थे ही। संयोग का फल जिस प्रकार सम्पति में सफल हो रहा था उसी प्रकार परिवार में भी विकास के चरण आगे बढ़ रहे थे। इसी मकान में दूसरी लड़की तृतीय

संतान लक्ष्मी की प्राप्ति हुई। और यहीं एक वर्ष बाद ही द्वितीय पुत्र अर्थात् चतुर्थ संतान चन्द्रकुमार जन्मे। शान्ति बढ़ रही थी—पढ़ रही थी।

उन दिनों बड़ाबाजार में छोटे-छोटे तंग कमरों में गुरू पाठशालाएँ थी। बच्चे पहाड़ा और हिसाब के साथ-साथ अक्षर भी पढ़ते थे। गुरूजी बेत के इशारे पर गला फाड़ फाड़ कर पढाते थे—एक इकाई, दो दुक्कम, अ अनार, क कबूत्तर, शान्ति बालिका विद्यालय में पढ़ती थी।

जमाना आधुनिकता का था। देश में पुनर्जागरण की गूँज थीं—'गांधीजी, वन्दे मातरम्'। बड़ाबाजार में सुधारवादी आन्दोलनों की हवा तेज थी। एक क्रान्तिकारी सुधारक थे श्री बालकृष्णजी मेहता। मेहताजी धोती-कुर्त्ता पर हैड लगाते थे। सड़क पर चलते तो अलग पहचाने जाते थे। धोती कुर्त्ता पर हैड इसलिए लगाते थे कि धूप से आँखों और चेहरों की रक्षा होती है। अच्छाई अपने देश की हो या विदेश की, अच्छाई ही है, ग्रहणीय है। इसी ख्याल से मेहताजी ने बड़ाबाजार में शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति का आह्वान किया। विडेन स्ट्रीट में एक मोन्टेशरी स्कूल स्थापित की। योरप में यह मोन्टेसरी बहुत तेजी से बढ रही थी। बड़ाबाजार में यह प्रथम प्रयत्न था। बच्चो को बच्चे की मानसिकता के अनुसार खेल-खिलौने से मोन्टेशरी की शिक्षा पद्धति थी। धर्मचन्दजी ने सुना कि पड़ोस में नन्दो मल्लिक लेन के कुछ ही कदम पर स्थित विडन स्ट्रीट में योरप की पद्धति वाले विद्यालय की स्थापना श्री मोहताजी ने की है। तो आधुनिक विचारो के प्रतिपक्षी धर्मचन्दजी ने अपने बच्चो को स्वयं उस विद्यालय में भर्ती करा आए। इस विद्यालय में प्रताप भाई नाम के गुजराती बन्धु बच्चों को शिक्षा देते थे।

उस समय तक देश को आजादी नही मिली थी। अंग्रेजों की राज-सत्ता में कलकत्ता की चौरंगी बड़ी सजी-बजी रहा करती थी। इधर अंग्रेज साहब, मेमों के लिए फिरपो, ग्रैण्ड होटल, रेस्तरां आदि थे तो उनके हर तरह की जरूरत की चीजों की खरीद फरोख्त के लिए बड़े-बड़े स्टोर भी थे। जिसमें आरमी नेभी स्टोर रानी रासमनी रोड (कारपोरेशन) स्ट्रीट के नुक्कड़ पर तो ह्वाइट वे लेडला था। इन दोनों में साहब के रोजमर्रा के काम में आनेवाली सभी चीजें मिलती थी। सुव्यवस्था और चीजों की सजावट देखने लायक होती। बेचने

धाले और खरीदने वालों का मधुर सलूक देखकर किसी का भी मन बाग-बाग हो उठता। अंग्रेज साहब, मेमें इन स्टोरों में घूम-घूम कर चीजें खरीदते थे।

धर्मचन्दजी बराबर चाहते कि बच्चे स्वावलम्बी बनें। इसलिए शान्ति को ह्वाइट वे लेडला की दूकान दिखाकर एस्प्लानेड से नन्दो मल्लिक लेन जानेवाली ट्राम में बैठा देते थे और कन्डक्टर से भी कह देते थे कि वहां उसे उतार दें। शान्ति ११ वर्ष की हो गई थी, आजकल की तरह ट्रामों में भी इतनी भीड़ नहीं होती थी। साथ हीं शान्ति को गहने भी नहीं पहनाते थे इससे शान्ति का आत्म विश्वास बढना स्वाभाविक था।

एक बार १९४२ में धर्मचन्दजी के परिवार में किसी को तेज बुखार था। उस समय किसी परिचित मित्र ने नेचर क्योर की चर्चा की, यानी रोगी के माथे पर ठंढी पट्टी और उपवास के साथ रोगी को प्यास लगने पर नीबू का मिला ठंढा पानी पिलाने की राय दी। धर्मचन्दजी को भी यह पागलों की सी बात लगी थी। क्योंकि उस समय हर छोटी-बड़ी बीमारी पर एलोपैथी दवा का प्रयोग होता था। १९४२ में दूसरी लड़ाई लगी और कलकत्ते पर जापानी द्वारा बम गिराया गया तब शहर खाली सा हो गया। उस समय धर्मचन्दजी बड़ा बाजार १७३, हरिसन रोड में रहते थे। पढने की आदत उन्हें शुरू से थी। युगल किशोर चौधरी की प्राकृतिक चिकित्सा पर लिखी किताब उनके हाथ लगी उन्होंने उसे पढ डाली। फिर तो उनकी लिखी अन्य किताबे भी उन्होंने मंगा ली तथा पढने के बाद प्राकृतिक चिकित्सा के किताबों में बताए नुस्खे का प्रयोग चोट लगने, खरोच पड़ने, मामूली फोड़े-फुन्सियों पर करने लगे। इस चिकित्सा पद्धति पर मन जमा, प्रयोग से प्रभावित हुए और ये इस बात का पता लगाने लगे कि भारत में कहीं कोई प्राकृतिक चिकित्सा के केन्द्र भी हैं क्या।

१९४४ में जब कलकत्ते लोग वापस लौटकर आने लगे धर्मचन्दजी का परिवार माजरहाट वाले मकान में आकर रहने लगा था। उस समय ज्ञानवती लाठ ने मण्टेशरी पद्धति से पढ़ाने वाली स्कूल अभिनव भारती के नाम से बांसतल्ला स्ट्रीट में खोली थी। उनके साथ वहां प्रताप भाई भी आ गए थे। उसमें छोटी लड़की लक्ष्मी और छोटा लड़का चन्द्रकुमार पढ़ता था। माजरहाट से निर्मल, लक्ष्मी और चन्दर को लेकर ट्राम से एस्प्लानेड आता और एस्प्लानेड से चितपुर

की ट्राम में चढ़कर जाता और लक्ष्मी, चन्दर को बांसतल्ला स्ट्रीट की मोड़पर छोड़कर खुद मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट से विशुद्धानन्द विद्यालय चला जाता। संध्या को भी उसी तरह अपनी छुट्टी के बाद लक्ष्मी, चन्दर को लेकर बांसतल्ला स्ट्रीट की मोड़ से ट्राम से एस्प्लानेड आकर ट्राम द्वारा माजरहाट पहुँच जाता। उस समय कलकत्ते की आबादी इतनी अधिक नहीं थी बच्चों को गहने भी नहीं पहनाए जाते थे। जिससे उन्हें छिनने या तंग करने की वृति किसी की हो इसलिए बच्चे स्वावलम्बी हुए।

जब हिटलर ब्रिटेन पर चढ़ाई करने के लिए तेजी से बढ़ रहा था ब्रिटेन और जर्मन के युद्ध की घोषणा दूसरे विश्वयुद्ध के रूप में हो चुकी थी। दुनिया में हाहाकार मचा था। १९४२ में भारत में सबसे अधिक संकट कलकत्ते पर छाया था क्योंकि हिटलर के साथ जापान भी सम्मिलित हो गया था और वर्मा तक चला आया था। एक तरह से कलकत्ता खाली-सा हो गया था। लोग घर छोड़कर अन्य सुरक्षित प्रान्तों में या अपने देश गांव में चले जा चुके थे। जो थोड़े से लोग जन-शून्य सड़कों पर इक्के दुक्के नजर आ जाते थे। वे भी उस समय कलकत्ते से पलायन कर गए जब यहां कई स्थानों पर बम गिरा था। बड़ाबाजार इलाके में गनेशगढ़, जोड़ा सांकू, के मकान पर गिरा था। उन दिनों १७३, हरिसन रोड के बरामदे में खड़े होकर पश्चिम की तरफ मनोहरदास कटरा तक पूरब की तरफ दूर तक एक भयावह सन्नाटा नजर आता था। कही किसी मकान के जंगले बरामदे पर टंगी लंगोट और धोतियाँ ही दीखती थी। इस परिस्थिति में धमचन्दजी के पिताजी परिवार सहित रांची चले गये। मगर धर्मचन्दजी कलकत्ते में ही रहे। अपने मातहत जो लोग थे कामकाजू उन्हें भी उन्होंने कह दिया कि जो जाना चाहें जा सकते हैं ओर जो रहना चाहें वह रहें। उनकी भोजन की व्यवस्था मेरी ओर से रहेगी। कामकाज बन्द सा हो चुका था।

युद्ध की वजह सारे भारत में लोहे पर सरकार ने कन्ट्रोल बैठा दिया और उसका वितरण व एसोसियेशन की मार्फत करवाती थी। कलकत्ते में सरकार की ओर से धर्मचन्दजो को ही स्टाकिस्ट बनाया था। खिदिरपुर में गोदाम था जिसमें ४०० टन माल हर महीने आता। लोहे का कन्ट्रोलर जिन व्यापारियों को जितनी टन का परमीट देता धर्मचन्दजी उन्हें उतना माल कन्ट्रोलर द्वारा तय किए मूल्य पर दे देते। सरकार उन्हें ३० रुपया टन कमीशन देती थी।

धर्मचन्दजी जिनको माल बेचते थे उसी माल को वे लोग थोड़े कदम दूर पर उसे बेच कर ३०० रुपया टन कमाते थे। पर धर्मचन्दजी अपनी कमाई में सतुष्ट थे। खिदिरपुर माजरहाट पुल के पास धर्मचन्दजी एक छोटा-सा मकान रहने का बना लिया था। कलकत्ते पर जब बम गिरा तो खिदिरपुर में बमबारी हुई थी तथा बम का एक टुकड़ा इस मकान पर भी गिरा था जो अबतक सुरक्षित रखा है यादगार के लिए। पिताजी को रांची में जब यह खबर मिली तब धर्मचन्दजी को फिर पिता का रोष भाजन बनना पड़ा। पिताजी अपने एकलौते पुत्र को खतरे में कैसे छोड़ सकते थे। उन्होंने कहा काम बन्द करो चलो। मुझे ऐसी कमाई नहीं चाहिए। धर्मचन्दजी ने पिताजी को समझाया—जो बम का टुकड़ा अपने मकान पर गिरा है वह बम नहीं बल्कि दो-लाख रुपये की थैली के रूप में गिरा है। बात यह थी उस समय इनके गोदाम में पांच-छः सौ टन माल पड़ा था जिन व्यापारियों पर कन्ट्रोलर ने परमिट काटी थी वे कलकत्ता छोड़कर चले गए माल कोई उठा नहीं रहा था। धर्मचन्दजी ने कन्ट्रोलर को इसकी सूचना दी तो कन्ट्रोलर ने कहा कि बिना परमिट के ही जिसे चाहो माल बेच दो। बिना परमिट का माल कन्ट्रोल रेट में बेचने का सवाल नहीं था। धर्मचन्दजी ने इसे बाजार भाव बेच डाला। इससे उन्हें उसमें दो लाख की कमाई हुई थी।

लोग धीरे धीरे लौटने लगे थे। धर्मचन्दजी का परिवार और बच्चे भी आ गए। खिदिरपुर वाला मकान छोटा था। बगल में ही अखाड़ा था। धर्मचन्दजी को व्यायाम का शौक था अखाड़े में स्वयं भी व्यायाम करते और बच्चों को भी सिखाते थे। फिर तो इसी मकान पर इनके खेलने के लिए छत बना और मन्दिर भी।

उन दिनों हिन्दुस्तान में उत्तर प्रदेश में प्राकृतिक चिकित्सा का प्रारम्भिक प्रचलन था। जैसे गोरखपुर में श्री विट्ठलदास मोदी, इलाहाबाद में श्री बालेश्वर प्रसाद सिंह, दिल्ली में श्री युगल किशोर चौधरी और बंगाल में एक अजित बोस भी थे जो प्राकृतिक चिकित्सक के रूप में व्यवसायिक आधार पर इस चिकित्सा पद्धति में लगे हुए थे। इसी बीच निर्मल की माँ बीमार पड़ी। वे भयानक रूप से संग्रहणी के रोग से त्रस्त थीं। इनके प्राकृतिक इलाज के लिए धर्मचन्दजी ने दिल्ली से श्री युगल किशोर चौधरी को और गोरखपुर से श्री विट्ठलदास मोदी को बुलाया व प्राकृतिक इलाज उनका हुआ। प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ाने के ख्याल से ५० रु० माहवार

को तीन स्कालरशिप देने का निर्णय किया। उस समय पच्चास-पच्चास रुपये कई महिनों तक अपने पास से ये दे-देकर तीन विद्यार्थियों को इलाहाबाद, दिल्ली, गोरखपुर प्रशिक्षण के लिए भेजा।

इनकी धर्मपत्नी ज्ञानवती देवी लम्बे समय से संग्रहणी-रोग से पीड़ित थीं। उनके उपचार। और प्रयास करने पर भी उनकी स्थिति में सुधार के कोई लक्षण दिखाई नही पड़ रहे थे। धर्मचन्दजी चिन्तातुर से उनकी सेवा में लगे रहते। दिनांक ५ सितम्बर, १९४४ को ज्ञानवती देवी ने प्रातःकाल पांच बजे अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। इस असामयिक आघात से सारा परिवार शोक में डूब गया। उनकी अन्तिम इच्छानुसार धर्मचन्दजी ने विभिन्न जैन-संस्थाओं को हजारों रुपये दान दिए।

ज्ञानवती देवी आम भारतीय नारियो की तरह साधारण सूझ-बूझ रखनेवाली सीधी-सादी स्त्री थी। धर्मचन्दजी के प्रगतिशील कार्यों और विद्रोही विचारों को समझ पाना उनके लिए सम्भव नही था। वह उनकी मात्र ऐसी पत्नी थीं जिसके जीवन का सारा कार्य-कलाप परिवार की चहारदीवारी तक ही सीमित रहा। फिर भी धर्मचन्दजी के स्वस्थ, सुन्दर और सुयोग्य संतानो की जन्मदात्री तो वह थी हीं। धर्मचन्दजी जब बाहरी सेवा कार्यों में व्यस्त रहते थे तब परिवार का सारा कर्म-चक्र इस धुरी पर घूमता रहता था। धर्मचन्दजी की ऊँची उड़ान और महात्वाकांक्षाओं की पूर्ति में वह सम्पूर्ण रूप से साथ नही दे सकी थीं। फिर भी धर्मचन्दजी ने उनकी इच्छा-अनिच्छाओं को समझते हुए उनकी सुख-सुविधाओ का पूरा ख्याल रखा। जैसा कि ऐसी अवस्था में होता है—धर्मचन्दजी ने कभी अपनी पत्नी की उपेक्षा नहीं की। उसके आदर-सत्कार मे किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी। प्रतिकूलताओ में भी अनुकूलता को खोज लेना इनके स्वभाव और चरित्र का विशेष गुण रहा है।

नीड़ का निर्माण फिर-फिर

ज्ञानवती देवी के स्वर्गवास से धर्मचन्दजी के सामने बच्चों की देखभाल और परिवार की सार-संभाल करने की समस्या विकट रूप से आ खड़ी हुई—घर में

माताजी अकेली थीं और उनके सहयोग के लिए भी जिससे पारिवारिक व्यवस्था की देख-रेख ठीक से हो सके। स्थिति की गंभीरता को सोच-समझ कर धर्मचन्दजी ने दूसरा विवाह कर लेने की स्वीकृति दे दी।

९ नवम्बर, १९४४ को धर्मचन्दजी का दूसरा विवाह श्री पारसदासजी जैन आरावालों की सुपुत्री मोती देवी के साथ हो गया। पं० जगमोहनलालजी शास्त्री ने जैन विधि से कलकत्ते में ही सारी वैवाहिक कार्यवाही सम्पन्न की। सादगी पूर्ण समारोह ही इस विवाह की विशेषता रही।

आभामयी, मोती देवी

दूसरा विवाह धर्मचन्दजी के लिए वरदान सिद्ध हुआ। यह एक नए जीवन का प्रारम्भ था। नई पत्नी के बारे में आंखों में झिलमिलाता मधुरिम-सा झीना-झीना स्वप्न लिए, उत्सुकता और कुछ-कुछ शकाओं में भरे धर्मचन्दजी अपने भविष्य-जीवन के ताने-बाने बुनने लगे। अबोध शिशुवत भोले-भाले चेहरे और सुन्दर नाक-नक्श वाली मोती देवी धर्मचन्दजी को शालीनता की प्रतिमूर्ति ही लगी।

प्रथम साक्षात्कार में ही सुमुखी मोती देवी ने भावुक और महात्वाकांक्षी, तरुण हृदय धर्मचन्दजी का मन मोह लिया। दूसरे विवाह का निश्चय करते हुए धर्मचन्दजी मन ही मन जैसी प्रियतमा और जीवन-सहचरी की कल्पना करते रहते थे वही मोती देवी के रूप में साकार होकर सामने आ खड़ी हुई।

साधारण पर मर्यादित घराने में पालित-पोषित होने के कारण मोती देवी आधुनिक तड़क-भड़क वाले जीवन की विकृतियों से अछूती ही रही। मोती देवी में निश्छलता, सरलता, आज्ञाकारिता और विनम्रता के गुणों को देखकर धर्मचन्दजी को यह विश्वास हो गया कि वे उन्हें अपनी सच्ची जीवन संगिनी के रूप में ढाल सकेगें। उनकी पारखी आंखों ने मोती की आब को सही-सही पहचान लिया। मोती की आभा और उज्ज्वल प्रकाश की मधुरिम किरणों के स्पर्श से धर्मचन्दजी की अंधेरी दुनिया में नवप्रभात का सूर्योदय होने लगा।

नया जीवन प्रारम्भ करते समय धर्मचन्दजी के मन में यह शंका बार-बार उठती रही कि मोती देवी नई मां के रूप में अपने प्यार और स्नेह से बच्चों का मन जीत सकेगी या नहीं।

कहीं सौतेली माँ का सा व्यवहार कर पारिवारिक शांति को भंग तो नहीं कर देगी ? कहीं ऐसा तो नहीं हो जाएगा कि बच्चे ही स्वभाव-भिन्नता के कारण मोती देवी को मां के रूप में स्वीकार करने से इन्कार कर दें। मन में उठने वाली इन शंकाओं और प्रश्नों ने धर्मचन्दजी को पहले ही सावधान कर दिया था। धर्मचन्दजी दुनिया देख चुके थे। दूसरी पत्नी के आगमन से अनेक परिवारों में होने वाली विनाश-लीला से वे बखूबी परिचित थे। अतः उन्होंने अपने लिए पत्नी का चुनाव करते समय किसी सम्पन्न घराने की उच्च-शिक्षित और अहकारी लड़की को नहीं चुना। उन्होंने अपनी परिपक्व बुद्धि से मोती देवी के चरित्र और गुण-स्वभाव को अच्छी प्रकार से जांच परख लिया था। सरलता की मूर्ति मोतीदेवी को अपनी पारिवारिक व्यवस्था के अनुकूल गढ़ा और संवारा जा सकेगा-इस विश्वास के साथ उन्होंने मोतीदेवी को स्वीकार किया था। धर्मचन्दजी के स्नेह-पूर्ण साहचर्य और उचित प्रशिक्षण में रहकर मोतीदेवी ने भी शीघ्र ही परिवार की व्यवस्था के अनुकूल अपना मन बना लिया। नए जीवन का नया उत्साह लेकर धर्मचन्दजी भी नई दिशाओं में उड़ान भरने के स्वप्न संजोने लगे।

घर की प्रत्येक वस्तु सलीके से सजी रहे, सभी कार्य समय पर और नियमानुसार हो, खाने पीने की वस्तुएं स्वास्थ्य सबधी नियमों का ध्यान रखते हुए तैयार की जाएं, पारिवारिक सदस्यो तथा कर्मचारियो के साथ व्यवहार करते समय आपसी विश्वास और इज्जत का ख्याल रखा जाए, ये सब बातें धर्मचन्दजी की पारिवारिक व्यवस्था की अपनी विशेषता रही है।

मोतीदेवी शीघ्र ही सारी बातों को समझ गई। एक ओर वह घर गृहस्थी के सारे कार्य अत्यन्त चतुराई से पूरे करती, दूसरी ओर बच्चों को अपना भरपूर प्यार और स्नेह देकर उनकी सुख-सुविधाओं का प्रबन्ध करती।

कलात्मक अभिरुचि और प्रयोगवादी जीवन के हिमायती धर्मचन्दजी का रहन सहन, दिनचर्या और शौक आम आदमी से बिल्कुल भिन्न है। अपने संस्कारगत स्वभाव से अलग हटकर धर्मचन्दजी के रुचि-वैचित्र्य के साथ मन का तालमेल बिठा लेना मोतीदेवी के लिए एक कठिन चुनौती भरा कार्य था। यह मोतीदेवी ही है कि जिसने अपने प्रखर आत्म-विश्वास और संकल्प बल के सहारे अपनी आकांक्षाओं और मनोकामनाओं को धर्मचन्दजी की आकांक्षाओं और मनोकामनाओं के साथ एकाकार कर दिखाया।

इस प्रकार के रोमांचकारी भयानक अनुभवों के रहने पर भी धर्मचन्दजी का मनोबल कभी कमजोर नहीं हुआ। उनका कहना है कि 'मृत्यु एक शाश्वत सत्य है। उसको जब आना होगा आ जाएगी। उससे डरकर कर्म से विमुख होना हमारी ना समझी और कमजोरी है।'

योजना-पटु धर्मचन्दजी ने प्रारम्भ से ही मोतीदेवी को प्रशिक्षित और सुयोग्य बनाने की दृष्टि से सारी व्यवस्था कर दी।

जब धर्मचन्दजी नन्दो मल्लिक लेन में रहते थे उनके एक मित्र श्री मदन-लाल नेवर ने ८/१, एस्प्लानेड, जिसका नाम आज सिद्धो कान्हु डाहार है, तीन कट्ठे पर बना मकान ४८ हजार में बिना बयाने का मात्र पत्र-व्यवहार के आधार पर सौदा करा दिया। कलकत्ते पर जब बम गिरे कलकत्ता खाली हुआ पिताजी ने मकान लेने से ना कर दिया फलस्वरूप मकान मालिक ने धर्मचन्दजी पर नालिस ठोक दी इसलिए मजबूर होकर इन्हें ४८ हजार में मकान लेना पड़ा आज यह मकान ही इनका निवास और व्यापार का केन्द्र बना हुआ है।

भाग्य और संयोग का इतना प्रबल उदाहरण विरले के जीवन में ही मिलता है जैसा कि धर्मचन्दजी के जीवन में बराबर होता रहा है। कलकत्ते पर जब बम गिरा था उस समय एस्प्लानेड के चौराहे से अर्थात के० सी० दास की दुकान से गवर्नर हाउस के कोने तक जितने भी मकान थे सरकार ने युद्धस्तर पर सब खाली करा लिए थे। और ४५ में जब युद्ध शेष हुआ तब सरकार ने सभी मकान के मालिकों को मय मुआवजा के वापस सौंप दिए। इसमें धर्मचन्दजी का मजबूर होकर ४८ हजार में खरीदा हुआ मकान भी था जिसका उन्हें ५६ हजार मुआवजा मिला था।

सेवाभावी धर्मचन्दजी

स्वभाव से विद्रोही और क्रान्तिकारी होते हुए भी धर्मचन्दजी ने समाज के साथ टकराव और तनाव का मार्ग नहीं चुना। उनका दृढ़ विश्वास रहा कि समाज में रहकर अपने सद्-व्यवहार सेवा-कार्य, इमानदारी और सदाचरण के द्वारा अपने विचारों और कार्यों का औचित्य स्वीकार करवा लेना ही सच्ची सफलता है। अपने इन्हीं विचारों के कारण धर्मचन्दजी का झुकाव निरन्तर सेवा कार्यों की ओर होता गया।

सन् १९३५ में बंगाल और बिहार में भयंकर भूकम्प के परिणामस्वरूप जन-धन की जो हानि हुई उससे चारों ओर हाहाकार मच गया। धर्मचन्दजी जैसा जीवट वाला उत्साही कार्यकर्त्ता भला ऐसी विपत्ति के समय चुप होकर कैसे बैठा रह सकता था। वे तुरन्त 'दिगम्बर जैन युवक समिति, कलकत्ता' के जोशीले युवकों का दल लेकर जोर-शोर से सेवा-कार्य में जुट गए।

सबसे अधिक विनाश की चपेट में आने वाला मोतीहारी क्षेत्र (बिहार) में जाकर धर्मचन्दजी ने सराहनीय कार्य किया। मोतीहारी में कई सप्ताह रहकर वहां के पीड़ित लोगों को मकान बनाने के लिए कम मूल्य पर बांस, पुआल आदि दिए, भोजन की दूकान भी खोली जो कम मूल्य पर भोजन देती थी। इनकी सेवा की रुचि देखकर मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओं ने इन्हें कार्य-कारिणी का सदस्य बनाया और फिर इनके निरंतर सेवा कार्यों से प्रभावित होकर 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' ने इनको रसायनशाला का मंत्री चुना।

रसायनशाला के मंत्री

रसायनशाला के मंत्री-पद पर रहते हुए धर्मचन्दजी ने व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त बनाने की दृष्टि से अनेक आवश्यक कदम उठाए। अपने पद का दायित्व समझने के कारण अब वे अधिक सजग और सावधान रहने लगे। उन्होंने अपने साथियों के मनोबल को कभी गिरने नहीं दिया। आप के प्रयास से ही 'मारवाड़ी रिलीफ' पत्रिका का नियमित प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसके द्वारा आम आदमी को सोसाइटी की गतिविधियों की जानकारी तो मिलती ही थी साथ ही देश-विदेश की प्रमुख घटनाओं के सम्बन्ध मे भी सक्षिप्त सूचना प्राप्त होती थी। इसीके माध्यम से प्रचलित रोगों के उपचार सम्बन्धी जानकारियां भी दी जाती थीं। इन्होने एक पाकेट डायरी का प्रकाशन भी किया जिसमें प्रतिदिन काम आने वाली उपयोगी बातों का उल्लेख रहता था। सिर्फ चार आने में मिलने वाली यह डायरी अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई। इसके माध्यम से सोसाइटी का नाम घर-घर पहुँचा।

लोकोपयोगी लेखन

धर्मचन्दजी के पिताजी ने जिस 'मर्चेन्ट्स कमेटी' की २५-३० वर्षों तक सेवा की उसके मंत्री रहे और उसके माध्यम से व्यापारिक क्षेत्र में उपस्थित होने

वाली समस्याओं के समाधान का प्रयास करते रहे। आगे चलकर धर्मचन्दजी इसके अध्यक्ष चुने गए। आपने अपने अध्यक्षताकाल में इसके कार्यक्षेत्र को व्यापक बनाने का सफल प्रयास किया। इन्होंने इसका नाम बदल कर 'मर्चेन्ट्स चेम्बर आफ कामर्स' कर दिया।

टेलीफोन की दर कम करवाने, इनकम टैक्स सम्बन्धी जानकारी देने आदि कार्यों से लेकर चुनाव के प्रति जागरूकता पैदा करने जैसे अनेक महत्वपूर्ण कार्य इस संस्था के द्वारा सम्पादित किए जाते थे। धीरे-धीरे यह संस्था व्यापार जगत की एक अपरिहार्य आवश्यकता बनती चली गई। इसका विकसित रूप 'मर्चेन्ट्स चेम्बर आफ कामर्स' आज हमारे सामने है जो व्यापारिक जगत में सबसे अधिक प्रभावी भूमिका निभा रही है। धर्मचन्दजी के पिता द्वारा बोया गया छोटा-सा बीज आज व्यापारी-समाज को छाया देने वाला विशाल वट-वृक्ष बन चुका है।

सार्वजनिक सेवा-कार्यों में भाग लेकर धर्मचन्दजी ने पर्याप्त लोकप्रियता अर्जित की। अनुभव प्रवण बने और जिन्हें वे पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से लिखने भी लगे थे।

इस प्रकार व्यापारिक और अन्य सेवा संस्थानों में कार्यरत रहते हुए इनके अनेक लेख पत्रों में प्रकाशित होते रहे। इन लेखों के द्वारा धर्मचन्दजी ने तात्कालिक समाज के सामने उपस्थित ज्वलंत समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। 'विश्वमित्र' में नियमित रूप से इनके विचारों का प्रकाशन होता रहा।

प्रथम विश्व-भ्रमण ने धर्मचन्दजी को उद्योग-धन्धों के बारे में एक नवीन दृष्टि प्रदान की। योरप की विकसित वैज्ञानिक टैक्नोलोजी ने धर्मचन्दजी को अत्यधिक प्रभावित किया। अपनी विदेश-यात्रा में इन्होंने अनेक देशों में चलने वाले प्रमुख उद्योग-केन्द्रों का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया और उनके बारे में प्राप्त जानकारी अपने देशवासियों को दी। टाटा संस्थान द्वारा प्रकाशित 'टिस्को रिव्यू' तथा उपन्यास सम्राट प्रेमचन्दजी द्वारा सम्पादित 'हंस' में धर्मचन्दजी के उद्योग-धन्धों से सम्बन्धित लेख विशेष आग्रह पूर्वक छापे जाते थे। इस प्रकार

हवाबाज और सामाजिक कार्यकर्त्ता के अतिरिक्त एक सशक्त लेखक और विचारक के रूप में भी इनकी छवि निखरने लगी। हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं के अलावा बंगला के 'युगांतर', अंग्रेजी के 'स्टेट्समैन', 'अमृतबाजार पत्रिका' तथा 'ओरियंट इलेस्ट्रेटेड वीकली' आदि में भी इनके लेखों का प्रकाशन होता था। अपनी योरप यात्रा से सम्बन्धित अनुभवों को इन्होने 'योरप में सात मास' पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जिसकी चारों ओर से प्रशंसा की गई।

संतुलित जीवन : रचनात्मक दृष्टि

लोकसेवा और जन-कल्याणकारी कार्यो में सलग्न रहते हुए धर्मचन्दजी अपनी पारिवारिक आवश्यकताओं और कारबार के प्रति भी सदा सजग और सावधान रहे। अपनी व्यापक पहचान का सदुपयोग करते हुए इन्होने अपनी व्यापारिक क्षमता का भी तिरन्तर विकास किया।

वस्तुतः धर्मचन्दजी अपनी क्षमताओं और सीमाओं को अच्छी प्रकार पहचानते थे, इसलिए इन्होंने अपने लिए मध्यममार्गी संतुलित जीवन-दर्शन को ही उपयुक्त समझा। भावुकता के वशीभूत होकर किसी एक ही क्षेत्र मे इतनी दूर कभी नहीं बढ़े जिससे बाकी सारी जीवन-व्यवस्था अपना सतुलन खो बैठे। न वे सबको पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाना चाहते थे और न वे समय की गति से पिछड़े रहकर अस्तित्वहीन बन जाना स्वीकार करते थे। सबकी सुनते और सबके साथ रहते हुए भी इन्होंने अपने जीवन-गणित का एक ऐसा समीकरण विकसित कर लिया जिससे इनके व्यक्तित्व की एक अलग विशेषता झलकती रहती। अपने को हीन भावनाओं से मुक्त रखने की यह प्रवृत्ति धर्मचन्दजी को प्राकृतिक विरासत के रूप में ही मिली थी। बचपन से ही वे अपने आपको समृद्ध घराने के विद्यार्थियों को बराबर की हैसियत वाला दिखाने का प्रयास करते थे। वे बताते है—

'जब विशुद्धानन्द विद्यालय के प्राथमिक विभाग में पढ़ता था उस समय बहुत से पैसेवालों के लड़के मेरे सहपाठी थे। उनको उस जमाने मे भी टिफिन खर्च के लिए एक रुपया मिलता था, जबकि मुझे सिर्फ एक आना। उनके सामने एक आने की चीज खरीद कर खाना मुझे अपना अपमान करवाना लगता था। इसलिए मैं हफ्ते दो हफ्ते अपने पैसे इकट्ठे करता रहता था और फिर एक

दिन उन सबके साथ शान से खर्च करता था। इस प्रकार मैं अपनी गरीबी को उनके सामने प्रकट नहीं होने देता था।

साधारण होते हुए भी असाधारणता की ओर धर्मचन्दजी का रुझान बराबर बना रहता था। यही वह प्रेरणा-शक्ति थी जिसके रहते धर्मचन्दजी के स्वाभिमान पर कभी आंच नहीं आने पाई। आभिजात्य बने रहने की यह प्रबल प्रेरणा ही उनकी विकासन्मुख जीवन यात्रा का रहस्य है।

लोकोपकारी कार्यों में भाग लेकर धर्मचन्दजी लोकप्रिय होते गए। 'जैन नवयुवक समिति' के मन्त्रीपद के अतिरिक्त 'मारवाड़ी ट्रेड्स एसोसियेशन' का मन्त्रीत्व भी आप ही को संभालना पड़ा। सन् १९३९ तक धर्मचन्दजी विभिन्न सस्थाओं के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और कुछ-कुछ राजनीतिक गतिविधियों में व्यस्त रहे।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के मंत्री

सुलक्षिणी मोतीदेवी के सद्व्यवहार से धर्मचन्दजी को नव-जीवन का सा उत्साह मिला। अब वे अधिक उमंग और ऊर्जा के साथ कर्म-क्षेत्र में आगे बढ़ने लगे। सन् १९४४ में जापान की लड़ाई खत्म होने के बाद अंग्रेजों की हालत पतली होने लग गई थी। भारत पर अब और अधिक लम्बे समय तक शासन कर पाना अंग्रेज सरकार के लिए असम्भव होता जा रहा था। स्वाधीनता-सग्राम अपने निर्णायक दौर में से गुजर रहा था। 'करो या मरो' का एकमात्र नारा सिद्धि-मन्त्र की तरह दशों दिशाओं में गूंज रहा था। देश का बच्चा-बच्चा मातृ-भूमि की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहूति देने को मचल रहा था। बड़ाबाजार के मारवाड़ी युवक आन्दोलन के अगुआ बनकर लाठी गोली और जेल का मुकाबला करने पर तुले हुए थे।

धर्मचन्दजी के पिता श्री बैजनाथजी का कहना था "सेवा से बड़ा और कोई धर्म दुनिया में नहीं है"। पिता की यह सीख जीवन भर धर्मचन्दजी का मार्ग-दर्शन करती रही। वैसे हमारे स्वाधीनता-संग्राम की यह विशेषता भी थी कि राजनैतिक मोर्चा-बन्दी के समानान्तर सेवा भावी, सुधारवादी और रचनात्मक-कार्य करने वाली संस्थाएँ भी पूरे जोरशोर से कार्य कर रही थी। धर्मचन्दजी की ऐसे ही कार्यों में रुचि रही। ऐसी ही संस्थाओं को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर

वे जीवन भर सेवा-कार्यों में लगे रहे। अक्टूबर सन् १९४५ में वे 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' के मन्त्री चुने गए। सोसाइटी का यह चुनाव दो दलों की शक्ति-परीक्षा का चुनाव था। एक ओर श्री राधाकृष्णजी नेवटिया, श्री बजरंगलालजी लाठ, श्री वासुदेवजी आदि सशक्त समाज-सेवी धर्मचन्द के विपक्ष में कार्य कर रहे थे, वहीं श्री मूलचन्दजी अग्रवाल, श्री भालचन्दजी शर्मा श्री भँवरमलजी बियाणी, श्री गणेश प्रसाद सराफ आदि उत्साही कार्यकर्ता धर्मचन्दजी के पक्ष में डंटे हुए थे। पूरी चहल-पहल का माहौल था। गहरी रस्साकशी हुई। धर्मचन्दजी अपने नवयुवक साथियों के सहयोग तथा रसायन-शाला के मन्त्री के रूप में किए गए पिछले सराहनीय कार्यों के बल पर इस चुनाव संघर्ष में विजयी हुए। धर्मचन्दजी की यह विजय इस बात का सबूत है कि उस समय समाज में राजनैतिक कार्यों की तरह सेवा-कार्यों का भी समान महत्व था। सच तो यह है कि उस समय राजनीति भी सेवा-भाव से ही की जाती थी।

अपने मन्त्रीत्व काल में धर्मचन्दजी ने सोसाइटी के माध्यम से अनेक कठिन और खतरनाक परिस्थितियों में साहसिक सेवा-कार्य किए। सन् १९४६ में बर्मा में हुए भूकम्प के कारण जन-धन की भयंकर तबाही हुई। लाखों लोग बेघरबार हो गए। सोसाइटी की ओर से स्वय धर्मचन्दजी तथा श्री रामेश्वर प्रसादजी पाटोदिया परिस्थिति का अवलोकन करने हवाई जहाज द्वारा रंगून पहुंचे। वापिस लौटकर भूकम्प-पीड़ित लोगों को राहत पहुँचाने का निर्णय लिया गया। सोसाइटी की ओर से तुरन्त एक मेडिकल मिशन रंगून के लिए रवाना किया गया, जिसने वहां जाकर पीड़ितों और घायलों की सहायता-चिकित्सा में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया। सोसाइटी द्वारा किया गया यह सेवा-कार्य विशुद्ध मानवीय भावना से किया गया पवित्र कार्य था। इस कार्य की सर्वत्र प्रशंसा हुई और धर्मचन्दजी की धाक एक सफल कायकर्त्ता के रूप में जम गई।

उन्हीं दिनों आसाम में भी भयकर बाढ़ आ गई और गांव के गांव बाढ़ के पानी में डूब गए। पानी में घिर जाने के कारण लाखों लोग भूख-प्यास और बीमारियों की चपेट में आ गए। सोसाइटी की ओर से श्री भालचन्दजी शर्मा के नेतृत्व में एक दल बाढ पीड़ितों की सहायतार्थ भेजा गया। कीचड़ और बाढ़ के पानी से घिरे खतरनाक स्थानों से लोगों का उद्धार कर उनको सहायता-शिविरों तक पहुँचाना तथा उनके लिए आवश्यक खाद्य-पदार्थ, वस्त्र और दवाइयों का

प्रबन्ध करना आदि कार्यों में स्वयंसेवक रात-दिन लगे रहे। कार्यकर्त्ताओं ने स्वयं को खतरों में झोंक कर भी अनेक लोगों की प्राण-रक्षा की। धर्मचन्दजी स्वयं रात-रात भर जाग कर कार्यकर्त्ताओं का सहयोग करते थे। सफलतापूर्वक किए गए इन कार्यों के कारण सोसाइटी का बहुत सुनाम हुआ।

सुयोग्य, सहयोगी

धर्मचन्दजी के समय मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की कार्यकारिणी सभा में जो व्यक्ति चुनकर आए वे सभी विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी और कर्मठ कार्यकर्त्ता थे—

सर्वश्री आनन्दीलालजी पोद्दार (सभापति), तुलसीरामजी सरावगी और कृष्णचन्द्रजी कोठारी (उप-सभापति), मंगतूरामजी जयपुरिया, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, भागीरथजी कानोड़िया, रघुनाथप्रसादजी खेतान, श्यामसुन्दरजी जयपुरिया, गजानन्दजी टिबड़ेवाल, बासुदेवजी थरड़, गणपतरामजी बियाणी, वेणीशंकरजी शर्मा, रावतमलजी नोपानी, काशीप्रसादजी मोदी, रामेश्वरजी पाटोदिया, गनेशप्रसादजी सराफ।

इतने सारे समर्थ और सुयोग्य व्यक्तियों के साथ रहते, धर्मचन्दजी कठिन से कठिन कार्यों को भी सफलता पूर्वक सम्पादित कर सके तो इसमें सबके सहयोग की महिमा ही प्रकट होती है। यद्यपि सोसाइटी का तात्कालिक राजनीति के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था, फिर भी अधिकांश कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत हैसियत से राजनीति में बराबर भाग लेने वाले थे। पर सभी लोग इतने सूझ-बूझ वाले और कर्तव्यनिष्ठ थे कि वे हमेशा इस बात की सावधानी रखते थे कि उनकी राजनीतिक गतिविधि के कारण सोसाइटी के कार्य पर किसी प्रकार का विपरीत प्रभाव न पड़ने पाए। सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओं को दुहरे मोर्चे पर जूझना पड़ता था। एक और स्वाधीनता संग्राम की आग को प्रज्वलित रखना और दूसरी ओर समाज-सेवा के कार्य को आगे बढ़ाना। दुहरे दायित्व के ऐसे कठिन समय में ओजस्वी और प्रभावी कार्यकर्त्ताओं का नेतृत्व करने का सौभाग्य मिला धर्मचन्दजी को। सोसाइटी का कार्य ही इतना व्यापक था कि उसी में उन्हें रात-दिन व्यस्त रहना पड़ता था। प्राकृतिक प्रकोपों की चपेट में आए लोगों की प्राणरक्षा के लिए दूर-दूर प्रदेशों में जाकर सेवा-शिविर लगाने पड़ते थे।

डायमण्ड हार्बर में अग्निकाण्ड हुआ, नगर में हैजा फैला, आसाम में बाढ़ आई, दंगे भड़के, जहाँ भी राहत कार्य की आवश्यकता होती धर्मचन्दजी अपने सुयोग्य और उत्साही कार्यकर्त्ताओं के साथ जुटे रहते। बंगाल के पूर्वी किनारे पर भयकर तूफान से जो विनाश-लीला हुई उसमें बेघरबार हुए लोगों की सहायता के लिए ठकुरिया, पचरौल, चन्दनपुर, कृष्णनगर थाना और पाटाल सब-डिवीजन में शिविर लगाकर व्यापक सेवाकार्य किया गया। असमर्थ तथा दुर्घटनाओं में मृत व्यक्तियों के कफन के लिए पांच गज कपड़ा सोसाइटी द्वारा सब समय देने की व्यवस्था की गई। ९ दिसम्बर सन् १९४५ को श्री पट्टाभिसीतारमैया और 'हरिजन सेवक' के मन्त्री ठक्करबाबा सोसाइटी का निरीक्षण करने पधारे। उन्होंने सोसाइटी द्वारा किए गए सेवा कार्यों के लिए धर्मचन्दजी तथा सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओं को बधाई दी।

सोसाइटी द्वारा एलोपैथिक दवाओं की बिक्री तथा आयुर्वेदिक दवाओं के निर्माण की व्यवस्था भी की गई। गांधीजी के सद्परामर्श से धर्मचन्दजी ने सोसाइटी में प्राकृतिक-चिकित्सा विभाग की स्थापना की। धर्मचन्दजी ने स्वय इस समय तक प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध में व्यापक अध्ययन कर लिया था। इन्होने स्वयं कई रोगियों पर इसका प्रयोग कर सफलता प्राप्त की। परिणाम-स्वरूप प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति इनकी आस्था गहन से गहनतर होती गई। स्वयं गांधीजी ने भी इनका उत्साह बढ़ाया। उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा विभाग के चिकित्सक डा० कुलरंजन मुखर्जी को अपने पास बुलाकर प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध में व्यापक जानकारी दी। आज भी पूरे भारत में प्राकृतिक चिकित्सा के विशेषज्ञो में धर्मचन्दजी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। धर्मचन्दजी के समसामयिक श्रद्धेय श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका और श्री राधाकृष्णजी नेवटिया भी प्राकृतिक चिकित्सा और योग के विशेषज्ञ समझे जाते हैं। तीनो ही अस्सी पार कर शतकपूर्ति की ओर अग्रसर हैं। पूर्ण स्वस्थ और प्रसन्न युवकोचित उत्साह से भरे-भरे।

एक और अग्नि-परीक्षा

कायदे आजम जिन्ना कांग्रेस छोड़कर मुस्लिम लीग के स्वयभू नेता बन चुके थे। वे मुसलमानों के लिए अलग राज्य की मांग कर रहे थे। उस समय पंजाब, सिन्ध, सीमाप्रान्त, बलूचिस्तान और बंगाल मे मुस्लिम लोग की अन्तरिम

सरकारें काम कर रही थीं। देश का विभाजन हुए बिना अलग मुस्लिम राज्य का निर्माण सम्भव नहीं था।

१६ अगस्त, १९४६ को बंगाल में सुहरावर्दी की सरकार के संरक्षण में मुसलमानों ने हिन्दुओं पर हमले शुरू किए। लीग के इस डाइरेक्ट एक्शन से बगाल में जो साम्प्रदायिक हिंसा भड़की उससे चारों ओर हाहाकार मच गया। देखते-देखते कलकत्ता महानगर आग की लपटों में घिर गया। चारों ओर मौत का ताण्डव-नृत्य होने लगा। खून-खच्चर, बलात्कार, लूट और अग्निकाण्ड से पीड़ित लाख-लाख हिन्दुओं के काफिले सुरक्षा और शरण की खोज में पूर्वी बंगाल से आने लगे। कलकत्ते की सड़कें लाशों से पट गई। हिन्दू बस्तियों में फंसे मुसलमान और मुस्लिम बस्तियों में फंसे हिन्दू सहायता के लिए चीत्कार करने लगे। इस आकस्मिक विनाश-लीला ने सभी को हतप्रभ कर दिया। आदमी आदमी के खून का प्यासा बन गया था। सोसाइटी के लिए यह भीषण अग्नि-परीक्षा का समय था। खतरनाक स्थानों में फंसे लोगों को सुरक्षित निकाल लाना और उनकी प्राण-रक्षा का प्रबन्ध करना अत्यन्त कठिन और जोखिम भरा कार्य था।

धर्मचन्दजी के पिता श्री बैजनाथजी नहीं चाहते थे कि उनका एकमात्र बेटा ऐसे खूनी दरिन्दों और दंगाइयों की भीड़ में से लोगों का बचाव करते कहीं खुद ही मौत का शिकार हो जाए। पर धर्मचन्दजी पर जो दायित्व था उससे वे पीछे कैसे हट सकते थे। पिता के लाख मना करने पर भी वे अपने कर्त्तव्य पर डटे रहे। सोसाइटी के कार्यकर्त्ता और मारवाड़ी समाज के हजारों उत्साही युवक जान की बाजी लगाकर असहाय लोगों की प्राण-रक्षा के कार्य में जुट गए। पीड़ित और उजड़े लोगों को शिविरों में पहुंचाना, उनके लिए दवा-दारू, अन्न वस्त्र और आवश्यक वस्तुओं का प्रबन्ध करने में धर्मचन्दजी रात-दिन व्यस्त रहते सूचना मिलने पर वे खुद स्वयं-सेवकों को साथ लेकर जाते और खतरे में फँसे लोगों को निकाल कर लाते।

सोसाइटी के इतिहास में सेवा-कार्य का यह सबसे कठिन समय था। मानवता के शत्रु कातिलों और खूनी भेड़ियों के जगल में घुसकर लोगों को बचा लाना वास्तव में प्रचण्ड रोमांचकारी कार्य था।

धर्मचन्दजी ने इस घोर संकट के समय में अपने प्रखर मनोबल का परिचय ही दिया। मारवाड़ी समाज के युवकों ने उस समय किस प्रकार वीरता और उत्साह से मानव-सेवा का कार्य किया इसका कुछ अन्दाज उस समय 'विश्वमित्र' में छपी इस खबर से लगाया जा सकता है—

अनोखा दृश्य (विश्वमित्र, २९-८-४६)

कलकत्ते के लिए यह पहला और अनोखा दृश्य था कि उसका भूतपूर्व मेयर जान हथेली पर लिए हुए उत्तेजित, खूंखार और युद्धशील दंगाइयों के बीच पहुंच कर फंसे हुए हिन्दू परिवारों को निकालता है। श्री आनन्दीलालजी पोद्दार इसके लिए बधाई के पात्र है। उस माहेश्वरी युवक के साहस की प्रशंसा क्या की जाए जिस रतनलाल मान्धाना ने तीन दिन घोर परिश्रम कर रक्षा कार्य किया। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का सेवा कार्य सबकी जबान पर है। उसके प्रधान-मंत्री श्री धर्मचन्दजी सरावगी न जाने अपने वृद्ध पिता को किस तरह समझा कर दगे के दिनों में मैदान में डटे रहकर असंख्य नर-नारियों की सेवा का प्रबन्ध करते रहे। श्री बसंतलालजी मुरारका पूरे युवक बन गए और केलाबगान जैसे जटिल क्षेत्र से हिन्दू परिवारों को निकाल लाने में समर्थ हुए। श्री भालचन्दजी शर्मा और तुलसीरामजी सरावगी अपने परिवारों की चिन्ता भूलकर सेवा कार्य में लग गए। श्री रामेश्वरजी नोपानी, श्री वेणीशकरजो शर्मा, ओंकारमलजी सराफ और विश्वनाथजी मोर सेवा-कार्य को भलीभांति संगठित करने में सफल हुए।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की उल्लेखनीय सेवा सम्भव हुई सर्वश्री गणपतरायजी बिहानी, गजानन्दजी टीबड़ेवाल, मेघराजजी सेवक, मंगतूरामजी जालान, सोहनलालजी जाजोदिया, सत्यदेवजी गोयनका, रामेश्वरजी पाटोदिया, हरिलालजी लाठ आदि सेवकों की तत्परता और लगन से। ये सभी बधाई और धन्यवाद के पात्र है। मेसर्स सूरजमल नागरमल के सफल संचालक सेठ मोहनलालजी जालान और केशरदेव जालान ने तत्काल ही अपने मकानों के समस्त दरवाजे खोलकर निराश्रितों की हर प्रकार से सहायता की और उससे भी बढ़ कर उनकी चेष्टा उनलोगों को फिर से बसाने की अनुकरणीय है। श्री देवीप्रसादजी खेतान ने सरकारी क्षेत्रों में अपने प्रभाव का अधिक से अधिक प्रयोग कर पुलिस और लारी की सहायता दिलवाई। हरिसन रोड नाईटोला गली के बाजपेयी सदन से दुबले-पतले कन्नौजिया युवकों ने निकल कर गुण्डों की भीड़

कौशल से भगायी, अन्यथा हरिसन रोड के बाकी मकान भी जनशून्य हो जाते। धर्मतल्ला, तालतल्ला क्षेत्र में, प्रचार से दूर किन्तु दस हजार व्यक्तियों की प्राण-रक्षा और हर प्रकार से सहायता करते हुए, दोनों हाथों से अपने सामर्थ्य से अधिक धन लुटा कर और फिर दिन-रात कार्य करने वाले उस वीर विजय सिंह नाहर को कौन भूल सकता है। खूनी दंगे की भयंकरता के साथ इन सेवकों की सेवा की मधुरता चिरस्मरणीय रहेगी।"

सोसाइटी के कार्य को धर्मचन्दजी पूर्ण समर्पित होकर ही कर रहे थे। वे प्रात:काल सुबह का नाश्ता साथ लेकर गाड़ी से चलते, रास्ते में नाश्ता करते और ठीक-आठ बजे सोसाइटी पहुंच जाते। देर तक काम में लगे रहते और आवश्यकता होने पर कई बार रात को भी सोसाइटी आफिस में सो जाते। दंगा शान्त होने के बाद भी पीड़ित लोगों के पुनर्वास तथा सहायता का कार्य बराबर चलता रहा। इन्हीं दिनों मलाया, कुआलालमपुर से करीब ७०० प्रवासी भारतीय स्वदेश लौटे। माहेश्वरी भवन में सोसाइटी द्वारा इनके भोजन आदि की व्यवस्था की गई।

गांधीजी के आदेशानुसार नोवाखाली, चांदपुर तथा त्रिपुरा क्षेत्रों की पीड़ित हिन्दू जनता के लिए राहत-कार्य लगकर इन्होंने किया। बंगाल के अन्य दंगाग्रस्त क्षेत्रों-ग्वालन्दी, चन्दनपुर, चौमुहानी, चिटखिला, दत्तपाड़ा और रामगंग में भी सहायता शिविर लगाए गए। इस प्रकार सारे मारवाड़ी समाज की सहायता से व्यापक सेवा-कार्य की व्यवस्था और सफल संचालन कर धर्मचन्दजी ने अपनी योग्यता, कर्मठता और सेवा भावना का ठोस उदाहरण समाज के सामने रखा।

दूसरी योरप यात्रा

विश्व भ्रमण द्वारा ज्ञानार्जन करना और प्राप्त अनुभवों के योगदान द्वारा समाज को विकास की ओर अग्रसर करना, यह धर्मचन्दजी की मूल वृत्ति रही है। धर्मचन्दजी मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी द्वारा संचालित राहतकार्यों में ही उलझे हुए थे कि इसी बीच लन्दन में ५ मई १९४७ से १२ मई तक 'ब्रिटिश इण्डस्ट्रीज फेयर' होने की सूचना मिली। योरप में होने वाली औद्योगिक क्रान्ति पर धर्मचन्दजी की आंखें बराबर लगी रहती थीं। लन्दन में लगने वाली उक्त प्रदर्शनी में अबतक के औद्योगिक विकास को एक ही स्थान पर देखा और समझा जा

सकता था। मौके पर चूक जाना धर्मचन्दजी के स्वभाव में नहीं था, अतः उन्होंने योरप-यात्रा का निश्चय कर लिया। १ मई, १९४७ को वे सपत्नीक विदेश-यात्रा पर रवाना हो गए। उनकी धर्मपत्नी मोतीदेवी का साथ रहने से यह यात्रा धर्मचन्दजी के लिए विशेष आनन्द दायक और उत्साहप्रद थी लन्दन पहुँच कर धर्मचन्दजी ने इण्डस्ट्रीज फेयर में भाग लिया। इस प्रदर्शनी को देखकर धर्मचन्दजी ने भारत के लिए उपयोगी लघु उद्योगों के सम्बन्ध में विस्तृत ज्ञान प्राप्त किया। लन्दन से धर्मचन्दजी पेरिस गए। दुनिया का स्वर्ग कहे जाने वाले पेरिस में धर्मचन्दजी ने सौन्दर्य, कला और मनोरजन के मनोमुग्धकारी करिश्मे देखे। फिर अमेरिका हवाई जहाज द्वारा न जाकर पानी के जहाज द्वारा गए। इस यात्रा का एक विचित्र अनुभव था। उस समय इगलैण्ड से 'क्वीन एलिजावेथ' नामक पानी का जहाज था, उसमें धर्मचन्दजी को सपत्नीक सीट मिली। यह विश्व का सबसे बड़ा पानी का जहाज था इसमें सबसे ऊँचे श्रेणी में सीट मिली। उसमें खाने-पीने की सारी सुविधाएँ थी। जहाज में ही तीन दिन की यात्रा में धर्मचन्दजी की पत्नी मोती देवी ने तैरना सीखा। इसी जहाज में श्री विधानचन्द्र राय भी यात्रा कर रहे थे उनसे धर्मचन्दजी का परिचय हुआ। जहाज एक शहर की तरह था, इसमें धोबीखाना, छापाखाना, विश्व की सारी खबरें मिलने की व्यवस्था थी। कलकत्ते के दगे की खबर भी उसमें आयी। जहाज में ७ मजिलें थीं, खेलने के साधन थे। जहाज से ही अपने पुराने मित्र राजकुमारजी खेमका को तार देकर न्यूयार्क के होटल में कमरा रिजर्व करवाया। दूसरे दिन उनका तार आया उसमें होटल का नाम था। वहाँ धर्मचन्दजी आस्ट्रेलिया गए।

वहीं पर सिडनी में प्रडेन्शियल बिल्डिग मार्टिन पैलेस में भारतीयों द्वारा मनाए गए १५ अगस्त के झंडोत्तोलन समारोह में धर्मचन्दजी ने सपत्नीक भाग लिया। वहां से सिंगापुर होते हुए अगस्त के तीसरे सप्ताह मे ये भारत लौट आए। यह धर्मचन्दजी की अपनी विस्तृत विदेश यात्रा थी। भारत लौट कर धर्मचन्दजी ने अपनी विस्तृत विदेश यात्रा के अनुभव पत्रिकाओं में प्रकाशित किए जिनको लोगों ने बड़े चाव से पढ़ा।

धर्मचन्दजी के विदेश-यात्रा से लौटने के पूर्व ही सन् १९४७ में पंजाब में दंगे हुए और लाखों शरणार्थी भाग-भाग कर बंगाल में आने लगे। धर्मचन्दजी की अनुपस्थिति में साथियों ने सोसाइटी के माध्यम से दंगा-पीड़ितों के

सहायतार्थ व्यापक सेवा-कार्य किया। अमृतसर और लाहौर में भी शिविर लगाए गए और अनेक हिन्दू परिवारों का उद्धार किया गया।

हरिद्वार में कनखल में भी सेवा-शिविर लगाया गया। इस शिविर का निरीक्षण करने जवाहरलाल नेहरू स्वयं पधारे और उन्होंने सोसाइटी के कार्य की प्रशसा की।

धर्मचन्दजी भी विदेश-यात्रा से आते ही सोसाइटी द्वारा हो रहे राहत-कार्य में जुट गए। इसी क्रम में बंगाल के रिलीफ मंत्री प्रिंसिपल एस० एन० अग्रवाल, पूना नेचर क्योर होम के डाक्टर दीनशा मेहता आदि अनेक विशिष्ट लोगों ने सोसाइटी के कार्यों का निरीक्षण किया और धर्मचन्दजी को बधाई दी।

दिल्ली स्टेशन के प्लेटफार्म पर सोसाइटी द्वारा जो सहायता कार्य चल रहा था उसका महत्त्व विश्वमित्र में छपी इस खबर से समझा जा सकता है—

'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी : नेताओं द्वारा कार्य की प्रशंसा

नई दिल्ली (तार द्वारा) कलकत्ते की मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी ने दिल्ली स्टेशन के प्लेटफार्म पर एक कैम्प खोला है जहां १५००० शरणार्थियों की सेवा की जा रही है। नगर के अनेक भागों में गन्दगी आदि के कारण हैजा का भयंकर प्रकोप हो रहा है। सोसाइटी के कार्यकर्त्ता शरणार्थियों एव वहां की जनता को हैजे का टीका घूम-घूमकर लगा रहे हैं। बिड़ला मन्दिर के मेडिकल कैम्प में २ हजार लोगों को टीका लगाया गया। बाढ़ पीड़ित लोगों की सहायता के लिए एक कैम्प जमुनापुल पर भी खोला गया है। बच्चों के लिए मुफ्त दूध वितरण किया जाता है।

सोसाइटी के प्रतिनिधि महात्माजी से मिले। महात्माजी ने उनको पूर्वी और पश्चिमी पंजाब में भी कार्य बढ़ाने की राय दी। पंजाब शरणार्थी सहायता दल के प्रधान संगठनकर्त्ता श्री भालचन्द शर्मा फिरोजपुर, कुरुक्षेत्र तथा अमृतसर में कैम्प खोलने में व्यस्त थे। अमृतसर स्थित कैम्प का लेडी माण्टबेटन, राजकुमारी अमृत कौर तथा शरणार्थी सहायता एवं पुनर्वास मंत्री के० सी०

नियोगी, डा० पट्टाभि सीतारमैया एवं श्री शंकर राव देव ने निरीक्षण किया। आपलोगों ने सोसाइटी के कार्य की प्रशंसा की।

प्राकृतिक चिकित्सा की ओर

धर्मचन्दजी संजीदा स्वभाव के परिहास-प्रिय व्यक्ति हैं। किसी भी विषय पर खुले दिल से बात करना और ठहाका मारकर हंसना उनकी सहज वृत्ति है। अस्सी की उम्र में भी उनका पूर्ण स्वस्थ और सुदर्शन व्यक्तित्व इस बात का गवाह है कि शरीर को सहेज कर रखने की कला मे वे पूर्ण निष्णात हैं। बार-बार विश्व भ्रमण करते हुए दिमाग और खुली आंखों से विविध वैचित्र्यपूर्ण संसार को देखा और परखा है। समाधि से लेकर सयोग-साधना तक सभी स्थलों पर झांक आए हे वे। पर अपना आचार-व्यवहार, खानपान, रहन-सहन और जीने का सलीका अपना ही है—नशा-हीन, निरामिष, सात्विक और प्राकृतिक। कही कोई तनाव नहीं, कुण्ठा नही, बाद-विवाद नही। जो अच्छा लगता है उसे पूरे उत्साह से करते हैं, जो मन को भाता नही उसमें उलझते नहीं। बातों की अपेक्षा कर्म पर विश्वास। उनके सानिध्य से मन की उदासी घुल जाती है। जीवन के प्रति उमंग और आनन्द की स्फूर्णा होती है। उनके साथ बैठकर बतिया लेने वाला व्यक्ति बोझ और थकान से मुक्त और हल्का होकर लौटता है।

धर्मचन्दजी के इस सदाबहार जीवन का राज है प्रकृति के प्रति उनका असीम प्यार और अटूट लगाव रांची में इनका जन्म हुआ—घनघोर जंगलों से घिरे, प्राकृतिक वैभव और सौन्दर्य से परिपूर्ण धरती की गोद में इनका बचपन बीता। प्रकृति के प्रति इनका जन्मजात लगाव आज भी ज्यों का त्यों बना हुआ है। जल मिट्टी, हवा, प्रकाश, और आकाश के साथ इनकी सांस और धड़कन का सहज सम्बन्ध है। प्रकृति से प्राप्त ऊर्जा को प्राकृतिक जीवन प्रणाली के विकास-कार्य में ही खर्च कर इन्हें आत्मिक सतोष होता है। जीवन की इस सान्ध्य बेला में अपनी आनुसंगिक गतिविधियोंको समेट कर प्राकृतिक चिकित्सा और सेवा-कार्य के लिए ही इन्होने अपना शेष जीवन समर्पित कर रखा है। प्राकृतिक-चिकित्सा के प्रति इनकी लगन और निष्ठा को शक्ति मिली है महात्मा गांधी, बिनोवा भावे, ढेबर भाई और मोरारजी देसाई जैसे महान व्यक्तियों के संसर्ग से।

पाइलेट धर्मचन्दजी

जैसा कि कहा जा चुका है कि दुस्साहसिक कार्य करना धर्मचन्दजी की नियति बन चुकी है। विरोध के बावजूद वे अपने गन्तव्यपथ पर आगे ही बढ़ते गए।

एक बार जो निश्चय कर लिया उस काम को पूरा कर दिखाने का उत्साह उनमें बराबर बना रहा। वे उसी साल स्थापित 'बंगाल फ्लाइंग क्लब' में जाकर स्वयं हवाई जहाज चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त करने लगे। वे अबतक क्लब से लौटकर नहीं आते उनकी मां भोजन नहीं करती थीं।

हवा में उड़ने और आकाश से बातें करने का आकर्षण इतना अधिक था कि थोड़े ही दिनों में गहरी लगन और निरन्तर अभ्यास द्वारा उन्होंने हवाई जहाज उड़ाने का विधिवत प्रशिक्षण पूरा कर लिया। सन् १९३१ में इन्होंने 'ए' पाइलोट्स लाइसेंस प्राप्त किया था।

मारवाड़ी समाज में उस समय बृजलालजी लोहिया, धर्मचन्दजी सरावगी और भागीरथजी गोयनका तीन युवक पाइलट हुए, इनमें धर्मचन्दजी का स्थान जैन पाइलट के हिसाब से प्रथम था। लेकिन लदन से करांची तक हवाई-यात्रा करने वाले प्रथम भारतीय यात्री धर्मचन्द ही थे।

बंगाल फ्लाइंग क्लब में ये बराबर अभ्यास करते रहे और फिर १९५५ से १९५७ तक क्लब के कोषाध्यक्ष के पद पर भी रहे। इस बीच इन्होंने कई बार हवाई यात्राएं कीं। हवाई जहाज उड़ाते समय कई बार इनके साहस और धैर्य की परीक्षा भी हुई।

परीक्षा के क्षण

एक बार दमदम के समीपवर्ती आकाश में हवाई-विहार करते समय एक गिद्ध पक्षी वायुयान से आ टकराया। वायुयान थोड़ा क्षतिग्रस्त भी हुआ। लेकिन धर्मचन्दजी ने बड़े धैर्य और कुशलता से वायुयान को सुरक्षित जमीन पर उतार लिया। इस पर उनके शिक्षक ने उन्हें बधाई दी और दूसरे दिन 'स्टेट्समैन' पत्र में इस घटना का समाचार छपा। यहां पर यह बात उल्लेखनीय है कि कुछ ही दिनों पहले इसी प्रकार गिद्ध से टकरा कर एक विमान-दुर्घटना हो चुकी थी जिसमें रूमानिया के राजकुमार को मौत का शिकार होना पड़ा। आजकल भी बीच-बीच में ये पक्षी बड़े-बड़े जहाजों से टकरा कर लाखों का नुकसान करते है।

३० दिसम्बर, १९३३ में धर्मचन्दजी ने विश्व विजयी पहलवान गामा को अपने जहाज में बैठाकर आकाश की सैर करवाई। इस उड़ान में वे पांच हजार

फीट की ऊँचाई तक उड़े। गामाजी बहुत खुश हुए और जब उतरने लगे तो कुछ देर और उड़ाने को कहा पर उतरते समय विमान को जोरदार झटका लगा। बेचारे गामाजी तो एकदम घबरा गए। लेकिन धर्मचन्दजी विमान से इस प्रकार मुस्कराते हुए नीचे उतरे जैसे कुछ हुआ ही नहीं। बाद में पता चला कि भूमि पर उतरते समय गामा के अधिक वजन के कारण विमान का एक चक्के का टायर फट गया था। श्री गामा ने कहा अब हम दुबारा हवाई जहाज पर नहीं चढ़ेंगे।

धर्मचन्दजी में एक कुशल विमान-चालक की सूझ-बूझ और निर्भीकता दोनों ही गुण थे। आगे चलकर इन्होने स्वयं अपना विमान (पुष्पक) खरीद लिया था जिसपर इन्होंने अनेक बार भारत-भ्रमण किया। फिर अपने ही जहाज द्वारा विश्व-भ्रमण का प्रोग्राम बनाया। पत्नी को भी विमान चलाना सिखाया। पर एक के बाद एक कानूनी बाधाएँ आती गईं इसलिए फिर १९४७ में सपत्नीक विश्व भ्रमण कम्पनियों द्वारा चलाए जाने वाले हवाई जहाजो में किया।

फिर एक चुनौती—हवाबाज को

सन १९४० में कांग्रेस का अखिल भारतीय अधिवेशन रामगढ़ में होने जा रहा था। सारे देश में राजनैतिक चेतना का एक अभूतपूर्व ज्वार छाया हुआ था। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में होने वाले इस अधिवेशन की ओर सारे देशवासियों की आँखें लगी हुई थी। सम्मेलन में कांग्रेस की नीतियों और स्वाधीनता आन्दोलन की भावी रूपरेखा के बारे मे निर्णय लिए जाने थे।

एक कुशल पाइलट के रूप में धर्मचन्दजी की ख्याति सारे देश में फैल चुकी थी। अधिवेशन की स्वागत समिति के प्रतिनिधियो ने धर्मचन्दजी से आग्रह किया कि वे अधिवेशन में उद्घाटन के अवसर पर आकाश से पुष्प-वृष्टि कर अध्यक्ष श्री अब्दुल कलाम आजाद का स्वागत करें। धर्मचन्दजी भला ऐसे अवसर पर कब चूकने वाले थे। उन्होने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। ठीक समय पर धर्मचन्दजी अपने फ्लाइंग क्लब का वायुयान लेकर रामगढ़ की ओर उड़े। किन्तु तूफान और मुसलाधार वृष्टि के कारण पुष्प-वृष्टि नही कर सके। जहाज संकट में फँस गया। धर्मचन्दजी ने बड़े साहस और सूझबूझ से काम लेते हुए विमान को जमशेदपुर हवाई अड्डे पर उतार लिया। यह तूफानी वृष्टि इतनी

भयंकर थी कि पूरे रामगढ़ में अधिवेशन के मैदान में पानी भर गया। अधिवेशन के लिए तैयार किया गया मंच और दूसरे तम्बू क्षतिग्रस्त हो गए। लाचार होकर कांग्रेस को यह अधिवेशन स्थगित कर देना पड़ा।

बाद में १९४८ में जब जयपुर में पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो धर्मचन्दजी ने विमान द्वारा पुष्प-वृष्टि की। इस समय तक धर्मचन्दजी ने अपना स्वयं का जहाज खरीद लिया था जो 'पुष्पक विमान' के नाम से प्रसिद्ध था। जयपुर से लौटते समय धर्मचन्दजी की माताजी, धर्मपत्नी और बच्चे भी साथ थे। कलकत्ते के समीपवर्ती आकाश में पहुँचते-पहुँचते धर्मचन्दजी दिशा भ्रमित हो गए। उन दिनों बेहला में हवाई अड्डा था। दुर्गापुर ब्रिज को पार करते हुए धर्मचन्दजी ने समझा कि हावड़ा ब्रिज आ गया है और अब चार-पांच मिनट में ही हम बेहला हवाई अड्डे पर पहुंच जाएँगे। लेकिन पन्द्रह-बीस मिनट तक उड़ान भरने के बाद भी जब बेहला का हवाई अड्डा नहीं दिखाई दिया तो धर्मचन्दजी समझ गए कि जहाज अपने निर्दिष्ट-पथ से भटक चुका है। इधर सूर्यास्त होकर अंधकार बढ़ने लगा था। आखिर धर्मचन्दजी ने अपनी माताजी तथा पत्नी को सूचित करते हुए कहा कि 'हवाई अड्डा कहीं दिखाई नहीं देता है। आकाश के अन्धेरे में बेमौत मरने की अपेक्षा किसी खेत में विमान उतारने का प्रयत्न कर रहा हूँ। पता नहीं सुरक्षित उतर सकेंगे कि नहीं। आप लोगों को भगवान का नाम लेना हो तो ले लीजिए।'

धर्मचन्दजी की बात सुनकर सब लोग घबड़ा गए पर धर्मचन्दजी धैर्य के साथ उपयुक्त स्थान की तलाश करते रहे। अन्त में उन्होंने पालता में किसी स्थान पर अपने विमान को सुरक्षित जमीन पर उतार लिया। इस प्रकार पूरे परिवार को मौत के मुँह से बचा लेने में वे सफल रहे।

निरीक्षण और प्रयोग

प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी कार्य को विस्तार देने के लिए विषय का ज्ञान प्राप्त करने की दिशा में धर्मचन्दजी की दिलचस्पी बढ़ती गई। देश में जहां-जहां प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र थे वहां-वहां वे स्वय गए। मलाद (बम्बई), उरुली कांचन (पूना के समीप) तथा डा० दीनशा मेहता द्वारा स्थापित पूना के प्रसिद्ध चिकित्सा केन्द्रों पर जाकर इन्होंने वहां चलने वाले चिकित्सा सम्बन्धी कार्यों के

बारे में विस्तृत जानकारी की। चिकित्सा केन्द्रों की व्यवस्था और वहां चलने वाले प्रयोगों के परिणामों का ब्योरा प्राप्त किया। इसके बाद प्राप्त ज्ञान के प्रयोगों का सिलसिला चालू हुआ—पहले स्वयं अपने ऊपर और फिर मित्रों और परिचितों पर। इन प्रयोगों के उत्साह जनक परिणामों ने धर्मचन्दजी को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। अब वे इस कार्य को व्यापक बनाने के लिए मन ही मन योजना बनाने लगे।

सन् १९५१ अगस्त में धर्मचन्दजी जयपुर गए वहाँ इन्होंने अनेक सार्वजिन संस्थाओं के साथ अपना सम्पर्क स्थापित किया और लोगों को प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी जानकारी दी। वहीं प्रचार कार्य करते हुए उनके मन में प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी प्रशिक्षण केन्द्र खोलने की कल्पना का उदय हुआ, जिसको आगे चलकर उन्होंने पूरा भी किया।

कलकत्ता कारपोरेशन में : धूम्रपान निषेध के नियामक

अब तक धर्मचन्दजी अपने क्षेत्र में काफी लोकप्रिय हो चुके थे। सन् १९५२ में कलकत्ता कारपोरेशन के चुनाव हुए। साथियों के आग्रह को स्वीकार कर धर्मचन्दजी भी चुनाव में खड़े हुए। उन्होंने कांग्रेसी उम्मीदवार के रूप मे चुनाव लड़ने का निश्चय किया। श्री अतुल्य घोष और विजयसिंहजी नाहर का धर्मचन्दजी के प्रति विशेष स्नेह था। धर्मचन्दजी के मुकाबिले मे दो उम्मीदवार दूसरे भी खड़े थे। पर भाग्य धर्मचन्दजी के पक्ष में कार्य कर रहा था। उम्मीदवार के फार्म चेकिंग होते समय दोनो प्रतिद्वन्दियो के फार्म गलत भरे जाने के कारण अस्वीकार कर दिए गए। इस आकस्मिक विजय से धर्मचन्दजी का दायित्व और भी बढ गया। एक कौसिलर के रूप में धर्मचन्दजी ने बडी निष्ठा और लगन के साथ कई महत्वपूर्ण कार्य किए।

उन दिनों ट्रामो मे धूम्र-पान के कारण दूसरे यात्रियों को बड़ी असुविधा होती थी। कभी-कभी कपड़ा जलने जैसी घटनाएँ भी घटती रहती थी। धर्मचन्दजी ने ट्राम में धूम्र-पान बन्द करवाने के लिए कारपोरेशन मे प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव को व्यापक समर्थन मिला। कारपोरेशन ने प्रस्ताव पास कर विधान-सभा को प्रेषित कर दिया। विधान सभा में भी इस प्रस्ताव की अनुकूल प्रतिक्रिया हुई। कानून बनाकर ट्रामों में धूम्र-पान निषेध कर दिया गया। इसे प्रभावित होकर

धर्मचन्दजी ने सिनेमा घरों में धूम्र-पान पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रस्ताव कारपोरेशन में रखा। संयोग से इसी अवसर पर दक्षिण प्रदेश के किसी सिनेमा घर में भयंकर अग्नि-कांड हुआ। बहुत से लोग मारे गए। अनुसन्धान करने पर अग्नि-काण्ड का कारण धूम्र-पान था। इससे उनके प्रस्ताव को बल मिला और सिनेमा घरों में धूम्र-पान बन्द हुआ। यह धर्मचन्दजी के रचनात्मक विचार की विजय थी। अनेक प्रमुख व्यक्तियों ने धर्मचन्दजी को इस विजय के लिए बधाई दी। धर्मचन्दजी ने रेल और हवाई जहाज में भी धूम्र-पान बन्द करवाने की पेशकश की लेकिन उसमें सफलता नहीं मिली। उनके मित्र परिहास किया करते थे कि धर्मचन्दजी का वश चले तो किसी को घर में भी धूम्र-पान नहीं करने दें।

कारपोरेशन की बैठक में एक बार एक प्रस्ताव आया कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का कारपोरेशन को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा हाथ रहा है। इसलिए कारपोरेशन में जहां काउन्सिलरों की बैठक होती है उस हाल में उनका एक बड़ा तैल-चित्र टांगा जाए। धर्मचन्दजी ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया और अपने खर्च से चित्र बनवाकर देने की घोषणा की। चित्र बना पर संयोग की बात है जापान गवर्नमेन्ट ने नेताजी का एक तैल चित्र बनाकर भेजा वह चित्र कौंसिलर हाल में टांगा गया। पर फिर धर्मचन्दजी का दिया हुआ चित्र मेयर और काउन्सिलर जिस सीढ़ी से चढ़ते हे उसके बरामदे में टांगा गया जो आज भी टंगा है और उसपर लिखा है कि धर्मचन्द सरावगी ने बनवाकर दिया।

अनवरत कार्य

कलकत्ता कारपोरेशन के कौन्सिलर के रूप में धर्मचन्दजी ने शृ खलाबद्ध कार्य किया। महानगर और समाज से सम्बन्धित ज्वलत समस्याओं की ओर इन्होने कारपोरेशन का ध्यान आकर्षित किया। शराब का प्रचलन तीव्र गति से बढ़ रहा था। अनेक प्रतिष्ठित कहे जाने वाले घराने पीने की बुरी लत के शिकार हो रहे थे। शराबखोरी के कारण अनेक खाते-पीते परिवारों को धूल में मिलते देखा था इन्होंने। अतः पूरे जोर-शोर के साथ इन्होंने शराब की दुकानें बन्द करवाने का प्रयत्न किया।

मछुआ बाजार में फल विक्रेताओं के कारण कूड़े और गन्दगी का ढेर लगा रहता था, जिसके कारण आसपास का वातावरण सड़ांघ से भरा रहता था।

सड़कों पर कूड़े के कारण लोगों का राह चलना कठिन हो रहा था। धर्मचन्दजी ने इस समस्या के समाधान के लिए कारपोरेशन का ध्यान आकर्षित किया।

स्वास्थ्य-रक्षा की दृष्टि से नगर में जगह-जगह स्वीमिंग पुल बनाने का प्रस्ताव रखा। दुकानों में बिकने वाली खाद्य सामग्री के सम्बन्ध में शुद्धता की सूचना देने वाले साइन बोर्ड लगवाने के लिए आन्दोलन किया।

आदिम युग की बर्बरता की याद दिलाने वाले हाथ-रिक्शा की जगह आज जो कुछ रूटों में आटो रिक्शा चलता है उसके प्रारम्भ करवाने की इन्होने पुरजोर कोशिश की।

गायों तथा अन्य दुधारू जानवरों की रक्षा के लिए कसाईखाने बन्द करवाने का सतत् प्रयत्न किया। सितम्बर १९५४ में धर्मयुद्ध समिति द्वारा चलाए गए गौरक्षा आन्दोलन मे इन्होंने उत्साह से भाग लिया। यह प्रथम अवसर था जब श्री प्रयागदासजी राठी, श्री सोहनलालजी दुगड़, श्री गजराजजी सरावगी जैसे प्रतिष्ठित मारवाड़ियों ने आन्दोलन में खुलकर भाग लिया। इसमें अनेक लोग घायल हुए और जेल गए। श्री सोहनलालजी दुगड़ के भी सिर में लाठी लगी और उनको जेल भी दी गई।

२४ नवम्बर, १९५८ को कलकत्ते में 'विश्व शाकाहारी कांग्रेस' का आयोजन हुआ जिसमें देश-विदेश के ६५ प्रतिनिधियो ने भाग लिया। धर्मचन्दजी इस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। इस महत्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने में धर्मचन्दजी का विशेष सहयोग रहा था।

जिन समस्याओं की ओर धर्मचन्दजी ने अपने कार्यक्रम में लोगो का ध्यान आकर्षित किया था वे ही समस्याएँ आज भी सुरसा की तरह मुँह बाए खड़ी है। कसाईखाने, हाथ-रिक्शा, शराब की दुकानें, गन्दी बस्तियों की सफाई और स्वास्थ्य रक्षा के प्रश्न आज भी ज्यों के त्यों अनुत्तरित पड़े हैं। इन भयानक समस्याओं के समाधान के अभाव में पूरा महानगर नरक-कुण्ड बनता चला जा रहा है। एक भविष्य द्रष्टा की तरह धर्मचन्दजी प्रारम्भ से ही इन समस्याओं के प्रति जागरूक रहे और समाधान की दिशा में संघर्ष करते रहे।

एक वार्ड विशेष के प्रतिनिधि होते हुए भी धर्मचन्दजी ने पूरे जन-जीवन से सम्बन्धित व्यापक रचनात्मक कार्यों में ही अधिक रुचि ली। यह इनके उदारवादी

दृष्टिकोण का परिचायक है। बात-बात में सिद्धान्तों की चर्चा करने वाले लोगों में ये नहीं रहे। इनका कहना था कि व्यक्ति की पहचान सिद्धान्तों से नहीं उसके कर्मों से ही की जाती है। अपनी असफलता का दोष दूसरों के माथे मढ़ने वाला व्यक्ति अपनी ही कमजोरी प्रकट करता है। पूरी ताकत और आत्म-विश्वास से कार्य करने वाले व्यक्ति के पीछे पीछे सफलता स्वयं चली आती है—

"सब सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय।"

फिर इंगलैंड की ओर

२४ अप्रेल १९५३ को धर्मचन्दजी ने अपने मित्र श्री गोविन्द प्रसाद रुईया, जिन्होंने मारवाड़ी रीलिफ सोसाइटी के तीसरे तल्ले में प्राकृतिक चिकित्सा प्रवेशित विभाग खोलने के लिए सत्तर हजार रुपये दिए थे, के साथ इङ्गलैण्ड यात्रा के लिए प्रस्थान किया। इसी सन्दर्भ में २०-४-५३ को अनेक संस्थाओं की ओर से श्री दिगम्बर जैन भवन में धर्मचन्दजी का विदाई समारोह मनाया गया जिसमें उनके कर्मठ जीवन की भूरि-भूरि प्रसंशा की गई।

श्री राजबली जी शुक्ल ने अभिनन्दन पत्र पढ़ा। लोकमान्य के सचालक श्री रमाशंकरजी त्रिपाठी, कौंसिलर श्री तुलसीरामजी सरावगी, श्री बसन्तलालजी मुरारका, श्री सीतारामजी सेकसरिया, श्री मुरलीधरजी सोंथलिया तथा श्री मूलचन्दजी अग्रवाल आदि नगर के विशिष्ट व्यक्तियों ने इस समारोह की शोभा बढ़ाई।

धर्मचन्दजी ने अपनी उक्त विदेश यात्रा में लन्दन, हालैण्ड, फ्रान्स बेलजियम इटली, बियाना आदि अनेक देशों का भ्रमण किया। इसी यात्रा में इन्होंने लंदन में होनेवाली हेल्थ-कान्फ्रेन्स में अपना ऐतिहासिक भाषण दिया।

लन्दन में भाषण

लन्दन में ५ मई को कलकत्ता कारपोरेशन के कौंसिलर भारतीय प्रतिनिधि श्री धर्मचन्दजी सरावगी ने विश्व स्वास्थ्य सम्मेलन में आगन्तुक प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा—

'आज संसार में मानव मात्र का स्वास्थ्य खतरे से टकरा रहा है। उचित और पोषक खाद्य पदार्थों का अभाव प्रतिदिन के भोजन तथा दिनचर्या में संयम

हीनता ने ही आज के स्वास्थ्य को बड़ी चिन्तापूर्ण स्थिति में डाल दिया है। साथ ही रोगी बनकर अत्यधिक औषधियों का सेवन करने के कारण भी विकट समस्या उत्पन्न हो गई है। उदाहरणार्थ पेन्सिलीन के आविष्कार ने हाल ही में अपनी भारत-यात्रा में कहा था कि डाक्टर लोग साधारण से साधारण बीमारी में भी पेन्सिलीन का उपयोग उदारता पूर्वक कर रहे हैं। इसका परिणाम भविष्य में यह होगा कि उस रोगी की नाजुक परिस्थिति में यह औषधि कोई असर नहीं डाल सकेगी सम्मेलन के एक प्रतिनिधि के भाषण से भी इसकी स्पष्ट पुष्टि हो जाती है कि जिस स्थान पर प्रतिदिन डी० डी० टी० मक्खियों और मच्छरों को हटाने के लिए व्यवहार में लाई जाती है, वहां पर देखा जाता है कि वे मक्खियां और अन्य कीड़े-मकोड़े उस डी० डी० टी० की गन्ध के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि वे वहां से कभी नहीं भागते।

'इस सम्मेलन में भिन्न-भिन्न देशों के प्रभावशाली महान व्यक्तित्व वाले प्रतिनिधि सम्मिलित हुए हैं। उनसे मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ हूँ, और भारत की ओर से मैं आपलोगों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। मेरी यह अभिलाषा है कि संसार में दवाइयों के व्यवहार की जो बाढ़ आ गई है उसे आप सामूहिक रूप से रोकें। जिससे मानव मात्र का उपकार हो और स्वास्थ्य सम्मेलन उस महान श्रेय को प्राप्त करें।'

सम्मेलन में करीब ९० देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। धर्मचन्दजी इटली और बेलजियम होते हुए वियाना पहुँचे। यात्रा के इसी क्रम में वे इंगलैंड मे एलीजाबेथ के राज्याभिषेक समारोह में भी सम्मिलित हुए।

विदेश-यात्रा से लौटकर धर्मचन्दजी फिर सार्वजनिक कार्यों में व्यस्त हो गए। २६ जुलाई १९५३ को कलकत्ते में मर्चेण्ट्स कमेटी के ५१ वें अधिवेशन में धर्मचन्दजी ने सभापति-पद से महत्वपूर्ण भाषण दिया।

२२ नवम्बर १९५३ को मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वावधान में समाज सुधार समिति द्वारा दहेज विरोधी आन्दोलन प्रारम्भ किया गया। धर्मचन्दजी ने इसमें सक्रिय भाग लिया।

६ अप्रैल १९५४ को जापान के डा० ओसावा की उपस्थिति में प्राकृतिक चिकित्सा पर गोष्ठी हुई जिसमें इन्होंने अपने महत्वपूर्ण विचार रखे।

निर्मल-इन्दु : शुभ विवाह

जीवन की लम्बी यात्रा में सफल और असफल होना बहुत कुछ पति-पत्नी के आपसी तालमेल पर निर्भर करता है। पुरुष और स्त्री दो पहियों की तरह जीवन-रथ को गतिशील बनाते हैं। दोनों पहियों के सन्तुलन के बिना रथ का एक कदम भी आगे बढ़ पाना सम्भव नहीं। धर्मचन्दजी दाम्पत्य-जीवन के इस रहस्य से भलीभांति परिचित थे। अपने बड़े पुत्र निर्मल कुमार के विवाह के समय इन्होंने अपने इस अनुभूत ज्ञान का भरपूर उपयोग किया।

परिवार के मंगलमय भविष्य की कामना को हृदय में संजोये वे सुयोग्य पुत्र-वधू की तलाश में लग गए। जात-पांत की कट्टरता और दहेज जैसी सामाजिक बुराइयों से परहेज रखने वाले धर्मचन्दजी ने यहां भी अपने उदार और सुधारवादी दृष्टिकोण से ही काम लिया। लड़की गौरवर्ण, सुशील और सद्-संस्कारों वाली हो इतनी ही चाह थी। चाहे वह मारवाड़, बिहार, यू०पी०, पजाब, गुजरात कहीं की भी हो। उन्होंने अपने बन्धु-बान्धवों व मित्रों के सामने अपने विचार रखे। उनकी आंखे इच्छित पुत्र-वधू की तलाश करती रहीं। एक दिन मातृ-सेवासदन के सामने उनकी दृष्टि एक लड़की पर पड़ी। साथ मे मोती देवी थी। उन्होने उनसे कहा ऐसे रग-रूप की लड़की निर्मल के लिए मिल जाए तो अच्छा हो।

एक दिन अपने मित्र श्री शिवकुमारजी धानुका से किसी आवश्यक कार्य की सलाह के लिए उनके घर गए। सयोग से कुमारी इन्दु स्कूल जाने की तैयारी कर शिवकुमारजी के पैर छूने आई। धर्मचन्दजी ने उनसे पूछा लड़की किसकी है। शिवकुमारजी ने कहा आपकी है जब यह छोटी थी तो व्यायामशाला भी जाया करती थी। धर्मचन्दजी ने मन ही मन सोचा, "गोद में छोरो गाव में ढिंढोरो"।

बातचीत आगे बढ़ी और सम्बन्ध पक्का हो गया उस समय धर्मचन्दजी ने उनसे एक बात स्पष्ट कर ली कि समाज की परम्परा के अनुसार जब मित्र अपने पुत्र-पुत्रियों का सम्बन्ध कर कई पुश्त के लिए सम्बन्ध जोड़ते है तो उनके व्यवहार में फर्क आ जाता है। जब तक साधारण मित्र रहते हैं, एक-दूसरे के यहां खाना-पीना होता है। पर जब सम्बन्धी होते हैं तो लड़कीवाला लड़के वाले के यहां पानी तक नहीं पीता। आपको यह मानना पड़ेगा कि आप ऐसा व्यवहार नहीं करेंगे। शिवकुमारजी ने यह बात स्वीकार कर ली। आज भी शिवकुमारजी के बच्चे धर्मचन्दजी को ताऊजी कहते हैं।

१६ अप्रैल १९६० को निर्मल कुमार का विवाह सौ० इन्दु के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। पुराने रीति-रिवाजों से हटकर अत्यन्त सादगी से बिना पगड़ी शेरवानी आदि के पहने एक ही दिन में विवाह अनुष्ठान पूरा किया गया।

दहेज, पर्दा और आडम्बर रहित इस आदर्श विवाह की सर्वत्र चर्चा रही। नगर के गण्यमान्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस विवाह समारोह मे उपस्थित होकर बर-वधू को आशीर्वाद दिया एव धर्मचन्दजी को इस सुधारवादी कदम के लिए बधाई दी।

परिवार को धर्मचन्दजी अपनी स्वर्ग-सृष्टि मानते है। आपस में एक-दूसरे पर विश्वास, सहयोग, त्याग और सेवा भावना ही पारिवारिक सुख और समृद्धि का प्राण है।

प्राकृतिक निकेतन

व्यक्ति जब अपनी पारिवारिक सीमा से आगे बढ़कर जन-हित से सम्बन्धित कर्म क्षेत्र में प्रवेश करता है तब वह मात्र व्यक्ति न रहकर संस्था का पर्याय बन जाता है। उसके द्वारा होने वाले व्यापक हितकारी कार्यों से उत्साहित और प्रेरित होकर अनेक सेवा भावी लोग उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना प्रारम्भ कर देते हैं। धर्मचन्दजी ने इक्कीस बीघा में फैला जैन उद्यान नामक अपना बगीचा प्राकृति-निकेतन-ट्रस्ट को सौंप कर प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ के निर्माण की योजना का श्री गणेश किया तो समाज के अनेक कर्मठ व्यक्ति योजना की क्रियान्विति में धर्मचन्दजी के साथ जुड़ने लगे। योगासन और प्राकृतिक चिकित्सा के सदेश-वाहक श्री राधाकृष्णजी नेवटिया, सतत् समाजसेवी श्री बजरंगलालजी लाठ, समाज-भूषण श्री विजय सिंहजी नाहर, कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री आनन्दीलालजी गोयनका जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने योजना को सफल बनाने में पुरजोर सहयोग दिया।

२० जनवरी १९६३ को दानवीर श्री सोहनलालजी दुगड़ के करकमलों द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ का शिलान्यास किया गया। धर्मचन्दजी ने इस मानव कल्याणकारी योजना की पूर्ति के लिए ५०००० (पचास हजार) रुपये नगद देने की घोषणा की। श्री दुगड़जी ने भी पत्र-पुष्प के रूप में ५००० (पांच हजार) रुपयों का अवदान दिया।

नगर से पन्द्रह मील दूर प्रकृति के सुरम्य वातावरण में शिलान्यास का यह भव्य समारोह आनन्द और उत्साह से परिपूर्ण था। समारोह में विशिष्ट रूप से आमन्त्रित नगर के गण्यमान नागरिकों को सम्बोधन करते हुए सेठ सोहनलालजी दुगड़ ने कहा—मैं पूर्ण आशा और विश्वास लेकर इस मंगल कार्य को सम्पन्न कर रहा हूँ। निश्चय ही इस संस्था से जनता की महान सेवा हो सकेगी। यह सही है कि आज एलोपैथिक पद्धतियों का जाल फैला हुआ है, किन्तु अन्ततोगत्वा प्राकृतिक चिकित्सा और सही रहन-सहन से ही मानव जीवन सुखी हो सकता है।

श्री राधाकृष्णजी नेवटिया ने कहा—गरीब भारत को अल्प व्यय में गुणकारी चिकित्सा सुलभ करने के अभिप्राय से ही गांधीजी ने सदा प्राकृतिक इलाज पर बल दिया था। आज उन्होंने बालकोवाजी जैसे सुदक्ष व्यक्तियों की देखरेख में देश में जगह जगह प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना की जो आज भी चल रहे हैं। सरकार द्वारा भी इसके प्रचार में सहयोग मिल रहा है।

श्री बजरंगलालजी लाठ ने कहा—प्राकृतिक चिकित्सा को अपना कर हम जीवन और दीर्घायु के साथ धन की भी रक्षा कर सकते हैं।

प० अक्षय चन्द्र शर्मा ने कहा—पाश्चात्य देशों का समृद्ध जीवन भी आज अप्राकृतिक ढंग के रहन-सहन के कारण दुखमय बना हुआ है। हमारे यहां प्राचीन ग्रन्थों में शत आयु का उल्लेख है, जिसको प्राकृतिक आहार-व्यवहार के द्वारा ही पूर्व पुरुष पा सके थे। आज भी यदि हम सही ढंग से नियमों का पालन कर सकें तो शत आयु असम्भव नहीं।

श्री रामकुमारजी भुवालका ने प्राकृतिक नियमों के पालन और व्यायाम की अनिवार्यता पर जोर दिया। अन्त में प्राकृतिक अल्पाहार के साथ ही यह भव्य समारोह सम्पन्न हुआ।

निर्माण-कार्य का श्री गणेश

२६ जनवरी १९६३ को भारतीय गणतंत्र-दिवस के शुभ अवसर पर तीन सौ मजदूरों के साथ विद्यापीठ के भवन-निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया गया। साढ़े छः लाख की लागत से पूरी होनेवाली इस योजना के लिए चार लाख सरकार ने देना स्वीकार किया। इस प्रकार योजना का भार काफी हल्का

हो गया। बाकी पूर्ति की दृष्टि से दान-दाताओं से सम्पर्क होता रहा। निर्माण कार्य पूरी तीव्रता से चल रहा था। देखते ही देखते कागजों पर लकीरों में उकेरा गया स्वप्न प्रकृति निकेतन की धरती की गोद में आकार धारण करने लगा।

६ फरवरी १९६३ को प्रकृति निकेतन-ट्रस्ट की बैठक जैन हाउस धर्मचन्दजी के निवास स्थान पर हुई। श्री यू० एन० ढेबर की अध्यक्षता में हुई ट्रस्ट की बैठक में उपस्थित श्री श्रीमन्नारायण, श्री राधाकृष्णजी नेवटिया श्री आनन्दीलालजी गोयनका, श्री बजरंगलालजी लाठ और धर्मचन्दजी ने विद्यापीठ के निर्माण की अब तक की प्रगति का लेखा-जोखा दिया। कार्य की प्रगति के लिए सभी ने संतोष व्यक्त किया।

इस बैठक के पश्चात् ही भोजन का कार्यक्रम हुआ जिसमें राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री सुखाड़ियाजी, सर्वश्री रामकुमार भुवालका, सोहनलाल दुगड़ आदि अनेक सम्मानित व्यक्ति उपस्थित थे। सभी ने प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ की योजना के प्रति अपनी शुभ-कामना प्रकट की।

भारत सरकार ने इस योजना के लिए ३,४५,६५०)०० (तीन लाख पैंतालिस हजार छ सौ पचास) रुपये का अनुदान स्वीकार किया था। इस प्रकार विद्या निकेतन के मुख्य भवन के साथ ही प्रिन्सिपल के लिए निवास स्थान, अन्य काटेज आदि के निर्माण का कार्य साथ-साथ चलता रहा। धर्मचन्दजी स्वयं निर्माण-कार्य का निरीक्षण करते और मजदूरों को आवश्यक निर्देश देते रहे।

इधर कलकत्ता में प्राकृतिक-चिकित्सा-विद्यापीठ का कार्य द्रुतगति से चल ही रहा था इसी बीच धर्मचन्दजी ने अपने स्वर्गीय पिता श्री बैजनाथजी की पावन स्मृति में जयपुर में चल रहे प्राकृतिक चिकित्सा के लिए पक्का भवन बनवाने का निश्चय कर लिया। जयपुर के बापूनगर में चलने वाले इस चिकित्सालय का सारा कार्य कच्चे मकानों में ही चल रहा था जिससे रोगियों के रख-रखाव में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

२ मार्च १९६३ को राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया ने नए भवन का शिलान्यास किया। उक्त अवसर पर चिकित्सालय के मन्त्री श्री बद्रीप्रसाद स्वामी ने कहा—प्राकृतिक चिकित्सालयों का लक्ष्य रोगी की

चिकित्सा करना गौण है। मुख्य ध्येय लोगों को प्राकृतिक जीवन-पद्धति का ज्ञान देना है, ताकि वे निरोग रहने की कला सीख सकें। हमारा प्रयत्न है कि लोग स्वस्थ रहें और उन्हें किसी प्रकार की चिकित्सा न करानी पड़े।'

वहाँ धर्मचन्दजी ने बताया कि १९४६ में बापू के आशीर्वाद से मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी द्वारा कलकत्ता में प्राकृतिक चिकित्सालय खुला तबसे बराबर इस विषय में खोज और अनुसंधान का कार्य चल रहा है। १९५६ में कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेबर भाई के प्रयत्नों से प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् का गठन हुआ। उसके बाद अब श्री श्रीमन्नारायणजी इसके अध्यक्ष हैं। १९६३ में ही कलकत्ता में इस चिकित्सा का एक विद्यापीठ प्रारम्भ करने की योजना बनी है जिसका शिलान्यास श्री मोरारजी भाई करेंगे। आशा है शीघ्र ही वहां पढ़ाई भी शुरू हो जाएगी। आपने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा के विकास में हमारी मुख्य बाधा आज अच्छे चिकित्सकों का अभाव है। इस विद्यापीठ से यह कमी काफी हद तक दूर होगी। आपने बताया कि विदेशों में इस चिकित्सा पद्धति का काफी प्रचार है। हिटलर का कैंसर इसी पद्धति से ठीक हुआ था। आज जर्मनी मे पांच सौ चिकित्सा केन्द्र सेवा रत हैं। वहां के विश्वविद्यालय में भी इसका काफी महत्वपूर्ण सम्मान है।

मुख्यमन्त्री श्री सुखाडिया जी ने कहा कि इस देश में अभी सरकारी अधिकारियों व आम जनता में आयुर्वेद तथा प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के बारे में श्रद्धा नहीं बन पाई है। फिर भी आज का युग बापू के कार्यों और जीवन निष्ठाओं के काफी अनुकूल है। यदि उसका लाभ उठाकर हम उनके कार्यों को वैज्ञानिक आधार पर ठीक से संगठित नहीं कर पाये और लोगों में श्रद्धा नहीं जगा पाये तो वे टिकने वाले नहीं हैं। यदि हम चाहते हैं कि राजस्थान विश्वविद्यालय के मेडिकल के छात्र इस चिकित्सालय का लाभ उठाएँ तो हमें इस चिकित्सालय को लाभ उठाने के स्तर तक विकसित करना पड़ेगा। नहीं तो छात्रो पर इसका ऊल्टा ही असर पड़ सकता है। आज वक्त है और परिस्थियों की अनुकूलता भी है कि हम इस चिकित्सा-पद्धति को वैज्ञानिक रूप देकर इसको स्थायित्व दे दें।

जयपुर के प्राकृतिक चिकित्सालय में नया पक्का भवन बनवा कर धर्मचन्द जी ने अपने स्वर्गीय पिताजी की पावन स्मृति को अक्षुण्ण तो बनाया ही,

चिकित्सालय का स्तर भी ऊँचा उठाया। चिकित्सालय राजस्थान यूनिवर्सिटी के सामने ही है। यूनिवर्सिटी से जो चिकित्सक डाक्टर आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से पढ़कर निकलेंगे वे चिकित्सालय में चल रहे प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी प्रयोगों से भी लाभान्वित हो सकेंगे। जो लोग प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को अवैज्ञानिक मानते हैं वे मिट्टी, पानी, हवा और प्रकाश आदि की अपार शक्ति से परिचित हो सकेंगे। उन भौतिक तत्वों के अद्भुत रहस्यों को समझने की वैज्ञानिक दृष्टि का विकास होगा।

आज के युग में एलोपैथी आदि विकसित और वैज्ञानिक कही जाने वाली चिकित्सा-पद्धतियों ने रोगों के मूलकारण और बचाव के उपायों की विस्तृत खोज का महत्वपूर्ण कार्य किया है। किन्तु उनकी खर्चीली और जटिल प्रणाली ने मानव-समाज के मन में एक प्रकार की शंका और भय को भी जन्म दिया है जिससे साधारणतः आज के आदमी को लगता है कि इस युग में स्वस्थ रहना सम्भव नहीं है। किन्तु प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली की यह विशेषता है कि वह मनुष्य को आश्वस्त करते हुए इस विश्वास को जागृत करती है कि स्वस्थ रहना बहुत सहज और सरल है।

विनोबा जी का आगमन

महात्मा गांधी की तरह आचार्य विनोबा भावे भी प्राकृतिक जीवन-पद्धति के प्रबल समर्थक और प्रचारक रहे। प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ द्वारा चिकित्सकों को दी जाने वाली उपाधियो के सम्बन्ध में जब उनसे राय मांगी गई तो उन्होंने लिखा कि प्राकृतिक चिकित्सकों को अपने नाम के आगे सत्व-चिकित्सक लिखना चाहिए क्योंकि वे जनता की सच्ची सेवा करते हैं। प्रकृति निकेतन में निर्माणाधीन प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ के सम्बन्ध में चर्चा करते समय जब उनको बताया गया कि सागर जाते समय यह स्थान बीच में पड़ता है, तो उन्होंने कुछ समय निकाल कर उसे देखने की इच्छा प्रकट की।

बुधवार जो जब विनोबाजी व्रतचारी ग्राम से सागर के लिए रवाना हुए तो श्री राधाकृष्णजी नेवटिया उनके साथ पदयात्रा में शामिल हुए और उन्हें प्रकृति निकेतन ले आए। जब उनका दल प्रकृति निकेतन के पास पहुँचा तो वहाँ सर्वश्री धर्मचन्दजी सरावगी, बिहारी लालजी शाह, निर्मलकुमार सरावगी चन्द्रकुमार सरावगी, श्रीमती मोती देवी, इन्दुमती देवी सरावगी तथा श्रीमती लक्ष्मी

राजगढ़िया ने बिनोवाजी का स्वागत किया। धर्मचन्दजी ने हाथ कते सूत की माला उन्हें अर्पित की और श्रीमती मोती देवी ने कुंकुम से तिलक किया।

बिनोवाजी ने घूम-फिर कर विद्यापीठ के निर्माण-कार्य का अवलोकन किया। वहां चलने वाली पवन चक्की को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। अपने हाथों से उन्होंने एक स्वास्थ्य दायक नीबू के पौधे का रोपण भी किया। विद्यापीठ के प्राकृतिक वातावरण और कार्यकर्त्ताओं की निष्ठा देखकर वे काफी प्रसन्न हुए और उन्होंने इस कार्य की सफलता के लिए अपना आशीर्वाद और शुभकामना प्रकट की।

कोणशिला की स्थापना

२२ जून १९६३ को वित्तमन्त्री श्री मोरारजी भाई देसाई ने निर्माणाधीन विद्यापीठ के भवन में कोणशिला की स्थापना की। इस अवसर पर बोलते हुए श्री देसाई ने कहा—

"यद्यपि प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ के भवन का शिलान्यास हो चुका है पर कोणशिला का महत्व इसलिए है कि हम सब जाने की नींव भरी जा चुकी है और अब मूल निर्माण पृथ्वी के ऊपर होने लगा है। इस निर्माण के साथ-साथ वैचारिक निर्माण भी इस विद्यापीठ के हक में हो रहा है। आशा है कि देश की एक कमी को यह विद्यापीठ पूरी करेगा। जहाँ मेरा व्यक्तिगत अनुभव है मैं प्राकृतिक चिकित्सा पर अधिक विश्वास करता हूँ। यही नहीं पिछले १४ वर्षों से प्राकृतिक नियम के अनुसार चलने की कोशिश भी कर रहा हूँ। फिर भी किसी दूसरी चिकित्सा प्रणाली की आलोचना कर हमें इस पद्धति की वकालत नही करनी चाहिए। बल्कि ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जिससे लोग प्राकृतिक चिकित्सा की ओर आकर्षित हों। यदि अल्प-व्यय में रोग-मुक्त होने का उपाय बताया जाय तो निश्चित रूप से इसकी ओर जनता आकर्षित होगी।

"हाल ही में अमेरिका में तीन रोगियों की चिकित्सा होमियोपैथिक एलोपैथिक और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से की गई, जिसमें प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति का स्थान दूसरा रहा। आमतौर पर प्राकृतिक नियमों का पालन करने का अभ्यास सबको करना चाहिए, परन्तु शरीर को कांच की भांति भी नहीं बनाना

चाहिए। वैज्ञानिक तरीके से लोगों में प्राकृतिक जीवन के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करने का प्रयास करना चाहिए। जहां तक मेरा विश्वास है लोग यदि प्राकृतिक नियमों के अनुसार रहें तो बहुत दिनों तक जिन्दा रह सकते हैं।"

पश्चिम बंगाल के मुख्यमन्त्री श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन ने कहा कि चिकित्सा की कितनी भी नई प्रणालियाँ क्यों न आए फिर भी पुरानी प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली चलती रहेगी। हमें इसके प्रति विश्वास पैदा करने का प्रयास करते रहना चाहिए।

पश्चिम बंग के श्रममंत्री श्री विजय सिंहजी नाहर ने कहा कि जब वित्तमंत्री मोरारजी देसाई तथा मुख्यमंत्री पी० सी० सेन का आशीर्वाद प्राप्त है तो इस पद्धति की उन्नति अवश्य होगी। धर्मचन्दजी ने सभी को धन्यवाद दिया।

प्राकृतिक विद्यापीठ के निर्माण का निश्चय करने से पूर्व श्री धर्मचन्दजी ने देश मे चलने वाले अन्य प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रों जसीडीह, गोरखपुर, मुजफ्फरपुर, बम्बई, जयपुर, केरला आदि का भलीभाँति निरीक्षण कर लिया था। अतः विद्यापीठ के निर्माण के समय इसको सम्पूर्ण रूप से उपयोगी स्वावलम्बी और स्वास्थ्य प्रदायक बनाने का ध्यान रखा गया। चिकित्सा के साथ-साथ शिक्षण की भी व्यवस्था रखी गई। शुद्ध खान-पान की दृष्टि से विद्यापीठ के अन्तर्गत गोशाला, उद्यान, शाक-सब्जी उत्पादन की भी व्यवस्था की गई।

सभी प्रकार की संस्थाओं से रुचि

'ज्यों की त्यों धर दीन्हि चदरिया' वाला संतमन धर्मचन्दजी का नहीं रहा। उन्होंने अपनी जीवन-चदरिया को हर रंग में डुबोया, रंगा और परखा पर सारे रंगों को आत्मसात् करते हुए चदरिया पर कोई धब्बा नही लगने दिया। महात्मा सुकरात की इस सीख का वे बराबर ध्यान रखते हैं कि संसार में सम्मान-पूर्वक जीवन व्यतीत करने का सरल और निश्चित उपाय यही है कि मनुष्य वास्तव में जैसा हो वैसा ही अपने को व्यक्त करे। सब प्रकार के दुराव-छिपाव और भय से मुक्त खुली पुस्तक-सा दिखता-दिखाता जीवन, बच्चों जैसी सरलता, युवकों जैसा उत्साह और बुजुर्गों जैसे अनुभवसिद्ध होने के कारण ये सभी में सरलता से घुल-मिल जाते हैं। सशक्त शरीर और स्वस्थ मन से सभी रसों का पान करते हुए आनन्द की खोज और आनन्द का वितरण—यही इनका जीवन-दर्शन रहा है। इनका कहना है कि वृक्ष की तरह कीचड़ से भी

जीवन-रस खींच लो—पर स्वयं कीचड़ मत बनो। संयम-मय-भोग का यह संतुलित दर्शन धर्मचन्दजी के जीवन का एक अछूता आयाम है। सिद्धांतों और आदर्शों का लबादा ओढ़कर चलनेवाली कृत्रिमता के इस युग में इस प्रकार के बेबाक आदमी बिरले ही मिलते हैं।

अपनी सर्वतोमुखी वृत्ति के कारण नगर में चलने वाली सभी प्रकार की गतिविधियों से धर्मचन्दजी सदा जुड़े रहे। कभी व्यायामशाला, स्वीमिंग क्लब और फ्लाईंग क्लब द्वारा आयोजित साहसिक कारनामों में भाग लेते हैं, कभी महामूर्ख सम्मेलन में अपनी मूर्खताओं की अभिव्यक्ति करते हुए हास-परिहास करते हैं और कभी कलकत्ता नागरिक संघ के सांस्कृतिक आयोजनों में डफ और झांझ की ताल पर झूमते दिखाई देते हैं। कभी बंगीय साहित्य सम्मेलन और सुरक्षा सम्मेलन जैसे दायित्वपूर्ण कार्यों में सहभागी बनते हैं और कभी दिल्ली दुग्ध योजना जैन, रचनात्मक कार्यों के लिए बीकानेर के ग्राम ग्राम में अलख जगाते फिरते हैं। कहीं आग लगी हो, बाढ आ गई हो, दगा छिड़ गया हो, देश पर आक्रमण हुआ हो धर्मचन्दजी सदा आगे बढ़कर सेवा-कार्यों में भाग लेते रहे हैं। कार्यक्रमों के इन विविध सोपानों पर सीढ़ी दर सीढ़ी उर्ध्व-गमन करते हुए धर्मचन्दजी अपनी जीवन यात्रा का आठवां दशक पार कर शतक-पूर्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। अनवरत कर्ममय जीवन। कहीं थकान नहीं, कोई अवरोध नही बस एक ही उद्घोष—जबतक जीओ अपनी ऊर्जा का भरपूर उपयोग करते हुए, पूरी संजीदगी के साथ जीओ।

धर्मचन्दजी शारीरिक व्यायाम करने के निमित्त नियमित रूप से बड़ाबाजार युवक सभा में जाया करते। वहां ये प्रतिदिन एक घन्टे तक विभिन्न कसरत करते और वहा आने वाले अन्य युवकों को व्यायाम का महत्व समझाते। यह सुखद आश्चर्य की बात ही है कि आज अस्सी वर्ष की आयु मे भी वे बराबर व्यायाम शाला में जाते और व्यायाम करते हैं।

फरवरी १९६४ में बीकानेर महाराज श्री करनी सिंहजी, एम०पी० कलकत्ता पधारे। उसी समय बड़ाबाजार युवक सभा के अन्तर्गत इण्डोर राइफल रेंज का श्रीगणेश हुआ। राइफल सूटिंग-सेन्टर का उद्घाटन करते हुए महाराजा ने कहा कि गत् वर्ष हुए चीन के आक्रमण को दृष्टिगत् रखकर राइफल सूटिंग की ट्रेनिंग

की व्यवस्था देश के हर युवक के लिए की जानी चाहिए। इस दिशा में राज्य सरकारों को उचित कदम उठाना चाहिए क्योंकि यह युग की मांग है। साथ ही एक समाजवादी देश में हर व्यक्ति को समान अवसर प्राप्त हो सके इसकी भी जिम्मेवारी सरकार पर होती है।

इस समारोह की अध्यक्षता श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका ने की। श्री हिम्मतसिंहकाजी ने राइफल सूटिंग प्रशिक्षण की आवश्यकता समझाते हुए कहा कि हमें अपने देश का झण्डा ऊँचा रखना है।

सभा के मन्त्री श्री लक्ष्मण प्रसाद अग्रवाल तथा विशेष सदस्य श्री धर्मचन्दजी ने युवक सभा की गतिविधियों और व्यायाम की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला। सर्वश्री राधाकृष्णजी कानोड़िया, रामकुमारजी भुवालका, एच० एन० सरकार आदि प्रमुख व्यक्ति समारोह में उपस्थित थे।

धर्मचन्दजी राज्य सभा में

२६ मार्च १९६४ को पश्चिम बंगाल विधान सभा द्वारा राज्य सभा के लिए पांच सदस्यों का चुनाव होना था। विधान सभा मे दलगत स्थिति के अनुसार कांग्रेस के तोन उम्मीदवार विजयी हो सकते थे। फिर भी कांग्रेस ने अपने चार उम्मीदवार खड़े किए उनमें चौथे नम्बर पर धर्मचन्दजी का नाम था। चौथे उम्मीदवार का नाम कांग्रेस ने इस आशा से भरा था कि वक्त पर यदि विपक्ष के कुछ वोट भी मिल जाए तो कांग्रेस के चार उम्मोदवार सफल हो सकेंगे।

जब चुनाव हुआ तो धर्मचन्दजी के भाग्य ने जोर मारा। कांग्रेस के तीसरे उम्मीदवार श्री एस० पी० राय के तीन वोट रद्द हो गए और परिणामस्वरूप श्री धर्मचन्दजी चौथे नम्बर के उम्मीदवार होते हुए भी विजयी रहे।

धर्मचन्दजी की इस आकस्मिक विजय से जहां हिन्दी क्षेत्रों में प्रसन्नता प्रकट की गई वहीं बगला भाषी कांग्रेसियों में गहरा क्षोभ देखा गया। धर्मचन्दजी नहीं चाहते थे कि उनकी सदस्यता को लेकर कांग्रेस पार्टी में किसी प्रकार की अशांति का निर्माण हो। अतः उन्होंने एक वफादार सिपाही की तरह पश्चिम

बंगाल कांग्रेस के अध्यक्ष एवं अतुल्य घोष के कहने पर इस्तीफा भेज दिया, जिससे इनकी जगह वापिस एस० पी० राय को चुना जा सके।

धर्मचन्दजी के इस त्याग से विक्षुब्ध बंगलाभाषी कांग्रेसी बहुत प्रभावित हुए। इधर द्विजेन्द्रलाल सेनगुप्ता के इस्तीफा दे देने के कारण बंगाल विधान सभा की एक सीट का फिर से चुनाव होना था। कांग्रेस ने धर्मचन्दजी को इस सीट से खड़ा किया और वे निर्विरोध हो गए। श्री एस० पी० राय फिर राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हो गए। इस प्रकार कांग्रेस का एक संकट टल गया और धर्मचन्दजी एम० एल० सी० के रूप में पार्टी और देश का कार्य करते रहे। धर्मचन्दजी ने जिस त्यागमय भावना से पार्टी का काम किया उसके कारण सभी विधायकों के मन में धर्मचन्दजी के प्रति श्रद्धा और सम्मान की भावना का उदय हुआ।

श्री मोरारजी भाई देसाई ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यदि सभी कांग्रेसी कार्यकर्त्ता धर्मचन्दजी जैसे हो सकें तो पार्टी और देश का बड़ा उपकार हो। श्री अतुल्य घोष ने भी धर्मचन्दजी की त्यागमय भावना की भूरि-भूरि प्रशसा की। कानपुर से श्री गंगाधर जालान ने प्रशंसा का पत्र भेजा धर्मचन्दजी का ठिकाना नहीं जानता था। उसने लिफाफे पर लिखा— "धर्मचन्दजी सरावगी वे व्यक्ति हैं जिन्होने राज्य सभा की सीट दरवाजे तक आई उसे लौटा दिया, कलकत्ता।" पत्र धर्मचन्दजी को दूसरे दिन मिल गया। धर्मचन्द जब बंगाल विधानसभा सीट पर चुनकर गए तो राज्यसभा की सीट छोड़ने के कारण इनकी अलग छवि थी, लोग बराबर चर्चा किया करते थे।

स्वागत समारोह

राज्य सभा की सदस्यता से त्यागपत्र देकर फिर एम० एल० सी के चुनाव में निर्विरोध चुन लिए जाने से सारे नगर में हर्ष की लहर दौड़ गई। २१ अगस्त १९६४ को धर्मचन्दजी का स्वागत और सार्वजनिक अभिनन्दन हिन्दुस्तान क्लब की ओर से किया गया। सम्माननीय नागरिकों की उपस्थिति में समारोह के अध्यक्ष पद से बोलते हुए बंगाल के मुख्य मन्त्री श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन ने कहा— "श्री सरावगी एक क्रान्तिकारी व्यक्ति हैं। आज के युग में वे जिस प्रकार प्राकृतिक चिकित्सा पर अडिग विश्वास लेकर चल रहे हैं वह अत्यन्त साहसपूर्ण

कार्य है। इसमें अहिंसा से परिवर्तन की भावना सन्निहित है। कांग्रेस ने इन्हें विधान परिषद् में इसलिये निर्वाचित किया है ताकि भविष्य में देश और समाज इनकी कर्मठता से और भी लाभान्वित हो सके।

श्रममन्त्री श्री विजय सिंह नाहर ने कहा—श्री सरावगी मौन और हंसमुख रहकर बराबर समाज की सेवा करते रहे है। ऐसे व्यक्तियों को सेवा का अधिक अवसर देना हितकर है। श्री राधाकृष्ण जी नेवटिया ने कहा "प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना में अग्रणी बनकर श्री सरावगी ने एशिया में एक बड़े अभाव की पूर्ति की है। कुमार सी० एस० दुधोड़िया ने कहा—जन जीवन और सार्वजनिक संस्थाओं से आपका हमेशा निकट का सम्बन्ध रहा है। १९२९ से ही आप सुधारवादी रहे हैं।

श्री चन्द्रकुमार का विवाह

धर्मचन्दजी के द्वितीय पुत्र चि० चन्द्रकुमार का शुभ-विवाह चलचित्र जगत के प्रसिद्ध वितरक और निर्माता श्री ताराचन्दजी बड़जात्या की सुपुत्री राजश्री के साथ १९ जनवरी १९६५ को बम्बई में हुआ।

धर्मचन्दजी सदा से सामाजिक रीति-रिवाजों में युगानुकूल सुधार के पक्षपाती रहे हैं। अतः उन्होने वधू पक्ष के श्री बड़जात्याजी को अपनी पारिवारिक व्यवस्था और अपने आदर्शवादी विचारों से अवगत करा दिया। बड़जात्याजी जब कलकत्ते में रहते थे, तबसे उनसे सरावगीजी की जान-पहचान थी अतः लड़की को देखने के लिए उन्होंने चन्द्रकुमार को बम्बई भेज दिया। वहां से लौट कर उसने अपनी स्वीकृति दे दी। ब्याह पक्का हो गया। लेन-देन की बात चलने पर धर्मचन्दजी ने कहा हमारी कोई मांग नहीं है तथा विवाह बिना आडम्बर और सादगी से हो बारात में परिवार के केवल १५ व्यक्ति हवाई जहाज से गये।

बम्बई में विवाह के अवसर पर वर-वधू को आशीर्वाद देने के लिए २० जनवरी को एन० एस० सी० आई० के प्रांगण में स्वागत समारोह हुआ जिसमें सर्वश्री मोरारजी देसाई, बी० पी० दिवगी, एस० के० टी० देसाई, यू० एन० ढेबर आदि विशिष्ट व्यक्ति तथा सर्वश्री साहू श्रेयांसप्रसादजी, रतनचन्दजी चुन्नीलालजी, चन्दूलाल, कस्तूरचन्दजी आदि प्रतिष्ठित व्यवसायी और चलचित्र जगत के अनेक सम्माननीय व्यक्ति उपस्थित थे।

कलकत्ते में भी वर-वधू के सम्मान में हिन्दुस्तान क्लब में प्रीति सम्मेलन का आयोजन हुआ। मुख्यमन्त्री श्री पी० सी० सेन, सर्वश्री श्रममन्त्री विजयसिंह नाहर रामकुमारजी भुवालका एम० पी०, बिहारी भाई शाह, श्रीमती अग्रवाल 'विश्वमित्र' सम्पादक कृष्णचन्द्रजी अग्रवाल आदि ने वर-वधू को अपना स्नेहमय आशीर्वाद दिया।

दिगम्बर जैन समाज अग्रवालों और खण्डेलवालों में यह पहला वैवाहिक सम्बन्ध था। दोनों पक्षों के द्वारा उठाए गए इस सुधारवादी कदम की सभी ने प्रशंसा की।

प्राकृतिक चिकित्सा : विश्व-भ्रमण

प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय का भवन बनकर तैयार हो चुका था। कुछ विद्यार्थी प्रशिक्षण के लिए विद्यालय में प्रवेश भी लेने लगे। किन्तु धर्मचन्दजी को लगा कि विद्यार्थियों का विधिवत शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करने के लिए एक ओर जहां अनुभवी और निष्ठावान शिक्षकों की आवश्यकता है, वहीं देश-विदेश में चलने वाले प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रों का विस्तृत अध्ययन होना भी आवश्यक है। उच्च स्तर की शिक्षा के अभाव में डिग्री देना प्राकृतिक चिकित्सा के भविष्य को अन्धकार मे ढकेल देना होगा। अपने इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर धर्मचन्दजी ४ जुलाई १९६५ को विश्व-भ्रमण के लिए निकल पड़े।

धर्मचन्दजी का विश्वभ्रमण उद्देश्यपूर्ण था। अपने मिशन के पूर्त्ति के लिए आवश्यक ज्ञानार्जन करना ही इस यात्रा का लक्ष्य रहा। दो मास की लम्बी यात्रा में धर्मचन्दजी ने जर्मन, इङ्गलैण्ड, अमेरिका, और जापान आदि देशों का भ्रमण किया। वहां चलने वाले प्रा० चिकित्सा केन्द्रों को निकट से देखा। विदेशों में प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के विकास की सम्भावनाओं और उनके परिणामों का आकलन किया। अमेरिका में वे अमेरिका के प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् के अध्यक्ष डा० जे० एम० गेहमन से मिले। दोनों में प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के विषय में सारगर्भित वार्त्तालाप हुआ। डा० गेहमन धर्मचन्दजी के सुदर्शन स्वस्थ व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति का गहन ज्ञान और आत्म विश्वास देखकर डा० गेहमन की धर्मचन्दजी के साथ पूरी अंतरगता हो गई। इसी प्रकार हैरिस बर्ग में प्रेसकांफ्रेन्स में धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए जो वक्तव्य दिया उससे वहां

के नागरिक बहुत उत्साहित हुए। डा० गेहमन से हुई बातचीत और प्रेस कांफ्रेंस में दिए गए वक्तव्य से प्रभावित होकर काल टर्नर ने अमेरिकी समाचार पत्र पेट्रीआट, ७-८-६५ में जो लेख लिखा उसका भावार्थ इस प्रकार है—

"श्री धर्मचन्द सरावगी, कलकत्ता निवासी भारतीय ने प्राकृतिक चिकित्सा का विश्लेषण करते हुए कहा—आप जो भोजन करते हैं वही आप हैं।

"श्री सरावगी देखने से सज्जन और तीव्र-बुद्धि सम्पन्न व्यक्ति मालूम होते हैं, उनका रंग ताम्रवर्णी है और उनका व्यक्तित्व मधुर है। प्रसिद्ध अमेरिकी प्राकृतिक चिकित्सक डाक्टर जैसे एम० गेहमन से भेंट करने के लिए वे इस डनकेनन शहर में आए हुए हैं।

"जब इन दोनों ही व्यक्तियों ने आपस में प्रेमपूर्वक हाथ मिलाया तो दोनों में ही स्वास्थ्य का सौंदर्य परिलक्षित हो रहा था। श्री सरावगी की आयु ६० वर्ष होने ही वाली है।

"आमिष भोजन को दोनों ही अस्पर्श्य मानते हैं। दस फुट लम्बी लाठी से भी उसे वे नही छू सकते। विशेष शाकाहारी श्री सरावगी ने कहा। विशुद्ध फलाहारी डाक्टर गेहमन ने प्रतिध्वनि की।

"श्री सरावगी भारत में विधान सभा के सदस्य हैं। वे लोहा और इस्पात उद्योग के व्यापारी हैं। जूते के फीतों के निर्माता हैं। हवाई जहाज चालक हैं और प्राकृतिक चिकित्सा में स्नातकस्तरीय शिक्षा देने वाले एक कालेज के प्रमुख-सदस्य हैं।

"प्राकृतिक चिकित्सा के लिए श्री सरावगी का मत है—जो आप खाते हैं, उसीसे आपके शरीर का निर्माण होता है। उदाहरण के लिए गर्भवती स्त्री को लीजिए। क्या उसके शरीर के भीतर शिशु का जीवन और पालन-पोषण नहीं होता है? अतएव यदि प्रकृति पूरे शरीर का निर्माण कर सकती है तो प्रकृति शरीर को निरोग भी कर सकती है। मुख्य बात है भोजन-जल। दवा की कोई आवश्यकता नहीं है। केवल समुचित पदार्थों को ही भोजन में ले—चावल गेहूं, मक्का अनाज, लेट्‌स और सभी तरह की तरकारियां।

"पच्चीस वर्ष पूर्व, जब मैं प्राकृतिक चिकित्सा के सम्पर्क में आया तो उस समय प्राय: ५० डालर (लगभग २५०) रुपये प्रति महीने डाक्टरों को उनकी फीस के रूप में देता था। लेकिन प्राकृतिक चिकित्सा का मार्ग ग्रहण करने पर, तब से आज तक एक पैसा भी डाक्टरों को फीस के रूप में मैंने नहीं दिया।

"श्री सरावगी प्रतिदिन नियमपूर्वक व्यायाम और यौगिक आसन करते हैं। उनके अनुसार सही ढंग से श्वांस लेने से रक्त को शुद्ध करता है और त्वचा को कान्तिमान बनाता है।

"सन् १९४७ मे जब वे न्यूयार्क में आए थे तब काफी समय तक बर्नर मेकफेडन के साथ रहे। डाक्टर मेकफेडन के विषय में उन्होंने कहा—वे एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे।

"डा० गेहमन जो जर्मन जाति के है, और पेनसिलवानिया के निवासी है, अनेक वर्षो तक डा० बर्नर मैकफेडन के साथ कार्य कर चुके हैं। डा० गेहमन ने डा० मेकफेडन के साथ हजारों मील की पदयात्रा की है।

"श्री सरावगी अमेरिका की सम्पन्नता से काफी प्रभावित हुए है। न्यूयार्क के विषय में चर्चा करते ही वे समर्थन में मुस्कुराने लगते है और सिर हिलाते हैं। यहाँ पर प्रत्येक व्यक्ति काफी सम्पन्न है—पूरी तरह सम्पन्न।

"अमेरिका की अधिकांश जनता का झुकाव गोलियों (नीद लाने वाली आदि) की ओर देखकर श्री सरावगी ने दु:ख प्रकट किया और कहा—यदि वे प्राकृतिक रास्ता अपनाएँ और अपने भोजन का ध्यान रखें तो किसी भी तरह की गोली लेने की जरूरत न पड़े।

जर्मनी और अमेरिका में प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति बढ़ती हुई लोकप्रियता देखकर श्री धर्मचन्दजी बहुत प्रसन्न हुए। प्राकृतिक चिकित्सा के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आशान्वित होकर धर्मचन्दजी १२ सितम्बर को वापिस स्वदेश लौट आए। दमदम हवाई अड्डे पर बड़ी संख्या में स्वजनों और मित्रों ने उपस्थित होकर धर्मचन्दजी का स्वागत किया।

धर्मचन्दजी विदेशों में चलने वाले प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रों का निरीक्षण कर वापिस स्वदेश लौट आए और अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के आगामी ८-९ जनवरी को होने वाले वार्षिक अधिवेशन की तैयारी में लग गए। भारत वर्ष के कोने-कोने से अनेक सुप्रसिद्ध विचारक और सत्व-चिकित्सक इस अधिवेशन में भाग लेने के लिए अपनी स्वीकृति भेज चुके थे। अधिवेशन के अवसर पर एक बृहद् प्रदर्शिनी का भी आयोजन किया जाना था जिसके लिए सामग्री जुटाने का प्रयत्न जोर-शोर से किया जा रहा था।

८ जनवरी १९६६ को अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् का आठवां वार्षिक अधिवेशन भूतपूर्व वित्तमन्त्री श्री मोरारजी देसाई के सभापतित्व में कलकत्ता महानगर में प्रारम्भ हुआ। अधिवेशन का उद्‌घाटन किया पश्चिम बंगाल सरकार की स्वास्थ्य मन्त्रिणी श्रीमती पूर्वी मुखर्जी ने। श्रममन्त्री श्री विजय सिंह नाहर ने अधिवेशन की स्वागत समिति के अध्यक्ष के रूप में आगत अतिथियों और प्रतिनिधियों का भाव-भीना स्वागत किया। यह अधिवेशन अपनेआप में अभूतपूर्व था। भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तों से आए २०० प्रतिनिधियों ने उत्साह पूर्वक इस अधिवेशन में भाग लिया। कलकत्ता महानगर के करीब ७०० जिज्ञासु नागरिक भी इस अधिवेशन में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से सम्बन्धित प्रदर्शनी लगाई गई। जिसमें योगासन, व्यायाम तथा स्वास्थ्य-वर्द्धक खान-पान से सम्बन्धित चित्र और सूचना-पट्ट लगाए गए। हवा-पानी, मिट्टी, प्रकाश और वनस्पति में निहित अद्‌भुत रहस्यों का उद्‌घाटन किया गया। हजारों लोगों ने इस प्रदर्शनी को उत्सुकता से देखा और प्राकृतिक जीवन पद्धति के महत्व को समझने का प्रयास किया।

इसी अधिवेशन में कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किए गए। सरकार से अनुरोध किया गया कि टीका लगाने की योजना को अनिवार्य न बनाया जाए। अन्य चिकित्सा पद्धतियों की तरह प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को भी सरकारी मान्यता प्रदान की जाए और उसके प्रचार-प्रसार में सरकार द्वारा सहायता की जाए। अधिवेशन के मंच से जनता को सम्बोधित करते हुए श्री मोरारजी भाई ने कहा कि यद्यपि अन्य चिकित्सा पद्धतियों से भी जनता का उपकार हो रहा है लेकिन मैं व्यक्तिगत तौर पर प्राकृतिक चिकित्सा का पक्षधर हूं। यह पद्धति आयुर्वेद चिकित्सा की तरह ही सीधी प्रकृति से सम्बन्ध रखती है। कम खर्चीला

होने के कारण यह इस गरीब देश के लिए अधिक उपयोगी भी है। किन्तु इसके लिए प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति निष्ठा होना आवश्यक है, अन्यथा इसका प्रभावकारी परिणाम नहीं हो सकेगा। महात्मा गांधी जीवन भर प्राकृतिक चिकित्सा की वकालत करते रहे। हमें इस कार्य के लिए जन-मानस को भावात्मक दृष्टि से समृद्ध करना होगा। श्रीमती पूर्बी मुखर्जी ने कहा कि सरकार इस पद्धति को आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली के अन्तर्गत ही मान्यता देने पर विचार कर रही है। मैं इस आशय का प्रस्ताव आयुर्वेदिक कौन्सिल मे रखूंगी।

श्रममन्त्री श्री विजय सिंह नाहर ने बताया कि सरकार ने तीसरी योजना के अन्तर्गत २५ लाख रुपए प्राकृतिक चिकित्सा के लिए नियोजित किए हैं। नेपाल में भारतीय राजदूत श्रीमन्नारायण ने कहा कि कलकत्ता में प्रारम्भ होने वाले प्राकृतिक चिकित्सा विद्यालय द्वारा प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण कार्य भी हो सकेगा। जिससे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के प्रचार में सहायता होगी।

श्री धर्मचन्दजी ने परिषद के मन्त्री पद से परिषद की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय की योजना को चारों ओर से आशातीत सहयोग मिल रहा था। परन्तु धर्मचन्दजी इस पक्ष में नही थे कि त्रुटि हीन उच्च स्तरीय शिक्षा के अभाव में किसी को सत्व-चिकित्सक का प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाए। देश-विदेशों में घूमकर उन्होंने जो अनुभव प्राप्त किया था उसके कारण जैसे-तैसे विद्यालय द्वारा शिक्षा-सत्र चलाते जाना वे उचित नहीं समझते थे। अत: वे चुस्त-दुरुस्त पाठ्य-क्रम और योग्यतम शिक्षकों की व्यवस्था के लिए आग्रह करते रहे। उनके साथी आधी अधूरी जैसी भी व्यवस्था हो प्रशिक्षण कार्य को चलाते रहने के पक्ष में थे। धर्मचन्दजी अपने मन की बात साथियों के आगे रखते अवश्य पर दुराग्रही वे कभी नही रहे। वे सदा यह मानकर चलते हैं—

'अपने मन की हो जाए तो अच्छा है,
नहीं हो जाए तो और भी अच्छा है।"

विचारों का यह अन्तर्द्वन्द्व दो वर्षों तक चलता रहा। धीरे-धीरे सबको धर्मचन्दजी के विचार की सार्थकता का भान होने लगा। दूसरी विकसित चिकित्सा-पद्धतियों के समकक्ष वैज्ञानिक और अनुभूत प्रशिक्षण के अभाव में इसे

सरकारी मान्यता प्राप्त होना सम्भव नहीं था, और बिना सरकारी मान्यता के सत्व-चिकित्सकों का कोई भविष्य नहीं था। अन्ततः प्रशिक्षण कार्य को पुनर्विचार की दृष्टि से स्थगित कर देना पड़ा। कठिन श्रम, निष्ठा और त्याग द्वारा प्रारम्भ किया गया कार्य बन्द हो जाने से धर्मचन्दजी की चिन्ता बढ़ने लगी। वे संस्था के सदुपयोग के लिए बराबर प्रयत्न करते रहे।

ऊर्जा का अजस्र स्रोत

'साठा पर पाठा' की कहावत काफी प्रचलित है। किसी जमाने में यह सत्य भी रहा होगा। किन्तु आज के कृत्रिमताओं और वैकल्पिकताओं से भरे युग में कितने ऐसे सौभाग्यशाली लोग होंगे जो साठ की उमर में भी युवकोचित, स्वस्थ और कर्ममय जीवन जी सकने में समर्थ होंगे। इस दृष्टि से धर्मचन्दजी का जीवन नई पीढ़ी के लिए एक प्रेरणास्पद आदर्श ही कहा जाएगा। अपनी साठोत्तरी आयु में भी वे आज पूर्ण स्वस्थ और सक्रिय जीवन का आनन्द उठाते हुए सेवाकार्यों में व्यस्त हैं। प्राकृतिक जीवन पद्धति को अपना कर मनुष्य सौ वर्षों तक ही नहीं उससे अधिक भी अपनी कार्यक्षमता को बनाए रख सकता है—ऐसा धर्मचन्दजी का अटूट विश्वास है। सात्विक खानपान, नियमित दिनचर्या और अभय जीवन की कुंजी है। वस्तुतः धर्मचन्दजी के जीने का अपना सूफियाना अन्दाज है। सारी दुनियादारी का निर्वाह करते हुए भी—इस प्रकार की अलमस्ती और निर्भयता के कारण संघर्षमय और समस्या-सकुल जीवन भी इनके लिए सहज और सरल बना रहता है। निराशा, थकान और पराजय की भावना को वह अपने पास नहीं फटकने देते। आज भी नियमित रूप से व्यायामशाला जाकर कसरत करना उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग बना हुआ है।

धर्मचन्दजी के ऐसे कर्मठ और तेजस्वी जीवन से प्रेरित होकर उनकी षष्ठि-पूर्ति पर विभिन्न संस्थाओं और प्रतिष्ठानों द्वारा अभिनन्दन-समारोह आयोजित किए गए। पत्र-पत्रिकाओं ने उनका सचित्र और सक्षिप्त जीवन-परिचय प्रकाशित कर उनके दीर्घ जीवन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रकट की। छठा दशक पार कर आठवें दशक के प्रारम्भ तक धर्मचन्दजी की कर्मणा शक्ति का प्रवाह अजस्र रूप से प्रवाहित होता रहा। विविध कार्यक्रमों की एक लम्बी शृंखला है, जो धर्मचन्दजी के उदार सहयोग से उपकृत होती चली गई है।

१९६७ में धर्मचन्दजी कांग्रेस के जिला-चुनाव-अधिकारी रहे। इन्हीं की देखरेख में बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी का चुनाव हुआ।

जून, १९६८ में धर्मचन्दजी ने मित्र परिषद् भवन में स्वास्थ्य तथा नैतिक प्रचार प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

मार्च १९६९ में धर्मचन्दजी की अध्यक्षता में श्री जैन विद्यालय, सुकियस लेन, में महावीर जयंती मनाई गई।

जुलाई, १९६९ में अहिंसा प्रचार समिति हॉल में 'भारत केशरी' मास्टर चन्दगीराम का स्वागत धर्मचन्दजी की अध्यक्षता में किया गया।

यद्यपि सन् १९७० तक आते-आते बड़ाबाजार की राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना पर निराशा की धुंध छाने लगी थी, पर धर्मचन्दजी पूरे उत्साह से सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते रहे।

हृदय में आशा और विश्वास की ज्योति जलाए इन्होंने अपने कर्ममय जीवन को सदा गतिशील बनाए रखा।

२६ नवम्बर १९७३ को धर्मचन्दजी अपने ट्रस्ट द्वारा बड़ाबाजार युवक सभा को १५५५५) रु० का अवदान देकर वहाँ अखाड़े का निर्माण कराया जिसका उद्घाटन हुआ। रामकुमारजी भुवालका, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, कालीकृष्णजी रोहतगी, हरिरामजी जालुका, मदनलालजी भावसिंहका, कांताप्रसादजी चंगोईवाला, गुलाबचन्दजी चौबे आदि पदाधिकारियों और आजीवन सदस्यो ने उक्त अवसर पर उपस्थित होकर धर्मचन्दजी के उत्साह की प्रशंसा की।

२२ दिसम्बर, १९७४ को दिगम्बर जैन नया मन्दिर समिति के पदाधिकारियों का चुनाव धर्मचन्दजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जुलाई १९७६ में संत बालब्रह्मचारी श्री प्रद्युम्नकुमारजी जैन के तत्वावधान में धर्म-शिक्षण-शिविर लगाया गया। इस शिविर मे धर्मचन्दजी ने प्रधान वक्ता के नाते शिक्षार्थियों को सम्बोधित किया। यह कौन जानता था कि अपनी युवावस्था में विदेश-भ्रमण का दुस्साहस कर सामाजिक बहिष्कार का प्रकोप झेलने वाले धर्मचन्दजी एक दिन जैन-समाज के धार्मिक अनुष्ठानों के प्रवक्ता भी बन

सकेंगे। बहिष्कार से पुरस्कार तक की इस लम्बी यात्रा में धर्मचन्दजी को जाने कितनी तल-अतल घाटियों से गुजरना पड़ा होगा। बिना प्रखर आत्म-विश्वास और कर्म निष्ठा के संघर्षों में से विजयी होकर निकलना सम्भव नहीं था।

हिन्दी-सम्मेलन में

१८ सितम्बर, १९७६ को केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् शाखा, कोल इण्डिया लि० कलकत्ता, द्वारा हिन्दी-दिवस मनाया गया। धर्मचन्दजी इस आयोजन के प्रधान अतिथि थे। शाखा के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ सराफ ने अपने वक्तव्य मे हिन्दी के पुराने इतिहास पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय भाषा में ही पठन-पाठन और सरकारी कामकाज करने पर जोर दिया। श्री पी० के० गांगुली ने हिन्दी में अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि हम एक हैं, हमारी भाषा एक है जो हमारे राष्ट्र की भाषा है। श्री आर० के० कपूर ने फादर कामिल बुल्के की हिन्दी सेवाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे सभी सरलता से ग्रहण कर सकते हैं। श्री धर्मचन्दजी ने हिन्दी की उपयोगिता, व्यापकता और राष्ट्र के विकास में उसकी अनिवार्यता पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए हिन्दी के प्रचार-प्रसार की पुरजोर वकालत की। सम्मेलन में श्री एन० एन० मुखर्जी, श्री शिवकुमार व्यास, श्री हरदेव शर्मा, श्री रामकुबेर सिंह आदि वक्ताओं ने हिन्दी के बारे में अपने सारगर्भित विचार रखे। सम्मेलन काफी प्रेरणादायक रहा।

हिन्दी के प्रति धर्मचन्दजी के हृदय में गहरा प्रेम है। जब कारपोरेशन के काउन्सिलर चुने गए तो इन्होंने पत्रकारों और अभिनन्दन कर्त्ताओ को सम्बोधित करते हुए जो सर्वप्रथम बात कही वह यही थी कि मैं हिन्दी के प्रचार के लिए काम करूँगा। हिन्दी के बारे में धर्मचन्दजी पत्र-पत्रिकाओ मे बराबर निबन्ध लिखा करते थे। इन निबन्धो में हास्य-व्यंग्य और विचारों का अद्भुत समन्वय रहता था। उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द इनके निबन्धों को अपने पत्र 'हंस' में बड़े प्रेम से छापा करते थे आज आजादी के अड़तीस वर्षों बाद भी हिन्दी के बारे में लिखे गए इनके निबन्ध अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए हैं।

नवम्बर १९७७ में अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन तथा कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वावधान में आयोजित प्रीति सम्मेलन में प्रधान वक्ता के

रूप में धर्मचन्दजी ने व्यायाम और प्राकृतिक चिकित्सा की उपयोगिता पर विस्तृत प्रकाश डाला। इस परम्परागत प्रीति सम्मेलन में कलकत्ता महानगर के प्रायः सभी उद्योग-पति, समाजिक कार्यकर्त्ता, साहित्यकार और पत्रकार भाग लेते हे। धर्मचन्दजी ने 'स्वास्थ्य ही धन है' इस प्रसिद्ध कहावत का उल्लेख करते हुए बताया कि 'हम में से अधिकांश लोग स्वास्थ्य का महत्व समझते हुए भी अपने स्वास्थ्य की देखभाल के प्रति लापरवाही और गैरजिम्मेवारी का ही परिचय देते हैं। परिणाम यह होता है कि मानसिक रूप से परिपक्वता आते-आते बुढ़ापा भी सवार होने लगता है। हम अपनी ऊर्जा और ज्ञान का उपयोग कर सकने में असमर्थ अनुभव करने लगते है। प्राय: लोग कहा करते हैं कि चालीस वर्ष की उम्र के बाद व्यायाम करने से हृदय पर जोर पड़ता है, इसलिए इस उम्र में व्यायाम नहीं करना चाहिए। किन्तु विदेशों मे अस्सी की उम्र पार कर जाने वाले व्यक्ति भी नियमित व्यायाम करते हैं और अपनी कार्य-क्षमता को बनाए रखते हे। बड़ाबाजार व्यायामशाला में अनेक लोग पचपन वर्ष की उम्र में भी व्यायाम करने आते है। इससे उनका शरीर गठीला और स्वस्थ बना रहता है।

"श्री मोरारजी देसाई और आदरणीय श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका का उल्लेख करते हुए धर्मचन्दजी ने कहा कि आज अस्सी वर्ष पार करके भी ये लोग पूर्ण स्वस्थ रहकर कार्य कर रहे है। हमे इनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए। विशेषकर जो सामाजिक कार्यकर्त्ता है उनको तो स्वस्थ रहने को सावधानी रखनी ही चाहिए। अन्यथा लोगों की सेवा करने के बदले उन्हें खुद ही दूसरों से सेवा करवाने की नौबत आ जाएगी।

"कलकत्ते में आज बड़े-बड़े भवन और फ्लैट प्रतिदिन बन रहे है। इनमें निवास करने वाले बच्चे अनियमित रहन-सहन और अनियन्त्रित खान-पान की वजह से बीमार रहते है। ये मकान-मालिक जिस प्रकार आधुनिक सुविधा की दृष्टि से स्नानघर, पैखाना, रसोईघर आदि बनाना आवश्यक समझते हैं, उसी प्रकार यदि भवन-निर्माण करते समय एक अच्छा-सा व्यायाम घर भी बनाना प्रारम्भ कर दें तो समाज का बहुत उपकार हो। इससे बच्चों में बचपन से ही व्यायाम के प्रति दिलचस्पी पैदा होगी। वे सुसंस्कारी और हृष्ट-पुष्ट रह सकेंगे। इससे पूरे

देश का भविष्य तेजस्वी और बलिष्ठ बन सकेगा। "हमारे यहां पहला सुख निरोगी काया को ही माना गया है। स्वास्थ्य के अभाव में बाकी के सारे सांसारिक सुख निरर्थक हो जाते हैं। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे हमें ऐसे युवकों की आवश्यकता है जिनका शरीर फौलाद और नसें इस्पात की तरह मजबूत हों। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। हमें अपने समाज के स्वास्थ्य-धन को बचाए रखने के लिए प्राकृतिक जीवन-पद्धति को अपना कर जीने का अभ्यस्त होना चाहिए।"

होली-दीपावली होने वाले इस प्रीति सम्मेलन में प्रायः देश की राजनैतिक सामाजिक और औद्योगिक परिस्थितियो की ही चर्चा विशेष रूप से हुआ करती है। धर्मचन्दजी ने व्यायाम और प्राकृतिक जीवन-पद्धति की चर्चा कर इस सम्मेलन की परम्परा को एक नया मोड़ दिया। उपस्थित सुयोग्य नागरिकों ने स्वास्थ्य की महत्ता को समझा और धर्मचन्दजी द्वारा रखे गए उपयोगी विचारों और सुझावों को काफी दिलचस्पी से सुना। यह धर्मचन्दजी की अपने मिशन के प्रति निष्ठा और समर्पण-भावना का ही प्रभाव था जिससे लोगों में व्यायाम और प्राकृतिक जीवन पद्धति के प्रति उत्सुकता और उत्साह जागृत हो सका।

चमत्कार को नमस्कार

फरवरी, १९७८ में भारत सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शारीरिक क्षमता कार्यक्रम के अन्तर्गत होने वाली प्रतियोगिता मे ७२ वर्षीय ग्रुप के साथ भाग लिया और तीन स्टार प्राप्त किए। उनकी शारीरिक क्षमता से प्रसन्न होकर शिक्षा-विभाग के निरीक्षक श्री प्रतापचन्द्र 'चन्दर' ने धर्मचन्दजी को एक रौप्य-पदक प्रदान कर विशेष रूप से सम्मानित किया। वास्तव में जादू वह है जो सिर पर चढ़कर बोले। धर्मचन्दजी को यह सम्मान किसी तिकड़म या किसी की अनुकम्पा स्वरूप प्राप्त नहीं हुआ। बाकायदा प्रतियोगिता में भाग लेकर अपनी शारीरिक क्षमता को सिद्ध किया—

लोग पत्थर भी नहीं फेंकते हैं बिना मतलब के,
कुछ तो देखा होगा यारों ने इस दीवाने में।

सचमुच निरंतर मिलने वाली चमत्कारिक-सिद्धियों ने धर्मचन्दजी की जीवन-यात्रा को बेहद दिलचस्प और अनुकरणीय बना दिया है।

प्राकृतिक-चिकित्सा-महाविद्यालय का काय जिस उत्साह से प्रारम्भ हुआ था वह कई वर्ष के अनुभव के आधार पर बन्द कर दिया गया था। सरकारी मान्यता के अभाव में प्रशिक्षण और डिग्री प्रदान करने के कार्य की कोई उपयोगिता नहीं थी। श्री मोरारजी देसाई और श्री ढेबर भाई के अथक प्रयास के बावजूद सरकारी मान्यता प्राप्त करने में सफलता नहीं मिल सकी। व्यावहारिक कठिनाई के कारण विद्यालय करीब सात-आठ वर्षों तक बन्द पड़ा रहा।

सन् १९८१ में प्रकृति निकेतन के ट्रस्टी श्री निर्मल कुमार सरावगी ने प्राकृतिक चिकित्सा विद्यालय को नए रूप में प्रारम्भ करने की योजना बनाई। बड़े उत्साह और लगन के साथ इन्होने इसके लिए तीन लाख रुपये इकट्ठे किए। लेकिन प्रतिष्ठान के सचालन के लिए उपयुक्त और निष्ठावान व्यक्ति की आवश्यकता थी। इस जिम्मेवारी को सम्भालने के लिए कोई प्रस्तुत नहीं हो रहा था। इसी समय श्री विमल प्रसादजी जैन बंगलोर के प्राकृतिक चिकित्सालय से अपना इलाज कराकर लौटे। वे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से इतने प्रभावित थे कि उन्होने इस पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए काम करना अपने जीवन का उद्देश्य ही बना लिया। बंगलोर की तरह ही उत्तर भारत में भी एक व्यवस्थित प्राकृतिक चिकित्सालय होना चाहिए ऐसी उनकी प्रबल इच्छा हुई। उनका मन पाश्र्वनाथजी में भवन बनाने का था। इसी बीच धर्मचन्दजी के साथ इस विषय में विचार-विमर्श हुआ और कलकत्ता में स्थित प्राकृतिक चिकित्सालय भवन को ही फिर से प्रारम्भ करने की बात को इन्होंने स्वीकार कर लिया। इस कार्य को पुनः आरम्भ करने के लिए इन्होंने तीन लाख रुपये अनुदान के रूप में देने की स्वीकृति दी। किन्तु अपरिहार्य व्यक्तिगत और व्यापारगत कारणों से स्वयं विमलप्रसादजी इस कार्य के लिए समय देने में असमर्थ रहे।

पैसा तो मिला पर कार्यकर्त्ता की समस्या अभी भी बनी हुई थी। निर्मल कुमारजी द्वारा किए जा रहे प्रयास से उत्साहित होकर पुराने ट्रस्टी श्री आनन्दी-लालजी गोयनका ने १९८२ में प्राकृतिक निकेतन को नए रूप से संचालित करने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली। उन्होंने १५ महीने अथक परिश्रम करके

अठारह लाख रुपये और इकट्ठे किए। इस प्रकार चौबीस लाख रुपए लगाकर इस संस्था को नया रूप प्रदान किया गया। कार्य के अनुकूल ही इसका नया नामकरण 'नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इंस्टीच्यूट' रखा गया।

८ जनवरी, १९८४ को प्रसिद्ध उद्योगपति श्री लक्ष्मीनिवास जी बिड़ला ने एक विशाल समारोह में प्रदीप ज्योति जला कर इस प्रतिष्ठान का उद्घाटन किया। समारोह में उपस्थित श्री रामकृष्ण मिशन के स्वामी लोकेश्वरानन्दजी तथा प्रसिद्ध राजनेता श्री विजय सिंहजी नाहर ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित किया तथा प्रतिष्ठान की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रकट की। इस प्रकार धर्मचन्दजी का जो स्वप्न अधूरा रह गया था वह नई उमंग और नई सज-धज के साथ साकार हो गया।

वर्त्तमान में प्रकृति निकेतन का कार्य बहुत ही सुचारू और सन्तोषप्रद तरीके से चल रहा है। स्वयं धर्मचन्दजी और आनन्दीलालजी इसकी व्यवस्था और देख-रेख में लगे रहते हैं। इस समय इस चिकित्सा केन्द्र में दो बड़ी कोठियाँ, जिनमे चार चार रोगी, दो छोटी कोठियाँ जिनमें दो-दो रोगी रह सकते हैं। साथ ही बारह केबिन ऐसे हैं जिनमे दो-दो रोगी रहते हैं। इसके अतिरिक्त एक जनरल वार्ड है जिसमे पन्द्रह पुरुष और पन्द्रह स्त्रियों के रहने की व्यवस्था है। रोगियों को आसन, प्राणायाम तो सिखाया ही जाता है, साथ ही फिजियोथेरापी के बिजली चालित यन्त्र, स्टीम बाथ, सोना बाथ आदि की भी व्यवस्था है। प्राकृतिक स्वच्छ वातावरण, सात्विक और शुद्ध-आहार तथा हवा-पानी और मिट्टी की सहायता से होनेवाले उपचार से रोगी शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ कर लेते हैं। प्रायः रोगियों के सभी स्थान भरे रहते हैं। अपनी सुव्यवस्था और सफल चिकित्सा के कारण यह चिकित्सा केन्द्र उत्तर भारत का लोकप्रिय प्रतिष्ठान बन गया है। □

सीखने की वृत्ति

धर्मचन्दजी के जीवन में सफलताओं का राज इस बात में निहित है कि वे अपने शैशवकाल से ही जीवन को सजाने-सँवारने और उसके विकास के लिए बिना साधन के आगे घुटने टेके साध्य की और निरन्तर बढ़ते रहना। जब वे कुल दस वर्ष के थे और जब हमारे देश में बच्चों की छोटी साइकिल का प्रचलन नहीं था तब उन्होंने साइकिल चलाना सीखा और वह भी नीचे और ऊपर के फ्रेम-रोड के बीच में पैर डाल कर, पायडल पर पैर रख कर चलाते हुए क्योंकि वे उस समय कद के छोटे थे और साइकिल की गद्दी की ऊँचाई अधिक थी। इसी के साथ सीखने के क्रम में दूसरा क्रम है गंगा में तैरना सीखना। उनके तैरना सीखने से एक मार्मिक घटना जुड़ी हुई है। वह है इसके पहले उनकी माताश्री के एक ही भाई थे जो तालाब में डूब कर प्राण त्याग चुके थे। माँ का हृदय तो माँ का ही हृदय होता है वे आशंका में डूबी तब तक भोजन लिए बैठी रहती थीं जब तक धर्मा घर लौट कर नहीं आ जाता था। भोजन भी वे उसके आने के बाद ही करती थीं। मोटर चलाना भी उन्होंने सीखा—उस समय जब मोटर घर में आ गई थी और उसका ड्राइवर कोई क्रिश्चियन था। उसे गुरु की गरिमा प्रदान करते हुए विनम्रता से खुशामद करते हुए। मोटर चलाना ही नही सीखा बल्कि उसका मेंकनिज्म भी ये सीख गए। मजे की बात यह कि उस समय मोटर में सेल्फ स्टार्टर था ही नहीं कार हैंडल से ही स्टार्ट होती थी। बाद को तो वे ऐसे हिम्मती ड्राइवर हुए कि इनकी मोटर हवा से बातें करती थी।

मनुष्य के कुछ भी सीखने का अर्थ है उसे अपने को काम में लगाए रहना। ऐसे समय के सद्पयोग का उदाहरण धर्मचन्दजी के जीवन में एक नहीं अनेक हैं, जैसे पुरानी टूटी चूड़ियों का खूबसूरत चेन बनाना। ये बड़े मनोयोग से टूटी-फूटी चूड़ियां एकत्र कर दीये की लौ के ऊपर गर्म करते रहते और उसे इच्छा-नुसार मोड़ कर एक दूसरे से जोड़-जोड़ कर चेन बना लेते थे। इन्होंने फोटो-ग्राफी उस समय सीखी जब इसका एक ही निर्माता था कोडक तथा जब यह एक मँहगा शौक माना जाता था। कारण उस समय फोटो खींचकर निगेटिव से पोजेटिव में बदलने की जो प्रक्रियाएँ थीं जैसे कैमरे से निकाल कर अंधेरे कमरे में फिल्म की धुलाई करना, फिर उसे पोजेटिव पेपर पर रख कर शीशे के फ्रेम में बन्द कर धूप या तीव्र प्रकाश में निर्धारित समय तक रखना, इस

काम में कई तरह के केमिकल्स लगते थे, जिसका ज्ञान भी इन्हें था क्योंकि ये फोटोग्राफी की पूरी प्रक्रिया यहां के व्यावसायिक फोटोग्राफरों की दूकानों पर हेल-मेल बढ़ाकर सीखते रहे। इसी तरह ये कलकत्ते के बेलगछिया में, वहाँ नियमित चक्कर लगाते रहे, जहाँ सरकारी घुड़सवार पुलिसों के घोड़े को मस्क कराया जाता था क्योंकि इन्हें घुड़सवारी सीखनी थी और ये सीख कर रहे। घुड़सवारी सीखने में उन्हें समय तो देना ही पड़ता था साथ ही ट्रेनर यानी घोड़ों को मस्क कराने वालों की खुशामद मलामत के साथ ही उन्हें कुछ लेना-देना भी पड़ता था। मगर जिसका मन नए से नए विकास और आविष्कारों को सीखने मे लगा हो वह हाथ पर हाथ रख कर चुप कैसे बैठा रहता। ये टाइप करना भी जानते है। नई-नई निकली रेमिंग्टन की टाइप मशीन घर में आई कि बस ये उस पर अंगुलियाँ चलाने लगे। इन्हें टाइपिस्ट बनना था यह बात नहीं बल्कि यह भावना रही कि मनुष्य प्रयत्न करे तो दुनिया में क्या नहीं सीख सकता। कलकत्ते में बिजली का प्रारम्भ डी० सी० करेंट से हुआ था। और उस समय इस कहावत के अनुसार कि बिना साँप का मंत्र जाने उसके बिल में हाथ नही डालना चाहिए' हर कोई इसकी फिटिंग और यांत्रिक कामों में सहज ही हाथ नही लगाता था। मगर धर्मचन्द सरावगी थे कि बिना इस खतरे की पर-वाह किए कि डी० सी० करेंट लगते ही आदमी दूर जा गिरता है अपने घर का बिजली का काम खुद कर लिया करते थे यानी ये छोटे-मोटे बिजली मिस्त्री भी बने। बिजली आई तो पानी ऊपर चढ़ाने के लिए मोटर भी आई। मोटर से पाइपों के द्वारा पानी ऊपर चढ़ाने का तरीका भी आया। धर्मचन्दजी पाइप आदि फिट करने में भी माहिर हो गए और जब कलकत्ते में मोटर बाइक अर्थात मोटर साइकिल आई तो आप कई वर्षों तक मोटर साइकिल पर चलते रहे।

इसके बाद सन् १९५१ मे जब ये कुल ४६वर्ष के थे तब शारीरिक व्यायाम की लगन आप को लगी। आप बड़ाबाजार युवक सभा में व्यायाम सीखने लगे। उस समय सभा में बलराम दे स्ट्रीट के सम्पन्न परिवार के गोपीनाथ पाल एक नामी बॉडी बिल्डर व्यायाम की शिक्षा देते थे। वे एक ऐसे शिक्षक रहे जिन्होंने इसके पीछे अपना जीवन दे दिया। यहाँ तक कि परिवार की सम्पन्नता की रक्षा भी नही कि बल्कि उस ओर से इतने उदासीन रहे कि भाइयों ने इनके हिस्से की सम्पत्ति भी हड़प ली। ऐसे लगनशील बॉडी बिल्डर गोपीनाथ पाल के सम्पक में आकर धर्मचन्दजी ने अपने प्रयत्न से, लगन से वह सब करामात

सीख लिया जो सरकस के खिलाड़ी दिखा-दिखा कर पैसा कमाते हैं, लाखों लोगों का मनोरंजन करते हैं। अर्थात एक चक्र की साइकिल पर सरकस वालों की तरह ही आगे-पीछे चलना, तार पर चलना, रोजर बैलेंस, छाती पर लोहा कटाना, पैरतलवार के खेल, स्केटिंग, बैंडमिंटन, राइफल शूटिंग आदि। और आज से ८ वर्ष पूर्व अपनी ७४ वर्ष की आयु में आपने चित्रकारी सीखना शुरू किया। घर पर ही एक चित्रकार आते और इन्हें चित्रकला की शिक्षा देते। परिणाम, दो वर्ष में ही आप एक कुशल चित्रकार बन बैठे। आपके द्वारा अनेकों रंगीन चित्र आज भी आपके निवास स्थान में सुशोभित हैं।

सन् ८४ के मध्य की बात है। जीवन संगिनी मोतीदेवी बहुत बीमार पड़ी। परिवार में एलोपैथी चिकित्सा का वातावरण बिल्कुल नहीं था अतः धर्मपत्नी का इलाज प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से की। इसी सिलसिले में उन्हें सुझाव मिला कि भोजन परिवर्तन के अलावा मोतीदेवी के लिए सुबह हरी घास पर नंगे पाव घूमना, प्राणायाम तथा आसन करना लाभदायक होगा। मोती देवी आसन घर पर ही कर लिया करती थीं और हरीघास पर घूमने के लिए धर्मचन्दजी अपने निवास के कुछ ही फासले पर कर्जनपार्क (जिसका नाम आजकल सुरेन्द्रनाथ पार्क है) में उन्हे उषाकाल में लेकर जाया करते थे। वहां उन दिनों आर० एस० एस० की शाखा लगा करती थी, जिसका नाम धर्मराज शाखा था और जो तीस-चालीस वर्षों से लग रही थी। इस शाखा के व्यवस्थापक थे रामनरेशजी गौड़। लगभग पन्द्रह बीस वर्षों से अधिकारी है। धर्मचन्दजी अपनी पत्नी मोतीदेवी के साथ नियमित घूमने जाते और शाखा में लोगो को लाठी चलाते देखते। एक दिन लाठी चलाना सिखाने वाले शिक्षक से मिलकर इन्होंने इच्छा जाहिर की कि वे भी लाठी चलाना सीखना चाहते है। शिक्षक ने धर्मचन्दजी से कहा आप की उम्र हो गई है आप क्या सीखेंगे। धर्मचन्दजी ने उनसे उत्तर में कहा, "मैं तो बराबर बड़ाबाजार युवक सभा में व्यायाम करता हूँ।" साथ ही उन्होने अपने चित्र दिखाते हुए कहा, "आपकी आयु चालीस पैंतालीस की होगी मेरी ६० की है। आप जो पांच दिनों में सीखते हैं मुझे वह सीखने में दस दिन लगेंगे।" गौड़जी ने इनके उत्साह को देखते हुए इन्हें सिखाने का आश्वासन दिया। धर्मचन्दजी ने ५-७ लाठियों की व्यवस्था कर ली तथा दूसरे लोगों को भी सीखने के लिए उत्साहित कर एक वर्ष में ही सप्तपदी तक लाठी चलाना सीख लिया।

अब ८२ की उम्र में आप कराटे यानी टाइकांडों सीख रहे हैं। इस क्रम में यहां यह उल्लेखनीय है कि आज भी इनका बड़ाबाजार युवक सभा में जाना अनिवार्य है। सभा में इस टाइकांडों की शिक्षा की शुरूआत १९७९ में हुई थी। ८०-८५ तक पी० के० गुरूंम इसके शिक्षक थे जो राजीव गांधी के बाडीगार्ड बनकर चले गए। इनके बाद सन् ८६ में बलराज सिंह २६ वर्ष के नौजवान शिक्षक नियुक्त हुए। आप नेपाल में टाईकांडों प्रतियोगिता में ब्रोंजमेडल भी प्राप्त कर चुके हैं। अभी-अभी सियोल में आयोजित एशियाई ओलम्पिक में भाग लेने के लिए सम्पर्क सूत्रों की गड़बड़ी के कारण भाग लेने का अवसर नहीं पा सके किन्तु ८८ में जो ओलम्पिक आयोजित होने वाला है उसमें भाग लेने की आशा में तैयारी जोरों से कर रहे हैं। बलराज सिंहजी सिखाने शाम को आया करते हैं और अपनी तैयारी के लिए जब सुबह आते हैं उसी समय धर्मचन्द जी उनसे टाइकांडों सीखा करते है।

इसी प्रकार इनके जीवन में अवसर और संयोग सहजता से हर दिशा में उपलब्ध होते रहे हैं। ये परिस्थितियों को दत्तात्रय के समान गुरू मान लेते है अर्थात् जीवन में जो मिलना चाहिए वह इन्हे सहज में ही प्राप्त होता रहा है।

भाग्य की बात

कहावत है "लाभ-हानि, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ।" धर्मचन्दजी इसके चरितार्थ रूप हैं।

धर्मचन्दजी अपनी कर्तव्य परायणता की वजह से खूब यशस्वी हुए। १९२९ में लण्डन से एक वायुयान सप्ताह में एक दिन डाक की चिट्ठियां लेकर भारत आना आरम्भ हुआ जिसमें केवल पांच-सात यात्री ही रहते थे। धर्मचन्दजी जब उसी हवाई जहाज से आए तो प्रथम भारतीय शाकाहारी यात्री थे जिसका उल्लेख कलकत्ते के 'स्टेटमैन' जैसे अखबार में बड़े-बड़े अक्षरों में हुआ। ये जिस जहाज से आ रहे थे वह बगदाद में ठहरा और मौसम की खराबी के कारण आगे की यात्रा उस दिन के लिए स्थगित कर दी गई। इन्हें बगदाद घूमने का सुयोग सहज ही मिल गया। भाग्य कैसे साथ देता है इसका नजीर है इस जहाज का बिना इन्हें लिए उड़ जाना क्योंकि जब यह बगदाद में घूम रहे थे तभी रिपोर्ट आई कि मौसम ठीक हो गया है और जहाज तत्काल ही

उड़ गया। ये अफसोस में डूबे रहे कि अब कहीं सात दिनों बाद जब दूसरा जहाज आएगा तब कहीं जाना होगा। मगर धर्मचन्दजी के भाग्य की बात कहिए कि जहाज को बगदाद के बाद मौसम खराब मिला, उसे पुनः लौटना पड़ा। धर्मचन्दजी दूसरे दिन जब मौसम ठीक हुआ तो उसी जहाज से भारत आए पर कुछ दिनों बाद पत्रों में फिर खबर आई कि बगदाद से दूसरे सप्ताह डाक लेकर जो जहाज रवाना हुआ अगले पड़ाव पर उतरते समय नष्ट हो गया तथा उसकी डाक भी नष्ट हो गई एवं सारे यात्री मारे गए। भाग्य ने इनका इतना साथ दिया कि यहाँ यह कहना आवश्यक प्रतीत होता है कि यदि इनका छूटा हुआ जहाज पुनः लौट कर नहीं आता और इन्हें दूसरे जहाज से आना पड़ता तो शायद आज यह लिखने का अवसर नहीं मिलता। इसी तरह भारत पहुँचकर जब १९३१ में इन्होंने वायुयान चलाने का लाइसेन्स लिया तो प्रथम जैनी चालक माने गए। उस समय भी हवाई जहाज की यात्रा जोखिम भरी थी। एक बार इनके जहाज से एक गिद्ध की भिड़न्त हुई मगर भाग्य से इन्होंने सकुशल जहाज को जमीन पर उतार लिया। जबकि इसके कई दिनों पहले ही फ्रांस के राजकुमार का हवाई जहाज कलकत्ते में ही गिद्धों के हमले से ध्वस्तप्राय हो चुका था। आजकल हवाई जहाज कम्पनी इन गिद्धों से जहाजों की सुरक्षा के मद में लाखों रुपए व्यय करती है। इसी तरह १९४८ में जब ये सपरिवार अपने पुष्पक से ही जयपुर कांग्रेस में जवाहरलाल नेहरू पर पुष्प वृष्टि कर लौट रहे थे तब इन्होंने दिशाभ्रम में पड़कर दुर्गापुर के पुल को हावड़ा का पुल मान लिया और सोचा कलकत्ते पहुंच गए हैं। किन्तु फिर इन्हें यह आभास मिल गया कि नहीं अभी वे बेहला हवाई अड्डे से बहुत दूर हैं। सध्या हो गई थी, अन्धेरा धीरे-धीरे बढ़ रहा था अतः अगर ये वहीं हवाई जहाज उतारते तो पता नहीं कहाँ टकरा जाते। पूरे परिवार का जीवन ही खत्म हो जाता। इस अवसर पर इनके भाग्य ने ऐसा साथ दिया कि ये एक विस्तृत खेत में जहाज को सकुशल उतार सके। किसी की कुछ हानि नहीं हुई।

यह बात १९४५ की है जब ये मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मन्त्री चुने गए जिसके लिए इनका कोई न प्रयत्न था, न प्रयास। सहसा भालचन्दजी शर्मा आए और उन्होंने कहा आपको सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में कुछ करना है। सोसाइटी को सम्भालना है। बिना कुछ सोचे समझे हां कर दिया। पिताजी से

अनुमति मांगी तो उन्होंने भी यह कहते हुए स्वीकृति दे दी कि ठीक है मगर ध्यान रखना किसी तरह की बदनामी न हो। और बदनामी की कौन कहे आप सोसाइटी के यशस्वी कार्यकर्ता के रूप में विख्यात हो गए। इसी तरह कारपोरेशन के कौंसिलर चुने गए। जबकि अपने लोहे के व्यवसाय के सिलसिले में टाटा जाने को तैयार थे, उस समय भालचन्द शर्मा आए और उन्होने कारपोरेशन का चुनाव लड़ने का प्रस्ताव रखा परन्तु धर्मचन्दजी ने काम को प्राथमिकता देते हुए पहले टाटा के आफिस ही गए। मजा यह कि शर्माजी के विवश करने पर जब मात्र ५ मिनट ही शेष रह गए थे तब फार्म भरा गया। और भाग्य ने ऐसा साथ दिया कि इनके अचल से जो अन्य तीन व्यक्तियों ने फार्म भरे थे वे स्कूटनी में गलत निकल गए तथा धर्मचन्दजी निर्विरोध चुन लिए गए। राज्यसभा की सीट भी इसी तरह इनके मत्थे मढ़ा गया था। बगाल के कांग्रेस के प्रखर नेता अतुल्य घोष ने आग्रह किया कि राज्यसभा मे आपको जाना है। जबकि ऐसे अवसर की ताक मे अनेक लोग बैठे हैं। धर्मचन्दजी चुनाव क्षेत्र में उतर पड़े। धर्मचन्दजी थे कि शान्ति से बैठे रहे। जिस दिन वोटो की गिनती हो रही थी उसी दिन पांच बजे संध्या को तत्कालीन मुख्यमंत्री पी० सी० सेन ने धर्मचन्दजी से कहा कि आपको जिताने का काफी प्रयास किया गया पर आप मात्र २ वोटों से चुनाव हार गए हैं। धर्मचन्दजी उस समय भी निर्विकार रहे। उसी दिन संध्या सात बजे धर्मचन्दजी राज्यसभा की सीट के चुनाव मे विजयी घोषित किए गए।

व्यापार के क्षेत्र में भी धर्मचन्दजी को अवसर और भाग्य ने खूब साथ दिया। उस समय की बात है जब क्लाइव स्ट्रीट में टाटा का आफिस जिस मकान में था, उसमे ही एक जापानी कम्पनी मित्सुबूमनकेसा के नाम से भी थी। उसे जो सज्जन पुराने लोहे का स्क्रैप सप्लाई करते थे, हिसाब-किताब मे गड़बडी होने के कारण हटाए गए और उस कम्पनी के अफसर ने धर्मचन्दजी को बुलाकर यह आर्डर दिया। उनके व्यवहार से वे बहुत खुश हुए। कुछ वर्ष बाद जब उनका कोयले का सप्लायर बेईमानी करने लगा तो कम्पनी के बड़े साहब ने धर्मचन्दजी को बुलाकर कहा, हमें कोयला चाहिए। क्या आप कोयले का काम जानते हैं? धर्मचन्दजी ने स्पष्ट कहा कि कोयले का काम कभी नहीं किया है पर आप बतावें जिस तरह का कोयला चाहिए हम बाजार से दाम लाकर आपको देंगे उस पर जो

कुछ मुनाफा आप हमें देंगे उससे हम संतुष्ट होंगे। धर्मचन्दजी की स्पष्टवादिता पर जापानी अफसर बड़ा प्रसन्न हुआ और कोयले का काम उन्हें दे दिया। संयोग से उस साल जापान में कोयले की बड़ी कमी थी। साल भर मे एक लाख टन कोयले की सप्लाई एक रुपए टन के मुनाफे पर ये करते रहे। भाग्य ने साथ दिया— जो माल खिदिरपुर में पानी के जहाज से जाता था, बरसात के दिनों में माल लदाई के समय पानी से भींग जाता था जिससे कोयले का वजन बढ़ जाता था। बिना गड़बड़ी के इन्हें बढ़ती वजन का भुगतान कम्पनी करती रही।

दूसरी लड़ाई जब शुरू हुई और लोहे पर कण्ट्रोल लगा तो अंग्रेज सरकार ने विभिन्न प्रान्तों में व्यापारियों का एसोसियेशन बनाकर इन्हें कण्ट्रोल स्टाकिस्ट बना दिया। कलकत्ते में यह काम धर्मचन्दजी को मिला। आप ईमानदारी से परमिट के अनुसार लोगों को माल दे देते पर व्यापारी उसी माल को बहुत अधिक मूल्य पर बेचते रहे। उस समय गोदाम, जिसमे लोहे का स्टाक रहता था, माजरहाट पुल के पास खिदिरपुर में था। कलकत्ते पर जब बम वर्षा हुई, खिदिरपुर में भी एक बम गिरा जिसका एक टुकड़ा इस मकान की छत पर भी गिरा। उस समय गोदाम में टनों लोहा भरा था। भाग्य की बात कि बम कलकत्ते पर क्या गिरा इनके उस गोदाम में रखा लोहा सोना हो गया। बात यह हुई कि कलकत्ते पर बम गिरने की वजह से यहाँ भगदड़ मच गई। खरीदार नही रहे तब इन्होने कंट्रोलर को अपने स्टाक के पड़े रहने की सूचना दी और कन्ट्रोलर ने इन्हें किसी भाव मे, किसी को भी माल बेचने की अनुमति दे दी। इससे कई लाख रुपयों की आमदनी हो गई। लोहे के व्यापार मे जितने पारसी, बगाली, क्रिश्चियन आफिसर टाटा आयरन स्टील, इण्डियन आयरन स्टील और हिन्दुस्तान स्टील में थे उनपर धर्मचन्दजी की ईमानदारी की इतनी बड़ी छाप पड़ी कि जब इन्होंने एजेंसी के स्थान पर गारंटी ब्रोकर बनाने की योजना बनाई तो आधे हिन्दुस्तान का गारन्टी ब्रोकर धर्मचन्द जी को बनाया। खिदिरपुर का गोदाम १५०० रु० मासिक पर केवल एक साल के लिए लिया पर अब ६० वर्ष की लीज में इन्हें मिल गया जिससे काफी आमदनी होती है। शम्भू मल्लिक लेन के मकान में रहते हुए नन्दो मल्लिक लेन में बिना सलामी का मकान मिला। इसी तरह एस्प्लेनेड का मकान जबर्दस्ती ४८ हजार में लेना पड़ा। लड़ाई लगी तो सैनिको के लिए सरकार ने इस पर कब्जा

कर लिया मगर लड़ाई के खत्म होते ही सरकार ने ५६ हजार रु० मुआवजे के साथ इन्हें वह लौटा दिया।

इस प्रकार यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि वृत्ति और प्रवृत्ति मानव समाज के आधारभूत मूल्य हैं, जिसके निर्दोष सतुलन और निर्वाह पर ही मनुष्य की समाज में पहचान बनती है। इस आधार पर धर्मचन्दजी के जीवन-प्रवाह की गति प्रकृति शेखावाटी के उद्गम से प्रवाहित होकर शस्यश्यामला बंगाल की गंगा में अटूट लहरों में, काल-खड के अवतरण के बावजूद, आज भी तरंगित है।

शरीर चर्या

आप ८२ वष की आयु में भी आज एड़ी से चोटी तक, बाहरी और भीतरी बीमारियों से मुक्त हैं और स्वस्थ हैं। विदेशों की यात्रा के समय मैकफेडन, स्टेनले लीफ, थमसन, गेहमन, रोटडी आदि उमर वाले, साथ ही स्वस्थ दीर्घजीवी प्राकृतिक चिकित्सकों से साक्षात्कार हुआ तो इनके हृदय पर यह छाप पड़ी कि मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए प्राकृतिक भोजन के साथ लोक सेवा मे लगे रहना, चिन्ता रहित जीवन और व्यायाम की नितान्त आवश्यकता है। ये गत ४० वर्षों से बराबर कड़ा व्यायाम करते है और जो लोग व्यायाम नही करते ऐसे लोगो से हिदायतें सुनते है कि ४०-५० की उम्र के बाद मनुष्य को कड़े व्यायाम नही करने चाहिए, उसमें कुछ डाक्टर भी होते है और कुछ बुजुर्ग भी। पर शरीर पर व्यायाम का कोई बुरा प्रभाव नही पड़ते देख उन्हें आप हँसकर कह देते है कि अभी तो मेरी उतनी उम्र हुई ही नहीं है जब उतनी उम्र होगी तब आपकी सलाह के अनुसार कड़ा व्यायाम छोड़कर केवल घूमने का व्यायाम किया करूंगा। आज ८२ वर्ष की आयु में भी १६ घन्टे कार्य करने की आप में क्षमता है।

आजकल इनका जीवनक्रम इस प्रकार है:—

१—सुबह ५ बजे उठकर एक चुटकी कच्चे चावल मुँह में रख पानी के साथ निगल जाना। यह क्रिया लीवर को मजबूत करने के लिए बड़ी अच्छी है। जिन जिन लोगों को इन्होंने बतलाया और जिन्होंने अपनाया, उन्हें भी बहुत लाभ हुआ। फिर उषापान करना है।

२—ताड़ आसन करते हैं। इस आसन में दोनों पैरों के पंजों के बल पर खड़ा होकर दोनों हाथ को ऊपर उठाकर खड़ा होना पड़ता है।

३—शौचादि से निवृत होकर कपड़छान किए हुए सेंधा नमक और कड़वे तेल से बने दंतमंजन से दाँत साफ करते हैं। इससे हिलते हुए दाँत ठीक हो जाते हैं और पायरिया की बीमारी तक चली जाती है। महगे दन्त मंजन और ब्रस का उपयोग ये नही करते। फिर ठंडे जल से गमछे से रगड़कर नहाते हैं, साबुन का उपयोग नहीं करते।

४—प्रातः ६ बजे कर्जन पार्क में चले जाते हैं। वहां लाठी चलाने का अभ्यास करते हैं। और फिर प्राणायाम कर वापस घर लौट आते हैं।

५—दो ब्राह्मी पत्ती खाते हैं, ४ घिसे हुए कागजी बादाम लेते हैं। साथ ही एक पाव जल में २ चम्मच मधु और एक कागजी नीबू मिलाकर पीते हे और एक पाव दूध भी धीरे धीरे पीते है।

६—बड़ाबाजार युवक सभा की व्यायामशाला में जाते हैं और वहां एक घन्टे तक कठिन व्यायाम, चीनिंग, बेंच प्रेस, पेरललबार, वालबार, मुग्दर और आसन आदि करते हे।

७—दिन में डेढ़ और दो के बीच दो पहर का भोजन करते हैं। पहले एक-पोतिया लहसुन के दो दाने खाते है, फिर मौसम के साग-सब्जी के साथ एक अन्न यानी किसी दिन मकई, किसी दिन बाजरा, किसी दिन ज्वार, किसी दिन आटे की रोटी, किसी दिन चावल लेते हैं। रोज नए तरह का भोजन होता है जो रुचिकर होता है और बहुत तरह की चीजें न होने से अधिक खाया भी नही जाता और पचने में आसान होता है। भोजन के अन्त में एक पाव मट्ठा लेते हे।

८—भोजन के बाद लघुशंका कर घन्टे भर आराम करते हैं। उस समय पेट की वायु निकल जाए, उसके लिए सीधे चित्त सोकर ८ लम्बे सांस, दाहिने करवट बदलकर १६ सांस, फिर बाईं करवट बदलकर ३२ सांस लेते हे। इस तरह वायु नाक से या गुदा से निकल जाती है और नींद आ जाती है।

९—रात्रि ८ बजे तेल की मालिश एक घन्टे कराते हैं।

१०—९ बजे मौसम के फल यानी आम की ऋतु में आम, संतरे की ऋतु में संतरे, लीचू की ऋतु में लीचू, अनारस की ऋतु में अनारस और दूध आदि लेते हैं। जाड़े के मौसम में सतरों के साथ मेवे जिसमें अखरोट, काजू, किसमिस, छुहारा, जरदालू, नाजा आदि रहते हैं।

११—सप्ताह में एक दिन मंगलवार को १२ घन्टे का उपवास करते हैं। व्यायाम मंगलवार को भी करते हैं और बुधवार को भी, परन्तु किसी प्रकार की कमज़ोरी महसूस नहीं करते।

१२—प्रकृति की कृपा से बिस्तर पर जाते ही एक मिनट में इन्हें नींद आ जाती है। किसी समय मुँह में इलायची भी रह जाए तो वह नींद आ जाने के कारण उसे चबा भी नहीं पाते, पड़ी रह जाती है। इसी प्रकार सुबह भी जब शौच को जाते हैं तो एक मिनट में पेट साफ हो जाता है और फिर २४ घण्टे शौच जाने की आवश्यकता नहीं रहती।

इन्होंने उपवास के सम्बन्ध मे साहित्य तो बहुत पढ़ा है पर सबसे बड़ी प्रेरणा आदरणीय मोरारजी देसाई से इन्हें मिली है। जब उनके सम्पर्क में आए और देखा कि वे अपने व्यस्त जीवन मे भी सप्ताह मे एक दिन उपवास कर इस आयु मे इतने स्वस्थ हैं तो इन्होंने भी गत ३० वर्षो से इस प्रकार का साप्ताहिक उपवास आरम्भ कर दिया और इसका प्रत्यक्ष लाभ उठाया। अब तो इनकी स्त्री भी मंगलवार को उपवास करती है। और साथ रहने वालों ने भी अपनी मर्जी से साप्ताहिक उपवास करना आरम्भ कर दिया है।

गत वर्ष जब ये सध्या के समय दुकान मे बैठे थे, 'बाडी बिल्डर' मनोतोष राय के लड़के मलय राय दुकान मे स्वास्थ्य और योग सम्बन्धी पुस्तक खरीदने आए। इन्होने अपना उसी साल के व्यायामशाला मे व्यायाम करते हुए चित्र दिखलाए। उन्होंने कहा, आज अभी भी ऐसे व्यायाम करते हैं? उनके हाँ कहने पर वे कहने लगे कि आपकी आयु ६० की होगी। इन्होने कहा हाँ—इसी के आस-पास है।

व्यायामशाला में कोई भी उनकी उम्र का व्यायाम करने नहीं आता। उनके पोते और दोहतों के उम्र के आते हे। ये उनके साथ कड़े व्यायामों की कम्पीटिसन करते हैं। कोई भी इनकी आयु पुराने जमाने में पचास से अधिक और आजकल साठ से अधिक नही आंकते। जब कोई लड़का इनकी आयु ८२ बताता है, तब वे लड़के आपस में झगड़ा कर लेते है। उन्हें विश्वास नहीं होता कि इनकी आयु इतनी होगी। ये यह मानते हैं कि यह सारी कृपा व्यायामशाला की है। और प्राकृतिक खान पान की है। □

विमान चलाने की तैयारी में धर्मचन्दजी ।

पश्चिम बगाल के राज्यपाल स्व० राजगोपालाचार्य, श्री गणेश प्रसाद सराफ
के साथ धर्मचन्दजी ।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के नए भवन के उद्घाटन पर स्व० सुभाष चन्द्र बोस, स्व० बसंतलाल मुरारका, स्व० दीपचन्द पोद्दार के साथ धर्मचन्दजी ।

स्व० इन्द्रा गांधी, श्री भालचन्द्र शर्मा के साथ धर्मचन्दजी

बाढ़ के समय नौका से लोगों को राहत पहुंचाते हुए धर्मचन्दजी ।

स्व० उछंगराज ढेबर, स्व० बैजनाथ सरावगी, श्री चन्द्रकुमार,
स्व० विष्णुदत्त शुक्ल के साथ धर्मसन्दजी ।

स्व० जुगलकिशोरजी बिड़ला के साथ धर्मचन्दजी ।

राष्ट्रपति स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद, स्व० डा० बी०सी० राय के साथ धर्मचन्दजी।

मर्चेन्ट चेम्बर ऑफ कामर्स के सभापति धर्मचन्दजी साथियों के साथ।

दहेज विरोधी अभियान में स्व० बसंतलालजी मुरारका के साथ धर्मचन्दजी ।

प्रधान मंत्री स्व० जवाहरलालजी के साथ त्रिमूर्ति भवन में धर्मचन्दजी ।

राधाकृष्णजी कानोड़िया, मुख्य मंत्री प्रफुल्लचन्द्र सेन के साथ धर्मचन्दजी।

प्रकृति निकेतन में बृक्षारोपण करते हुए स्व० विनोबा भावे, चन्द्रकुमार,
निर्मल कुमार, लक्ष्मी राजगढ़िया के साथ धर्मचन्दजी।

स्व० बैजनाथजी सरावगी की पुण्य स्मृति में बनने वाले भवन का
शिलान्यास के अवसर पर राजस्थान के मुख्य मंत्री स्व०मोहनलालजी सुखाड़िया के

प्रकृति निकेतन में श्री मोरारजी देसाई के साथ धर्मचन्दजी ।

प्राकृतिक चिकित्सा के ८ वें अधिवेशन पर श्री विजयसिंह नाहर,
स्व० श्रीमन्नारायण के साथ धर्मचन्दजी ।

होली पर फैन्सी ड्रेस में स्व० ईश्वरदास जालान, स्व० सोहनलाल दुगगड़
के साथ धर्मचन्दजी नेहरूजी की वेश भूषा में।
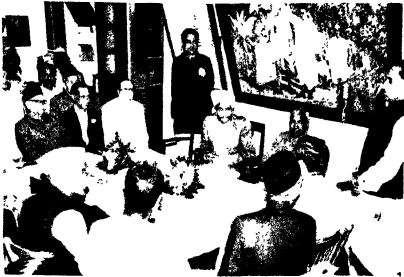
मा० रि० सोसाइटी में मुख्य मंत्री स्व० पी० सी० घोष, स्व० सोहनलाल दुगड़,
स्व० डा० कुलरंजन मुखर्जी, स्व० तुलसीराम सरावगी,
श्री गणेश प्रसाद सराफ के साथ धर्मचन्दजी।

स्व० उछंगराज ढेबर, स्व० अतुल्य घोष, श्री विजयसिंह नाहार के साथ धर्मचन्दजी

जैन हाउस में श्री मोरारजी देसाई। (पीछे) निर्मलकुमार सरावगी, राजगोपाल सुरेका, चन्द्रकुमार सरावगी, इन्दु सरावगी, शान्ति सुरेका, लक्ष्मी राजगढ़िया, श्यामलाल सुरेका। (सामने) धर्मचन्दजी, मोती देवी, स्व० जानकी देवी, संजीव, श्री मोरारजी देसाई। गोद में संगीता।

नेशनल फिजिकल एफेसियेन्सी टेस्ट में ३५ वर्ष के युवकों
के साथ थ्री-स्टार विजेता धर्मचन्दजी

माहेश्वरी व्यायामशाला के वार्षिक उत्सव पर सभापति के पद से पुरष्कार देते हुए धर्मचन्दजी ।

बड़ाबाजार युवक सभा में योगा शिविर के समापन के बाद पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री त्रिभुवन नारायण सिंह के साथ धर्मचन्दजी ।

इडेनवर्ग के प्राकृतिक चिकित्सक श्री सेसली थामसन के साथ धर्मचन्दजी ।

लंदन के प्राकृतिक चिकित्सक
श्री स्टेनले लीफ के साथ धर्मचन्दजी ।

जापानी प्राकृतिक चिकित्सक
श्री आसावा के साथ धर्मचन्दजी ।

प्रथम अंतरिक्ष यात्री मेजर यूरी गैगरिन से हाथ मिलाते हुए धर्मचन्दजी।

भारत सेवक समाज बड़ाबाजार के सभापति विवेकानन्द शतवार्षिक
उत्सव पर दौड़ते हुए धर्मचन्दजी।

राजस्थानी पोशाक में धर्मचन्दजी।

मोती देवी के साथ राजस्थानी वेश-भूषा मे धर्मचन्दजी ।

मोती देवी के साथ बंगाली वेश-भूषा में धर्मचन्दजी।

मोती देवी के साथ पारसी वेश-भूषा में धर्मचन्दजी ।

मोती देवी के साथ आधुनिक पाश्चात्य वेश-भूषा में धर्मचन्दजी ।

प्रार्थना घर में स्वाध्याय करती हुई मोती देवी, चर्खा कातते हुए धर्मचन्दजी ।
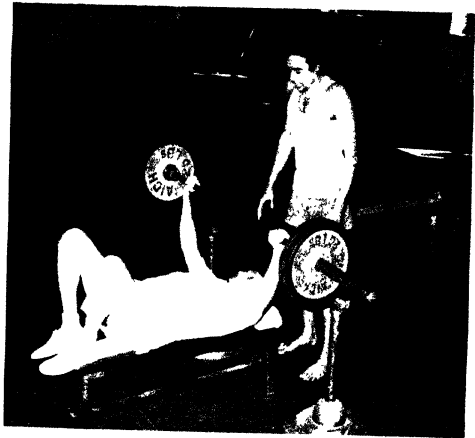
बेंच प्रेस करते हुए धर्मचन्दजी।
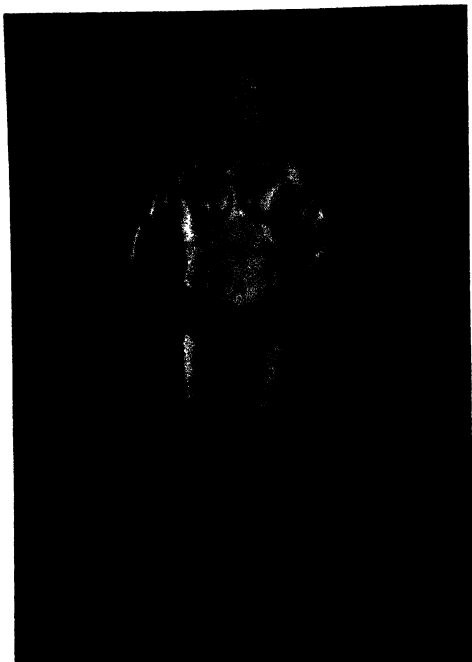
चौहत्तर वर्ष की उम्र में धर्मचन्दजी

बज्रासन में बैठे हुए धर्मचन्दजी ।
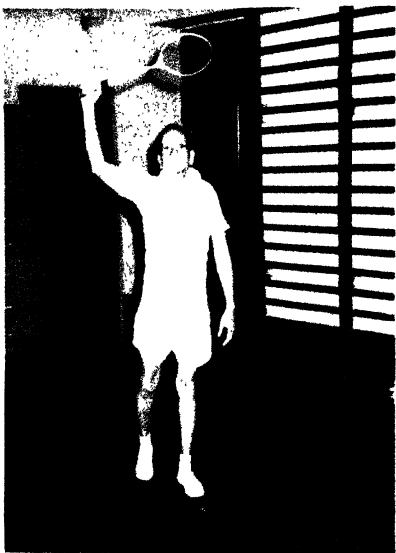
युवक सभा में बैडमिंटन खेलते हुए धर्मचन्दजी ।

जैन हाउस के बाहर का दृश्य ।
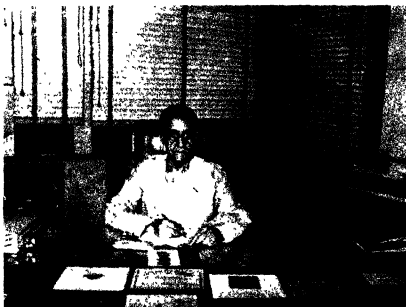
आफिस में काम करते हुए धर्मचन्दजी ।

जैन हाउस की छत पर गमले में लगे १६ नारियल।

श्री धर्मचन्द जी सरावगी

(वे महानुभाव जिन्होंने-
दरवाजा खटखटाने वाली
राज्य सभा की सदस्यता को बिना
स्वीकार किये दरवाजे पर से ही वापस
लौटा दिया)

Esplanade East
कलकत्ता Cal-1

१९६४ में राज्य सभा की सीट जीतकर स्तीफा देने पर कानपुर से श्री गंगाधर जालान द्वारा भेजे गए पत्र का लिफाफा।

अपने बड़े लड़के निर्मलकुमार के परिवार के साथ (बाये से बैठे हुए) :
निर्मलकुमार, धर्मचन्दजी, मोती देवी, इन्दू देवी, (पीछे खड़े हुए) :
सिद्धार्थ, सुनीता, सगीता दुधोड़िया, सिद्धार्थ दुधोड़िया,
(सामने बैठे हुए) . सुजाता, सुमीता दुधोड़िया, सौरभ दुधोड़िया, सुमन ।

अपने पोते सिद्धार्थ के साथ लाठी चलाने का अभ्यास करते हुए धर्मचन्दजी ।

बड़ा बाजार युवक सभा के हीरक जयती पर पश्चिम बगाल के मन्त्री
श्री जतिन चक्रवर्ती के साथ धर्मचन्दजी।

श्री विशुद्धानन्द अस्पताल में स्वस्थ रहने के राज पर बोलते हुए धर्मचन्दजी।

वंश वृक्ष
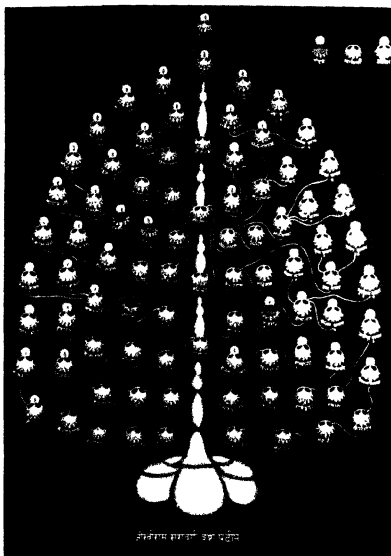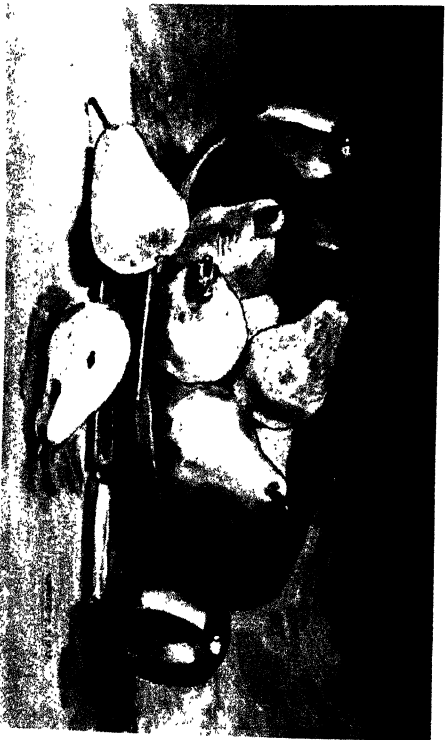
छिहत्तर वर्ष की उम्र में धर्मचन्दजी द्वारा बनाया गया तैल चित्र

अपनी पोती संगीता के विवाह पर (बाएँ से) : राजश्री देवी, चन्द्रकुमार,
मोती देवी, सिद्धार्थ दुधोड़िया, संगीता दुधोड़िया, धर्मचन्दजी,
निर्मलकुमार, इन्दू देवी ।

छोटी लड़की लक्ष्मी राजगढ़िया के लड़के संजीव राजगढ़िया के विवाह पर :
नीना राजगढ़िया, संजीव राजगढ़िया, श्री मोरारजी देसाई के साथ धर्मचन्दजी।

बड़ी लड़की शान्ता सुरेका के परिवार के साथ (बैठे हुए) : श्यामलाल सुरेका,
शान्ता सुरेका, धर्मचन्दजी, मोती देवी, (पीछे खड़े हुए) : अर्चना सुरेका,
सुशान्त सुरेका, अमन सुरेका, राजगोपाल सुरेका।

संस्मरण की सूची

अनेक प्रतिभाओं से सम्पन्न

विशिष्ट समाज सेवी

□ □

भालचन्द्र शर्मा

धर्मचन्दजी ने जीवन काल में जो स्मरणीय जन-सेवा के कार्य किए हैं उनसे आने वाली पीढ़ी के युवकों को बड़ी प्रेरणा प्राप्त होगी और देश के युवक अपनी बहुमुखी प्रतिभा द्वारा नए समाज की रचना कर देश को २१ वी सदी के आधुनिक भारत का निर्माण करने में समर्थ होगे।

श्री धर्मचन्दजी का जीवन एक दर्पण के समान है। जो गुण आप उनके बाहरी स्वरूप, रहन-सहन, बोल-चाल में देखेंगे वही रूप आप उनके आन्तरिक स्वरूप में पायेंगे। बड़े सरल, मिष्टभाषी, परोपकार की भावनाओं से ओतप्रोत धार्मिक सिद्धान्तों में दृढ़ संकल्प, साहसिक कार्यों में अग्रगामी रहकर नवीन आविष्कारों, यातायात के साधनो को तत्काल ग्रहण कर बड़े से बड़े खतरे से जरा भी हिचकिचाहट न लाकर उसे अगीकार कर लेते है, जैसे आज से ५६ वर्ष पहले वायुयान चलाने का साहस करना एक धनी व्यवसायी के एक मात्र पुत्र के लिए कम आश्चर्यजनक नहीं है। इस सचालन मे कई बार खतरे का अवसर आया किन्तु वे उससे जरा भी विचलित नहीं हुए। इसी प्रकार के निश्चय उन्होने समाज सेवा के क्षेत्र में राजनीतिक क्षेत्र में किए और उन्हें हमेशा सफलता की जयमाला प्राप्त होती रही।

अनेक प्रतिभाओं से सम्पन्न

विशिष्ट समाज सेवी

□ □

भालचन्द्र शर्मा

धर्मचन्दजी ने जीवन काल में जो स्मरणीय जन-सेवा के कार्य किए हैं उनसे आने वाली पीढ़ी के युवकों को बड़ी प्रेरणा प्राप्त होगी और देश के युवक अपनी बहुमुखी प्रतिभा द्वारा नए समाज की रचना कर देश को २१वीं सदी के आधुनिक भारत का निर्माण करने में समर्थ होंगे।

श्री धर्मचन्दजी का जीवन एक दर्पण के समान है। जो गुण आप उनके बाहरी स्वरूप, रहन-सहन, बोल-चाल में देखेंगे वही रूप आप उनके आन्तरिक स्वरूप में पायेंगे। बड़े सरल, मिष्टभाषी, परोपकार की भावनाओं से ओतप्रोत धार्मिक सिद्धान्तों पर दृढ़ रहकर साहसिक कार्यों में अग्रगामी रहकर नवीन आविष्कारों यातायात के साधनों को तत्काल ग्रहण कर बड़े से बड़े खतरे में जरा भी हिचकिचाहट न लाकर उसे अंगीकार कर लेते हैं जैसे आज से ५६ वर्ष पहले वायुयान चलाने का साहस करना एक धनी व्यवसायी के एक मात्र पुत्र के लिए कम आश्चर्यजनक नहीं है। इस संचालन में कई बार खतरे का अवसर आया किन्तु वे उससे जरा भी विचलित नहीं हुए। इसी प्रकार के निश्चय उन्होंने समाज सेवा के क्षेत्र में राजनीतिक क्षेत्र में किए और उन्हें हमेशा सफलता की जयमाला प्राप्त होती रही।

मेरा प्रथम परिचय सामाजिक कार्यों में उनकी रुचि देखकर हुआ। उनके सात्विक विचार, समाज सेवा की लगन के फलस्वरूप मेरा उनसे घनिष्ट सम्बन्ध उत्तरोत्तर बढ़ता गया। उस समय मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी एक मात्र संस्था थी जो देश में आनेवाली विपत्तियों—बाढ़, अकाल, महामारी—मे पीड़ित लोगो की सेवा करने के लिए समाज के युवको को आह्वान करती थी और विपत्ति से पीड़ित असंख्य परिवारों की जीवन-रक्षा करती थी। सोसाइटी उस समय एक तीर्थ के समान विद्यमान थी जिसमें प्रवेश कर युवकवृन्द बिना किसी भेद-भाव के समाज सेवा का प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रामाणिक समाज सेवी बनते थे। श्री धर्मचन्दजी ने इस दिशा में सोसाइटी के द्वारा आयोजित सेवा कार्यों में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। उसका उदाहरण बिहार का भूकम्प, कलकत्ते मे दगा पीड़ितों की सेवा, नोआखाली में महात्मा गाँधी के नेतृत्व मे सोसाइटी द्वारा चलाये गये कार्यों मे सहयोग, भारत के विभाजन के समय सन्-१९४७ में सोसाइटी द्वारा आयोजित पजाब मे शरणार्थियो के १५ बड़े-बड़े कैम्पों का निरीक्षण, आसाम में ब्रह्मपुत्र नदी के जल-प्लावन के समय डिब्रूगढ़ और पलासबाड़ो (गौहाटी) मे भूस्खलन के समय हजारो परिवारो की अन्न, वस्त्र, औषधि से सहायता, बगाल के भीषण अकाल में मिदनापुर के कैम्पो का निरीक्षण, राजस्थान में बीकानेर क्षेत्र में भीषण अकाल के समय गोसदन द्वारा पशुओ की प्राण-रक्षा के सेवा कार्यों मे उनकी उत्साहजनक सेवाएँ आज भी मैं तथा मेरे साथियों के समक्ष प्रतिबिम्बित है। सोसाइटी के प्रधान मत्री बन कर उन्होने बडी सजगता और कर्मठता के साथ सेवा कार्य सपादित किए यह सोसाइटी के इतिहास में स्वर्णाक्षरों मे अकित रहेगा।

एक बार जब नोआखाली मे महात्मा गाँधी के संरक्षण मे सोसाइटी द्वारा वे पीड़ित, त्रस्त व उखड़े हुए अनेक हिन्दू परिवारो के सेवा कार्यो मे सलग्न थे उस समय रामगढ कैम्प मे महात्मा गाँधीजी से धर्मचन्दजी के साथ मैंने मुलाकात की तो गाँधीजी ने सोसाइटी द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की और बगाल सरकार द्वारा वितरण किये जाने वाले खराब बदबूदार चावलों के नमूने की पोटली श्री धर्मचन्दजी को दी और कहा कि इन चावलो को वे कलकत्ता पहुँचकर सर्वप्रथम बगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री सुहरावर्दीजी को दिखलाकर कहें कि शरणार्थियों मे इस प्रकार के खराब चावल वितरण करना बन्द करें और अच्छे किस्म के चावल भिजवाने की व्यवस्था करें।

इसी प्रकार दूसरी अविस्मरणीय घटना उस समय की याद दिलाती है जब श्री धर्मचन्दजी सरावगी व श्री तुलसीरामजी सरावगी के साथ मैंने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के शिष्ट मडल के रूप मे महात्मा गाँधी को बताया कि पजाब के शरणार्थी बड़ी संख्या में पानीपत में एकत्रित है। और उनकी स्थिति बड़ी व्यथापूर्ण है किन्तु सोसाइटी अपने सीमित साधनों के द्वारा ही भोजन, वस्त्र, दवाई से उनकी सेवा कर रही है वह साथ ही पजाब में और भी अन्य १५ कैम्प

चला रही है। गांधीजी पानीपत के शरणार्थियों की व्यथा सुनकर द्रवित हो गए और कहा कि सोसाइटी को वहाँ पर उपस्थित शरणार्थियों के लिए कई लंगर खोल देने चाहिए। उसमें जितने धन की आवश्यकता होगी उतनी सारी मैं (गांधी-जी) घनश्याम दास के साथ झोली फैलाकर राशि एकत्रित कर सोसाइटी को दे दूँगा। आप अपना कार्य पूर्ण उत्साह के साथ संचालित करिए। निकट भविष्य में मैं भी उसे देखने आऊँगा।

बहुत कुछ लिखना है श्री धर्मचन्दजी के बारे में किन्तु गागर में सागर भर-कर यही कहूँगा कि श्री धर्मचन्दजी जैसे परोपकारी, प्रतिभाशाली उर्वर मस्तिष्क, वाले पुरुष इस देश में कम ही हैं। इन्होंने प्राकृतिक उपचारों के द्वारा अनेक परिवारों को डाक्टर, वैद्यों के फन्दे से मुक्ति दिलाकर नवीन स्वास्थ्य के साथ जीवन-दान दिया, साथ ही प्राकृतिक चिकित्सा का भारतव्यापी प्रचार किया है। देश के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ, महात्मा गांधी, श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री नेताजी सुभाष बोस, श्री हीरालाल शास्त्री, श्री जयनारायण व्यास आदि से इनका गहरा सम्पर्क रहा और भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई, श्री ढेबर भाई व गुजरात के राज्यपाल श्री श्रीमन्नारायणजी उनके निवास स्थान पर अतिथि रह चुके हैं।

अतः यह समाज सेवी देश भक्त भारत के आकाश में जाज्वल्यमान नक्षत्र के रूप मे देदीप्यमान रहेगा और तरुण पीढ़ी अपने जीवन विकास में उनसे गहरी प्रेरणा प्राप्त करती रहेगी। □

धुन और साहस के धनी

□ □

राधाकृष्ण नेवटिया

कुछ लोग जीवन में ऐसे आ जाते हैं।
भुलाना भी चाहें तो भुला नहीं पाते हैं ॥

जीवन-प्रवाह में कभी-कभी कुछ ऐसे व्यक्ति मिल जाते हे जो अभिन्न बन जाते हैं, मित्र बन जाते हे। रूप, सौन्दर्य, धन, वैभव आदि की कसौटियां उनके सामने व्यर्थ हो जाती हे। कोई अन्तःप्रेरणा होती है जो दो आदमियों को जोड़ देती है।

सन् १९३० की घटना है, मैं अपने निवास स्थान से अपनी दुकान नारायण प्रसाद लेन स्थित गद्दी जा रहा था। हरिसन रोड में, जो आज महात्मा गाँधी रोड है, सड़क पर भीड़ लगी थी। मकान के ऊपर जोखीराम बैजनाथ की गद्दी थी। बैजनाथजी धर्मचन्दजी के पिता थे। उनसे हमारा व्यापार का सम्बन्ध भी था। मुझे उन्होंने देख कर बुलाया और कहा—धर्मा विलायत से जाकर आया है। इतने में धर्मचन्दजी भी आ गये। बैजनाथजी ने कहा—यही मेरा लड़का है। बस एक नजर से उनको देखा। चेहरे पर साहस, गंभीरता और निर्भयता थी। बस पहली मुलाकात यही से प्रारम्भ हुई। इस घटना को बीते आज ५५ वर्ष हो गये। उस समय समाज रूढ़िवादियों की बेड़ी में जकड़ा हुआ

था। विलायत यात्रा, विधवा विवाह करना मानो जाति से बहिष्कृत होना था। ऐसे समाज में जन्मे एक २५ वर्षीय नवयुवक का घरवालों का कड़ा विरोध होने पर भी बगावत कर के विदेश-यात्रा करने से बढ़कर साहस का काम और क्या हो सकता है।

दूसरे एक बालबच्चे वाले नवयुवक का आकाश में वायुयान का सीखना और एक पायलेट के रूप मे द्वितीय मारवाड़ी का गौरव प्राप्त करना प्राणों की ममता को छोड़ना कोई कम आश्चर्य की बात नहीं है। जो मनुष्य जीवन को हथेली पर रखकर आगे बढ़ता है उसे सफलता तो मिलती ही है पर वह देश और समाज के सामने एक मार्ग-दर्शन का रास्ता भी खोलता है।

मनीषियों की वाणी है—**सेवा धर्म, परम गहनो योगिनामप्य गम्यः।**

सेवा धर्म परम गहन है। सेवा धर्म जिसमें स्व का विसर्जन कर देना पड़ता है। सेवा उत्सर्ग चाहती है। आसक्ति उसमें बाधा है। अहनिष्ठ वा आसक्त पुरुष समाज सेवी हो ही नही सकता। सेवा का अर्थ है दूसरों के लिए समर्पित हो जाना। सन् १९३४ की बात है बिहार में भयंकर भूकम्प आया। ऐसा लगता था कि बिहार का अस्तित्व ही खतरे मे है, सोसाइटी ऐसे कार्यों में सेवा के लिए सबसे पहले पहुँचती थी। भूकम्प मे सेवा करने के लिए स्वयंसेवकों की जरूरत थी। जाने मे लोग भय खाते थे, दूसरे जीवन का खतरा था, पर धर्मचन्द जी भयभीत नही हुए और आगे बढ़कर सेवा करने बिहार पहुँच गए।

१९३८ की बात है, सोसाइटी के अन्तर्गत आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण के लिए एक रसायनशाला विभाग है, उसके कार्यों को आगे बढ़ाना था। इस विभाग को सम्भालने के लिए एक मत्री को चुनना था। धर्मचन्दजी ने आगे बढकर इसके लिए अपनी सेवा देने की स्वीकृति दी। और अपने मत्रीत्व काल मे रसायन शाला की काया पलट की। जब-जब सेवा करने के कार्य आये, चाहे वे सामाजिक हों चाहे राजनैतिक हों, बाढ, अकाल, महामारी, सभी कार्यों में वे तन-मन-धन से सहयोग करना अपना कर्त्तव्य समझते थे।

प्राकृतिक चिकित्सा के एकलव्य जैसे निष्ठावान

महात्मा गांधी प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार भारत के गांव-गांव, शहर-शहर में करना चाहते थे, कारण एलोपैथिक दवाइयों से तो स्वास्थ्य बिगड़ता ही है पर साथ ही साथ इतना पैसा खर्च होता है कि एक गरीब और मध्यमवर्ग का आदमी उस खर्च का बोझ उठाने में असमर्थ है। उन गरीब भारतवासियो के दु:ख-दर्द ने धर्मचन्दजी के अन्तःकरण को झकझोर दिया और फिर उनके मन में प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार-प्रसार कैसे हो, इस सम्बन्ध में चिन्तन चलने लगा। अन्त में कलकत्ते में ही मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के अन्तर्गत प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खोलने की योजना बनी। सोसाइटी के सभी सदस्य एलोपैथी के विश्वासी थे इसके पीछे कुछ खर्च करना नहीं चाहते थे। धर्मचन्दजी ने अपने

ट्रस्ट से रुपये देकर अप्रवेशित विभाग सन् १९४६ में खुलवाया। धीरे-धीरे प्रचार बढ़ने लगा फिर श्री रूइया परिवार के अनुदान से सोसाइटी के नये भवन में ३ तल्ले पर सन् १९५८ में श्री घनश्यामदासजी बिरला के करकमलों द्वारा अप्रवेशित विभाग का उद्‌घाटन हुआ। स्त्री और पुरुषों का उपचार होने लगा। वर्षों तक चला। हजारों रोगियों को प्राण-दान मिला। पर दुर्भाग्य की बात है कि सोसाइटी के सदस्यों ने सन् १९८३ मे उसे बन्द कर दिया।

धर्मचन्दजी चुप बैठने वाले नही थे। उनके मन में तो भारत के गरीबों के उपचार की व्यवस्था गांव-गाव मे कैसे हो इसका चिन्तन चल रहा था। एक दिन मेरे पास आये और एक योजना के सम्बन्ध मे परामर्श चाहा। कहने लगे भारतवर्ष मे प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार के लिए एक अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा का मच बनाया जाय जिसमें भारत के प्राकृतिक चिकित्सकों को एक साथ बैठाकर संगठित किया जाय। हर प्रान्तों मे, शहरों में, गांवों में चिकित्सालय खुल सके। मुझे उनकी योजना पसन्द आई और मैंने सुझाव दिया कि एक अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की स्थापना की जाए और वह कलकत्ते में हो और वृहद् रूप मे आयोजन किया जाय। यह सुझाव उनको पसन्द आया। इसकी रूप-रेखा बनाने का भार मुझे दिया गया। उस समय बिनोवा भावे के छोटे भाई बालकोवा भावे कलकत्ते में थे।

वे संत, तपस्वी, त्यागी पुरुष है उनको स्वागताध्यक्ष बनाया जाय और कांग्रेस के अध्यक्ष ढेबर भाई को सभापति बनाने का सुझाव दिया। दोनो सुझाव धर्मचन्दजी को जँच गये।

अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की स्थापना सन् १९५६, सुनहला दिवस था। बालकोवा भावे स्वागताध्यक्ष बने और ढेबर भाई सभापति तथा मैं स्वागत मन्त्री बना। स्वागत समिति बनी, बाहर से प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी चिकित्सक काफी सख्या मे आये, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के नव निर्मित नये भवन के बड़े हाल में बड़ी धूम-धाम से दो दिन का सम्मेलन हुआ। वह एक स्थाई सगठन बन गया और प्रथम प्रधान मन्त्री धर्मचन्दजी बनाए गए। उनका स्वप्न साकार हुआ और आज ३० वर्ष से उसके वार्षिक अधिवेशन हर प्रान्तों में होते रहते हैं और सारे भारतवर्ष में सैकड़ों प्राकृतिक चिकित्सालय खुल गये जो सेवा कर रहे है।

कलकत्ते में भी एक आदर्श प्राकृतिक चिकित्सालय

आपस में चर्चा चली कि एक कल्पना तो साकार हो गई पर कलकत्ते वालों को एक ऐसा आदर्श उपस्थित करना चाहिए ताकि प्राकृतिक चिकित्सा का आधुनिक शिक्षा का केन्द्र बने। धर्मचन्दजी में उत्साह था, लगन थी, और कुछ करके दिखाने की तमन्ना थी। तय हुआ कि एक तीन वर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा का कोर्स बनाया जाय जो अन्य मेडिकल कालेजों के समकक्ष हो और उसके साथ वैज्ञानिक शोध प्राकृतिक

चिकित्सालय हो। सिद्धान्त रूप से सबको जँच गई। सवाल था स्थान का। धर्मचन्दजी की एक जमीन थी १८ बीघा डायमण्ड हार्बर रोड पर, उसमें, सुन्दर बगीचा बना था। मैंने कहा, यह आप प्राकृतिक कालेज और चिकित्सालय के लिए उपहार स्वरूप दे दीजिए। एक दिन सोचने का समय लिया, दूसरे दिन स्वीकृति दे दी। इतना विशाल हृदय देखकर मित्र लोग आश्चर्य करने लगे। सब दिशाओं में कार्य आरम्भ कर दिया गया, तीन वर्ष का कोर्स बन गया, मकान बनने लगे। मोरारजी भाई से मकान की कोणशिला करवाई गयी। दो वर्ष में कालेज एवं चिकित्सालय बन कर तैयार हो गया। एक ट्रस्ट बनाया गया। सरकार से भी मदद अधिक मिली, और दाताओं ने भी दिल खोलकर चन्दा दिया।

भारतवर्ष के कोने-कोने से विद्यार्थी आ गये। साथ ही रोगी भी भर्ती होने लगे। नामकरण हुआ :—"प्राकृतिक निकेतन" कालेज एव चिकित्सालय।" आधुनिक उपकरणों एव साज-सज्जा से सजाया गया और बड़ी धूम धाम से उद्घाटन श्री ढेबर भाई के करकमलों द्वारा हुआ। मैं मन्त्री और विजय सिंहजी नाहर सभापति, और धर्मचन्दजी उप सभापति बने।

प्राकृतिक चिकित्सा जगत् मे यह प्रथम प्राकृतिक चिकित्सा का कालेज खुला और आधुनिक ढग का प्राकृतिक चिकित्सालय खुला। कई कारणों से कालेज और चिकित्सालय बन्द हो गया और लगभग १० वर्ष बन्द रहा। पर मौका पाते ही धर्मचन्दजी ने १९८४ के जनवरी मास में श्री लक्ष्मी निवासजी बिरला के कर कमलों से उसका उद्घाटन कराया जो मजे मे चल रहा है। उसके मन्त्री भाई आनन्दीलाल गोयनका हे।

प्राकृतिक चिकित्सा जगत मे, प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार में अगर किसी का नाम अमर रहेगा तो वह धर्मचन्दजी सरावगी का ही रहेगा। आज भी ८१ वर्ष की उम्र में वही लगन, वही उत्साह है। ईश्वर उन्हें सौ वर्षों से अधिक उम्र प्रदान करे। □

कर्मठ पुरुष

□ □

विजय सिंह नाहर

प्राकृतिक चिकित्सा जगत् में धर्मचन्दजी सरावगी एक नाम है। मुझसे इनका सम्पर्क अनेक वर्षों का है। इनके पिताजी स्व० बैजनाथजी प्रतिवर्ष दीपावली पर भगवान महावीर निर्वाण उत्सव पर पावापुरी जाया करते थे। वृद्धावस्था मे भी उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था।

धर्मचन्दजी को बचपन से ही कारीगरी के काम का बहुत शौक था। इनका स्टील का कारखाना था जिसमे ये अपने दिमाग से नई-नई चीजे बनाने का प्रयत्न करते रहते थे। सूर्य की किरणों से खाना बनाने का चूल्हा निकला तो इन्होने अपने कारखाने मे उसमें थोड़ा परिवर्तन करके उसको और भी अधिक उपयोगी बना लिया। चरखा कातने का भी इन्हें बराबर शौक रहा है। चरखे में भी वे अपने मन से आवश्यक सशोधन करके काम मे लेते हैं।

इनके मकान की छत पर लगा बगीचा भी देखने लायक है। उसमें अनेक साग-सब्जी और फूलों के पौधो के साथ नीम्बू और नारियल के पेड़ भी लगे हैं।

सन् १९४८ मे जयपुर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था। मेरे एक मित्र डा० रहीम के पास एक छोटा हवाई जहाज था। जिससे हम दोनों जयपुर जा रहे थे। रास्ते में इलाहाबाद के पास हवाई अड्डे पर जब हम तेल लेने के लिए

उतरे तो वहाँ एक दूसरा छोटा हवाई जहाज आकर उतरा। मैंने देखा उस जहाज में धर्मचन्दजी का परिवार था और स्वयं धर्मचन्दजी उसे चला रहे थे। शाम हो जाने के कारण हम सभी एक साथ कानपुर में ठहर गए। फिर सुबह जयपुर के लिए रवाना हुए। धर्मचन्दजी इस प्रकार के साहसिक कार्य बड़े उत्साह से करते थे।

प्रतिदिन मन्दिर में दर्शन करने तो जाते ही हैं। व्यायामशाला में जाकर स्वयं व्यायाम करना और दूसरों को भी सिखाना इनका नियमित कार्य रहा है। अब अस्सी बरस की उम्र में भी वे लाठी घुमाना सीख रहे है, यह उनकी जिन्दादिली का सबूत है।

सामाजिक और राजनैतिक कार्यों में भी धर्मचन्दजी बराबर भाग लेते हैं। कलकत्ता कारपोरेशन के कौंसिलर के रूप में भी इन्होने काफी सेवा-कार्य किया। एकबार इन्होंने राज्यसभा का चुनाव लड़ा और जीत भी गये लेकिन कांग्रेस के एक सदस्य हार गये। उन्हे दिल्ली भेजना जरूरी था। फिर अतूल्य बाबू के आग्रह पर इन्होंने इस्तीफा दे दिया। दिल्ली जाकर शपथ भी नहीं ली। कितना बड़ा त्याग का आदर्श धर्मचन्दजी ने रखा।

वे छः साल के लिए राज्य सभा के सदस्य रहते परन्तु इन्हें जरा भी लोभ मोह नही हुआ। ऐसा दृष्टान्त विरला ही मिलेगा। कांग्रेस के लोग इनके इस त्यागपूर्ण कार्य से बहुत प्रभावित हुए और बाद में इनको कांग्रेस की ओर से पश्चिम बगाल विधान परिषद् का सदस्य चुना गया। इस प्रकार ये अपने कामों से सभी का मन जीत लेते हैं।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी मे पद पर रहकर इन्होने काफी वर्षों तक सवा-कार्य किया। इन्हीं के प्रयत्न से वहाँ पर प्राकृतिक चिकित्सा विभाग भी खुला। डायमण्ड हार्बर में इनका अपना बहुत सुन्दर बगीचा था जिसको दान देकर इन्होंने वहाँ "प्रकृति निकेतन" की स्थापना की। जगह ही नही, इन्होंने इस काम मे लाखो रुपयों का दान दिया। धर्मचन्दजी का यह कार्य स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। प्राकृतिक चिकित्सा पर इन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं जो बहुत उपयोगी हैं।

वास्तव में धर्मचन्दजी बहुत प्रेमी सज्जन हैं। गरीबों की सहायता करना और गुप्त-दान देना इनका स्वभाव है। इस प्रकार के कर्मठ पुरुषो की हमारे देश को बहुत आवश्यकता है। मेरी कामना है कि धर्मचन्दजी पूर्ण स्वस्थ और दीर्घायु प्राप्त करते हुए सदा इसी उत्साह से समाज की सेवा करते रहें। □

साथी हो तो ऐसा

□ □

बजरंगलाल लाठ

श्री धर्मचन्दजी सरावगी से मेरा परिचय ६० वर्ष पहले से है। उनकी और मेरी ससुराल एक ही परिवार में होने के कारण यह परिचय गहरा होता गया। सेवा संस्थाओं के माध्यम से श्री सरावगीजी के साथ कार्य करने का अवसर भी लम्बे समय तक मिलता रहा। मैं जब भी ससुराल जाता था वहाँ भी सरावगीजी के दृढ विचार, उत्साही और साहसी जीवन की बाते सुनने को मिलती थी।

सरावगीजी के मन में विदेश-भ्रमण की उत्कट इच्छा थी। अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र होने के कारण माता-पिता उनको विदेश भेजने का साहस नहीं जुटा पाते थे। सरावगीजी के पिता स्व० बैजनाथजी सरावगी का समाज में बड़ा सम्मान था और वे व्यवसायी प्रतिष्ठानो में पदाधिकारी रहकर तथा मन्दिरों के माध्यम से सदा सेवा-कार्य करते रहते थे। फिर उस समय भारत के बाहर जाने का विचार लोग कम ही रखते थे।

कुछ दिनों बाद ही श्री सरावगीजी ने लंदन जाने का निश्चय किया। इनका दृढ़ निश्चय देख कर, न चाहते हुए भी पिताजी ने जाने की अनुमति दे दी। जब पिताजी ने धर्मचन्द को वापिस बुलाने के लिये लंदन में उन्हें पत्र

लिखा तो धर्मचन्दजी ने उत्तर लिखा कि जल्दी तो हवाई जहाज से आया जा सकता है अतः आप अनुमति दें तो आ जाऊँ। आखिर धर्मचन्दजी ने लंदन से करांची तक की यात्रा हवाई जहाज से ही की। धर्मचन्दजी शायद पहले भारतीय थे जिन्होंने हवाई जहाज से यह जोखिम भरी यात्रा की। इस प्रकार सरावगीजी प्रारम्भिक जीवन से ही कुछ कर दिखाने का साहस रखते थे और जो निश्चय कर लेते उसे कार्य रूप में परिणत करके ही छोड़ते थे।

श्री सरावगीजी जब लदन जाकर वापिस लौटे तो समाज ने इस यात्रा का कड़ा विरोध किया। यद्यपि सरावगीजी का पूरा परिवार ही धार्मिक था, पर समाज ने उनके मन्दिर प्रवेश पर रोक लगा दी। बाद मे प्रायश्चित स्वरूप पूरे जैन तीर्थों का भ्रमण करके आए तभी इन्हें मन्दिर में जाने की अनुमति मिल सकी। इस संदर्भ में जो संघर्ष हुआ उसकी अखबारो में काफी चर्चा रही। आगे चलकर तो सरावगीजी अपनी पत्नी, पिता और पुत्र के साथ अनेकों बार विदेश भ्रमण करने गए।

मुझे सरावगीजी जैसा साथी मिला जिससे मेरा मन भी सार्वजनिक कार्यों मे उत्साह से लगा रहा। बड़ाबाजार लाइब्रेरी और कुमारसभा पुस्तकालय मे तो मुझे सरावगीजी का साथ नही मिला पर १६३८ मे मैं जब मारवाडी रिलीफ सोसाइटी की कार्यकारिणी का सदस्य चुना गया तब फिर हम दोनों साथ ही गए। इसके बाद तो कभी वे कार्यकारिणी में रहे और मैं मंत्री बना, कभी वे मत्री बने और मैं कार्यकारिणी में रहा। अन्य संस्थाओं में भी वर्षों उनके साथ कार्य करने का सुअवसर मिलता रहा।

डायमंड हार्बर में उनका अपना बगीचा था जहाँ उन्होने प्रकृति-निकेतन बनाने का निश्चय किया। उसके लिए निर्माण कार्य, अर्थ-संचय और व्यवस्था-कार्य के लिए एक ट्रस्ट का निर्माण हुआ जिसमें ढेबर भाई, विजय सिंह नाहर, श्रीमन्नारायणजी अग्रवाल, राधाकृष्णजी नेवटिया, आनन्दीलालजी गोयनका, धर्मचन्दजी और मैं स्वय भी था। उन्होने प्रकृति निकेतन के लिए न केवल अपना बगीचा दान मे दे दिया बल्कि लाखों रुपये भी उसके लिए खर्च किए।

इस प्रकार मैंने देखा कि सरावगीजी जिस कार्य में लगे जी खोल कर लगे, सेवा भावना से प्रेरित होकर लगे, बिना किसी हिचकिचाहट के लगे।

मेरा पारिवारिक सम्बन्ध होने के कारण सरावगीजी से पारिवारिक बातें भी होती थी। वहाँ भी ये अपने नियमों को सामने रखकर चलते। घर में एक ही समय पकाया हुआ भोजन बनेगा, बाकी समय फलों और दूध से काम चलाना होगा। मैं अपने पुत्रों का सम्बन्ध ऐसे ही परिवार से करूँगा जो उस नियम में मेरा साथ दे—ऐसा सरावगीजी कहा करते। मैंने उनसे कहा कि लड़की के लिए इतना बड़ा नियम निभाना सम्भव नही होगा, तो बिना हिचकिचाहट के सरावगीजी ने कहा—"तब मेरे लिए भी सम्भव नहीं होगा।" इसी प्रकार खद्दर पहनते थे तो अपने चरखे से कते धागे से बना खद्दर ही पहनते।

सरावगीजी अपने जीवन-काल की कुछ कमजोरियों को भी मेरे आगे प्रकट कर देते थे। मैं सोचता रह जाता था कि देखो सरावगीजी कितने निर्भीक और बहादुर पुरुष हैं। वास्तव में वे मुझे अपना मित्र और सखा ही समझते हैं।

सरावगीजी विवाह-उत्सवों मे भाग लेते और सदा सार्वजनिक संस्थाओं में लगे रहते थे, पर इधर कुछ वर्षों से उन्होंने अपना कार्य क्षेत्र सीमित कर लिया है। ठीक भी है, हमारे शास्त्रो में लिखा है कि उमर के हिसाब से सभी कार्यों से मोह हटा लेना चाहिए।

खेलकूद और व्यायाम तो सरावगीजी को अत्यन्त प्रिय रहे हैं। उनके घर के सामने ही कर्जन पार्क में आर० एस० एस० की शाखा लगती है, जहाँ जाकर वे अब लाठी घुमाना सीख रहे हैं। अस्सी की ढलती उमर में उनका उत्साह देखकर जवानो को भी शर्म आने लगती है।

सरावगीजी के विकास में जहाँ उनके माता-पिता के प्रेम और उनके सद्-जीवन का प्रभाव पड़ा, वही सरावगीजी की अपने माता-पिता के प्रति अगाध श्रद्धा भी रही। इनकी माताजी मुझे कहा करती थी कि, 'देखो बजरंगजी! यह धर्मा कहता है कि माँ तू मरियो मत। भला मैं सदा जिन्दा कैसे रहूंगी।" ऐसा आत्मिक प्रेम था इनका अपने माता-पिता से। सरावगीजी ने अन्तिम समय तक दोनों की भरपूर सेवा की।

सरावगीजी की नई धर्म पत्नी भी एक आदर्श महिला है। हाथ से घर का काम करना, सरावगीजी के लिए स्वयं बाजार जाकर उनकी पसन्द के फल खरीद कर लाना, मदिर के दर्शन करना आदि उनका नियमित कार्य है। नौकर-चाकरों के साथ और बेटे-बहुओं के साथ अपने ममतापूर्ण व्यवहार के कारण वे परिवार में आदर से पूजी जाती हे।

सरावगीजी बड़े कर्मठ व्यक्ति हे। जब इन्होने कारबार संभाला उस समय व्यापार की स्थिति अच्छी नही थी। इन्होंने अपने परिश्रम और अध्यवसाय से ही उसे आगे बढ़ाया और यश तथा धन दोनों अर्जित किया।

सेवा और त्याग तो इनके परिवार का स्वभाव रहा है। इनके स्व० पिता श्री बैजनाथजी अस्पताल में जाकर रोगियों में फल वितरित किया करते थे और प्रत्येक रोगी से बड़ी आत्मीयता से मिल कर उनकी सुख-सुविधा की चिंता किया करते थे। इस कार्य से उनको परम आनन्द प्राप्त होता था।

मैं सरावगीजी को अपने ज्येष्ठ भ्राता के तुल्य मानता आया हूं। अतः जिन भाइयों ने सरावगीजो का अभिनन्दन करने का निश्चय किया है उन्हें मैं हृदय से बधाई देता हूँ। □

समर्पित सेवक

□ □

गणेश प्रसाद सराफ

श्री धर्मचन्दजी सरावगी से मेरा सम्पर्क मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में विशेष रूप से हुआ। ऐसे हम दोनो एक दूसरे से बहुत पहले से परिचित थे किन्तु सम्पर्क बढने पर ही मनुष्य का मूल्यांकन होता है। इसलिए उनके निकट आने पर ही मैंने उनको समझा। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में दो पार्टियां थीं, एक पार्टी में मैं, धर्मचन्दजी आदि थे जिसके संयोजक श्री भालचन्द्रजी शर्मा थे। मैं गांधीवादी विचारों का समर्थक हूं एवं कुछ महीनों तक साबरमती आश्रम की सेवा करने का भी सौभाग्य प्राप्त कर चुका हूँ। श्री धर्मचन्दजी सरावगी को भी मैंने गांधीवादी विचारों का उपासक एव प्रबल समर्थक पाया इसी कारण मेरा झुकाव उनकी ओर विशेष रूप से बढता गया।

श्री धर्मचन्दजी सरावगी ने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के कई विभागों का दायित्व ग्रहण कर प्रधान मंत्री तक बने। किन्तु सोसाइटी में सबसे बड़ा एव अभिनन्दनीय कार्य जो उन्होंने किया वह था प्राकृतिक चिकित्सा विभाग की स्थापना।

सन् १९४६ की बात है—हिन्दू-मुसलमानों का नरमेध! दानवता का वीभत्स ताण्डव! हाहाकार मचा था। कलकत्ते में यह ताण्डव अभी शान्त भी नहीं हो पाया था कि पूर्वी बंगाल की तरफ अग्रसर हो गया। यह १९४६ का अक्टूबर

माह खूनी माह् के नाम से चिरस्मरणीय रहेगा। यह रक्तरंजित प्रतीक बन गया था। सामूहिक हत्याएँ, बलात्कार, अग्निकाण्ड एवं बलात धर्म परिवर्तन कल्पना के बाहर था। मैं और श्री मंगतूराम जालान पूर्वी बंगाल के ग्वालन्दो में रिलीफ कैम्प चालू कर एवं नोवाखाली की रिपोर्ट संग्रह कर कलकत्ते लौटे ही थे कि महात्मा गांधी से मिलने का कार्यक्रम बन गया। उस समय महात्मा गांधी बेलियाघाटा में ठहरे थे और शान्ति स्थापना का प्रयत्न कर रहे थे। सोसाइटी का एक प्रतिनिधि मंडल बेलियाघाटा में महात्मा गांधी से मिलकर पूर्वी बगाल का सेवाकार्य करने हेतु मिला। उक्त प्रतिनिधि मण्डल में श्री धर्मचन्दजी प्रमुख थे। अन्य विषयों पर आलोचना होने के बाद महात्मा गांधी ने सोसाइटी में प्राकृतिक चिकित्सा का एक विभाग चालू करने की सलाह दी। महात्मा गांधी प्राकृतिक चिकित्सा को राष्ट्र की सर्वोपरि चिकित्सा मानते थे। महात्मा गांधी द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध में दी गई प्रेरणा की छाप श्री धर्मचन्दजी पर विशेष रूप से पड़ी। मेरा ख्याल है उसी समय से श्री धर्मचन्दजी ने अपना जीवन प्राकृतिक चिकित्सा के लिए न्यौछावर कर दिया और तन, मन, धन से प्राकृतिक चिकित्सा की प्रगति में जुट गए।

सोसाइटी में प्राकृतिक चिकित्सा का अप्रवेशित विभाग खुलवाया। धीरे-धीरे प्रवेशित विभाग खुलवाने में उन्होने सक्रिय प्रमुख भूमिका निभाई। केवल कलकत्ते में ही नही प्राकृतिक चिकित्सा को अखिल भारतवर्षीय रूप देने में वे प्रमुख रहे हैं। मासिक पत्रिका 'स्वथ्यजीवन' का प्रकाशन, प्राकृतिक चिकित्सा पर दर्जनों पुस्तक लिखकर इसका प्रचार किया। विष्णूपुर डायमण्ड हार्बर रोड पर प्राकृतिक चिकित्सा का अस्पताल एवं कालेज इन्ही की कीर्ति है। उसके लिए जमीन एवं अर्थ का सहयोग धर्मचन्दजी का सराहनीय रहा है। आज भारत वर्ष में सैकड़ों प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग-केन्द्र स्थापित है। सभी केन्द्रों के अधिकारी श्री धर्मचन्दजी को श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। एवं समय-समय पर श्री धर्मचन्दजी से अनुदान प्राप्त करते रहते हैं। आज भी उन्हें जब यह पता चलता है कि कोई प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र अर्थ एवं अन्य किसी भी कारण से शिथिल पड़ता जा रहा है तो वे बहुत ही कष्ट महसूस करते है एव यथासाध्य उन्हें सहयोग देने की चेष्टा करते हैं। वे बड़े ही विनोदी एवं हंसमुख हैं। ८१ वर्ष की उम्र में भी वे अपने को स्वस्थ रखते हुए कठिन व्यायाम करते हैं। उसका कारण उनकी विनोद प्रियता है। वे छोटी से छोटी चीज को भी बेकार नहीं समझते। मनुष्य जिसे बेकार समझ कर फेंक देता है उसे भी वे अपनी कलात्मक अभिरुचि से उपयोगी बना देते हैं। हमलोगों के साथी श्री मोहन धरनीधरका तो उनके इस कार्य की चर्चा बराबर करते हैं। वे उदार प्रकृति के दानी व्यक्तियों में से हैं। वे अपना अनुदान उसी को देना चाहते हैं जिसका उपयोग होता है।

उनके आफिस में टेबुल पर एक छपा हुआ मंत्र है कि—

एक घण्टा चिन्ता कम करें, बदले में एक घण्टा अधिक हंसे।

एक दावत का मोह को छोड़ें—बदले में घर का सादा भोजन करें।

एक घण्टे बिजली में कम रहें-एक घण्टा सूर्य की हल्की किरण में अधिक रहे।

एक घण्टे मोटर में कम चढ़ें—एक घण्टे पैदल चलें।

एक प्याली चाय कम पियें—एक प्याली दूध बिना चीनी का पिए। एक बार अन्न खाना छोड़ दें—एक बार फलाहार करें।

एक दिन का उपवास सप्ताह में अवश्य करें।

इसी बीज मत्र पर चलकर श्री सरावगीजी ८१ वर्ष की उम्र में भी बड़ा बाजार युवक सभा में प्रति दिन एक घण्टे तक कठिन व्यायाम जैसे पेरलल वार, मुगदर, दण्ड-बैठक या व्यायाम नियमित रूप से करते हैं। लाठी चलाने का भी उन्हें शौक है। वे बड़े ही सौम्य एव सहृदय स्वभाव के व्यक्ति हैं। हंसते हुए सबसे मिलना, उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी खोज रखना—अस्वस्थ रहने पर उसके स्वस्थ रहने का उपाय बताना तो उनका दैनिक कार्यक्रम है।

ईश्वर उनको शतम जीवी करें जबतक इस संसार में रहें स्वस्थ रहें जिससे दूसरों को भी प्रेरणा मिले। □

अस्सी में साठा और साठा में पाठा

□ □

डा० बी० एन० पाण्डेय

हमारे देश में बहुत से दीर्घायु के व्यक्ति ग्रामों व नगरों मे जीवन यापन करते हैं। पर जो इक्यासी वर्ष के व्यक्ति काम करते हुए नाना विषयों में रुचि रखते हैं ऐसे ही एक व्यक्ति, धार्मिक एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता, जो अनेक सार्वजनिक संस्थाओं से सम्बन्धित हैं—चिर परिचित, उदार चरित्र, शान्त और गम्भीर रस से परिपूर्ण श्री धर्मचन्द सरावगी की उदात्त भावनाओं से प्रभावित होकर मैं उनसे आकृष्ट हो जाता हूँ।

प्राकृतिक चिकित्सा जगत में प्रायः हर व्यक्ति आपसे परिचित है एवं प्रेरणा पाकर अपने को धन्य समझता है। इक्यासी वर्ष में भी पूर्ण स्वस्थ हैं। आजतक दैनिक व्यायाम एवं प्राकृतिक चिकित्सा आदि में पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। शरीर में अखण्ड शक्ति, मन में अखण्ड आनन्द एवं इन्द्रियों में अखण्ड बल, ओज आदि को धारण किए हुए बच्चो के साथ बच्चे, एवं तरुणों के साथ तरुण, बृद्धों के साथ बृद्ध बिना भेद-भाव के मधुर मुस्कान के साथ सबका अभिनन्दन करते हैं। कुछ लोग तो आप से मिलकर आशीर्वाद और प्रेरणा ही पाकर आनन्द विभोर हो जाते हैं। ज्ञान गर्भित और मेधा शक्ति वाले पूजनीय सरावगीजी प्राकृतिक चिकित्सा के शब्दकोष या ज्ञान के खजाना है। इन्होंने

प्राकृतिक चिकित्सा पथ्याहार एवं योगासन पर अपनी दैनिक जीवन रूपी प्रयोगशाला में प्रयोग कर इस चिकित्सा को उपकृत किया है। इनके द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा सत्यं शिवं सुन्दरम् बनकर भारतवर्ष में बट-वृक्ष के समान विकास की ओर अग्रसर है। प्रथम प्राकृतिक चिकित्सा का दर्शन एवं मा० रि० सोसाइटी में महात्मा गाँधी की प्रेरणा से बहिर्भाग का उद्घाटन हुआ। क्रमशः स्त्री प्राकृतिक चिकित्सा विभाग, इण्डोर चिकित्सा विभाग १९५७ मे आपके प्रयत्नों से प्रारम्भ हुआ एवं पूर्ण सफलता के साथ १९८३ तक चला।

श्री धर्मचन्द सरावगी १९३४ में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के रसायनशाला के मत्री चुने गए। १९४५ मे मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रधानमत्री चुने गए एव १९४७ में प्राकृतिक चिकित्सा के विशेष ज्ञान के लिए सपत्नीक विश्व भ्रमण किया। १९५६ मे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा का प्रथम अधिवेशन कलकत्ता नगरी मे आयोजित किया जिसमें भारतवर्ष के कोने-कोने से प्राकृतिक चिकित्सकों ने योगदान दिया एवं सम्मेलन पूर्ण रूप से सफलीभूत हुआ।

फलस्वरूप आपने निर्विरोध प्राकृतिक चिकित्सा के महामंत्री के रूप में इस पद को सुशोभित किया।

१९५८ मे आप १५ वी विश्व शाकाहारी कांग्रेस कलकत्ता के प्रधान मत्री चुने गए। इस कांग्रेस में देश-विदेश के अनेक लोग उपस्थित थे। उस समय दस दिनो का उपवास करने के बाद भी शाकाहार पर सारगर्भित भाषण देकर आपने शाकाहार एव प्राकृतिक जीवन पद्धति की उपादेयता बताई। शाकाहारी भोजन, फल, दूध, सलाद, सब्जियां ही मनुष्य के दैनिक भोजन है। सन् १९६० ई० में सपत्नीक एव अपने पिताजी के साथ रूस यात्रा पर गए। बाद में आप बगाल फ्लाइंग क्लब के कोषाध्यक्ष चुने गए एवं उस पद को सुशोभित किया।

१९६२ ई० में गो सम्वर्द्धन समिति के सदस्य चुने गए। बाद में समिति में राजनीति के समावेश से मन खिन्न हो गया।

१९६३ ई० में आपने जैन उद्यान को प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय के लिए प्रकृति निकेतन ट्रस्ट को दान स्वरूप देकर अपनी उदारता एवं प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति अगाध प्रेम का परिचय दिया। इसी साल इन्होंने श्री मोरारजी

देसाई के करकमलों द्वारा कोणशिला की स्थापना करवाई। दूसरी बार जब विश्व भ्रमण के लिए विदेश गए तो प्राकृतिक चिकित्सा के ज्ञान की तलाश के लिए अनेक देशों का भ्रमण किया एवं गहरे सागर में प्रवेश कर मोती रूपी ज्ञान प्राप्त किया। श्री सरावगीजी प्राकृतिक चिकित्सा के रेडीरेकनर हैं। उन्होने करीब २५ पुस्तकों की रचना करके प्राकृतिक जगत में चिकित्सा एवं पथ्य तथा सुलभ चिकित्सा से रोगों का निवारण करने का सहज तरीका बताया। यह हिन्दी साहित्य एवं चिकित्सा क्षेत्र में अमूल्य योगदान है। आज का मानव गठिया, वात रोगों, दमा, रक्तचाप इत्यादि रोगों से ग्रसित है। लोग इन कष्टदायक पुरानी बीमारियों से छुटकारा पाने की सुलभ विधि पुस्तकों को पढ़कर स्वयमेव चिकित्सा कर सकते है इसका विश्वास जगाया। विश्व प्रसिद्ध डा० सेल्टन की पुस्तक "फास्टिंग कैन सेभ योर लाइफ" का हिन्दी रूपान्तर " उपवास से जीवन रक्षा " का प्रकाशन कराया। इनकी लिखी हुई पुस्तके अमूल्य निधि हैं। जनता की मांग पर इनके अनेकों संस्करण निकल चुके है। छोटे-छोटे रोगो पर २५ पन्नों की पुस्तिकाएँ लिखकर देश को उपकृत किया। लोगों को जलना, सर्दी, बुखार, खाँसी, जुकाम, दर्द, फोड़े-फुंसी को छोटे-छोटे प्रयोगों से दूर करने के लिए साधारण उपचार से घर बैठे चिकित्सा करना सिखाया।

१९६६ ई० मे आप पश्चिम बंगाल विधान सभा के सदस्य चुने गए। १९६६ ई० में श्री दिगम्बर जैन भवन के ट्रस्टी चुने गए। प्राकृतिक चिकित्सा के साथ लोगो को कुटीर उद्योगों, अध्यात्म व धर्म के सगम की त्रिवेणी में स्नान करना सिखाया। शुद्ध मधु और पुस्तको के बिक्री केन्द्र प्रारम्भ कर इसकी उपयोगिता बढाई। 'हेल्थ फूड स्टोर' बिक्री केन्द्र की तीव्र इच्छा रखनेवाले सरावगीजी का दैनन्दिन भोजन देखकर आप लोग आश्चर्य चकित हो जाएँगे। आप प्रत्येक दिन का पथ्य डायरी मे लिखकर दूसरों को प्रेरणा देते रहते हैं। उपवास, फलाहार, दूध, दाल चावल, चोकरदार आटे की रोटो, सब्जो, सलाद, मधु का आहार प्रतिदिन इनके भोजन मे समाविष्ट है।

१९७२ में छठी बार विदेश यात्रा पर गये तो बाद में चित्रकला सीखना आरम्भ किया। सीखना उनका ध्येय है। दत्तात्रेय भगवान की तरह प्रत्येक साल किसी को गुरु बनाकर विभिन्न विषयों को जैसे, तैरना, हवाई जहाज चलाना

घुड़सवारी, छाती पर पत्थर रखकर तुड़वाना, चित्रकारी सीखना प्रारम्भ किया १९८५ में ८० वर्ष की आयु में लाठी चलाना सीखना शुरू किया है। यह उनकी जीवन संगिनी बन गई है।

१९७८ ईस्वी में नेशनल फिजिकल एफिसियेंसी टेस्ट के ४५ वर्षीय वर्ग में थ्री स्टार विजेता चुने गए। १९८४ में नेचरक्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट के सभापति चुने गए।

जिन्दगी में वक्त की वेजाँ रवानी है,
अगर जिन्दादिली है तो हर समय जवानी है।

उपरोक्त दोनों पंक्तियां इस मनीषी पर पूर्णरूप से चरितार्थ होती हैं। अस्सी में पाठा, मांसल पुष्ट वदन एव मांसपेशियां, गौर एवं उन्नत ललाट, चौड़े वक्षस्थल देखकर सिर झुकाकर शत् शत् प्रणाम के आप अधिकारी हैं। इन्हें आशीर्वाद देने की धृष्टता तो नही कर सकता, सम्मान कर सकता हूँ यह कह कर नमामि हे उदीयमान, कान्तिमान, पुरुषसिंह ! □

प्राकृतिक चिकित्सा के भीष्मपितामह

□ □

विट्ठलदास मोदी

श्री धर्मचन्द सरावगी से मेरा पहला परिचय उनके घर पर ही कलकत्ते में हुआ था। बात सन् १९४३ की है। उस समय उनकी पहली पत्नी सग्रहणी से पीड़ित थीं। उन्होने मुझसे ही नही अनेक प्राकृतिक चिकित्सको से अपनी पत्नी की चिकित्सा कराई। पुरानी सग्रहणी ने उनके शरीर को जर्जर कर दिया था। अत: वे बच न सकीं पर उनकी बीमारी की वजह से धर्मचन्दजी अनेक प्राकृतिक चिकित्सकों के परिचय में आये। प्राकृतिक चिकित्सा को इन्हे समझने का मौका मिला और प्राकृतिक चिकित्सा इन्हें भा गई। सन् १९४२ का दिन और आज का दिन भी धर्मचन्दजी प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार और उत्थान में अपने दृढ़ निश्चय के साथ अटूट भाव से लगे हुए हैं।

इनके चिंतन ने इन्हें पहली बात यह बताई कि यदि प्राकृतिक चिकित्सा को प्रस्थापित करना है तो इसका संगठन बनाना चाहिए। एतदर्थ इन्होंने १९५६ में

भारत के कोने-कोने से ज्ञात और अज्ञात प्राकृतिक चिकित्सकों को निमन्त्रित कर और आने-जाने का रेल किराया अपनी जेब से भेजकर कलकत्ते बुलाया और "अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद" की स्थापना की। इनके उत्साह को देखकर सबने सर्वसम्मति से इन्हें ही परिषद् का महामन्त्री चुना। अब प्रति वर्ष कहीं न कहीं परिषद् का वार्षिक सम्मेलन होने लगा। इस सम्मेलन में प्राकृतिक चिकित्सक तो शामिल होते ही हैं हजारों की सख्या में प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी और प्राकृतिक चिकित्सा से लाभान्वित व्यक्ति भी भाग लेने लगे।

प्राकृतिक चिकित्सा को अखिल भारतीय रूप मिले और सरकार तक आसानी से पहुंचा जा सके इसके लिए हमेशा धर्मचन्दजी ने इसके सभापतित्व के लिए किसी न किसी प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी राजनेता की सेवाएँ प्राप्त की। इस क्रम में बालकोवा भावे, ढेबर भाई, मुरारजी भाई देसाई, कमलनयन बजाज, श्रीमन्नारायण, प्रो० सिद्धेश्वरजी और बहन विमला देश पाण्डे आते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा को इन वर्षों में इनकी सेवा और प्रयत्न के बावजूद जो स्थान मिलना चाहिए था वह नहीं मिला पर इतना तो है ही कि भारत की जनता के कान में प्राकृतिक चिकित्सा का नाम पड़ा, वह जान गई कि चिकित्सा की एक पद्धति प्राकृतिक चिकित्सा भी है और वह प्रभावशाली है।

कलकत्ते के निवासियों को प्राकृतिक चिकित्सा का लाभ देने के लिए धर्मचन्दजी ने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के अस्पताल में—जहां एलोपैथी, होम्यो पेथी, आयुर्वेद द्वारा चिकित्सा होती है—प्राकृतिक चिकित्सा का एक बहिरंग चिकित्सालय खुलवाया और उसके चिकित्सक के तौर पर डा० कुलरंजन मुखर्जी की सेवाएँ प्राप्त की। फिर अपने मित्रों से एक बडी रकम एकत्रित कर सोसाइटी में प्राकृतिक चिकित्सा का अन्तरंग विभाग भी खुलवाया जिसका उद्घाटन स्वर्गीय घनश्यामदासजी बिड़ला से करवाया गया था।

पर धर्मचन्दजी के मन में तो प्राकृतिक चिकित्सा को एलोपैथी के समकक्ष प्रस्थापित करने की थी। वे बार-बार परिषद में प्राकृतिक चिकित्सा के प्रशिक्षण की बात चलाते और उसका पाठ्यक्रम बनवाते। प्रशिक्षण काल के सम्बन्ध में तरह-तरह की राय मिलती। कोई एक वर्ष बताता कोई दो वर्ष पर धर्मचन्दजी हमेशा प्रशिक्षण चार वर्ष का हो इस पर जोर देते। चार वर्ष का कोर्स भी

इन्होंने अपने प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी डाक्टरों से बनवा लिया था। सन् १६५७ में आरोग्य मन्दिर में जब परिषद् की कार्यकारिणी की बैठक हुई तो धर्मचन्दजी चाहते थे कि कोर्स चार वर्ष का हो उनकी यह राय मान ली जाय। पर कोई भी मानने को तैयार नहीं था। मैंने सबको समझाया कि यारों धर्मचन्दजी की बात मान लो। बात मान ली गई। धर्मचन्दजी की प्रसन्नता का पारावार नहीं था। वे उस चार वर्ष के कोर्स के सेलिवस को सिर पर यो रखकर कलकत्त ले गए जैसे कोई गीता को सर पर रखकर ले जाता है।

प्रशिक्षणालय हो तो चिकित्सालय भी होना चाहिए। अन्यथा विद्यार्थी पढ़ेंगे क्या, देखेंगे क्या! अत: इन्होने प्राकृतिक चिकित्सालय और प्रशिक्षणालय की साथ-साथ योजना बनाई। कलकत्त से २० किलोमीटर दूर अपनी कई एकड़ जमीन पर बना बगीचा और कई लाख रुपये दान मे दिए। आठ लाख रुपये कलकत्ते के दानियों से इकट्ठे किए, चार लाख केन्द्रीय सरकार से प्राप्त किए और चिकित्सालय तथा शिक्षालय बना। शिक्षालय के प्राचार्य लखनऊ के सरदार जसवंत सिंह नियुक्त हुए।

चिकित्सालय भी चला और प्रशिक्षणालय भी। पर कई कारणों से प्रशिक्षणालय को दो वर्ष में ही बन्द करना पड़ा। शिक्षालय बन्द तो हुआ पर मरा नहीं। उसी के आधार और बुनियाद पर डा० बेंकटराव ने हैदराबाद मे गाँधी नेचरक्योर कालेज, उसी चार वर्ष के कोस को लेकर प्रस्थापित किया जो उस्मानियां युनिवर्सिटी से आज सम्बद्ध है और सफलतापूर्वक चल रहा है। चिकित्सालय तीन-चार वर्ष किसी तरह और चला और फिर बन्द हो गया।

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार के लिए धर्मचन्दजी ने परिषद से 'स्वस्थ जीवन' प्रकाशित कराया जो आज भी चल रहा है। इसके प्रकाशन में धर्मचन्दजी को जो श्रम करना पड़ा वह मैं जानता हूं। सम्पादक प्राप्त करने की हमेशा कठिनाई रही फिर भी जो भी सम्पादक मिला उसे स्वयं निर्देशन देकर पत्र के अनुरूप सामग्री जुटवाते और पत्र में एक पृष्ठ प्रतिमास स्वय लिखते। इस एक पृष्ठ का मेटर कभी गम्भीर नही रहा।

धर्मचन्दजी इसमें व्यंग्य या चुटकुलों द्वारा लोगों के स्वास्थ्य सम्बन्धी अज्ञान पर चोट करते और सही दृष्टिकोण देते।

प्राकृतिक चिकित्सा के साहित्य की आपूर्ति के लिए भी धर्मचन्दजी हमेशा सजग रहे। "स्वस्थ जीवन" के कई बड़े-बड़े विशेषांक निकलवाये, कइयों को प्रेरित कर अनेक पुस्तकें लिखवाई और जैसे भी बना स्वयं पच्चीस छोटी-बड़ी किताबे लिखी। इन पुस्तकों को प्राकृतिक चिकित्सा के पाठकों द्वारा हमेशा आदर मिला। ये पुस्तकें प्राकृतिक चिकित्सा और योग के बारे में सीधे सरल शब्दो में और शैली में अपनी बात पाठक तक पहुंचाने में सर्वथा समर्थ हैं।

चिकित्सालय दस वर्ष तक बंद रहा। बार-बार सरकार से आग्रह किया गया कि वह चिकित्सालय को लेकर स्वयं चलावें पर सरकार लेने को तैयार नहीं हुई। इसी बीच बंगलोर के श्री सीतारामजी जिंदल ने सन् १९८० में बगलोर में अपने ट्रस्ट के मार्फत एक भव्य प्राकृतिक चिकित्सालय बनवाया। उसमें उन्होंने उच्चवर्ग के लोगों के लिए सारी सुख-सुविधाएं जुटाई। श्री जिंदल की यह समझ कि इस वर्ग को भी प्राकृतिक चिकित्सा की जरूरत है, काम आई और बगलोर का प्राकृतिक चिकित्सालय चल निकला।

बंगलोर के चिकित्सालय को श्री बिमलप्रसादजी जैन ने देखा तो इनकी समझ में आ गया कि ऐसे ही प्राकृतिक चिकित्सालय की कलकत्ते को भी जरूरत है। वे धर्मचन्दजी से मिले। फिर क्या था पुराने प्राकृतिक चिकित्सालय की मरम्मत की योजना बनाई, फिर श्री आनन्दीलालजी गोयनका मिल गये। तीस लाख रुपया इकट्ठा किया और चिकित्सालय का पुनर्निर्माण कराया। चारों तरफ सफाई कराई कि मच्छरों का प्रकोप न हो। श्री आनन्दीलालजी को अपने मन का काम मिला। वे और उनकी पत्नी इसी चिकित्सालय के रख-रखाव और देख-भाल में लगे रहते हैं आज भी।

मैं पिछले साल १७ अक्टूबर से २७ अक्टूबर तक के दस दिन के पूज्य श्रीसत्यनारायणजी गोयनका द्वारा कलकत्ते में सचालित विपश्यना ध्यान शिविर में सम्मिलित होने गया था। २७ अक्टूबर को प्रातः दस बजे जब शिविर का समापन हुआ तो मैंने पहला काम यह किया कि सीधे प्राकृतिक चिकित्सालय

पहुंचा। बीच में बड़ा-सा स्वच्छ तालाब, चारों ओर रोगियों के आवास और चिकित्सागृह, फूल-पत्तियों से लदा हरियाली से भरपूर बाग देखकर तबियत खुश हो गई। वहाँ इसके चिकित्सक मेरे पुराने मित्र डा० भरत नारायण पाण्डेय और उनके सहयोगियों से मिला। सबसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इत्तिफाक से वहाँ धर्मचन्दजी और उनकी पत्नी मिल गईं। ये लोग हर शनिवार की संध्या को चिकित्सालय आ जाते हे और वहाँ अपना स्वप्न साकार देखकर प्रसन्न मुद्रा में सोमवार को सुबह कलकत्ते लौट जाते हे। धर्मचन्दजी और उनकी पत्नी से खूब बातें हुईं।

यह देखकर बड़ा संतोष हुआ कि धमचन्दजी का प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति उत्साह कम नहीं हुआ है। धर्मचन्दजी ने मुझे चिकित्सालय के उद्घाटन का वीडियो कैसेट दिखलाया। इसका उद्घाटन श्री लक्ष्मीनिवासजी बिड़ला ने २०-१-८४ को किया था। देखकर लगा कि समारोह निश्चितरूप से बड़ा भव्य रहा होगा। दुःख भी हुआ कि मैं समारोह में उपस्थित न हो सका। अनेक वक्तृता और आशीर्वचनों के बाद चित्रपट पर एक आकर्षक युवक आया। लम्बा सफेद कुर्त्ता, जवाहर कट जैकेट, सफेद धोती, पैरो में चप्पल। वह मुझे बड़ा स्वस्थ लगा। मैंने धर्मचन्दजी से पूछा "यह युवक कौन है ?" धर्मचन्दजी मुस्कराकर बोले "आपके बगल में ही तो बैठा है।" मैं चौंका और मेरे हृदय से निकला कि प्राकृतिक चिकित्सा का यह भीष्मपितामह इसी तरह हमेशा जवान बना रहे और प्राकृतिक चिकित्सा के उन्नयन के लिए प्रयत्नशील रहे। □

सहस्र धारा के प्रतीक-पुरुष

□ □

डा० हीरालाल

प्राकृतिक छटा के बीच शीतल वातावरण, राँची में सन् १९०५ ई० में श्री सरावगीजी का जन्म हुआ।

भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा जगत में श्री धर्मचन्द सरावगी सप्तरश्मि से सुशोभित इन्द्रधनुष हैं। इन्द्रधनुष का दृष्टिगोचर होना ही होने वाले आनन्द वर्षा का प्रतीक है। कहावत है सांझे धनुष सकारे पानी। श्री धर्मचन्दजी का नाम आते ही स्वास्थ्य-वर्षा की प्रतीक्षा करना स्वाभाविक है। फिर तो वह वर्षा सहस्र धारा के रूप में प्रस्फुटित होती है।

यों तो श्री धर्मचन्द सरावगीजी का नाम प्राकृतिक चिकित्सा जगत में सन्-१९४४ ई० से ही सुनता था पर साक्षात्कार तो मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, कलकत्ता में प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खोलने के लिये हुई बैठक में प्रथम बार १९४६ में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में हुआ। प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में

कर्मवीर योगी स्व० श्री महावीर प्रसाद पोद्दार एवं डा० कुलरंजन मुखर्जी आदि अनेक प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी व भक्त उपस्थित थे। उस समय गौरवर्ण श्री सरावगीजी खादी की कुर्त्ता-धोती में पधारे। चेहरे पर मधुर मुस्कान, आँखों में प्रेम ज्योति एवं चाल में अनुशासनयुक्त सन्तुलन था। आये हुए लोगों का उन्होंने स्वागत करते हुए आभार प्रदर्शित किया।

अनेक तथ्यों एवं गाँधीजी की सामयिक मांग सामने रखते हुए प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खोलने पर गम्भीर एवं दिल खोलकर पक्ष-विपक्ष पर चर्चा हुई और प्राकृतिक चिकित्सालय खोलने का निर्णय हुआ। धन के नाम पर लोग, आये हुए दिग्गज धनी-मानी बगलें झांकने लगे और प्रश्न आया कि म्याऊँ का ठोर कौन पकड़े। अधिकांश लोगो में धन लगाने के नाम पर उदासीनता देखकर उस चालीस वर्षीय नौजवान श्री धर्मचन्दजी ने मुस्कराते हुए अभिमान शून्य मधुर स्वर में कहा कि यह भार मेरे कन्धे आसानी से सह सकते हैं। सबने इस घोषणा का हार्दिक स्वागत कर उन्हें बधाई से लाद दिया।

डा० कुलरंजन मुखर्जी ने चिकित्सक का भार अपने सबल कन्धों पर लिया और केवल दो सौ रुपया मासिक की श्री धर्मचन्दजी की सहायता स्वीकार की। फिर तो दोनों त्यागियों के त्याग के चक्के ने प्राकृतिक चिकित्सा के रथ को सफलतापूर्वक खीचना शुरू किया।

प्राकृतिक चिकित्सा का कार्य दिन दूना रात चौगुना बढने लगा और अल्प काल में ही प्रौढ़ नजर आने लगा। उसकी शोहरत शहर के कोने-कोने मे फैल गई। मरीज बढ़े तो स्टाफ की संख्या बढानी पडी। सफलता को देखकर धनी-मानी लोग दिल खोलकर सहायता करने लगे। जिस प्रकार जवाहरलालजी ने अपने पिता श्री मोतीलालजी को कांग्रेस में आने के लिये विवश किया ठीक उसी प्रकार श्री धर्मचन्दजी ने अपने माता पिता को प्राकृतिक चिकित्सा की ओर आकर्षित किया। फिर तो नित्य केवल श्री धर्मचन्द ही नही बल्कि उनके माता-पिता भी झोले में फल-सब्जी भरकर ले जाते और मरीजों में अहकार से नहीं, बड़े प्रेम से बाँटते और जो उनकी भेंट स्वीकार करते वे उनका उपकार मानते कि उन्होंने उन्हें सेवा का अवसर दिया। इस प्रकार उनकी माता श्रीमती जानकी देवी और पिता बैजनाथजी सरावगी तन-मन एवं धन से रोगियों को

सेवा कर कृतकृत्य होते और अपने लायक बेटे को जीवेम शरदः शतम् का आशीर्वाद देते। और आज उन्हीं के आशीर्वाद का ही फल है कि श्री धर्मचन्दजी हर प्रकार से सम्पन्न होकर समाज की सेवा करते हुए प्रत्येक सामाजिक, धार्मिक एवं सात्विक राजनीति में अग्रसर है।

भारत में श्री धर्मचन्दजी प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने कि प्राकृतिक चिकित्सा के अध्ययन के लिये विद्यार्थियों जैसे श्री गुलाबचन्दजी जैन एवं श्री बाबूलालजी जैन आदि को स्कालरशिप देकर चिकित्सालयों में अध्ययन के लिये भेजा।

वह अपने स्वास्थ्य के लिये तो सदैव जागरूक थे ही और उनके अंतःपटल पर अंकित था "नत्वह् कामये राज्य न स्वर्ग न पुनर्भवम्। कामये दुःख तप्तानां प्राणीनामार्त नाशनम्।" और इसी के अनुसार उनका चिंतन-मनन एवं कार्य निरन्तर चलता रहा।

वे प्राकृतिक चिकित्सा को केवल कलकत्ता एवं कुछ धनीमानियों तक ही सीमित नही रखना चाहते थे। अतः उन्होंने कुछ मित्रो, श्री राधाकृष्णजी नेवटिया एवं श्री बिहारी भाई शाह के सहयोग से बिनोवाजी के अनुज कर्मयोगी श्री बालकोवाजी की अध्यक्षता मे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की नींव की १९५६ ई० में कलकता मे देश के कोने-कोने से आये प्रतिनिधियो के बीच धूम-धाम से स्थापना की और लोगों के विशेष आग्रह पर स्वय महामंत्री का भार ग्रहण किया। और इस सस्था के अध्यक्ष क्रमश. श्री ढेवर भाई, श्री मोरारजी भाई एवं श्री श्रीमन्नारायणजी आदि हुए और वर्तमान अध्यक्ष प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद, ऊर्जा मंत्री, बिहार है।

हनुमान की भाति 'राम काज कीन्हें बिना मोहि कहां विश्राम' के अनुमार श्री सरावगीजी गाँधीजी के काम को आगे बढाने के, प्रचार-प्रसार एव उत्थान के लिये सतत प्रयत्नशील रहे और उन्होने १९५७ मे 'स्वस्थ जीवन' को जन्म दिया और श्री राधाकृष्ण जी नेवटिया प्रधान सम्पादक एव स्वय प्रबन्ध सम्पादक का भार संभालकर प्राकृतिक चिकित्सा के वैज्ञानिक विकास मे चार चाँद लगा दिये।

ज्यों-ज्यों श्री सरावगीजी एवं जनता का रस प्राकृतिक चिकित्सा में बढ़ता गया उनका उत्साह दिन दूना रात चौगुना होने लगा। उन्होंने फलस्वरूप १९६३

में प्रकृति निकेतन ट्रस्ट के अन्तर्गत भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा विद्यापीठ की तत्कालीन उप प्रधान मंत्री श्री मोरारजी भाई देसाई से पवित्र धरती, जिसे श्री सरावगी जी ने दान दिया पर, नींव डलवायी और उसके प्रथम प्रिंसिपल बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न वयोवृद्ध डॉ० एस० जे० सिंह हुए और कई बैच निकाले जो देश के कोने-कोने में चिकित्सालयों का संचालन कर रहे हैं। विद्यापीठ के साथ ही खेमका प्राकृतिक चिकित्सालय की भी स्थापना कर इन्होने चोली दामन के सिद्धांत को चरितार्थ किया।

इतने पर भी विश्राम कहाँ। उस प्रकृति निकेतन ट्रस्ट के अन्तर्गत चलने वाले प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग अनुसंधान सस्थान (नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च ईन्स्टीच्यूट) का श्री आनन्दीलालजी गोयनका के संचालन मे आधुनिकीकरण किया गया। आज तो यह चिकित्सालय हर प्रकार की भौतिक-सुख-सुविधाओं से सम्पन्न है। श्री गगाप्रसाद बिड़ला के अनुदान से वहां महिलाओं के लिए विशाल चिकित्सालय की नीव पड़ गई है जो शीघ्र बनकर तैयार हो जायेगी।

मैं ज्यों-ज्यों श्री सरावगीजी के निकट आता गया उनके चतुर्मुखी गुणों से आकर्षित होकर उनके प्रति मेरी श्रद्धा उत्तरोत्तर बढ़ती गई और गागर मे सागर का मुझे दर्शन हुआ जिन मे से कुछ का ही नमूने के तौर पर यहां मैं वर्णन करने जा रहा हूं। अभी तक तो आपके समक्ष उनके प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी गुणों का ही सिंहावलोकन किया गया। आइये अब आपको और नजारों का दर्शन कराया जाय।

स्वावलम्बन : लखपति पिता की एकमात्र संतान होते हुए भी अखबार बेचकर, नौकरी कर-कर धन सग्रह करके यूरप की सैर पर निकले। फिर तो पिताजी का दुःखी होना स्वाभाविक था।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात : कहावत को अपने जीवन में चरितार्थ किया। १६ वर्ष की आयु में ही कुशाग्रबुद्धि बालक कुशल मोटर चालक बन गया। इतना ही नहीं १९३० ई० में वायुयानचालक भी बने और १९६१ में बंगाल फ्लाइंग क्लब के कोषाध्यक्ष भी चुने गये।

जैसी चाह वैसी राह : वास्तव में मनुष्य जो बनना चाहे बन सकता है। इसके प्रमाण श्री सरावगी जी हैं। स्कूल एव कालेज में गये बिना ही

विद्याव्यसनी, वीणावादिनी सरस्वती के उपासक श्री सरावगीजी ने केवल अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, बंगला एव महाजनी का अक्षर ज्ञान ही नहीं प्राप्त किया बल्कि उच्चकोटि के लेखक बन बीसों पुस्तकों का सुन्दर सृजन एवं पत्र-पत्रिकाओं में अंग्रेजी, हिन्दी में लेख लिखकर मानव का कल्याण किया।

अहिंसक राजनीतिज्ञ : सात्विक रूप से राजनीति में भाग लेते रहे और स्वतन्त्रता की लड़ाई में तन, मन एवं धन से सहयोग करते रहे पर सब कुछ निष्काम भाव से। आजादी के बाद १९५२ में कलकत्ता कारपोरेशन के निर्विरोध कौंसिलर चुने गए, १९४६ में राज्य सभा के सदस्य चुने गए और १९६६ में पश्चिम बगाल विधान सभा के सदस्य चुने गए।

विद्यार्थी जीवन : जीवन भर नई बात के जानने और सीखने की प्रवृत्ति ही उन्हें निरन्तर आगे बढ़ाती रही। सन १९४१ मे घुड़सवारी की शिक्षा ली। १९७५ में चित्रकला के विद्यार्थी बने और १९८५ में लाठी चलाने की कला सीखना आरम्भ किया। जब कभी कोई नई चीज उनके सामने आती है वे उसे सीखने का प्रयास करते हैं।

समाजसेवा : समाज सेवा की लगन तो बचपन से ही थी और जो समय-समय पर प्रस्फुटित हुई। प्रत्यक्ष रूप से तो १९३४ ई० मे बिहार के भूकम्प पीड़ितो की सेवा के लिए वहाँ जाकर तन मन एव धन से केवल स्वय ही नही बल्कि अपने इष्ट मित्रो एव अन्य उदार व्यक्तियो को भी सेवा के लिये प्रेरित किया।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की रसायनशाला विभाग के १९३७ में मन्त्री पद का उत्तरदायित्व सभाल कर कार्य को अधिकतम गतिशील किया। मारवाड़ी रिलीफ नामक पत्रिका निकाली और १९४५ में मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मंत्री का कार्य सभाल कर कार्य को प्रगति दी।

विश्व भ्रमण : २४ वर्ष की आयु में सन् १९२९ मे विदेश भ्रमण के साथ ही मास्को भी गए। उस समय ब्रिटिश शासन था तथा मास्को यात्रा करना मना था। १९४७ में सपत्नीक विश्व भ्रमण, १९६० में पत्नी एव पिताजी के साथ रूस यात्रा पर गये।

स्वास्थ्य के दीवाने : स्वास्थ्योन्नति एवं स्वास्थ्य प्रदर्शन देखना भी श्री धर्मचन्दजी की हाबी है। १९५३ में इंगलैण्ड में होने वाली स्वास्थ्य कांग्रेस

में कलकत्ता कारपोरेशन के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। कालेज स्क्वायर स्वीमिंग क्लब के १९५९ में सभापति चुने गए, १९७६ में ओलम्पिक देखने मैंनेइल (कनाडा) गए। १९७८ में नेशनल फिजिकल एफिसियेंसी टेस्ट के ४५ वर्षीय वर्ग में थ्री स्टार विजेता हुए।

कई संस्थाओं के पदाधिकारी : पद से दूर रहने की इच्छा व्यक्त करने के बाद भी लोगों के आग्रह पर १९५८ में १५वीं विश्व शाकाहारी कांग्रेस, कलकत्ता के महामन्त्री चुने गये। १९६२ में गो सवर्द्धन कौंसिल के सदस्य चुने गए। १९६७ में श्री दिगम्बर जैन भवन के ट्रस्टी चुने गए और १९८३ में बड़ाबाजार युवक सभा के सभापति हुए।

मारवाड़ी सम्मेलन, युगान्तर क्लब, कुमारसभा पुस्तकालय, बड़ाबाजार युवक सभा, दिगम्बर जैन नवयुवक समिति, मर्चेन्ट्स चेम्बर आफ कामर्स आदि सस्थाओं के पदाधिकारी रहे।

पारिवारिक जीवन : पारिवारिक जीवन का तो कहना ही क्या—परस्पर प्रेम, स्नेह, आदर, सम्मान सँजोया। इस समय तो घर मे वयोवृद्ध होने के नाते पूर्ण अधिकार सहित सचालक है पर किसी पर भी दबाव नही बल्कि प्यार ही आधार है।

आपके माता-पिता तो साक्षात मानव के अवतार तो थे ही, प्रथम पत्नी की तुलना भारतीय सस्कृति की देवी से को जा सकती है और वर्तमान द्वितीय पत्नी श्रीमती मोतीदेवी सरावगी तो सर्वगुण सम्पन्न भारतीय नारी होकर सरावगीजी के प्राकृतिक चिकित्सा कार्यों मे सहयोग देती है और उसका अपने जीवन, घर-परिवार में बच्चों पर उपयोग करती है जिससे परिवार मे वर्षों से एलोपैथिक चिकित्सक नहीं आते और न आपरेशन होते हैं।

सम्पूर्ण परिवार आदर्श परिवार है और यदि समाज में ऐसे परिवार बन जाएं तो मानव में प्रेम उत्तरोत्तर बढ़े। □

अनुपम अनुकरणीय

□ □

इन्द्रप्रसाद गुप्त 'सेवक'

कर्मयोगी श्री धर्मचन्द सरावगीजी एक साधारण सद्गृहस्थ, कुशल व्यवसायी तथा सफल समाज सेवक रहते हुए भी, अपने दीर्घ जीवन के ८१वे वर्ष में भी पूर्ण स्वस्थ, सुखी और सन्तुष्ट है। क्योंकि अभी तक प्रतिदिन नियमित रूप से व्यायाम तथा प्राकृतिक आहारोपचार का सेवन करते रहते हैं। उनके आदर्श जीवन से उसी प्रकार शिक्षा एवं प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए, जिस प्रकार ९१ वर्षीय नवयुवक, भारतवर्ष के भूतपूर्व प्रधान मंत्री, माननीय मोरारजी देसाई से करते हैं।

यह कहना अतिशयोक्ति नही कि "अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद" तथा उसके मासिक मुख-पत्र 'स्वस्थ जीवन" को अबतक जीवित रखने का सर्वाधिक श्रेय वास्तव में अभिमान रहित गुप्त दानी श्री धर्मचन्द सरावगीजी को ही है, जिन्होंने दिसम्बर १९६६ में पूर्ण हुए ११ वर्षों तक दोनों के प्रधान

कार्यालयों को स्वयं अपने निवास स्थान (जैन हाउस, ८/१, एस्प्लानेड ईस्ट, कलकत्ता ६९) में रखकर, अपने ही बच्चों के समान दोनों को लालन-पालन और पोषण प्रदान किया। उनकी मंत्रणा, योजना एवं कृपा से ही मैंने "स्वस्थ जीवन" मासिक पत्र का प्रकाशन जनवरी १९६७ से दिसम्बर ६८ तक केवल दो वर्षों तक वाराणसी से करने के बाद हार मानकर या असमर्थ होकर "गांधी स्मारक निधि" नई दिल्ली के हवाले किया था।

सन् १९५३ ई० की इंगलैंड में हुई स्वास्थ्य कांग्रेस में कलकत्ता कारपोरेशन के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने वाले, सन् १९५६ में अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के प्रधान मंत्री चुने जाने वाले, प्राकृतिक जीवन के धनी श्री धर्मचन्द सरावगीजी ने सन् १९६३ मे विष्णुपुर, डायमण्ड हार्बर रोड, कलकत्ता स्थित अपने विशाल उद्यान "जैन उद्यान" में "प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय" की कोणशिला माननीय श्री मोरारजी देसाई से लगवाई, जो आज एक आदर्श प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र तथा "नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इनस्टीच्यूट" के सुन्दर स्वरूप से भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा जगत में शोभायमान है।

प्राकृतिक चिकित्सा का और अधिक ज्ञानार्जन करने हेतु सन् १९६५ मे दूसरी बार विश्व भ्रमण पर जाने वाले और तन-मन-धन से प्राकृतिक चिकित्सा के लिए समर्पित जीवन बिताने वाले प्रकृति-प्रेमी श्री धर्मचन्द सरावगी सन् १९८२ में, अपनी तत्कालीन ७८ वर्ष की अवस्था मे एक अनुकरणीय नवयुवक की भांति "बड़ाबाजार युवक सभा" के सभापति चुने गये, और आज ८१वें वर्ष मे भी नित्य व्यायामशाला जाकर युवको की प्रेरणा बने हुए है। □

सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी

□ □

चन्दनमल 'चांद'

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ विशेषता होती है। कुछ व्यक्ति किसी एक क्षेत्र मे अपनी प्रतिभा दिखाते हे, लेकिन कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हें जिनकी प्रतिभा किसी एक क्षेत्र मे ही विकसित होकर रुकी नही रहती बल्कि एक साथ अनेक क्षेत्रों मे अपना प्रभाव व्यक्त करती है। ऐसे सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी हें श्री धर्मचन्दजी सरावगी।

जीवन के बाल्यकाल से लेकर आज तक उनका कार्य क्षेत्र देखें तो आश्चर्य होता है कि एक ही व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में अपनी बहुमुखी प्रतिभा से किस प्रकार चमक सकता है। समाज सेवा, प्राकृतिक चिकित्सा, गो सम्वर्द्धन, राजनीति, समाज सुधार, लेखन आदि अनेक प्रकार की प्रवृत्तियों में आपने अपनी प्रतिभा दिखाई। अनेक बार विश्व भ्रमण किया। और मारवाड़ी समाज में आप पहले व्यक्ति हे जो वायुयान चालक बने। विविध भाषाओ के ज्ञाता और विविध

विषयों के हिन्दी और अंग्रेजी में सशक्त लेखक श्री सरावगीजी पश्चिम बंगाल विधानसभा और राज्यसभा के सदस्य भी चुने गये।

उम्र के आधार पर दूर बैठे भले ही कोई उन्हें वृद्ध समझ ले, किन्तु वे आज के युवकों से अधिक सक्रिय और युवा हैं। नियमित व्यायाम, प्राकृतिक चिकित्सा में पूर्ण निष्ठा और प्राकृतिक जीवन आपकी विशेषता है। श्री सरावगीजी का एक उल्लेखनीय गुण है दूसरों के गुणों के प्रति अनुराग। छोटे-बड़े किसी भी व्यक्ति की विशेषता उन्हें आकर्षित करती है और वे उसके सम्बन्ध में अपने विचार भी व्यक्त करते हैं। "जैन जगत" मासिक के प्रथम पृष्ठ पर हमने नमस्कार महामंत्र का ब्लाक छापा तो आपका तुरन्त प्रशंसा का पत्र मिल गया। इसी प्रकार समय-समय पर जब भी जो अच्छा लगा उसके लिए प्रोत्साहन दिया और दे रहे है। दूर बैठे पत्र व्यवहार से आत्मीयता जोड़ने वाले श्री सरावगीजी स्नेहसिक्त व्यक्तित्व के धनी है।

सयम, साधना और सौजन्य जीवन की लम्बाई ही नही बढ़ाते बल्कि ऊँचाई भी बढ़ाते हैं। कोई व्यक्ति कितना लम्बा जीवन जीता है उससे अधिक महत्व-पूर्ण यह है कि वह कैसे जीता है और किसके लिए जीता है।

श्री धर्मचन्दजी का जीवन केवल उनके अपने लिए नही बल्कि हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है। युवापीढी को उनसे बहुत कुछ सीखना चाहिए। उनकी जीवन पद्धति, उनका व्यापक चिंतन, उनके व्यक्तित्व के आयाम हमें प्रेरणा देनेवाले है। भारत जैन महामण्डल और "जैन जगत" परिवार से वे अनेक वर्षो से जुड़े हुए है और समय-समय पर उनका मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त होता रहता है। मैं व्यक्तिगत एवं भारत जैन महामंडल की ओर से उनके इसी प्रकार स्वस्थ एव सेवामय दीर्घायुष्य की कामना करता हूं। □

शतायु हों

□ □

डा० प्रभाकर माचवे

श्री धर्मचन्दजी सरावगी मेरे श्वसुर श्री यशवन्त महादेव पारनेरकर के अभिन्न मित्र हैं। पारनेरकर जी कलकत्ता जाते तो सतीशचन्द्र दासगुप्त के यहाँ ठहरते या धर्मचन्दजी के यहां। गो-सेवा संघ गांधीजी की एक रचनात्मक प्रवृत्ति थी, जिससे दोनों जुड़े हुए थे। प्राकृतिक चिकित्सा में भी दोनों का विश्वास था।

श्री धर्मचन्दजी सरावगी कई बार नई दिल्ली में हमारे यार्क होटल के ऊपर के निवास में और रवीन्द्रनगर में भी, हमारे श्वसुर के साथ, अतिथि बनकर आते रहते थे। वे सिद्धान्त के पक्के व्यक्ति हैं। नियमित् योगाभ्यास-व्यायाम करने वाले व्यक्ति हैं। इसीलिए आयु का उनपर कोई असर नहीं हुआ। प्रौढ़ होकर भी वे नवयुवक की तरह सदा सक्रिय और प्रफुल्लित रहते हैं।

एक बार मैंने उनका एक लेख "धर्मयुग" में छपा पढा था—उसे भी पन्द्रह-बीस साल हो गये, कि वे पहलवान गामा को हवाई जहाज में उड़ाकर ले गये थे।

कौन-सा वह वाहन है जो वे चला नहीं सकते। अद्भुत जीवट और क्षमता है उनमें, काल की गति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में उनका सानी नहीं।

कलकता में एक दिन मुझे और मेरी पत्नी को उन्होंने भोजन के लिए बुलाया। उनके घर में प्रतिदिन एक-एक प्रांत का विशेष शाकाहारी भोजन बनता है। एक दिन दक्षिण भारतीय, एक दिन गुजराती, एक दिन पंजाबी, एक दिन मराठी आदि। उनके घर में स्त्री-जन ऐसे विविध व्यंजन बनाने में दक्ष हैं। यह राष्ट्रीय एकात्मता का एक नया आयाम है। भोजन की विविध पद्धतियाँ हमें घर-घर में सीखनी चाहिए। उनका स्वागत करना चाहिए। भारत विविध-विधाओं की पाक-कला की विभिन्न छटाओ का देश है। हम क्यों आग्रह करें कि सब लोग एक जैसा ही खायें। धर्मचन्दजी विश्व-शाकाहारी सम्मेलन के सदस्य हैं—रूक्मिणी अरुडेल की तरह। शाकाहारी भोजन मे भी कितनी-कितनी स्वाद-छटाएँ हैं।

धर्मचन्दजी अद्भुत समाजसेवी हैं। चुपचाप, मौन, सेवाभावी। यशेषणा से दूर। मैंने कलकत्ता में एक पुरानी पीढी की प्रशसा सुनी है और उनमे से कइयो को देखा है : सीताराम सेकसरिया, भागीरथ कानोड़िया, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, विजयसिंह नाहर आदि-आदि दानवीर, गाँधी युग के लोग—जो सब काम समाज-देवता के चरणों में करते है, करते थे—"इद न मम्" के भाव से। धर्मचन्दजी उसी कडी के एक सशक्त पुरुष हैं। वे जो कुछ करते है औरो के लिए करते हैं। अब ऐसे लोग कम होते जा रहे हैं।

इसी का एक उत्तम नमूना है उनका उद्यान प्रेम। अपने मकान की पांचवीं मंजिल पर धर्मचन्दजी ने कितने कितने वृक्ष लगाए—नारियल, नीबू, अमरूद, बिजोरा केला, लता, वनस्पतियाँ हैं, परमात्मा जानें। यह प्रकृति-प्रेम उनकी प्राकृतिक चिकित्सा का मूल है। मेरा भी इस तरह की चिकित्सा मे विश्वास है।

मनुष्य प्रकृति के जितने निकट जायेगा, नीरोग रहेगा। श्री विट्ठलदास मोदी की और उरूली कांचन में एक चिकित्सा पद्धति है। श्री वेंकट राव की अमीरपेट, हैदराबाद में दूसरी पद्धति है। (मेरी पत्नी वहां एक मास गॉल-ब्लैंडर स्टोन के लिए रही थी)। धर्मचन्दजी की अपनी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति है। मैं

उसके विवरण में नहीं जाता, न यह स्थान उसकी चर्चा करने का है। सच्ची अहिंसा प्रकृति और मानव में तालमेल रखने में है। जो कृति प्रकृति के साथ चलेगी, वही संस्कृति बनायेगी। शेष सब आजकल जो हो रहा है—गो-सेवा के नाम पर, चिकित्सा के नाम पर, व्यायाम के नाम पर, वह या तो यशेषणा है, या नाटक मात्र विकृति है।

इसीलिए गांधीजी के बताये काम आज कोई ठीक नहीं चलते। सब "सरकारी" हो गये, और अ-सरकारी कम हो गये। कई ठप्प हो गये। धर्मचन्द जी ऐसी संस्थाओं और ढोंगी व नाम के भूखे व्यक्तियों से दूर रहते हैं।

श्री धर्मचन्दजी सरावगी शतायु हों। पूर्णायु हों।□

सदा बहार धर्मचन्द सरावगी

□ □

कृष्णचन्द्र अग्रवाल

श्री धर्मचन्द सरावगी का सदा से एक अलग ही व्यक्तित्व रहा और युवा पीढ़ी के ऐसे प्रतिनिधि बने कि विश्वास ही नहीं होता है कि देखते देखते वे अस्सी की सीमा पार कर गए। उनका नाम सुनते ही एव स्मरण आते ही एक फौलादी युवक की मुस्कराती हुई छवि उभर कर सामने आ जाती है जिसने आजन्म स्वास्थ्य का पाठ पढा एवं जो उसके प्रचार में ही अपने ढग से मगन रहे। इसमे कभी कोई हिचकिचाहट अनुभव नहीं की। बहुत वर्षों पूर्व की घटना है, उनके बगीचे में एक उद्यान पार्टी हुई, ऐसा उस जमाने में पर्दा प्रथा का अन्त करने एवं महिलाओं में आत्म विश्वास जागृत करने के लिए समाज सुधारकों द्वारा प्राय: आयोजन होता था। उद्यान पार्टी मे सब की भूख खुल गई थी और आशा की जा रही थी कि धर्मचन्दजी और उनके पूज्य पिता श्री बैजनाथ सरावगी जी अब शाम ढलने पर पूड़ी, कचौड़ी, दहीबड़ा और रसगुल्ला परोसने का आर्डर

करेंगे किन्तु उस समय सब के चेहरे शुष्क पड़ गये जब टोकरियों में भरकर मौसमी फल सब के सामने भोजन के लिए रख दिये गये। उसके बाद भी आशा लगी थी कि शायद कम से कम चाय पकौड़ी आयेगी किन्तु उसका अन्त डाब जल से हुआ। पहले क्रोध के बाद सब को खूब हंसी आई क्योंकि यह याद आ गया कि एक कट्टर प्रकृति-प्रेमी परिवार में भोजन करने आये हैं। अपने निवास पर भी एक बार एक केन्द्रीय मंत्री के सम्मान में भोज दे ऐसा ही फलाहार परोसा।

धर्मचन्दजी ने सदैव अनोखी दुनिया में पैर रखा। वे पहले मारवाड़ी हवाबाज हुए और सभी पत्र-पत्रिकाओ में आपका चित्र एव विवरण प्रकाशित हुआ। व्यायाम और प्राकृतिक चिकित्सा के वे सदैव भक्त रहे और मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में इसका एक अलग कक्ष स्थापित किया। साथ ही बीस-बाईस वर्ष पूर्व आपने अपना विस्तृत बगीचा प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र स्थापित करने के लिए भेंट कर दिया जो अब बड़ा केन्द्र बन गया है।

जैन धर्म में भी आपकी सदैव से रुचि रही है और अपने पिताजी की तरह ही वे जैनसमाज के सेवक हैं। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में आपका प्रधान मंत्री एव अन्य पदों पर योगदान स्मरणीय रहेगा। समाज सुधार आन्दोलन, खादी प्रचार, राष्ट्र भाषा प्रचार, साहित्य सस्कृति के क्षेत्र में सदैव जुटे रहते हैं और काफी समय देते हैं। बड़ाबाजार युवक सभा की उन्नति की। देश विदेश की विस्तृत यात्राएँ की और उसका संस्मरण दैनिक एव साप्ताहिक 'विश्वमित्र' में सदैव प्रकाशित होता रहा है।

अपने ढंग से, बड़े सुन्दर तरीके से, मनमौजी रूप में धर्मचन्दजी अपना जीवन यापन कर रहे हैं। उनके दीर्घजीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ हैं। □

प्रकृति के अनन्य उपासक

□ □

यशपाल जैन

बंधुवर धर्मचन्द सरावगी के साथ मेरा कई दशक पुराना परिचय है। यह तो याद नहीं आता कि सबसे पहले उनसे कहां मिलना हुआ था, किन्तु इतना अवश्य याद है कि जब वह प्रथम बार मिले थे तो उनके उत्साह, कर्मठता तथा मिलनसारिता की मेरे मन पर गहरी छाप पड़ी थी। बाद मे ज्यों-ज्यो मुझे उनसे मिलने का और उनके निकट सम्पर्क में आने का अवसर प्राप्त होता रहा, उनके प्रति मेरी आत्मीयता बढ़ती गई। वस्तुत: वह बड़े जीवट के व्यक्ति है। जो ठान लेते हैं, उसे करके ही रहते हैं। उनका कलकत्ते की अनेक सस्थाओं के साथ बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है और है। उन संस्थाओं की अभिवृद्धि में वह निरन्तर सहायक होते रहते है।

प्राकृतिक चिकित्सा में उनकी अटूट श्रद्धा है। उसके लिए उन्होंने कलकत्ते में न केवल एक सस्थान की स्थापना कराई, बल्कि कलकत्ता नगर की घनी बस्ती

के बीच प्राकृतिक चिकित्सा सुलभ कराने का प्रयत्न किया। वह आज भी चालू है।

धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक चिकित्सा से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों की रचना की है। ये सभी पुस्तकें बड़ी लोकप्रिय हुईं, विशेषकर उनकी "सरल योगासन" पुस्तक के तो आठ संस्करण हो गये। इस पुस्तक में उन्होंने न केवल विभिन्न योगासनों का परिचय दिया है, अपितु स्वय उन आसनों को करके उनके चित्र पुस्तक में दिए है। इन बीस चित्रों में प्रायः सभी प्रमुख आसन आ जाते है।

धर्मचन्दजी की सबसे बडी विशेषता यह है कि वह कोरे निर्देशक नही है। जो कहते है, उसे अपने जीवन में भी उतारते है। उनके दीर्घायु होने और स्वस्थ रहने का सबसे बड़ा रहस्य यही है कि वे स्वयं अपने जीवन में प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए बड़े ही सयम से जीवन यापन करते हैं।

मुझे वे दिन याद आते है, जब हमें बार-बार कलकत्ता जाना होता था और जब कभी वहां जाते थे, धर्मचन्दजी के साथ कुछ समय अवश्य बिताते थे। मैंने देखा कि आहार-विहार में वह बडे ही नियमित और सयत है। एकाध बार वह हमें व्यायामशाला भी ले गये, जहां वह स्वयं अनेक प्रकार के योगासन करते है। व्यायाम का यह क्रम वर्षों से नियमित चलता रहा है।

वह कम बोलते हैं, किन्तु जो भी बोलते हैं, वह अर्थपूर्ण होता है। उनके भाषण भी मैंने सुने है। अपने भाषणों में वह शब्द-जाल नही रचते। जो कहना होता है, वह सीधे, सरल, शब्दो मे कह देते है।

प्रकृति के वह अनन्य उपासक हैं। मैं कलकत्ते में जब कभी उनके यहां जाता हूं तो वह छत पर लगाये अपने बगीचे को दिखाना नही भूलते। अपने उस बगीचे मे उन्होंने पेड़-पौधे ही नही लगाये, साग-भाजियां भी उगाते है।

उस बगीचे को देखकर मैं बार-बार सोचता हूं कि व्यक्ति में प्रकृति के लिए अनुराग हो तो वह उसके सान्निध्य का साधन कही भी जुटा सकता है।

एक प्रसंग मुझे भूले नहीं भूलता। रांची के निकट किसी विदेशी महिला को, जिसके पति का देहान्त हो गया था, अपना फार्म बेचना था। मैं उन दिनों

कलकत्ते गया हुआ था। धर्मचन्दजी ने अनुरोध किया कि मैं उनकी मित्र-मंडली के साथ रांची चलूं। हमलोग कार से रांची पहुंचे और वहां से एक दिन मैकलॉस्कीगंज जाकर देखने का निश्चय किया। वहां एक प्राकृतिक चिकित्सा का केन्द्र स्थापित करने की उनकी योजना थी।

रांची से हम कार द्वारा वहाँ गये। ठीक याद नहीं, पर शायद ७०-८० मील से ऊपर का फासला था। धर्मचन्दजी गाड़ी चला रहे थे। भाई बद्रीप्रसाद बाँयवाला साथ थे। हमलोग मैकलॉस्कीगंज पहुंचे। स्थान बड़ा सुन्दर था। फार्म बड़ा विशाल और हरियाली से परिपूर्ण था। हमलोग फार्म की स्वामिनी विदेशी महिला से बातें करते रहे, जलपान करते रहे, फार्म देखते रहे। उसमे बहुत समय निकल गया और लौटते समय अंधेरा हो गया।

रास्ता निरापद नही था। कभी-कभी डाकू सड़क पर आ जाते थे और यात्रियों को लूट लेते थे। धर्मचन्दजी का प्रयत्न था कि गाड़ी तेज चलाकर जल्दी से जल्दी रांची पहुँच जाएँ। गाड़ी की रफ्तार को देखकर मैंने उनसे कहा, "थोड़ा धीमे चलिए। यदि कुछ देर हो गई तो कोई बात नहीं है।" उन्होंने मुस्कराकर उत्तर दिया, "क्यो, गाड़ी की रफ्तार से आपको परेशानी होती है। मैं तो पायलट रह चुका हूं। मैंने विमान चलाया है।" मै आश्वस्त हो गया।

लेकिन थोड़ी देर में देखता क्या हूं कि गाड़ी जब ६० या ७० मील प्रति घन्टे की रफ्तार से चल रही थी, उसका एक टायर जवाब दे गया। गाड़ी सड़क से नीचे उतर गई लेकिन धर्मचन्दजी ने साहस नही खोया। उन्होंने गाड़ी को पेड़ से टकराने से रोका। उस पर नियत्रण रखकर आगे एक ओर ले जाकर खड़ा कर दिया। यदि उनके हाथ-पैर फूल गये होते तो हम सबके प्राण निकल गये होते।

गाड़ी को एक किनारे खड़ी करके धर्मचन्दजी ऐसे बातें करने लगे मानों वह कोई सामान्य घटना हुई है।

आगे जो हुआ, वह बहुत ही दिलचस्प था। हमलोग सड़क पर खड़े होकर जो भी गाड़ी आती, उसे रोकने का प्रयत्न करते, लेकिन हमें अवांछनीय मानकर

कोई भी गाड़ी नहीं रुकी। आधी रात बीत गई और सड़क पर खड़े विनोद-पूर्वक बातें करते रहे।

अन्त में एक ट्रक आया। हमलोग बीच सड़क पर खड़े हो गये। ड्राइवर ने ट्रक को रोका और जब उसे भरोसा हो गया कि हम भले आदमी है तो वह एक व्यक्ति को रांची ले जाने को तैयार हुआ।

उधर जब हमारे अन्य साथियों ने देखा कि आधी रात बीत गई है और हम-लोग नहीं पहुँचे है तो उन्हें भय हुआ कि कहीं हमें डाकुओं ने न पकड़ लिया हो। उन्होंने बन्दूकधारी आदमियों के साथ दो गाडियां भेजीं। जब वे गाडियां हमारे पास पहुँचीं तो हमने साथियो को अपनी पूरी दास्तान सुनाई। उसके बाद सबने मिलकर जो अट्टहास किया, वह आज भी मुझे विभोर कर देता है।

धर्मचन्दजी ने संसार के बहुत से देशो की यात्रा की है और उन यात्राओं के सम्बन्ध में अपने संस्मरण भी लिखे हैं। निस्सन्देह वे बडे ही साहसी व्यक्ति है। खतरों से वह घबड़ाते नही, बल्कि चुनौती सामने आने पर उनका साहस दूना हो जाता है।

सामाजिक कार्यों में उनकी बड़ी अभिरुचि रहती है। समाज की भलाई के लिए, वह जो कुछ कर सकते है, सदैव करने को तत्पर रहते है। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी तथा अन्य संस्थाओ के द्वारा उन्होने समाज की जो सेवा की है, वह अत्यन्त सराहनीय है

धर्मचन्दजी काम में विश्वास करते है, नाम मे नही। यही कारण है कि उन्होने कभी यश की लालसा नही की और न कभी पदों की कामना की है। यह नही कि उन्हें पद नहीं मिले, बहुत से पद मिले हैं, किन्तु उनके लिए उन्होंने कभी प्रयत्न नही किया। यश मिला है, लेकिन उसकी कभी आकाक्षा नहीं की।

वह अभी अपने जीवन में अनेक वसन्त देखे और खूब स्वस्थ रहें।□

हमारे आत्मीय

□ □

सोहन लाल

श्री धर्मचन्दजी आदर्श, प्रगतिशील, प्रेरक, उदार, उत्साही, सहृदय, सरल, लगनशील आदि गुणों से विभूषित है। सर्वगुण सम्पन्न। उनके सहयोग, सद्भाव, स्नेह एवं मस्त स्वस्थ-सुन्दर, सम्पन्न, मिलनसार, मृदुभाषी प्रकृति से मैं प्रभावित हूं।

श्री धर्मचन्दजी सरावगी और इनकी पत्नी दोनों ही एक दूसरे के पूरक है, संतोष और शांति दोनों में झलकती है। दोनों प्रेम के प्रतीक है। दोनो का आकर्षक व्यक्तित्व सुप्रकाशित है।

हम दो बार दोनों पति-पत्नी कलकत्ता इनके निवास पर गये। हमें प्राकृतिक चिकित्सालय, व्यायामशाला, अन्य संस्थाएँ, अपने घर का भोजन-कक्ष और छत पर लगाये बगीचे को दिखाया अपने अनुभवों का लाभ आत्मीय सत्सग सम्पर्क दिया।

आपने बापू चिकित्सालय, जयपुर के प्राकृतिक चिकित्सालय में एक कोठी भी बनाई जो रोगियों की सब प्रकार ठहरने की सुविधा से युक्त है।

आप गुणों के भण्डार है। प्रकृति-प्रेमी और प्रभु के कृपापात्र हैं। साहित्य प्रेमी, कला प्रेमी हैं, पत्राचार और अन्य सभी प्रवृत्तियों में उत्साह-उमंग से ओत-प्रोत हैं। हर आयोजन और कार्यक्रमों में रुचि लेना दोनों पति-पत्नी का साथ-साथ हर काम में भाग लेना इनकी विशेषता है। □

एक अनुकरणीय हिन्दी-प्रेमी

□ □

रामावतार गुप्त

श्री धर्मचन्दजी सरावगी समाज के उन इने-गिने व्यक्तियों में है, जो दूसरो को अपने कार्यों द्वारा रास्ता दिखाते है। व्यायाम, शाकाहारी आन्दोलन, प्राकृतिक चिकित्सा, दैनिक जीवन मे हिन्दी के उपयोग, गो सवर्द्धन, पीड़ितों की सेवा, उद्देश्यमूलक भ्रमण इत्यादि अनेक विषयों में उन्होने अपना तन, मन, धन तीनो लगाया है।

गत् ४१-४२ वर्षों से प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार में लगे हैं। इस विषय का उन्होने गम्भीर अध्ययन किया है। जनता को प्राकृतिक चिकित्सा से लाभान्वित करने के लिए उन्होंने २५ से अधिक पुस्तकें हिन्दी मे लिखी है, जिससे प्राकृतिक चिकित्सा का तो प्रचार हुआ ही है, राष्ट्रभाषा हिन्दी की भी अनुपम सेवा हुई है।

व्यायाम के प्रति धर्मचन्दजी का प्रेम आज की पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है। ७३ वर्ष की अवस्था में "नेशनल फिजिकल एफिशियेन्सी टेस्ट" के ४५ वर्षीय वर्ग

में "थ्री-स्टार" विजेता बनकर उन्होंने प्रमाणित किया कि नियमित व्यायाम द्वारा वृद्धावस्था को दूर रखने में कितनी सफलता पायी जा सकती है। ८० वर्ष की अवस्था में उन्होंने लाठी चलाने का अभ्यास आरम्भ किया, जो आश्चर्य-जनक है। विभिन्न विषयों में उनकी रुचि है, यह जानकर भी आश्चर्य होता है। वे एक सफल व्यापारी एवं उद्योग-संचालक हैं। कलकत्ता कारपोरेशन के कौंसिलर, राज्यसभा के सदस्य और पश्चिम बंगाल विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं। इन सारी व्यस्तताओं के बावजूद वे विमानचालक, घुड़सवारी, तैराकी, चित्रकारी अपने मकान की छतपर बागवानी इत्यादि के लिए भी समय निकाल लेते हैं। जिन विषयों में उनकी रुचि है, उनके अध्ययन के लिए उन्होंने अनेक बार विदेश-यात्राएँ, जिनमें विश्वभ्रमण भी शामिल है, की है। श्री सरावगीजी एक कर्मयोगी का जीवन बिता रहे है। वे दीर्घकाल तक हम सभी का पथ प्रदर्शन करते रहें यही मेरी कामना है।□

चिरयुवा

□ □

हर्षनाथ

सरावगीजी से मेरा व्यक्तिगत परिचय प्रायः तीस-पैंतीस वर्षों से है और कालक्रम से वह परिचय घनिष्ठता और उनके प्रति आदर के रूप में परिणत हो गया है। उनकी जीवन पद्धति और उनकी विचारधारा से जैसे-जैसे परिचित होता गया, उनके प्रति आदर और सम्मान की भावना बढ़ती गई और अब तो लगता है, सरावगीजी मेरे परिवार के एक बुजुर्ग हैं, जिनसे मैं अपनी किसी समस्या पर परामर्श कर सकता हूं और मुझमें कोई खामी देखकर वर्जना करने का उन्हें अधिकार भी है। अंग्रेजी की एक कहावत है: To know him is to lone him सरावगीजी के सम्बन्ध मे मेरे लिए वह पूर्णतया सटीक बैठती है।

उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क होने के बहुत पहले से मैं सरावगीजी के नाम से परिचित था मेरे अग्रज श्री देवनाथ लाल 'लालाजी' मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल के व्यवस्थापक थे और अस्पताल में प्राकृतिक चिकित्सा विभाग का

संचालन सरावगीजी करते थे। भाई साहब सरावगीजी के प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी प्रेम की चर्चा बराबर करते रहते थे। प्राकृतिक जीवन पद्धति और स्वास्थ्य के प्रति मेरी भी अभिरुचि रही है। इसलिए धर्मचन्दजी के प्रति मेरे मन में आकर्षण था। इसके अतिरिक्त उनके साहसिक कार्यों, जैसे आज से पचास-पचपन वर्ष पूर्व व्यक्तिगत चालक की हैसियत से विमान उड़ाना, रामगढ़ बिहार कांग्रेस महाधिवेशन के अवसर पर अपने जहाज से कांग्रेस अध्यक्ष के ऊपर पुष्प वर्षा करना आदि से उनके प्रति आकर्षण स्वाभाविक ही है। सन् १९५६ में जब धर्मचन्दजी कालेज स्क्वायर स्वीमिंग क्लब के सभापति थे, मैं उस क्लब का एक सदस्य था; उस दौरान उनसे आत्मीयता घनिष्ठ हो गई।

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति सरावगीजी का प्रेम केवल मौखिक नही है, बल्कि उसके दर्शन को अपने जीवन में उन्होंने अक्षरशः ढाला है, उसके प्रचार-प्रसार में अथक श्रम किया है और इसी हेतु 'स्वस्थ जीवन' मासिक पत्रिका को जन्म देकर वर्षों तक उसका सचालन-सम्पादन किया, देश के विभिन्न भागो मे प्राकृतिक चिकित्सा को फैलाने के लिए वैज्ञानिक आधार पर शिक्षित प्राकृतिक चिकित्सा के स्नातक तैयार करने तथा इस चिकित्सा पद्धति को मेडिकल कालेजों की तरह वैज्ञानिक आधार एवं पूर्णता देने के लिए कलकत्ता के समीप उन्होने प्राकृतिक महाविद्यालय की स्थापना की, इसके लिए उन्होंने अपनी कई एकड भूमि, उसमें स्थित अपना भवन तो दिया ही उसके विकास एवं सचालन के लिए प्रचुर धन व्यय किया एवं उसके कार्य को समुचित दिशा प्रदान की।

'स्वस्थ जीवन' का सम्पादन जब धर्मचन्द जी और श्री राधाकृष्ण नेवटिया कर रहे थे, तब उस कार्यभार को सम्भालने के लिए उससे मैं भी सम्बद्ध था। उस समय उन्हें और भी निकट से देखने परखने का मौका मिला और उनकी प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध मे कथनी और करनी में कहीं अन्तर नही लगा। उन्होंने स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रायः दो दर्जन पुस्तकें लिखी है। वे प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तके विदेशों से मँगाते रहते है। मैने अनुभव किया कि किसी तथ्य की जानकारी प्राप्त करने में चाहे जितना भी श्रम लगे और विलब हो, वे विचलित नहीं होते हैं।

दूसरों को उपदेश देना आसान है, किन्तु अपने जीवन में उसे ढालना बड़ा कठिन है। सरावगीजी में मैंने यही विशेषता देखी कि जो बात स्वास्थ्य के

सम्बन्ध में वे दूसरों से कहते है, उसे स्वयं अपने जीवन में ढाल लेते हैं। भोजन खान, पान, रहन-सहन के बारे मे प्रायः मेरी उनसे बातें होती रहती थीं। तीन चार वर्षों तक उनके रात्रिकालीन भोजन के समय, कार्य के सिलसिले में मैं उपस्थित रहता था पर आहार सम्बन्धी नियमों को उल्लंघन करते मैंने नहीं देखा। रात के भोजन में मैंने अन्न खाते उन्हें नही देखा, दूध और मौसम के फल, वह भी नियमित और सतुलित मात्रा में। जो बातें वे कहते हैं, वह मात्र सिद्धांत नही, बल्कि अनुभव सिद्ध है। किसी बात को समझाने का उनका ढग बिलकुल अनोखा है। उदाहरण के लिए कुछ व्यक्तिगत बातों का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा।

एक बार उन्होंने मुझसे पूछा : सबेरे के नाश्ते में क्या लेते हैं ?

मैंने उत्तर दिया : उबले अण्डे और टोस्ट या सिकी पावरोटी।

मेरी बात सुनकर मुस्कराते हुए उन्होंने कहा : अगर मैं अपने घर की बासी रोटी आपको नाश्ते में दूं तो खाएगें ?

आश्चर्य से मैं उनकी ओर देखता रह गया। मैंने कहा : बासी रोटी मैं क्यों किसी के घर की खाऊँगा।

उन्होने हँसते हुए कहा : तो यह पावरोटी क्या है ? बेकरी में एक दिन पहले बनी, तरह-तरह के लोगो के हाथो मे घूमती और दूकानों पर बिकी, यह तो बासी नही, दूषित भी हो गई।

यदि कोई कोरे उपदेश की बातें कहता तो मेरे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता किन्तु इस उदाहरण का मेरे ऊपर प्रभाव पड़ा। इस बात को बीते प्रायः पचीस वर्ष हो गये। अभी इसी ८६ के फरवरी-मार्च में मैं उनसे मिला तो मुझे देखते ही उन्होंने कहा : आपका स्वास्थ्य काफी अच्छा है। नाश्ते में क्या लेते हैं ?

मैंने हँस कर कहा : एक बार पहले भी आपने यह प्रश्न किया था। आजकल मैं नाश्ते में बासी रोटी नहीं खाता। आजकल मैं चिउड़ा और दूध या चने का सत्तू और दूध लेता हूँ।

पुरानी बात का स्मरण कर वे भी हंसने लगे।

सरावगीजी के मन में कोई कुण्ठा नहीं है और किसी भी श्रम के काम को वे छोटा बड़ा नहीं मानते। यह विदेशों में बार-बार भ्रमण करने और वहाँ श्रम की प्रतिष्ठा को अपनी आँखों से देखने के कारण है। इसका एक व्यक्तिगत अनुभव है। मैं उनके व्यक्तिगत कक्ष में बैठा हुआ था। मेरे लिये पीने के लिए उन्होंने छाछ मंगाई। पीने के पश्चात गिलास हाथ में लिए मैं सोच ही रहा था कि कोई नौकर आये तो उसे दूँ, तब तक उन्होंने हाथ बढाकर बिना किसी आडम्बर के वह ले लिया। कार्य के प्रति यह उनके परिष्कृत दृष्टिकोण का परिचायक है।

समय की पाबन्दी, श्रम, कार्य के प्रति लगन, धैर्य और निष्ठा और उसे सुव्यवस्थित रूप से करने का आग्रह आदि गुण धर्मचन्दजी के जीवन की सफलता का रहस्य है। राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, लेखक, पत्रकार और उद्योग-व्यापार अनेक रूपों में उन्होंने जीवन जीया है और सभी क्षेत्रों में उन्होंने इस व्रत का पालन किया है।

सरावगी जी जब साठ वर्ष के थे, तब अपने निवास 'जैन हाउस' की सीढ़ियां तीन तल्ले तक दौड़ते हुए चढ जाते थे और साक्षी के रूप में मैं भी उनका अनुगमन करता था। हमारे यहाँ साठ साल की उम्र बुढापे की उम्र मानी जाती है। सरावगी जी अब अस्सी पार कर गये, किन्तु उम्र उनसे टकरा कर वापस लौट जाती है। हमारी भारतीय परम्परा में १२५ वर्ष को मनुष्य की पूर्ण आयु स्वीकारा गया है। लगता है, सरावगी जी उस मार्ग के चिर युवा पथिक है। □

सुन्दर स्वास्थ्य के धनी

□ □

आनन्दी लाल गोयनका

श्री धर्मचन्द सरावगी से मेरा बहुत पुराना सम्बन्ध रहा है परन्तु प्राकृतिक चिकित्सा में उनकी और मेरी अभिरुचि के कारण हम लोगों का सम्बन्ध घनिष्ठ हुआ।

पश्चिम बगाल में डायमण्ड हार्बर रोड स्थित प्राकृतिक चिकित्सालय, जो कि "नेचर क्योर-एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्युट" के नाम से प्रख्यात है, के कारण हम लोग बहुत निकट सम्पर्क में आये और आज भी कन्धे से कन्धा मिलाकर इस चिकित्सालय के लिए कार्य कर रहे हैं। धर्मचन्दजी इस चिकित्सालय के अध्यक्ष हैं और मुझे मैनेजिंग ट्रस्टी का भार दिया गया है। धर्मचन्दजी ने इस प्राकृतिक चिकित्सालय को बहुमूल्य सहयोग दिया है। इन्हीं के द्वारा प्रदत्त १८ बीघा जमीन पर निर्मित यह चिकित्सालय लोगों की सेवा कर रहा है। उत्तर-पूर्वी भारत वर्ष में यह अपनी तरह का एक मात्र आधुनिक प्राकृतिक

चिकित्सालय है, जहाँ से हजारों लोगों ने आरोग्य का लाभ उठाया है। यह चिकित्सालय दिनोंदिन विस्तार और प्रगति पथ पर अग्रसर है।

प्राकृतिक जीवन में सरावगीजी का अटूट विश्वास है और आपने इसे जीवन में उतारा भी है। यही कारण है कि आज ८१ वर्ष की आयु में भी आपका स्वास्थ्य बहुत सुन्दर बना हुआ है और अब भी नियमित व्यायाम, योगासन और प्राणायाम एवं सात्विक आहार ही वास्तव में इनके सुन्दर स्वास्थ्य की कुंजी हैं। प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार के लिए केवल आर्थिक एव शारीरिक सहयोग देकर ही नही अपितु इन्होने प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी अनेक पुस्तकें लिखकर भी इस चिकित्सा प्रणाली को आगे बढ़ाने में बहुमूल्य सहयोग दिया है। इसके अतिरिक्त शारीरिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील व्यायामशालाओं, तैराकी संस्थाओं तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य कर रही अनेक संस्थाओं को सक्रिय सहयोग दिया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि श्री धर्मचन्दजी का स्वास्थ्य पूर्ण दीर्घायु प्रदान करे जिससे कि देश और समाज को आपके अनुभव और सेवाओं का लाभ आगे आनेवाले बहुत-बहुत वर्षों तक मिलता रहे। □

सेवाभावी व्यक्ति

□ □

राधाकिशन कानोड़िया

भाई धर्मचन्दजी सदा से ही काफी परिश्रमी रहे। उन्होंने जिस किसी काम को हाथ में लिया उसको पूरी लगन के साथ एव तन-मन-धन से किया। परिणाम स्वरूप उन्हें हर कार्य मे सफलता मिली।

जब धर्मचन्दजी ने हवाई जहाज चलाना सीखना आरम्भ किया तो कई लोग उनकी हँसी उड़ाते थे कि वे कभी भी हवाई जहाज नही चला सकेंगे। लेकिन धर्मचन्दजी पूरी लगन व निष्ठा के साथ वायुयान चलाने की शिक्षा लेते रहे और सचमुच ही उन्होने यान चलाना सीख लिया तब उन लोगों को—जो उनकी हंसी उडाते थे—बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होने धर्मचन्दजी की होशियारी की भूरी-भूरि प्रशसा की।

धर्मचन्दजी ने अपने पिताजी को व्यापार में बहुत सहयोग दिया और होशियारी व योग्यता के बल पर व्यापार को बढ़ाया। व्यापार से उन्हें अच्छी आय होती है।

प्रारम्भ से ही धर्मचन्दजी को प्राकृतिक चिकित्सा में विश्वास है। वे खान-पान का पूरा ध्यान रखते हैं। उनका सारा परिवार भी उनके कहने के अनुसार खान-पान में उनका अनुसरण करता है। मोरारजी भाई की सलाह पर वे अपने बगीचे में प्राकृतिक चिकित्सा की क्लासें भी लेने लगे। उन्होंने कई आदमियों को वहाँ रखा, उन्हें काम की बातें बताई और इस तरह उन्हें काफी लाभ पहुंचाया। उसके बाद तो उन्होंने अपना बहुत ही मूल्यवान बगीचा दान में दे दिया। आज उस बगीचे में बहुत बड़ा प्राकृतिक चिकित्सालय है।

बड़ा बाजार युवक सभा के तो आप प्राण ही रहे। मैं जब युवक सभा का सभापति था तो बराबर देखता था कि वे बड़ी लगन से काम करते थे। वे रोज स्वयम् व्यायाम करते। उन्हे हर तरह का व्यायाम करने का शौक है। अभी भी वे नियमित रूप से व्यायाम करते हैं। यही कारण है कि इस उम्र में भी उनका स्वास्थ्य इतना अच्छा है। धर्मचन्दजी दान भी बहुत देते हैं। वे जो भी सुझाव देते सबको अच्छे लगते। इससे जनता को काफी लाभ मिला और आजतक मिल रहा है। आप कालेज स्क्वायर स्वीमिंग क्लब मे तैरने भी जाया करते थे। वहाँ पर तैरना सीखने आने वालो को वे स्वयम् कई तरह की बातें बताया करते थे और उन्हें तैरने की प्रेरणा देते थे। आगे चलकर वे इस स्वीमिंग क्लब के सभापति भी बने।

बिहार में जब भीषण भूकम्प आया था उस समय वहाँ जाकर उन्होने पीड़ित व्यक्तियों की बहुत बड़ी सेवा की।

समाज को इनकी योग्यता पर पूरा विश्वास है। जब कलकत्ता नगर में काफी सुधार की आवश्यकता थी तब ये कारपोरेशन के निर्विरोध काउन्सिलर चुने गये। ये राज्य सभा एव पश्चिम बगाल विधान सभा के सदस्य भी चुने गए।

धर्मचन्दजी ने अंग्रेजी व हिन्दी में अनेक लेख लिखे हे और उनके माध्यम से जनता को उपयोगी जानकारी दी है। गौ के प्रति आपकी सदैव आस्था रही। वे गौ संवर्द्धन कौन्सिल के सदस्य भी रहे।

भाई धर्मचन्दजी मेरे मित्र हैं। भगवान से प्रार्थना है कि वह इन्हें जीवन पर्यन्त सुखी रखे और इनकी सेवा भावना इसी तरह बनी रहे। □

व्यक्तित्व के धनी

□ □

रामकृष्ण सरावगी

श्री धर्मचन्द एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनसे ईर्ष्या होनी स्वाभाविक है। ईर्ष्या उनके व्यापार अथवा रहन-सहन से नहीं, बल्कि उनके स्वास्थ्य से होती है। ८१ वर्ष की आयु मे भी वे उतने ही स्वस्थ एवं सक्रिय है जितने तीस वर्ष पहले थे। स्वास्थ्य, प्राकृतिक जीवन और चिकित्सा के क्षेत्र में कलकत्ता महानगर में उनका नाम सदैव श्रद्धा के साथ लिया जाता है—हमारे जैसे मित्रों के लिए श्रद्धा के साथ-साथ ईर्ष्या से भी। किन्तु यह ईर्ष्या बड़ी सुखद है।

वैसे धर्मचन्दजी मेरे मित्र नही, मेरे पिताजी (स्व० तुलसीरामजी सरावगी) के निकट के मित्रों में से है। सार्वजनिक क्षेत्रों में वे पिताजी की प्रेरणा से आये इस नाते गुरु भाई कहा जा सकता है। किन्तु एक बात जो ४० वर्षों के सम्पर्क के बीच सदैव देखी है, वह यह कि उन्होंने कभी अपने आपको बुजुर्ग की परिभाषा में रखकर उपदेशक बनने को चेष्टा नही की। प्रत्येक के साथ मृदुल

भाषी, कटु सत्य को भी मीठेपन के साथ कहने का स्वभाव और शायद इस स्वभाव के कारण वे सभी के प्रिय रहे हैं।

सन् १९५२ में वे कलकत्ता कारपोरेशन के कौन्सिलर निर्विरोध निर्वाचित हुए। उस जमाने में कारपोरेशन के कौन्सिलर का पद बड़े महत्व और गौरव का माना जाता था। बंगाल के सभी शीर्षस्थ नेता कभी न कभी कौन्सिलर हुए थे। देशबन्धु चितरंजन दास, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, फजलुल हक, डा० विधानचन्द्र राय आदि आदि। शान्त-स्थिर स्वभाव के धर्मचन्दजी ने अपने पार्षद काल में एक बड़ा काम कर दिया। वह था ट्राम-बस में धूम्र-पान का निषेध। यह निषेधाज्ञा आज भी चालू है और किसी ट्राम या बस मे जब कन्डक्टर किसी यात्री को बीड़ी-सिगरेट निकालते देख धूम्रपान न करने के लिए कहता है तो ऐसा लगता है कि धर्मचन्दजी ही बोल रहे हैं। यह एक काम उन्हें कलकत्ता कारपोरेशन में सदा के लिए उल्लिखित कर गया।

सन् १९६४ मे कांग्रेस पार्टी ने उन्हे राज्य सभा के लिए अपना अतिरिक्त उम्मीदवार चुना। पश्चिम बंगाल विधान सभा में अपनी सदस्य संख्या की औसत गणना के अनुसार तीन उम्मीदवार सहज ही विजयी बनाए जा सकते थे, उतने उम्मीदवार स्थिर कर दिए जाने के बाद भी एक अतिरिक्त एक उम्मीदवार और खड़ा करना चाहते थे और इसलिए धर्मचन्दजी को चौथा उम्मीदवार बनाया गया कि वे कांग्रेस के अतिरिक्त अन्य दलो के वोट संग्रह कर ले तो शायद वे जीत जाएँ।

चुनाव हुआ और नतीजा बड़ा आश्चर्यपूर्ण था। धर्मचन्दजी को सबसे अधिक मत मिले थे और जिसे कांग्रेस पार्टी के सबसे अधिक मत मिलने थे, वह हार गया था। कांग्रेस के तत्कालीन शीर्षस्थ नेताओ के लिए यह अत्यत शोचनीय स्थिति थी। इस दुविधापूर्ण स्थिति से उबारा धर्मचन्दजी ने और एक-दो दिनों के भीतर ही इन्होने राज्य सभा से त्यागपत्र दे दिया। यह स्पष्ट था कि अपनी लोकप्रियता के कारण धर्मचन्दजी को निश्चित संख्या से अधिक मत मिले थे लेकिन दल को दुविधापूर्ण स्थिति से उबारने के लिए उनका तत्काल त्यागपत्र दे देना एक ऐसे आदर्श का परिचायक है जो आज के जमाने में दुर्लभ ही देखा जाता है।

धर्मचन्दजी मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के अन्यतम कार्यकर्ताओं में से थे। सन् १९४५ मे प्रधान सचिव भी बने। शायद १९६० तक उनका सक्रिय सहयोग

संस्था को मिलता रहा। सेवा कार्यों में वे सदैव आगे बढ़कर योग देने वालों में हैं और क्षतिग्रस्त क्षेत्रों में जाकर सहायता कार्य करने में कभी झिझकते नहीं।

प्राकृतिक चिकित्सा में उनकी रुचि सर्वविदित है। अनेक ग्रन्थ उन्होंने लिखे और प्रकाशित किये। उनकी पत्रिका 'स्वस्थ जीवन' सदैव सम्मान के साथ पढ़ी जाती रही। डायमण्ड हार्बर रोड स्थित अपनी बहुमूल्य सम्पति उन्होंने "प्राकृति निकेतन" की स्थापना के लिए प्रदान की और आज भी उसमें उनका पूरा सहयोग है।

धर्मचन्दजी शतायु हों, यह कहना, उनके स्वास्थ्य को देखते हुए, उनकी आयु को कम करना होगा लेकिन यह निश्चित है कि अपने जीवन को वे भली-भांति जी रहे हे और मनुष्य कैसे स्वस्थ एव प्रसन्न रह सकता है, इसका वे एक सजीव उदाहरण प्रस्तुत कर रहे है। □

बात के पक्के

□ □

दीपचन्द नाहटा

सरावगीजी से हमारा बिगत ४० वर्षों से निकटतम सम्पर्क रहा है। हमने उनको नजदीक से देखा है वे जो कहते है वही करते हैं। ४० वर्षो पहले यहाँ पर दंगा हुआ था। वे मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मंत्री थे। हमलोगों ने उस समय शरणार्थियों को खिलाने के लिए कैंटीन खोला था। मगर उस वक्त आटा तथा चावल नही मिलते थे। हमलोग सरावगीजी के पास गये। वे बैज लगाये सोसाइटी में काम कर रहे थे। उन्होने हमें तुरन्त ही बोरों में चावल तथा आटा भर के दिलाया। सरावगीजी ने सोसाइटी में प्राकृतिक विभाग खुलवाया। "प्रकृति निकेतन" भी उन्ही की देन है जहाँ पर दूर-दूर से लोग आकर इलाज कराते हैं। सरावगीजी कहते हैं कि पहले तो खान-पान, रहन-सहन ऐसा रखो कि बीमार ही न पड़ो अगर बीमार भी पड़ गये तो प्राकृतिक पद्धति से इजाज कराओ।

एक दिन वे हमें अपने रसोई घर में ले गये। वहाँ पर सब डिब्बों में जो था उन पर उसमे रखी गयी वस्तुओं का नाम लिखा था। बाद में एक चार्ट दिखलाया जिसमें महीने भर में किस दिन क्या खाना बनेगा पहिले ही से लिखा था।

पुराने जमाने में जिसे कर्जन पार्क कहते थे उसका नाम आजकल सुरेन्द्रनाथ पार्क हो गया है। हम वर्षों से वहाँ घूमने जाते है। वहीं आर० एस० एस० वाले धर्मराज नाम की शाखा लगाते हैं जहाँ सूय नमस्कार, लाठी चलाना, प्राणायाम तथा और कई तरह के व्यायाम उस शाखा में आने वाले लोगों को सिखाया जाता है। गत १५ वर्षों से उसके अधिकारो गौड़जी हैं। बड़े सज्जन पुरुष हैं। धर्मचन्दजी भी यहाँ गत दो वर्षों से सपत्निक घूमने आते हैं। लगभग डेढ़ वर्ष पहले धर्मचन्दजी ने गौड़जी से लाठी सीखने की इच्छा प्रकट की। वे बोले, आपकी उमर हो गई है आप क्या लाठी सीखंगे। धर्मचन्दजी ने उन्हें व्यायाम-शाला में व्यायाम करते हुए अपने चित्र दिखलाये और कहा, आप पचास के होंगे, मैं साठ का हूं। दूसरे लोग लाठी चलाना जो पाँच दिन में सीखते है मुझे दस दिन लग जायेगे। धर्मचन्दजी के उत्साह को देखकर गौड़जी ने उन्हें लाठी के दाँव सिखाने आरम्भ कर दिये। वे अबतक नव दाव सीख गये। फिर गत वर्ष धर्मचन्दजी के ८० वें जन्म दिन पर पत्रो मे चित्र देखे तो गौड़जी ने धर्मचन्दजी से कहा आपने तो हमे अपनी उम्र गलत बताई, तो धर्मचन्दजी हंसकर बोले यदि गलत नही बताता तो आप मुझे लाठी चलाना थोड़े सिखाते।

वे कई सस्थाओ के पदाधिकारी, अध्यक्ष रहे। शनैः शनैः सबसे विराग ले लिया। कहते हैं हर एक व्यक्ति को दूसरे कार्यकर्त्ता के लिए स्थान खाली करना चाहिए। इस तरह वे बडे गम्भीर विचार वाले है। व्यापार यद्यपि आज उनका बहुत अच्छा है मगर एक दिन उन्होंने रास्ते मे खड़े होकर अखबार भी बेचे तथा दो पैसा कमाकर विदेश मे भी कई बार घूम आये। उनका खान-पान तथा रहन-सहन सयममय है। उनके ऑफिस मे भी जाइये साफ-सुथरा एवं हर एक चीज अपने निश्चित स्थान पर ही मिलेगी। ऐसे महापुरुषों के जीवन से हमारा युवक प्रेरणा लेकर अपनी उन्नति कई क्षेत्रों में कर सकता है। हम पुनः उनके स्वस्थ जीवन की मंगल कामना उनके ८१ वें वर्ष में प्रवेश करने पर करते है। □

आधी बात चेहरे की मुस्कराहट कर लेती है :

□ □

नथमल केडिया

कलकत्ते के हिन्दी भाषी क्षेत्र के स्वतन्त्रता प्राप्ति की पहले की पीढ़ी के नेताओं में दो व्यक्ति मुझे एकदम अलग पंक्ति मे खड़े दिखाई देते है। उनकी शक्ल-सूरत, उनकी चाल-ढाल, उनका वेश-परिवेश, उनकी बातचीत का लहजा—सब उनके एक विशिष्ट स्तर की सूचक-सी लगती है। उनमें प्रथम थे सीतारामजी सेकसरिया तथा दूसरे हैं धर्मचन्दजी सरावगी।

आदरणीय सरावगीजी से मेरा सम्पर्क मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के माध्यमसे हुआ पर उन्होने उसके पहले से ही अपना अनुबन्ध प्राकृतिक चिकित्सा के साथ कर लिया था, कहना चाहिए उसके प्रति एकदम समर्पित हो गये थे। इतनी दीर्घ अवधि बीत जाने पर भी यह सुखद आश्चर्य लगता है कि आज तक उन्होंने अपनी इस निष्ठा को बरकरार रखा है। आश्चर्य इसलिए कि पिछले चार दशकों में एलोपैथी का जिस तरह से अन्धाधुन्ध प्रचार-प्रसार हुआ, उसके

साथ जो ताम-झाम तथा सहूलियत, सुविधाएँ रहीं और आधुनिक विज्ञान का जो वरद हस्त उस पर रहा, ऐसे माहौल में उसको नकारना अपने आप में एक बहुत बड़े जीवट का काम है। उससे हमें सरावगीजी के विचारों की अडिगता का परिचय मिलता है। विचारों की बात चली तो मैं एक बात कहना चाहूँगा जो इधर में उनके साथ बातचीत करने से मुझे महसूस हुई है। उनके विचारों में कहीं भी संकीर्णता नहीं है और इसका जो कारण मुझे लगा वह यह है कि ये अध्ययनशील रहे हैं। नयी-नयी देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओ में स्वास्थ्य सम्बन्धी नयी-नयी खोजों और उपलब्धियों से इन्होंने अपने को परिचित रखा है। स्वस्थ रहना ही जीवन का सार है और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति स्वस्थ रहने का एक सफल माध्यम है—यह इनकी मान्यता है। इसके अलावा व्यायाम, तैराकी व योगाभ्यास का भी इनके जीवन में स्थान है। अपने पोते की उम्र के लड़कों के साथ इस ८१ वर्ष की उम्र में लाठी चलाने का अभ्यास करना अपने समाज के अधिकतर लोगों को एकदम अविश्वसनीय ही लगेगा पर आप इनको लाठी चलाने का अभ्यास करते रोज देख सकते हैं।

आइये ! विचारो की बात एक बार फिर करें—हम सब जानते हैं कि जो व्यक्ति अध्ययनशील होगा उसको नये विचार, नया प्रकाश और नया आकाश मिलेगा ही मिलेगा। और जहाँ आकाश की बात आती है वहाँ संकीर्णता कैसे रह सकती है। हा, सरावगीजी के अध्ययन ने समाज का बहुत लाभ किया है। उन्होने करीब २५ पुस्तको का प्रणयन किया है। हालांकि वे सब स्वास्थ्य सम्बन्धी है पर मैं इस बात को और भी महत्वपूर्ण मानता हूं कि इन्होने एक विषय चुना, उसका अध्ययन किया, उसको जीया और तब लिखा—आजकल ऐसे लेखक कितने होते है ? वैसे भी, जिस समाज व क्षेत्र के सरावगीजी और हम लोग है उसमें २५ पुस्तकों के लेखक का होना एक विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने का परिचायक माना जाना चाहिए। क्योंकि इस तरह के लेखकों की सख्या उंगलियों पर गिनने लायक ही है। मैं इनकी इस उपलब्धि पर अपना हार्दिक अभिनन्दन ज्ञापित करना चाहूंगा। और भी अपने मन की एक बात यहाँ प्रकट कर दूँ—मैं जब भी इनसे मिलता हूँ—और कोई बात होती है—तब इनके बोलने के पहले इनके चेहरे पर एक मुस्कराहट खेलने लगती है—इनकी आधी से ज्यादा बात तो यह मुस्कराहट ही कर लेती है।

इस तरह के व्यक्तियों के अभिनन्दन के अवसर पर दूसरे लोगों की तरह मेरी भी उत्कट इच्छा होती है कि मैं इनके सौ वर्ष जीने की, शतायु होने की कामना ज्ञापित करूँ पर मैंने एक बार पढ़ा था—महात्मा गांधी के ७० वें जन्म दिन पर महामना मदनमोहन मालवीय ने उन्हें टेलीग्राम द्वारा शुभकामना भेजी कि आप शतायु प्राप्त करें। तो बदले में गांधी जी ने उन्हें जो टेलीग्राम भेजा उसमें विनोद में लिखा—आपने तो एक ही झटके मे मेरे २५ वर्ष कम कर दिये।

बस इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैं संख्याओं में नहीं बंधकर इनके सुदीर्घ जीवन की कामना करता हूं। हां यह मुझे विश्वास है कि ये ता-उम्र अपने को पूर्णतया स्वस्थ रखेंगे। यह गुर उनको बखूबी मालूम है। □

स्वस्थ जीवन के जीवंत प्रतीक

□ □

बिनायकप्रसाद हिम्मतसिंहका

जीवन-प्रकृति और परमात्मा की दी हुई सबसे अनमोल निधि है। भगवान शंकराचार्य ने कहा है कि जीवन को शुभ और अशुभ मार्ग पर ले जाना मनुष्य के अपने विवेक पर निर्भर करता है। जो लोग जीवन को अधिक सुन्दर, सार्थक और उज्जवल बनाने का प्रयास करते हैं वे ही सत्पुरूष कहलाते है। जीवन को सौन्दर्य, क्रियाशीलता और क्षमता प्रदान करता है उत्तम स्वास्थ्य। इसकी सिद्धि प्राप्त करने वाला तपस्वी होता है।

भाई धर्मचन्दजी ऐसे ही तपस्वी हे। वे 'स्वस्थ जीवन" के जीवंत प्रतीक हे। मेरे लिए तो वे सदा प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं। मैंने भी अपने जीवन में उत्तम स्वास्थ्य की सिद्धि के लिए उसी मार्ग पर चलने की चेष्टा की है, जिसपर अविराम चलते रहकर वे अस्सी वर्ष की आयु पूर्ण कर लेने पर भी शारीरिक और मानसिक ऊर्जा से सम्पन्न हैं और उनकी क्रियाशीलता बनी हुई है।

भाई धर्मचन्दजी के मन में युवावस्था से ही अपने जीवन को ऊँचाई की ओर ले जाने की महत्वाकांक्षा बलवती रही है। इन्होंने इसके लिए मानव सेवा का कठिन पथ चुना, आदर्शो, सयम-नियम, नैतिकता और सदाचार के दुर्गम शिखरों पर चढ़ने का प्रयास बराबर जारी रखा। सन् १९३० ई० में वे प्रथम मारवाड़ी वायुयान चालक बने। इनका साहस अदम्य उत्साह और दृढ़ आत्मविश्वास मुझे ही नही, उनके सभी परिचितों और स्नेही स्वजनों को आश्चर्य चकित, प्रभावित और अनुप्राणित करता रहा है।

प्राकृतिक चिकित्सा मे उनकी गहरी आस्था है। इस विशुद्ध भारतीय चिकित्सा पद्धति तथा शाकाहार को न केवल उन्होंने अपने अध्ययन का सर्वाधिक प्रिय विषय बनाया, बल्कि विदेशो का भ्रमण करके इनके अधिकारी विद्वानों के विचारों का भी संकलन किया। भाई धर्मचन्दजी ने पूर्ण स्वस्थ और सक्रिय रहकर बहुत काम किया है। इनके अवदान से समाज की अनेक कीर्तिलब्ध संस्थाएँ उपकृत है। इन्होने प्राकृतिक चिकित्सा और स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक पुस्तकें भी लिखी है।

हमारे समाज के नवयुवकों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। मैं तो कहूंगा कि जिन्हें सर्वदा निरोग रहने और शतायु होने की इच्छा हो, वे उनका सान्निध्य प्राप्त करके इसकेलिए उनसे व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करें। उनके सद्गुणों के अनेकानेक प्रशसकों में से एक मैं भी हूं। मेरे प्रति उनके हृदय में जो स्नेह भाव है, मैं इसका आदर करता हूं। इनका अभिनन्दन सर्वथा उचित है। अभिनन्दन का वास्तविक अधिकारी वही है जो जनसाधारण के लिए प्रेरणा का स्रोत और प्रकाश स्तम्भ बनने की असाधारण योग्यता से सम्पन्न हो। भाई धर्मचन्दजी का व्यक्तित्व ऐसा ही है। वे दीर्घायु हों और इनसे हमारा समाज आगामी वर्षों में और अधिक लाभान्वित हो ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है।□

सदा बहार एक साथी

□ □

कालीकृष्ण रोहतगी

सुदर्शन व्यक्तित्व वाले धर्मचन्दजी पहली दृष्टि में ही आदमी को अपनी ओर आकर्षित कर लेते है। मेरा उनसे परिचय बहुत पुराना है। बचपन से ही मुझे व्यायाम और खेल-कूद का बेहद शौक रहा है। बड़ाबाजार युवक सभा प्रारम्भ ही से हिन्दी भाषी युवकों के लिए शारीरिक प्रशिक्षण का केन्द्र रहा है। मैं नियमित रूप से व्यायाम करने के लिए युवक सभा मे जाता था। और भी अनेक युवक साथी वहां व्यायाम और खेल-कूद में भाग लेने आते थे। धर्मचन्दजी उन सबसे कुछ अलग विशेषता रखने वाले युवक रहे। उनके हसमुख चेहरे, सुन्दर शरीर, परिहासप्रिय स्वभाव, और उत्साहजनक व्यवहार के कारण मैं उनसे बहुत प्रभावित रहता था।

सन् १९४६ में मैं कालेज-स्क्वायर स्वीमिंग क्लब का प्रधान मन्त्री बना। धर्मचन्दजी भी स्वीमिंग क्लब में बराबर आते थे। वहीं इनके साथ घनिष्ठता

बढ़ी। मैं वहां पर सन् १९५२ तक मन्त्री रहा। क्लब का जो भी कार्यक्रम बनता उसमें धर्मचन्दजी सदा तन-मन-धन से मेरा साथ दिया करते। भोला खत्री क्लब का बहुत उत्साही कार्यकर्त्ता और अच्छा खिलाड़ी था। उसकी आकस्मिक मृत्यु से मेरे मन पर बहुत धक्का लगा। उसकी बेवा पत्नी की सहायतार्थ हमने सिनेमा शो करके रुपये इकट्ठे किये लेकिन थोड़े दिनो बाद भोला खत्री की पत्नी ने अपना दूसरा विवाह कर लिया उसे सहायता की आवश्यकता नही रही। वे रुपये मेरे पास ही रह गये।

धर्मचन्दजी सन् १९५९ में कालेज स्क्वायर स्वीमिंग क्लब के सभापति चुने गये। इन्होने एक ट्रस्ट बनाकर ट्रस्ट के नाम से बेंक में रुपये जमा कर दिये। समय बीतता गया और रुपये बढ़कर ८८०० (आठ हजार आठ सौ) हो गये। फिर १९७३ मे भोला खत्री की यादगार में वाटर पोलो खेलने का कालेज स्क्वायर के तालाब में क्लब के सामने ही प्लेटफार्म और रेफरी प्लेटफार्म बना दिया गया। साथ ही भोला खत्री की पत्नी पुष्पा देवी, जिसने वे रुपये नही लिये थे, उसका नाम भी मार्बल पर अंकित करवा दिया। इस प्रकार मैंने देखा कि धर्मचन्दजी सेवाभावी, ईमानदार, और हिसाब-किताब के बडे पक्के आदमी है।

धर्मचन्दजी स्वयं तो व्यायाम, खेल-कूद और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेते ही दूसरे कार्यकर्त्ताओ मे भी अपने जैसा उत्साह भरने का प्रयास करते रहते। स्वय सीखने के साथ-साथ उसका प्रदर्शन करने की ललक भी इनके मन मे बेहिसाब रहती थी। इनका कहना था कि प्रदर्शन देखकर अन्य लोगो के मन में व्यायाम के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। जितने अधिक लोगो को हम स्वास्थ्य के प्रति सजग कर सके उतना ही समाज बलवान और शक्तिशाली हो सकेगा। ये तो यह भी कहते है कि समाज को स्वस्थ और निरोग रखना है तो प्रत्येक नागरिक को नियमित व्यायाम के ऊपर अपनी दिनचर्या में अनिवार्य ध्यान देना होगा। व्यायाम केवल शौक पूरा करने या मनोरजन का साधन मात्र नही है बल्कि हमारे संपूर्ण सुख, समृद्धि और भविष्य के विकास की आधार शिला है। स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मस्तिक, स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र। विकास की इस स्वस्थ प्रक्रिया को जबतक निष्ठापूर्वक स्वीकार नही किया जायेगा तबतक राष्ट्र निर्माण के समस्त प्रयास अधूरे ही रहेगे।

सच तो यह है कि धर्मचन्दजी प्राकृतिक जीवन के प्रति समर्पित व्यक्ति हैं। प्राकृतिक जीवन और चिकित्सा पद्धति के विकास के लिए इन्होंने अथक प्रयास और त्याग किया है। डायमण्ड हार्बर में इन्होने अपने बगीचे की भूमि दान कर दी और भरपूर पैसा लगाकर प्राकृतिक चिकित्सा की स्थापना की जो आज भी नये नाम और नये उत्साह के साथ चल रहा है। इस संस्थान की स्थापना कर के धर्मचन्दजी ने अपने परिवार के लिये एक कीर्ति-स्तम्भ खड़ा कर दिया है। आनेवाली पीढ़ियां धर्मचन्दजी के इस कार्य से सदा प्रेरणा लेती रहेगी।

पहला सुख 'निरोगी काया' के मंत्र को सिद्ध कर दिखाने वाले धर्मचन्दजी अस्सी की उमर पार करके भी अभी तक नियमित रूप से युवक सभा में जाते हैं और व्यायाम करते है। उनके इस युवकोचित उत्साह भरे जीवन को देखकर नयी प्रेरणा और ऊर्जा से हृदय भर जाता है और गर्व से माथा ऊँचा हो जाता है।

धर्मचन्दजी एक सच्चे मित्र और विश्वासी साथी हैं। इनके सम्पर्क में रहने वाले व्यक्ति के पास निराशा तो कभी फटक भी नही सकती। मुझे याद है कारबार के बारे में बातचीत चलने पर उन्होंने मुझे स्टील फर्नीचर बनाने की सलाह दी। मैं जितना फर्निचर बनाता था वे अपने शो-रूम में रखवा लेते थे। और मुझे पेमेन्ट कर दिया करते थे।

व्यापारिक लेन-देन मे इतना साफ-सुथरा व्यवहार रखनेवाला आदमी मैंने अपने जीवन में दूसरा नही देखा काम को समय पर करना और सलीके से करना इनका स्वभाव है। अपने मृदु व्यवहार और सही व्यवहार के कारण धर्मचन्दजी दूसरों से काम करवा लेने की कला में भी माहिर हैं। मैंने कभी किसी कर्मचारी को इनसे नाराज होते नही देखा।

इन्द्रधनुषी छटा लिए धर्मचन्दजी के जीवन के अनेक रग है। प्रसिद्ध हवाबाज बनकर इन्होंने मारवाड़ी समाज के सामने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। कलकत्ता कारपोरेशन के निर्विरोध काउन्सिलर चुने गये। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी और अनेक सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी रहकर शानदार काम किए।

एम० पी०, और एम० एल० सी० चुने गए। अनवरत सेवा-कार्यों का दीर्घ-कालीन कार्यक्रम इनके जीवन से सम्बन्धित अनेक संस्मरण मेरी स्मृति के आकाश में समय-समय पर उद्भाषित होते रहते हैं, उन सबको लिख पाना मेरे लिए सम्भव नहीं है। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि धर्मचन्दजी जैसे कर्मवीरों की आज समाज को नितांत आवश्यकता है। मेरी कामना है कि वे सौ वर्षों बाद भी इसी प्रकार जवान रहकर युवकों का मार्ग दर्शन करते रहें। □

वज्र-पुरुष

□ □

राधाकृष्ण सोंथलिया

श्रद्धेय धर्मचन्दजी का सम्बन्ध मेरे परिवार से सात दशक से भी अधिक से है। ये मेरे पिताजी की उम्र के हैं। बाल्यावस्था में काफी चर्चाएँ हमारे परिवार में हुआ करती थी। ये उस समय समाज में प्रगतिशील विचारों के माने जाते थे तथा समाज के प्रथम हवाई जहाज चालकों में थे। उस समय के हिसाब से यह काफी हिम्मत एवं लगन का काम था। आज से करीब ३० वर्ष पहले सुबह बड़ाबाजार युवक सभा में ये अचानक आये। उस समय मैं तथा भाई मदनलाल भावसिंहका और भी कई साथी व्यायाम कर रहे थे। इन्होने अपनी इच्छा व्यायाम करने के लिए जाहिर की। हमलोगों को कुछ अटपटा लगा कि इस उम्र में ये क्या व्यायाम करेंगे। खैर, इन्होने नियमपूर्वक आना शुरू किया एव सिर्फ व्यायाम ही नहीं, एक पहिये की साइकिल चलाना, दो पहिए की साइकिल पर सरकस वाले जो खेल दिखाया करते हैं, करना सीखा। साथ

ही तार पर चलना, छाती पर पत्थर रखकर रॉड कटवाने का अभ्यास किया। एक बार हमारा वार्षिक प्रदर्शन हो रहा था, उस दिन के सभापति स्वर्गीय मूलचन्दजी अग्रवाल "विश्वमित्र" के मालिक थे। धर्मचन्दजी ने छाती पर पत्थर रखकर रॉड कटवाने का प्रदर्शन किया। उस प्रदर्शन के समय इनके पिताजी और माताजी भी उपस्थित थे। जब धर्मचन्दजी की छाती पर पत्थर रखकर रॉड कटवाने के लिए हैमर मारे जाने लगे तब, (माता का हृदय तो माता का होता है) इनकी माताजी विह्वल होकर कहने लगी "मेरे लड़के को क्या कर रहे हो!" खैर प्रदर्शन तो सानन्द सम्पन्न हो गया। फिर मूलचन्दजी ने धर्मचन्दजी को ऐसे खतरनाक प्रदर्शन करने के लिए मना कर दिया।

पर ये हमारे वार्षिक उत्सवों मे पेरलल वार, बेंच प्रेस आदि के खेलों का प्रदर्शन युवको के साथ किया करते थे। बड़ा बाजार युवक सभा में जब इनडोर राईफल रेंज चालू हुआ तो इन्होने राइफल का निशाना सीखा और योग्यता हासिल की। इनकी इच्छा बराबर कुछ सीखने की रहती है। ये अपनी उम्र से छोटे लोगों से भी नम्रतापूर्वक पेश आते है और उनसे सीखते है। जब टेबल टेनिस और बेडमिन्टन हमारे यहाँ आरम्भ हुआ वह भी इन्होने सीखा। भारत सरकार द्वारा नेशनल फिजिकल एफिसियन्सी ड्राइभ प्रतियोगिता चलाई जाती थी। ७७-७८ की प्रतियोगिता मे धर्मचन्दजी ने ४५ वर्ष की उम्र के लोगो के साथ "तीन स्टार" जीता।

ये आज भी व्यायामशाला जाकर वारल वार, उठबैठ, दण्ड, चीनिंग, बेंच प्रेस, रींग और पेरलल वार, मुगदर चलाना, योगासन आदि कभी कुछ, कभी कुछ करते रहते हैं तथा दूसरों को सीखने की प्रेरणा देते रहते है। एक दिन उनसे चर्चा हो रही थी तो कहने लगे कि कड़े व्यायाम करने का मेरा अभ्यास तो था ही पर पिछले दिनों पत्रो में पढ़ा कि अमेरिका के राष्ट्रपति श्री रीगन भी बेंच प्रेस आदि कड़े व्यायाम करते है इससे मुझे बल मिला। एक नई घटना पच्चासो साल में घटी बताते थे कि उनके मकान के सामने कर्जन पार्क में आर० एस० एस० वालो का लाठी चलाना सिखाने का कैम्प लगता है। धर्मचन्दजी की इच्छा लाठी सीखने को हुई। ये उनके अधिकारी से मिले और लाठी सीखने की इच्छा प्रगट की। उन्होंने कहा कि आपकी तो उम्र हो गई है, आप क्या लाठी सीखेगे। ये अधिकारी से बोले मेरी उम्र तो साठ की है। मैं तो बड़ाबाजार

युवक सभा में बराबर व्यायाम करता हूं। आपलोग मुझसे दस-पन्द्रह वर्ष छोटे होंगे। आपको जो दाँव सीखने में पांच दिन लगेंगे हो सकता है मुझे दस दिन लगे। इनके उत्साह को देखकर वे धर्मचन्दजी को लाठी सिखाने लगे। साल के अन्त में धर्मचन्दजी के ८० वें जन्म दिन पर "सन्मार्ग" मे उन्होने इनका चित्र देखा तो कहने लगे आपने तो हमलोगों को अपनी उम्र कम बताई, आप तो अस्सी के हो गये। धर्मचन्दजी उनसे हँसकर बोले 'मैं आपको उम्र कम नही बताता तो आप मुझे लाठी चलाना थोड़े ही सिखाते।"

तैराकी में भी इनकी इतनी अधिक रुचि रही है कि ये मेरे बच्चों को भी नित्य मोटर से ले जाया करते थे तथा तैरना सिखाते थे। ये जिस सस्था में जुड़ते हे उसकी तन-मन-धन से सेवा करते हैं।

धर्मचन्दजी ने आज सिद्ध कर दिया है कि व्यायाम करने की उम्र कभी समाप्त नही होती बल्कि बड़ी उम्र में व्यायाम की अधिक आवश्यकता है। आजकल अधिकाश डाक्टर भी इस बात को मानने लगे हैं। वर्तमान में धर्मचन्दजी बड़ाबाजार युवक सभा के सभापति हे तथा कुछ अतिशयोक्ति न होगी यदि यह कहा जाए कि आज के दिन इनका अनुदान इस संस्था मे सर्वोपरि है एव इन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि भारी व्यायाम सिर्फ नौजवानो के लिए नही बल्कि बड़ी उम्रवाले भी बखूबी कर सकते हैं। युवको को इनसे काफी प्रेरणा मिली है और मिलती रहेगी। भगवान् से प्रार्थना है कि ये शतायु हो तथा हमलोगो का मार्ग प्रदर्शन करते रहें। □

क्रांति के अग्रदूत

□ □

प्यारेलाल जैन

धर्मचन्दजी का नाम लेते ही एक ऐसा व्यक्तित्व सामने आ खड़ा होता है जो जीवन का प्रत्येक क्षण कार्य करते हुए जीता है। प्रति दिन सूरज उगता है और धर्मचन्दजी जहां होते हैं वहां से एक कदम और आगे बढ जाते हैं। कुछ करने के लिए उठना और कुछ करके सोना इनका नियम है। चरंवेती-चरंवेती के मंत्र को क्रियान्वित करने वाला यह प्रगतिशील पुरुष आज की अकर्मण्य दुनिया को कुछ अजूबा लगे तो कोई अजीब बात नहीं।

अपनी स्मृति के झरोखे से झाकता हूं तो मेरी आंखों के आगे धर्मचन्दजी का वह रूप स्पष्ट होने लगता है जब धर्मचन्दजी अपनी चालीसी में भी पच्चीस-तीस के पूर्ण युवा लगते थे। गठा हुआ शरीर, मुस्कराता हुआ मुख मण्डल और चमकती हुई आंखें। जैन युवकों की मण्डली में अलग से पहचाना जाने वाला आकर्षक और लुभावना व्यक्तित्व।

हमारा परिवार पुराने विचारों का था और जैन की जगह नाम के सामने लिह्ला लिखा करता था। धर्मचन्दजी मेरे पिता की उम्र के बराबर के हैं। आज से ५५ वर्ष पहले जब वे विदेश से लौट कर आये तब हमलोगों के परिवार वालों ने इन्हें जाति से बहिष्कृत करने का प्रयत्न किया पर वे नवयुवकों के सामने सफल नहीं हुए। इस बीच नये मन्दिर में चलने वाला बच्चों का स्कूल भी बन्द हो गया था। धर्मचन्दजी ने नवयुवकों को लेकर आन्दोलन चलाया कि बच्चों के लिए यह स्कूल अवश्य खुलना चाहिए और बेलगछिया मन्दिर के बगीचे मे हो तो सोने में सुगन्ध हो जाए। क्योंकि २५ बीघे में बने सुन्दर उद्यान में पहले विद्यालय बने और आगे चलकर कालेज बन जाए। बच्चों को दूर-दूर से लाने के लिए बसें हों। साधारण स्थिति के बच्चे जो बस का भाड़ा नहीं दे सकते है वे ट्रामों से आ जाये। क्योंकि सुबह बेलगछिया जाने वाली ट्राम खाली मिलती है और शाम को बेलगछिया से आने वाली ट्राम भी खाली रहती है। इसके अलावा वहां तालाब है जहाँ बच्चों को तैरने की शिक्षा दी जा सकती है। काफी खुली जगह है जहाँ बच्चे कई तरह के खेलकूद सीख सकते हैं। मन्दिर है जहाँ बच्चे रोज दर्शन करने का अभ्यास कर सकते हैं। यह स्थान केवल साल में ४-५ दिन कार्तिक उत्सव पर काम में आता है। इस आन्दोलन में मै भी शामिल था पर समाज के मठाधीशों के कारण स्कूल बेलगछिया में न बन सका पर तुलापट्टी में बन गया जो बड़ी सफलता से चल रहा है। इसके अन्तर्गत बालिका विद्यालय अंग्रेजी मीडियम का स्कूल भी बच्चों के लिए बन गया।

इसके बाद धर्मचन्दजी ने नया आन्दोलन छेड़ा। मन्दिरों का अधिकार जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक ही सेठ के अधिकार मे रहता है वह न रहकर हर दो या पाँच वर्ष बाद चुनाव हो। साथ ही मन्दिर का खर्च और आमदनी का हिसाब भी जनता के सामने आवे और मन्दिरों की रकम सेठों में जमा न रहकर बैंकों में जमा हो क्योकि जबतक सेठजी की स्थिति अच्छी रहती है और सेठजी कहलाते हे तब कोई उनसे रुपया नहीं चाहता मगर भीतर ही भीतर सेठजी की स्थिति डाँवाडोल होती है तब-तब लोग रुपया चाहते हैं और वे दे नहीं पाते यानी मन्दिर के रुपये डूब जाते हैं। इस आन्दोलन में धर्मचन्दजी को सफलता मिली और नये मन्दिर की एक कमेटी बनी जिसका सदस्य मैं भी हूँ। इस तरह

उनका चुनाव होता है और हर दो या पाँच वर्ष बाद नये आदमी के हाथ उसके संचालन का भार आता है।

महावीर पुस्तकालय जिसे मरणासन्न अवस्था से उठाकर धर्मचन्दजी और उनके साथी भाड़े के स्थान पर चलाते थे समाज का अपना जैन भवन बन गया तो धर्मचन्दजी चाहते थे पुस्तकालय उसमे जाये, पर पुराने विचार के लोग इसके विरुद्ध थे। धर्मचन्दजी को इसमें भी सफलता मिली। आज महावीर-पुस्तकालय जैन-भवन में है और अच्छी तरह चल रहा है। संयोग की बात है उन्ही दिनों जैन भवन के ट्रस्टियों का चुनाव होने वाला था, पुराने विचार के लोग कार्यकर्ता की जगह पैसे वालों को चुनना चाहते थे किन्तु धर्मचन्दजी उस चुनाव में गये भी नहीं थे। नवयुवको ने इनका नाम रखा और जब वोट लिया गया तो धर्मचन्दजी जीत गये, फिर तो इन्होंने काफी धनराशि अपने ट्रस्ट से देकर जैन भवन का काफी सुधार किया।

धर्मचन्दजी जो भी कार्य करते है खूब सोच-समझ कर और पूरी निष्ठा के साथ करते है। मन्दिर में दर्शन करने जाते है और धर्म में गहरी आस्था रखते है। इतना होते हुए भी समाज में कुरीतियों और अंध विश्वासो से सदा दूर रहते हैं और आवश्यकता पड़ने पर डटकर विरोध भी करते है। वस्तुत धर्मचन्दजी क्रान्ति के अग्रदूत हैं। प्रारम्भ से ही वे सामाजिक व्यवस्थाओं और मान्यताओ में युगानुकूल परिवर्तन के हिमायती रहे हैं। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नही है जो धर्मचन्दजी की कर्मभूमि न बन सके। जीवन को उन्होने पूरी समग्रता के साथ ही स्वीकार किया है। इतना सब करते हुए भी पद और प्रतिष्ठा के लिए व्यग्र होते मैंने उनको कभी नही देखा।

प्राकृतिक चिकित्सा जगत में धर्मचन्दजी सरावगी एक सम्मानित और समर्पित नाम है। प्राकृतिक चिकित्सा को ये चिकित्सा नहीं एक स्वस्थ जीवन दृष्टि या जीने की सार्थक कला मानते हैं। दो वर्ष पहले जब मैं गम्भीर रूप से अस्वस्थ हुआ तो इन्होंने मुझे प्राकृतिक चिकित्सा अपनाने का सुझाव दिया। इनके बताये मार्ग पर चलकर मुझे स्वास्थ्य लाभ हुआ। तबसे मेरे पूरे परिवार में चिकित्सा की यही पद्धति प्रिय है।

मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि धर्मचन्दजी के सान्निध्य ने मुझे स्वस्थ और नीरोग जीवन के प्रति पूर्ण सजग कर दिया।

धर्मचन्दजो एक व्यक्ति विशेष होते हुए भी उस सारी मानव जाति के लिए एक विश्वास भरा आश्वासन है जो दीर्घ और स्वस्थ जीवन की आकांक्षा रखता है। यह एक सशक्त साक्षी है इस बात की कि सौ वर्ष बाद भी मनुष्य की कर्मणा-शक्ति को सचेत और सजग रखा जा सकता है।

डायमण्ड हार्बर में प्राकृतिक चिकित्सा प्रतिष्ठान की स्थापना के लिए अपने बगीचे, रुपये और तन-मन का जो त्याग धर्मचन्दजी ने किया है वह मानव कल्याण की दिशा में किया गया एक अनुपम उदाहरण है। मेरा लड़का सुबह कर्जन पार्क, जिसका नाम आजकल सुरेन्द्रनाथ पार्क है, घूमने जाता है। उसने उन्हें अपने लड़के और पोते की उम्र के लोगों के साथ लाठी चलाने का अभ्यास करते देखा और आकर मुझसे कहा। उसे जरूर कुछ आश्चर्य हुआ इसीलिए उसने मुझसे कहा। पर मैं जानता था कि धर्मचन्द बराबर नई चीज सीखने के शौकीन है इसीलिए वे कोई भी कार्य करें, कोई आश्चर्य की बात नही है।

अनेक साहसिक कार्यों के प्रदर्शन मे प्रथम स्थान प्राप्त कर तथा पुरष्कृत होकर धर्मचन्दजी ने समाज के गौरव को ऊँचा उठाया है। विभिन्न संस्थाओ में पदाधिकारी रहकर धर्मचन्दजी ने जो व्यापक सेवा कार्य किया है उन सबका उल्लेख कर पाना यहा मेरे लिए सभव नहीं है। इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि समाज इस इक्यासी वर्ष के प्रयोग सिद्ध युवा से स्वस्थ जीवन जीने की कला सीखे। ☐

एक अनोखा व्यक्तित्व

□ □

हरिशंकर द्विवेदी

श्री धर्मचन्द सरावगी से मेरा परिचय आज से लगभग ४० वर्षों पूर्व हुआ, जब वे मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मन्त्री थे। उन्हीं दिनों कलकत्ता में तत्कालीन "मुस्लिम लीग" के आह्वान पर पाकिस्तान की मांग को लेकर 'प्रत्यक्ष कार्रवाई' हुई थी, जिसके परिणामस्वरूप कम से कम ५ हजार व्यक्ति २-३ दिनों के भीतर मारे गये। उन दिनों की कुछ बातें मुझे आज भी याद हैं। "सोसाइटी" के कुछ कार्यकर्त्ताओं का विचार था कि कार्य बहुत बड़ा है और उसके लिये काफी धन की आवश्यकता होगी, लेकिन यदि मुसलमानों को सहायता दी गयी तो शायद धनसग्रह में कमी आएगी। धर्मचन्दजी ने दृढ़तापूर्वक यह तय किया कि 'सोसाइटी' सहायता के प्रश्न पर जाति या धर्म का विचार नही कर सकती। यह कहकर काम चालू रखने के लिये अपने कोष से काफी रुपये सोसाइटी में भेज दिये। सहायता का कार्य हुआ फिर तो उस कार्य के लिये

धन की सहायता की बाढ़ आ गयी। रुपये लेना और रसीद देना असम्भव हो गया। धर्मचन्दजी ने तय किया कि टेबुल पर सभी सहायतार्थी अपनी सहायता की रकम छोड़ जायें, क्योंकि अलग-अलग रसीद लिखना सम्भव नहीं था। उनका दृढ़ विश्वास था कि सहायता की जो रकमे उस टेबुल पर पड़ी रहेगी, उन्हें चुराने की बात तो अलग है, कोई छू भी नहीं सकता। वैसा ही हुआ भी। रुपये बरसते रहे, लेकिन किसी ने एक पैसा भी उनमें से लिया नहीं। जो चार-छः व्यक्ति रुपये गिनने और रसीदें काटने में व्यस्त होते, वे भी आहतों एव शरणार्थियों की सेवा में लगे रहे। मनुष्यता विभाजित नहीं की जा सकती और सामूहिक विपत्ति के समय बुरे से बुरे लोग भी अच्छे बन जाते हैं—इन मान्यताओं को चरितार्थ होते मैंने देखा।

कलकत्ता के बाद नोआखाली का दंगा हुआ। धर्मचन्दजी ने नोआखाली जाने का अपना विचार प्रकट किया, तो यह आम धारणा पायी गयी कि 'सोसाइटी' के प्रधान मन्त्री का कलकत्ता में ही रहकर धन सग्रह करना तथा सहायता की योजनाओ को बल प्रदान करना अधिक सही कदम होगा। नोआखाली जाने के लिए एक टीम बनी, जिसमें मैं भी शामिल था उसमें अन्य व्यक्ति थे स्व० तुलसीराम सरावगी और भालचन्द्र शर्मा। जब यह टीम वापस आयी, तब धर्मचन्दजी ने कहा—"आपलोग मुझसे अधिक भाग्यशाली निकले।" उन्होंने खतरो से खेलने को भी "भाग्य की बात" माना। दूसरी टीम में धर्मचन्दजी प्रधान बनकर गये। सेवा कार्य के साथ वे बापू से वहाँ प्राकृतिक चिकित्सा की प्रेरणा लेकर आये और अपने पास से रुपये देकर प्राकृतिक चिकित्सा का विभाग खुलवाया।

अब भी, जब मैं कलकत्ता आता हू, चौरंगी में ८१ वर्ष के इस नौजवान को अकड़ता हुआ, सामने से आता देखता हूं, तो मन प्रसन्नता से भर जाता है। दैनिक व्यायाम और प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति उनकी निष्ठा अनुपम है। जब कभी भारत में प्राकृतिक चिकित्सा के प्रसार का इतिहास लिखा जाएगा, तब धर्मचन्दजी का नाम ऊपर की पंक्तियों में ही लिखा जायेगा। □

अद्भुत व्यक्तित्व के व्यक्ति

□ □

जमनालाल जैन

धर्मचन्दजी सरावगी का नाम मैंने तब सुना था जब मेरी आयु बारह-तेरह वर्ष की थी। यानी यह ५० वर्ष पहले की बात है। तभी यह सुना था कि ये प्रथम जैन वायुयान चालक हैं। फिर कुछ समय बाद वर्धा में आपके पिता बैजनाथजी सरावगी के भी दर्शन हो गये। मुझे याद है कि उनको इस बात की बड़ी लगन थी कि जिन मन्दिरों की भित्तियां बढ़ियां पेंट की हुई हों और उनपर धर्म-वचन, दोहे आदि लिखे रहे ताकि दर्शनार्थी उन्हे पढकर कुछ ग्रहण कर सकें। नित्य पूजा-पाठ के गुटके भी वे छपाते थे और वितरण करते रहते थे।

धर्मचन्दजी से मेरा भारत जैन महामण्डल के नाते पत्र-व्यवहार भी होता रहा। महामण्डल की एकता विषयक प्रवृत्तियो में तथा 'जैन जगत' मासिक में उनकी हार्दिक दिलचस्पी शुरू से ही रही है। लेकिन उनका निजीतौर पर, प्रत्यक्ष परिचय बहुत बाद में हुआ। अब यह स्मरण नही है कि सर्वप्रथम परिचय

कब कहाँ और किस सिलसिले में हुआ। इसका कोई प्रयोजन भी अब नही है। जब साक्षात् परिचय में आया, तब मैं इनके व्यक्तित्व से अभिभूत-सा हो गया।

यकीन कीजिए, ऐसा अद्भुत, शिष्ट, स्वस्थ, व्यवस्थित व्यक्तित्व बहुत कम देखने में आता है। जो व्यक्ति ७५ और ८० वर्ष की अवस्था में भी जवान बने रहने की साधना कर सकता है, उसका सयम पराकाष्ठा का ही हो सकता है। इसे शारीरिक आसक्ति कहना अध्यात्म का अपमान करना है। एक बार ये कलकत्ता से दिल्ली जा रहे थे। मैं दूध लेकर सबेरे मुगलसराय स्टेशन पहुचा। जानता था कि ये प्राकृतिक जीवन और चिकित्सा के जाने-माने प्रयोगवीर हैं, फिर भी दूध तो ले ही लेगें। लेकिन इन्होंने गरम किया हुआ दूध लेने से साफ इन्कार कर दिया। आरामबाग (प० बंगाल) में सर्व सेवा संघ का अधिवेशन था वहां मेरी इनसे भेंट हुई। दो-तीन दिन साथ रहे, काफी चर्चा हुई। भोजन के विषय में इनके नियम आश्चर्य मे डाल देते थे। कब, कितना, क्या खाना है, सब सिद्धांत और स्वास्थ्य के आधार पर। हम चाहते थे कि सर्व सेवा सघ प्रकाशन से प्राकृतिक चिकित्सा की विभिन्न रोगो पर पुस्तक-माला निकले। धर्मचन्दजी से चर्चा हुई और उन्होंने ऐसी पुस्तकें लिख देने का आश्वासन दिया। हमें हार्दिक प्रसन्नता है कि उन्होने पथरी, चर्मरोग, बवासीर, लकवा, ब्लड प्रेशर, दमा, हार्निया आदि रोगो पर पुस्तके लिखीं और प्रचारित भी कीं। सैकड़ों रोगियों का उपचार भी आपने किया है। ऐसे उपचारों के सस्मरण भी आपने लिख रखे है। यह पुस्तक प्रकाशित होनी चाहिए। प्राकृतिक चिकित्सा की इनकी लगन सचमुच आश्चर्यजनक है। ये इसकेलिए हजार काम छोड़कर तैयार हो जायेंगे।

इनके पिताजी के नाम पर एक ट्रस्ट भी है, जिसके द्वारा अभावग्रस्त होनहार छात्रों को छात्रवृत्ति आदि दी जाती है। रोगियों की भी सहायता की जाती है। सन् १९६७ की बात है। हमारे मकान के काम में हाथ लगा था। एक दिन अचानक हमारे घर में चोरी हो गयी। बहुत नुकसान हुआ। आर्थिक स्थिति पहले ही नाजुक थी, इस चोरी से तो बधिया ही बैठ गयी। लोगों ने तरह-तरह की सलाह दी, सारनाथ छोड़ देने तक की सलाह दी। धर्मचन्दजी तक भी चोरी का समाचार पहुंचा। इन्होंने तत्काल कुछ राशि का चेक भेज दिया। मैं ऐसी सहायता नही चाहता था; उचित भी नही था आखिर इन्होने लिखा कि इसे मैं स्वीकार कर लूं, अन्यथा दुःख होगा इनके इस निरपेक्ष, सहज स्नेह का मूल्य मैं

कैसे आंक सकता था। समय की उस साधारण-सी सहायता से मेरा मनोबल कितना बढ़ा, कहना कठिन है। बिना मांगे, कहे-सुने जो काम हो जाता है, वह अपने में बड़ी उपलब्धि है।

कभी-कभी मैं सोचता हूं कि एक व्यस्त और दायित्वों से लदा व्यवसायी या उद्योगी व्यक्ति समाज सेवा के बहुत सारे कार्य कैसे कर लेता है। कभी-कभी किसी विशिष्ट महानुभाव के विषय में ये इतनी बातें पूछ लेते हैं कि पूछो मत इसका मतलब यह है कि ऊपरी स्तर पर नहीं, भीतर की टोह लेकर ये सम्पर्क बनाते हैं और उसके उपयोग मे आते हैं।

धर्मचन्दजी सरावगी के कार्य-कलापों से, मित्रता से, सेवा भावना से अनेक लोगों ने, संस्थाओं ने प्रेरणाएं ली हैं, लेती रहती हैं। इस अभिनन्दन के द्वारा हमारे देश की तरुण पीढ़ी भी स्वस्थ प्रेरणा लेगी, इसमें सन्देह नहीं।

अपने बुजुर्ग (जवान) मित्र का शत-शत अभिनन्दन। □

योजनाबद्ध व्यवस्थित जीवन

□ □

राधाकृष्ण बजाज

भाई धर्मचन्दजी सरावगी से मेरा निकट का परिचय रहा है। मुझे वे परिवार का एक सदस्य ही मानते हैं। पू० ढेवरभाई के साथ तथा अकेले में भी अनेक वर्ष उनके यहां ठहरता था। उनके व्यवस्थित जीवन की मुझ पर बहुत बड़ी छाप है। वे नियमित चर्खा कातते हैं तब देखा कि उनका चर्खा साफ-सुथरा व्यवस्थित, जहां का तहा, रखा जाता था। बार-बार न टूटे इसलिए माला हवाई जहाज के रेशम के डोरे की बनाई थी। मुझे भी एक-दो माला दी थी। वे आसन सीखने के लिये जाते थे। नित्य नियमित व्यायाम करते हैं। सप्ताह में एक दिन का उपवास रखते हैं। खान-पान नियमित, प्राकृतिक आहार, स्वास्थ्य उत्तम।

प्राकृतिक चिकित्सा मे आपकी बहुत अधिक दिलचस्पी रही है। कलकत्ते में प्राकृतिक चिकित्सा का एक विद्यापीठ इन लोगों ने स्थापित किया था। इन्हीं को तरह से इनके साथी राधाकृष्णजी नेवटिया का जीवन भी बहुत नियमित

रहा है। ये लोग घड़ी के अनुसार बराबर चलते थे या कहिए इनके जीवन से घड़ी का बोध हो सकता था। ऐसे लोग जो समय के नियमित होते हैं, उनके स्वभाव में कुछ आग्रह आ जाता है। बिना आग्रह के नियमितता चल भी नहीं सकती। इसे पू० बिनोवाजी गुण रक्षणार्थ दोष कहते थे। ब्रह्मचारी लोग अक्सर तेज स्वभाव के क्रोधी और आग्रही देखे जाते हैं। उनमे आग्रह का यह दोष ब्रह्मचर्य के रक्षणार्थ होता है। धीरे-धीरे जब ब्रह्मचर्य स्वाभाविक हो जाता है तब आग्रह का दोष कम हो जाता है।

प्राकृतिक उपचार विद्यापीठ में अनेक तेजस्वी लोग इकट्ठे हुए थे, उम्मीद थी कि एक आदर्श विद्यापीठ चलेगा। लेकिन इन तेजस्वी व्यक्तियों के आग्रह को स्नेह न मिला, आग्रह टकरा गये, विद्यापीठ का सपना क्षीण हो गया, वह अब चिकित्सालय के रूप में चल रहा है।

भाई धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक चिकित्सा पर अनेक किताबें लिखी हैं। उनमे से कई किताबें सर्व सेवा सघ प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित हुई हैं। साररूप में लिखी ये किताबें काफी चल रही है।

भाई धर्मचन्दजी का जन्म और मेरा जन्म एक ही साल का है। उनका जन्म रांची के ठण्डे प्रदेश में हरीभरी भूमि में हुआ है। मेरा जन्म राजस्थान के सीकर जिले में आषाढ़ की गरमी में हुआ है। इस कारण दोनों के स्वभाव में थोड़ा-सा अन्तर है। नियमितता, आसन आदि के कारण आज भी वे स्वस्थ है। उनकी सेवाएँ २० साल तो सहज ही मिल सकती है। अभी तो वे जवान है, मैं भी अपने को जवान ही मानता हूं, फिर भी वे मुझसे जवान है। हम चाहते हैं कि वे शतायु हों एव राष्ट्र की सेवा में योग देते रहें। कलकत्ते में पू० प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका ही ऐसे व्यक्ति हैं जो हमसे १० साल बड़े होने पर भी जवान है। नियमित जीवन का प्रभाव है।

गोसेवा में इनकी पूरी रुचि रही है। केन्द्रीय गो-संवर्द्धन कौसिल के ये सदस्य रहें है। इनका घर में गोदूध लेने का आग्रह रहा है।

इनके नियमित जीवन क्रम से सदा ही प्रेरणा मिलती है। राजस्थानी समाज में इनकी-सी नियमितता और विचारशीलता, प्राकृतिक आहार-विहार और आसन-व्यायाम आदि चलने लगे तो राजस्थानी समाज हर प्रकार से अपनी भी उन्नति करेगा और देश को भी उन्नत बनाएगा। □

एक अच्छे दानी

□ □

सुखबीर सिंह

जब मैं निसर्गोपचार आश्रम उरूलीकांचन में जुलाई १९५९ में आया तब प्राकृतिक चिकित्सा परिषद का गठन हो चुका था और उस समय इस परिषद के अध्यक्ष पू० बालकोवाजी थे। दूसरे सदस्यों में धर्मचन्दजी का नाम भी था। उस समय 'स्वस्थ जीवन'' नामक पत्रिका का सम्पादन भी धर्मचन्दजी ही कर रहे थे। इस पत्रिका के द्वारा भी इनके नाम की चर्चा होती थी। बीच-बीच में पू० बालकोवाजी धर्मचन्दजी के विषय में बताया करते थ। परन्तु इनके प्रत्यक्ष दर्शन नवम्बर १९५९ में यहाँ आश्रम में ही हुए। जब यहाँ प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की कार्यकारिणी की मीटिंग हुई थी। इस मीटिंग में श्री यू० एन० ढेवर, मदालसा बहन, डा० विठ्ठलदास मोदी, डा० वेंकट राव, डा० एस० जे० सिंह, डा० खुशीराम 'दिलकश', डा० सिंघवा, डा० डी० एन० शाह आदि आदि भी थे जिनका नाम सुनते थे। उन सबसे मुलाकात हुई और

परिचय भी हुआ। धर्मचन्दजी के साथ-साथ राधाकृष्णजी नेवटिया का नाम भी था और वे भी इस मीटिंग में आये थे। इस मीटिंग में जितने भी सज्जन आये थे उनका स्वास्थ्य सामान्य था परन्तु धर्मचन्दजी का शरीर स्वस्थ तो था ही सुडौल भी था और चेहरे पर तेज की आभा थी। कुछ इस कारण से और कुछ इस कारण से भी कि इस मीटिंग का जो भी खाने-पीने का खर्च हुआ था वह धर्मचन्दजी ने ही दिया था सो इनका याद रह जाना एक विशेष बात हुई थी। पू० बालकोबाजी अपने दानियो का नाम बीच-बीच मे लेते थे उनमें मीटिंग का सारा खर्च इन्होने उठाया इसका भी गुणगान बराबर करते थे और आभार मानते थे कि धर्मचन्दजी ने आश्रम पर भार न पड़ने दिया।

इसके बाद धर्मचन्दजी का प्रत्यक्ष दर्शन अप्रैल १९६६ में हुआ जब मैं प्रकृति निकेतन देखने सपत्नीक कलकत्ता गया था। उस समय डाक्टर शरण प्रसादजी नही थे। उस समय इनकी दिनचर्या, इनका खानपान देखकर प्रत्यक्ष लगा कि सच्ची प्राकृतिक चिकित्सा वे ही कर रहे है। बाद मे इनसे भेंट लखनऊ प्राकृतिक चिकित्सा अधिवेशन में हुई जब उस अधिवेशन का उद्‌घाटन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति वी० वी० गिरिजी ने किया था। यह जुलाई १९७३ की बात है। उस अधिवेशन में मैंने प्राकृतिक चिकित्सा की मर्यादाएँ बताई थी और बीमारियों को कार्मिक (Functional) और अवयवीय (Organic) में वर्गीकरण करके समझाने की कोशिश भी थी कि किन-किन अवस्थाओं में प्राकृतिक चिकित्सा काम कर सकती है। इस विचार को धर्मचन्दजी ने पसन्द किया और मुझे इसके लिए सराहा भी था। परन्तु मैंने तो इसे एक आशीर्वाद ही माना था। इसके बाद से शायद इनके दर्शन नहीं कर सका हूं। बीच-बीच में पत्र आते है और विचारों का अदान-प्रदान होता है, खुशी होती है कि इस आयु में धर्मचन्दजी प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेरणा स्रोत बने हुए है।

धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक चिकित्सा के मर्म को समझा है और उसी पर चलकर आज ८१ वर्ष में भी युवक है। यह प्राकृतिक चिकित्सा या पद्धति का ही फल है। उन्होंने जो लिखा है, पढ़ा है उसे अपने जीवन में उतारा है, अपनाया है और सिद्धातों का जजाल अपने ऊपर न रखकर खुद सिद्धान्त बने है जो स्वस्थ जीवन का मूल है। उनके विषय में ७-८ साल पहले भी पढ़ा था कि अपने से कम वयस्कों के साथ व्यायाम में इन्होंने भाग लिया था और ईनाम प्राप्त किया था। आज

प्राकृतिक चिकित्सा जगत में कुछ इनेगिने हो ऐसे व्यक्ति हैं जो प्रेरणा दे सकते हैं। प्राकृतिक चिकित्सकों को इनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और उसीके अनुसार अपना जीवन वे ढालें। मुझे काफी बड़े लोगों के जीवन देखने को मिले हैं। धर्मचन्दजी भी उनमें से एक हैं और हमारे प्रेरणा स्रोत हैं। शुरू में प्राकृतिक चिकित्सा को जिन कुछ व्यक्तियों ने प्रारम्भ किया था उनका जीवन था कि काफी काम कर गये—आज प्राकृतिक चिकित्सा मे सैकड़ो लगे हैं पर जीवन के अभाव में कुछ कर नही पा रहे हैं। जो आज प्राकृतिक चिकित्सा के डाक्टर बनने की कोशिश में हैं परन्तु प्राकृतिक चिकित्सा मे जीवन कैसा हो इसका उन्हें भान नहीं है। जब तक यह नहीं होगा प्राकृतिक चिकित्सा अधूरी लगेगी और इसका प्रसार धीमा होगा। यह प्रेरणा—जीवन की प्रेरणा सब वे धर्मचन्दजी से लें। □

कीर्तिवान् व्यक्तित्व

□ □

जयदेव मालपुरी

कर्मवीर सरावगीजी से मेरा परिचय बहुत पुराना होते हुए भी पिछले दशकों से कुछ निकटतम और घनिष्ठ-सा हो गया। उसका कारण सरावगीजी द्वारा निरौषध (प्राकृतिक) चिकित्सा पद्धति में अर्पित सेवापूर्ण जीवन है। मैं भी अपनी संस्था निरामय योग सगम के माध्यम से निरौषध चिकित्सा पद्धतियों की उपासना में रत हूं, और इसी कार्य हेतु सरावगीजी से समय-समय साक्षात्कार होता रहता है। साक्षात्कार के इस परिवेश में सरावगीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व से मैं प्रभावित हुआ। उसी आदर्शमय प्रभावशाली व्यक्तित्व के संस्मरण अपने तुच्छ शब्दों में अर्पण करते हुए मैं यह कहूंगा कि सरावगीजी महात्मा गांधी, लुई-कुने तो हैं ही नहीं जिन्होंने प्राकृतिक जगत में अपनी अक्षुण्ण अमरता को प्राप्त किया। परन्तु यह निःसन्देह है कि सरावगीजी मे उपरोक्त दोनों महापुरुषों के आदर्श जीवन की छाया

अवश्य है। छाया ही सुख और विश्रान्ति का मुख्याधार है। सरावगीजी का मौलिक जीवन चरित्र राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक व साहित्यिक स्तर पर बने विशाल सुखद भवन की भांति है।

आज के परिवर्तनशील अर्थ प्रधान युग में जब सांसारिक उन्नति व उपादेयता का बोलबाला है और जहाँ धार्मिक तथा सामाजिक विचार-भावना अनावश्यक समझी जाती है, वहाँ सरावगीजी दोनों ही स्तरों पर पूर्ण प्रोत्साहन देते हुए कर्मक्षेत्र में डटे हुए हैं। आज के युग में महापुरुषों की कोई कमी नहीं है और अतीत मे भी नही थी। महर्षि अरविन्द, महात्मा गांधी, महामना मालवीय, युगपुरुष टण्डन, सन्त विनोवा जैसे अनेक महापुरुषो ने मानव कल्याण के लिये धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक साहित्यिक क्षेत्रों मे अपने जीवन को समर्पित किया है। ये सभी महान अनुकरणीय होते हुए भी आज के युग के युवकों के लिए उपरोक्त महापुरुषों द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलना बहुत कठिन है। लेकिन सरावगीजी ने "कर्मण्येवाधिकारस्ते"— भगवान श्री कृष्ण के इस आदर्शमयी प्रेरणा के द्वारा पूर्ण निष्ठा, सच्ची लगन-रूपी कर्मठता से यह सिद्ध कर दिया है कि एक साधारण व्यक्ति भी उपरोक्त महापुरुषों के आदर्शों का अनुकरण करते हुए सांसारिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक क्षेत्रों मे उन्नत पथ पर अग्रसर हो सकता है। यह उनकी योग्यता, अध्यवसाय, कार्यक्षमता व व्यवहार से स्पष्ट हो जाता है।

सरावगीजी का जीवन सदा ही सादगी पूर्ण, नियमित व अध्ययनशील रहा है। जिसके बल पर वे अपनी शारीरिक स्वस्थता से सम्पन्न, सुन्दर दैहिक गठन और चिर यौवनपूर्ण युवक-से दिखाई पड़ते हैं। जिसका मुख्य कारण है नित्य नियमित व्यायाम, आसन सन्तुलित आहार, सादा विचार व कल्याण-कारी स्वास्थ्य-साहित्य का अध्ययन। उन्होंने अपने जीवन को निरौषध (प्राकृतिक) चिकित्सा पद्धति पर ही अवलम्बित रखा है। कभी भी क्रूर एवं विषाक्त औषध का सेवन नहीं किया। आप अपने जीवन में राजनैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों का सम्पादन बड़ी कुशलता के साथ करते रहे है। पर एक क्षेत्र ऐसा भी है जिसकी चिन्ताधारा से वे आज भी चिन्तित हैं। वह है औषध जगत में भटके हुए मानव का उद्धार। उन्होंने मानव स्वास्थ्य नीति को अपने जीवन का मुख्य अंग बनाते हुए प्राकृतिक या

निरौषध विज्ञान को सर्वोपरि रखा। प्राकृतिक विज्ञान को सर्वोपरि रखा। प्राकृतिक विज्ञान का प्रचार-प्रसार करने के लिए जो भी हो सका सभी उपाय किया। साहित्य प्रकाशन, प्राकृतिक साहित्य का वितरण, प्राकृतिक विज्ञान की सस्थाओं को आर्थिक प्रोत्साहन, प्राकृतिक चिकित्सालयो का निर्माण, कठिन व असाध्य रोगियों को वनस्पति व प्राकृतिक पद्धतियो का सेवन कराना आदि।

सरावगीजी के कथनी और करनी में कोई अन्तर नही देखा गया। वे जो कुछ करते है वैसा ही दूसरे को करने के लिये प्रेरित करते हैं और यही कारण है कि उनके पास जाने वाला व्यक्ति उनके वास्तविक व व्यवहारिक व्यक्तित्व से प्रभावित होता है और उनके मार्गदर्शन को अपने जीवन मे उतार लेता है। इनके आदर्श जीवन का अनुकरण आधुनिक युग के नवयुवको के लिये सुगम, लाभप्रद व कल्याणकारी है।

गोस्वामी तुलसीदासजी के शब्दों मे—"नीति प्रीति पुरुषारथ स्वारथ कोउ न राम सम जानु यथारथ।" यह उदाहरण सरावगीजी के जीवन की उपादेयता है। प्राय. यह देखने में आया है कि असाधारण व्यक्ति किसी एक क्षेत्र मे अपनी प्रतिभा के कारण जनसाधारण में ऊँचे उठता है पर सरावगीजी एक ऐसा व्यक्तित्व है जो अंगुलियो पर ही गिना जा सकता है। ऐसे व्यक्ति बहुत कम होते हैं जो विकट परिस्थितियों का सामाना कर विरोधी दिशाओ मे विचरण करते हुए विभिन्न विषयो मे एकता और सन्तुलन बनाये रखकर सम्पन्नतापूर्ण सफलता के लक्ष्य को प्राप्त कर सके। उनमें एक सरावगीजी हैं।

अन्त मे मैं प्रकृति प्रेमी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्ववाले धर्मचन्दजी सरावगी का अभिनन्दन करते हुए परब्रह्म परमात्मा से उनके सुखद दीर्घ जीवन की शुभेच्छापूर्ण कामना करता हूँ। ☐

जिन्दादिल इन्सान

□ □

वैद्य रामाधीन शर्मा "बशिष्ठ"

सफलता के लिए उद्योग करने वालों के सम्मुख कठिनाइयों का आना स्वाभाविक है। मनुष्य को चाहिए कि उनसे घबराना छोड़कर अपने उद्यम और उद्योगशक्ति में अटूट विश्वास रखे। पुरुषार्थ एव परिश्रम के तेज से ही जीवन मे चमत्कार उत्पन्न होता है। साहस एव संकल्प द्वारा ही बाधाएँ दूर होती हे। अडिग विश्वास और अदम्य उत्साह द्वारा ही लक्ष्य प्राप्त होता है। सैद्धान्तिक आदर्शो के साथ अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर अभियान करने वाले ही पुरुषार्थी पुरुष जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हे तथा लोक मंगल कार्य करते हुए समाज को आदर्श एव गौरवमय नेतृत्व प्रदान करते हें।

भाई धर्मचन्दजी सरावगी को मैं विगत तीन दशकों से भी अधिक समय से जानता हूं। उनका जीवन उपरोक्त वंचारिक त्रिवेणी से पूर्णतया ओतप्रोत हें। यही कारण है कि महानगर की प्रतिष्ठित सभी सामाजिक सस्थाओं को उन्होंने

समय-समय पर अपना सफल नेतृत्व प्रदान किया है। आरोग्यमय जीवन के लिए तो वह समाज में स्वास्थ्य चर्चा होने पर उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत किए जाते हैं। अपने संघर्षमय जीवन में उन्होंने हमेशा ही अदम्य उत्साह के साथ कार्य किया एवं लक्ष्य की प्राप्ति की। चाहे घरेलू कार्य हो, चाहे व्यापार, चाहे सामाजिक, जिस कार्य को भी लिया नई दिशा दी। आज हजारों हजार कार्यकर्ता सरावगीजी से प्रेरणा लेकर अपने आपको स्वस्थ रखे हुए हैं तथा सतत व्यायाम करते हैं।

मुझे याद है एक बार सरावगीजी ने प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की बैठक में कहा था कि जिस व्यक्ति ने कार्य करने का दृढ़ सकल्प कर लिया है उसे कोई भी बाधा नही रोक सकती वह अपने लक्ष्य पर पहुचेगा ही। उदाहरण के तौर पर प्राकृतिक विद्यापीठ (डायमण्ड हार्बर रोड) एवं बड़ाबाजार युवक सभा उसी दृढ संकल्प की देन है। नौजवानों के प्रेरणाश्रोत सरावगीजी "जीवेम् शरदः शतम्" की युक्ति को चरितार्थ कर स्वास्थ्य के क्षेत्र में क्रान्ति कर अन्यो के लिए "जिन्दादिल इन्सान" के रूप मे आदर्श है और रहेगे। ◻

एक गौरवमय जीवन

□ □

कुमारी सुशीला आत्मारामजी पंडित

तपोनिष्ठ व्यक्तित्व तथा अभिनव चिंतन के धनी, मानव जीवन के उत्कर्ष में जिसने रात-दिन सेवा को ही जीवन-लक्ष्य बनाया है और शारीरिक स्वस्थता, निरोगी काया और आरोग्यमय जीवन ही जिनका जीवन-ध्येय और लक्ष्य आज-तक रहा है, उनका अभिवादन और अभिनन्दन करते आनन्द होता है।

इनका जीवन एक आदर्श को लेकर है। आज जगत का इतिहास ऐसे पुरुषार्थी, कर्मयोगी के जीवन से सुवासित हो रहा है। इसकी दिव्य अभिव्यक्ति उनके स्वय के जीवन से व्यक्त होती है।

इस तपस्वी ने आजतक अपने जीवन और कार्य से एक ऐसा उदाहरण वर्त्तमान जनता के सामने रखा है कि इनके द्वारा आरोग्यमय सस्कृति का प्रकाश तो फैल रहा है, साथ ही दृढव्रती हैं ये दिखाई दे रहे हैं।

वे स्वयं अपने जीवन की कृतार्थता अनुभव करते ही होंगे पर हम भी आज जो इनके निकट के परिचय में आये है अपने को धन्य समझते है।

आजतक और आज भी इन्होंने अपने क्रिया-कलाप से जो उदाहरण रखा है वह प्रशंसनीय है। इसीमें समाज का हित दृष्टिगोचर होता है। इन्होंने व्यायाम को जीवन का एक सर्वांगीण कर्म और शिक्षण समझ कर अपनाया है।

इनके द्वारा धर्म-सेवा, समाज-सेवा, राष्ट्र-सेवा के साथ-साथ आरोग्य धारण करने की सेवा जो सतत हो रही है, इसे कौन नहीं जानता।

इनका प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेम और व्यायाम को जीवन में स्थान देना प्रशंसनीय है और इसी ने मेरे ऊपर जो प्रभाव डाला है वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। मेरी पुस्तक "नैसर्गिक नारी सौन्दर्य" में इन्होंने जो सहयोग प्रदान किया है—वह अविस्मरणीय रहेगा।

निःस्वार्थ श्रद्धा और लगन से भरा कार्य सदैव सफलता प्राप्त करता है, कर रहा है।

स्वयं एक उत्तम लेखक होने के नाते देश-विदेश में तो भली प्रकार परिचित हुए ही बगाल तथा भारत की विभिन्न जातियों मे तथा संस्थाओं द्वारा सामाजिक, धार्मिक और राजकीय क्षेत्र में भी सुयश प्राप्त कर रहे है।

इनके जीवन से पता चलता है कि ये सभी व्यवहारो में कुशल तथा निपुण है।

आज हमारे देश को आवश्यकता है इन जैसे निःस्वार्थ, नवयुवक और युवतियों की, जो वर्तमान लोगों के जीवन को स्वस्थ, सुदृढ और आजीवन निरोगी रख सकने का मार्ग बतावें।

परम देव परमात्मा से यही प्रार्थना है कि उन्हें "शत जीव-शरदः" बनावे और इनके रचनात्मक जीवन और कार्य अमर बने रहे। मैं स्वय व्यायामप्रिय प्रचारिका हूं, इनका आदर्श त्यागी जीवन मेरे लिए गौरव का विषय है।

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्ति □

मेरे चाचाजी

□ □

ज्ञानवती लाठ

चाचाजी के सम्बन्ध मे लिखने की कल्पना ने मेरे सारे अचेतन आवरण को खोल दिया। पुरानी बातो ने मूर्त रूप से स्मृति के झिलमिलाते पर्दे से झांकना आरभ कर दिया। बचपन की कुछ घटनाए ऐसी होती है जो बालमन पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं।

मेरे चाचाजी कितने सौन्दर्य प्रेमी हैं ये कम लोग समझ पाते हैं। एक दिन ले गये पकड़ कर अपने हरिसन रोड के पीछेवाली गली के मकान के दो तल्ले पर। आह ! क्या स्नान घर था, कितना अपूर्व पत्थर, टाईल्स, फव्वारा, आधुनिक साधनों से युक्त, मुग्ध-सी देखती रही। पूछा आपने ये सब क्या लगाया है चाचाजी ! ऊपर पानी कैसे आ जाता है ? छत से नीचे तक घुमाकर उसका पूरा विवरण समझाया। समझ में कुछ आया, कुछ नही। पर उस चमत्कार की इतनी छाप पड़ी की आज भी याद है।

चाचाजी का मन नए-नए आधुनिक उपादानों की तरफ दौड़ता रहता है। एक दिन अचानक आकर दादीजी को कहा कि 'मामीजी मैं इसको हवाई जहाज पर उड़ाने ले जा रहा हूं।" दादीजी अवाक। कुछ उत्तर दें उसके पहले ही उनके पास से उड़ाकर ले गए हवाई अड्डे तक। स्वयं चालक की जगह बैठे और मुझे पीछे बिठाकर सारे कलकत्ते के तीन चक्कर लगाए और मुझे बताते रहे कि कहां क्या है। किन्तु मेरी कल्पना तो राम-सीता की पुष्पक विमान पर लंका से अयोध्या तक की यात्रा के संस्मरण में खोई हुई थी।

हमारे परिवार मे शादी-व्याह के सारे छोटे-मोटे कार्य पुरानी प्रथा से होते थे। मेरी शादी के समय मेरी उम्र साढ़े बारह वर्ष की थी। मैं चाचाजी के साथ सीतारामजी सेकसरिया का भाषण सुनने एक सभा मे गई थी। वहाँ पर उन्होने पर्दा विरोधी प्रथा पर भाषण दिया था। मेरे किशोर मन पर उसकी गहरी छाप पड़ी और मैंने प्रतिज्ञा की कि कभी पर्दा नहीं करूंगी। मेरा विवाह नरमदा प्रसादजी लाठ के पुत्र मोहनलालजी लाठ से तय हुआ था। नरमदाप्रसादजी गोला कोरणनाथ में एक चीनी मिल के मैनेजर थे और वही रहते थे। मेरे पीहर वाले व्याह के लिए वहां गए थे। चाचाजी भी साथ गए थे। चाचाजी को भी मैने अपनी प्रतिज्ञा की बात बताई। उन्होने कहा कि समय आने पर ठीक कर लेगे। शादी के समय हगामा हुआ और चाचाजी की सहायता से मेरी शादी बिना पर्दे के हुई।

दूसरा प्रसंग था चाचाजी का दूसरा विवाह आरा के पारसदासजी जन के यहां तय हुआ।

ये लोग देशी अग्रवाल है। इनके यहाँ मारवाडी समाज की तरह पर्दे की प्रथा नहीं है। पर लड़की वालो ने सोचा मारवाडी परिवार मे सम्बन्ध किया है इसलिए चाचीजी को घूघट कर के विवाह में बैठा दिया। फिर मेरे कहने पर चाचीजी का पर्दा हटाया और शादी बिना पर्दे के हुई।

बात यहीं शेष हो जाती मगर चार साल पहले इन्होंने फोन पर मुझसे कहा- "सुना तुम अमेरिका जा रही हो।" मेरे हाँ कहने पर उन्होंने कहा 'चूहा भगाने की मशीन" मेरे लिए एक लेती आना। मैं कुछ कहूं उसके पहले उन्होने

बता दिया कि उसके पास उनका पूरा ब्योरा है। अमेरिका में मैंने जब अपने छोटे लड़के राजा को बताया तो उसने कहा यहां ऐसी कोई चीज है ही नहीं। मैंने कहा जो भी हो तुम्हें उसका इन्तजाम करना ही होगा अन्यथा कलकत्ता पहुंचते ही उनका फोन आयेगा कि मेरा सामान लाई कि नहीं। और वापस आना होगा। जब उसने कागज पढा तो अवाक रह गया। बोला—"अद्‌भुत हैं तुम्हारे चाचाजी ! कहां से उनको इसका पता चला ! पूरा पता फोन नम्बर सब दिए हैं। सबसे बड़ा आश्चर्य मुझे तब हुआ जब मैं मशीन लेकर उनके पास गई तो वे बोले—"यहां हमलोग भी ऐसी मशीन बनाएँ। तुम्हें क्या जंचता है। मैंने कहा—"चाचाजी कभी आपका अन्वेषण शेष भी होगा।"

आपने शायद देखा हो मेरे चाचाजी की छत पर एक बहुत बड़ा रूफ गार्डेन है। उसमें चूहे आयेंगे ही। इस मशीन में एक तरह की खास आवाज होती है जिसकी आवाज से चूहे भाग जाते हैं।

इनके इस उम्र में लाठी चलाने की बात कोई करता है तो मुझे इनका यौवन याद आता है जिसमे इन्ही हाथों ने विमान चलाया था और आज भी न जाने कितनी नई चीजों की खोजों में व्यस्त रहते हैं ये मेरे चाचाजी। □

स्वप्नों को साकार करने वाला व्यक्तित्व

□ □

जगदीश्वरानन्द

सम्मान्य सरावगीजी का निष्ठावान व्यक्तित्व धरती तल पर ऐसे विरले ही स्वनाम धन्य महामानव है जो वस्तुत: जीवन जीते है। यो केवल श्वास-प्रश्वास करना कोई जीवन नही है।

यों तो (काको पि जीवति चिर च बलि च भुड्क्‍‍के) कौवा भी जीता है बलि खाकर समय बिताता है। जीना वही है जब स्वपर पर का हित साधन करे।

निष्ठावान व्यक्तित्व सरावगी जी एव जो भी जी रहे है प्राकृतिक सिद्धान्तो, विचारों को जीवन में अपनाकर जी रहे है।

स्वप्नों को साकार करने वाला व्यक्तित्व

मानव जीवन का पहला साफल्य है कि वह जैसा सोचे उसे जीते जी पूरा कर ले अर्थात स्वप्नों को साकार हुआ देखे।

सम्मान्य सरावगीजी वर्षों से जो विचार मन में संजोए हुए थे कि कलकत्ता में सुविधा सम्पन्न आधुनिक ढंग का एक सुन्दर प्राकृतिक चिकित्सालय बन जाए वह बना और स्वप्न साकार हुए।

यह विशिष्ठ व्यक्तित्व है। अन्यथा अनेक मानव अपने मनमें अनेक छोटे-बड़े स्वप्न संजोए रहते हैं, जिन्हें वे अपने जीवन में पूरा नहीं कर पाते। उनकी अपूर्णता की एक टीस अपने साथ ले जाते हैं।

सरावगीजी एक रासायनिक प्रयोक्ता हैं—

आयुर्विदशास्त्रों में रसायन की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि—

रसायनं तु तज्ज्ञेय यज्जरा व्याधिनाशनम् ॥

जो जरा बुढ़ापे को हटाए तथा व्याधि को दूर भगाए वह रसायन है। इस प्रकार रसायन मानी जाने वाली आँवला, च्यवनप्रास (अमृता), गिलो जैसी वस्तुओ की चर्चा की गई। अन्य अनेक शक्तिवर्द्धक टानिक भी बनाए गए। तब हमारे सम्मान्य सरावगी जी क्या इन दवाओं का प्रयोग करते हैं ऐसा मैं नही कहने जा रहा फिर भो मैंने लिखा कि सरावगीजी रसायन प्रयोक्ता हे तब प्रश्न होगा कि वह किस रसायन का सेवन करते हैं।

फेफड़ों व हृदय के लिए सबसे बड़ा टानिक है—शुद्ध वायु, आक्सीजन प्राणपद-वायु। वह प्राणपदवायु विधिवत् तब अधिकाधिक ग्रहण की जाती है जब विधिवत् योगासनो के साथ यौगिक व्यायाम में प्राणायाम होता है। सरावगीजी नियमित व्यायाम करते हुए शुद्ध प्राणपद वायु सेवन करते हे। अतः मैंने सरावगीजी को रसायन सेवी के रूप में रसायन प्रयोक्ता लिखा। इसी रसायन सेवन के परिणामस्वरूप हो वह स्वस्थ हे। दीर्घायुष्य में सक्रिय हे। उनकी सक्रियता एवं स्वस्थता के मूल मे जो रसायन सेवन निहित है वह हम लोगो के लिए अनुकरणीय एव सेवनीय है।

विदेश में पचहत्तरवर्षीयवृद्धों को व्यायम-प्रतियोगिता में सम्मिलित होना—

लगभग पांच वर्ष पूर्व मुझे पत्र लिखा, तब लिखा, कि मैं विदेश जाने की बात सोच रहा हूँ जहाँ वृद्धों की व्यायाम प्रतियोगिता में सम्मिलित होना है।

सरावगीजी एक गुणग्राहक व्यक्ति हैं—

पचास वर्ष से भी अधिक हुए होंगे प्राकृतिक चिकित्सा के सम्पर्क में आए हुए। सम्पर्क भी दूर से ही नही अत्यन्त निकट से। सम्भवतः "स्वस्थ जीवन" मासिक पत्रिका का जब प्रकाशन आरम्भ हुआ तब उन्होने उसे प्रकाशन का निकट से दायित्व भी निभाया होगा। अनेक अंग्रेजी-हिन्दी की प्राकृतिक चिकित्सा की पुस्तकें पढ़ी होंगी। अनेक योग्य अनुभवी चिकित्सकों का सान्निध्य पाया होगा। प्राकृतिक चिकित्सा की बीसो पुस्तकें स्वय भी लिखी। फिर क्या जानने को अवशेष रहा। वस्तुतः गुणग्राहक जिज्ञासु के लिए बहुत कुछ अवशेष बना रहता है।

"गुण न हरानो गुणग्राहक हरानो है"

पांच वर्ष पूर्व जब मुझे बुलाया, अपने जैन हाउस में ही ठहराया तब जल नेती, तेल नेती, वमनादि क्रिया विधिवत् सीखी। अपने पोते की चिकित्सा का चार्ट बना चिकित्सा कराई। स्वय तज्ञ होकर भी अन्यों से लेने की वृत्ति, विद्यार्थी भावना इनकी आज भी बनी हुई है। नीतिशास्त्र के इस उपदेश को हृदय मे आत्मसात् किए हुए हैं।

अजरामरवत् प्राज्ञ. विद्याम् अर्थञ्च चिंतयेत।

विद्या व धन कमाने में सदा उद्यत रहे, न स्वय को बूढा मानो, न ही करने वाला मानो। □

सजीवता की साकार प्रतिमूर्ति

□ □

कल्याणमल लोढ़ा

धर्मचन्दजी कलकत्ता के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, अनेक सामाजिक व धार्मिक सस्थाओ के प्राण, प्राकृतिक चिकित्सा के उद्‌बोधक और प्रचारक एव अनुकरणीय व्यक्तित्व के धनी हैं। मेरा उनसे परिचय आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व हुआ था, जब वे मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान मत्री चुने गए थे। मैं अपने एक परिचित की चिकित्सा कराने वहां गया था और प्रत्यक्ष परिचय न होने पर भी जिस सौहार्द और सौजन्य का परिचय उन्होंने दिया एवम् जिस तत्परता के साथ उन्होंने व्यवस्था की, वह आज भी मुझे स्मरण है। उसके उपरान्त हम दोनों का परिचय घनिष्ठ होता गया। उनके व्यक्तित्व की उन्मुक्तता ने, उनके वैचारिक खुलेपन और आचार की सरलता ने मुझे सदैव प्रभावित किया। उनकी निश्छल और अकृत्रिम मुस्कराहट और सहज स्नेहिल मुखाकृति प्रत्येक व्यक्ति को आकृष्ट और प्रभावित करती है। उनका व्यक्तित्व जितना विविध है उतना ही

उदार और गंभीर—वे जैन हैं, जैन धर्म के प्रति उनमें अगाध विश्वास और आस्था है, पर अंध विश्वासी नहीं। उनमें धर्म का व्यामोह नहीं है—है उसकी मर्यादाओं के अनुपालन की क्षमता। वे अनेक संस्थाओं से सक्रिय रूप से संबद्ध रहे हैं—सम्बद्ध ही नहीं, उनके विकास में उनका अभूतपूर्व योगदान रहा है—पर यह सब होते हुए भी वे कभी आत्म श्लाघा या आत्माभिमान से ग्रस्त नही रहे। यह वह विशेषता है, जो आज प्रायः दुर्लभ है। प्राकृतिक चिकित्सा मे उनका अडिग विश्वास है, वे इसके पुरोधा, प्रचारक और विचारक हे। अनेक प्राकृतिक चिकित्सा संस्थाएँ उनकी कर्म कुशलता और कार्य निपुणता के प्रमाण हैं। मुझे अब भी स्मरण है कि राधाकृष्णजी नेवटिया के साथ जब उनका प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध मे विचार-विमर्श होता था, तब मुझे बहुत कुछ सीखने को मिलता था। उनकी जीवन-प्रक्रिया प्राकृतिक चिकित्सा और स्वस्थ जीवन विज्ञान का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

व्यक्तित्व की सजगता और समाज के प्रति नि.स्पृह सेवा-भावना मनुष्य के अंतरग और बाह्य जीवन को सामर्थ्य प्रदान करती है और यह सिद्धान्तो को व्यावहारिक रूप देने मे ही निर्भर रहती है। विचार और आचार की एकता ही जीवन का श्रेय और प्रेय है। भाई धर्मचन्दजी सरावगी के मन, वचन और कर्म मे यही ऐक्य है। उन्होंने कई बार विश्व भ्रमण किया—प्रथम मारवाडी वायुयान चालक बने, संतरण-कौशल प्राप्त किया, गो-सम्वर्द्धन योजना मे हाथ बंटाया, राज्य सभा और पश्चिम बग विधान सभा के सदस्य रहे—धार्मिक संस्थाओं में उनका सक्रिय योगदान रहा—अनेक ग्रन्थ, हिन्दी मे लिखे पर उनमे कभी वह अभिमान नही आया, जो कुछ न करने पर भी बहुतों को होता है। बहुत कुछ करके भी उन्होने यही समझा कि बहुत अल्प कार्य किया। यही वह गुणवत्ता है जो मनुष्य को गौरव प्रदान करती है और उसके जीवन को उच्चता। सरावगीजी में मैंने यही गौरव और उच्चता देखी।

मैं कभी-कभी सोचता हूं कि जीवन के आठ दशक पार करने पर भी ऐसी मानसिक और शारीरिक स्फूर्णा, ऐसी वैचारिक क्षमता और दृढ़ता एवं जिजीविषा की सजीवता उन्हें कहां से मिली! लगता ही नही कि वे 'वृद्ध' हो गए हैं। उनके मानस की यह युवा शक्ति अद्भुत है और वे सचमुच वदनीय हे। उन्हे मेरा प्रणाम। □

कठिन व्यायाम के प्रेमी

□ □

वासुदेव थरड

भाई धर्मचन्दजी हमारे अर्द्ध शताब्दी से अंतरग मित्र हैं। आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में प्रथम बार १९३३-३४ में पधारे। तभी से मेरी इनकी मित्रता है। आप १९४५-४७ तक सोसाइटी के प्रधान मन्त्री रहे है। इस अवधि में हमलोगों ने मिलकर सोसाइटी में अवर्णनीय कार्य किया और एक साथ कंधा से कधा मिलाकर सहयोग लिया दिया।

आपका प्राकृतिक चिकित्सा मे अतीव प्रेम है। इस प्रणाली पर आपने बहुत-सी पुस्तकें लिखी हे, जैसे—दमा, लकवा, हृदय रोग, बवासीर, पथरी, ब्लड प्रेसर, एपेण्डिसाइटिस, घरेलू चिकित्सा, मोटापा, अनिद्रा, तन्दुरूस्त रहने के उपाय।

आप एलोपैथी के इलाज में कभी विश्वास नहीं करते और न किसी को इस पद्धति में इलाज करने की शिक्षा देते हैं।

योगासन पर भी आपने किताबें लिखी हैं और भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू से भी आपका योग को लेकर सम्पर्क रहा है। प्रधान मंत्री ने एक जगह योग पर लिखा है कि मैं सत्तर साल पार कर रहा हूं और नित्य यौगिक आसन करता हूँ।

व्यायाम में आपका बहुत अधिक प्रेम है। "बड़ाबाजार युवक सभा", जिसका मैं भी संस्थापक हूँ—से आपका सम्बन्ध ४०-४५ वर्षों से है। इस संस्था की स्वर्ण जयन्ती १९७३ मे मनाई गई थी तब आप कार्यकारिणी के सदस्य थे। वर्त्तमान में आप इस संस्था के सभापति हैं।

प्रति दिन व्यायामशाला पधारते है और रोज व्यायाम करते हैं। साधारण व्यायाम नही, कड़ा व्यायाम करते हैं। वजन उठाने मे आप नब्बे पौण्ड तक वजन उठा लेते हैं। आपका, ८० वर्ष की उम्र मे, स्वास्थ्य सुन्दर और सराहनीय है। हम दोनों समवयस्क है शायद मैं उनसे ५-७ महीने बडा हूं। व्यायाम के सम्बन्ध में हम दोनों एक ही विचार रखते है और उनका यह बड़प्पन है कि व्यायाम सम्बन्धी विषयो मे हमसे सलाह करते ही रहते है।

विशेष क्या—जगत जननी माता से मेरी हार्दिक प्रार्थना है आपको १०१ वर्ष से भी ज्यादा आयु प्रदान करें और आपका शेष जीवन स्वस्थ एव निरोग रहे। □

प्राकृतिक जीवन का ज्वलंत उदाहरण

□ □

डा० आनन्दी प्रसाद

वर्तमान युग मे प्राकृतिक जीवन से अपने को संतुलित बना कर दीर्घायु तक स्वस्थ बनाए रखने का अद्वितीय उदाहरण पेश करने वालो में महात्मा गांधी का नाम सर्वप्रथम आता है, जिन्होंने यह दावा किया था कि वे बीमार पड़ कर नही मरेंगे और १२५ वर्ष तक जीएँगे। इस दृष्टि से अगर कोई दूसरे व्यक्ति का उदाहरण हो सकता है, तो वह है—धर्मचन्द सरावगीजी, जिन्होंने ८० वर्ष की आयु में भी लाठी चलाना सीखना प्रारम्भ किया है। अभी भी वे जो अभिनव स्वास्थ्य की सानी रखते है। उन्हें देखकर युवकों को भी मात खानी पड़ती है।

कलकत्ते जैसे अत्यत घनी एव व्यस्त आबादी वाले शहर में आज के प्रदूषित वातावरण के बीच कोलाहलमय जीवन में भी अपने को स्वस्थ एवं दीर्घायु बनाए रखने का ज्वलत उदाहरण प्रस्तुत करना आसान नही। परन्तु यह उस यौगिक

प्राकृतिक जीवन का ही परिणाम है, जिसे दृढ़ता से इन्होंने पालन कर आदर्श उपस्थित किया है।

यों तो कई बार विभिन्न प्रसंगों में धर्मचन्द सरावगीजी से मिल चुका था। परन्तु करीब १९७४ ई० में मैं उनसे जब उनके निवास पर मिला तो उनके प्राकृतिक रहन-सहन, आहार-विहार एव व्यस्तमय जीवन के प्रतिफलस्वरूप इस उमर में भी उनकी स्फूर्ति, डोलडौल एवं अभिनव स्वास्थ्य देखकर स्तम्भित रह गया। प्राकृतिक जीवन तथा योग एव प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति अपने प्रयोग एवं अनुभव के द्वारा उन्होंने जो सेवा की है, वह तो सदा अमर रहेगा ही, परन्तु अहकारमय जीवन से ऊपर उठकर उनके नित्य नवीन साधना एव शोध को कभी भूला नही जा सकता।

उस समय तक वे प्राकृतिक जीवन एव चिकित्सा की दृष्टि से ६ बार विश्व का भ्रमण कर चुके थे। जब मैंने इन सारे अध्ययन एवं अनुभवों के बाद एक आदर्श चिकित्सा पद्धति की इनकी कल्पना के विषय मे इनसे पूछा तो उन्होंने बड़े ही विस्मय के साथ बताया कि इस विषय में अभी भी वे कोई अन्तिम निर्णय पर नही पहुच पाये है। इन्होने एक जापानी चिकित्सा का अनुभव सुनाया, जिससे यह साबित करने का प्रयत्न किया कि प्राकृतिक जीवन एवं उपचार का माध्यम मात्र फल-सब्जी का अधिकाधिक प्रयोग नही है, बल्कि अन्न प्रयोग से बहुत सारे रोग अच्छे हो सकते हैं। इन्होने अपनी पत्नी पर अतिसार की अवस्था मे भूंजे चावल के प्रयोग का सफल परिणाम का प्रदर्शन किया था।

इस तरह सरावगीजी एक सफल साधक ही नही बल्कि शोधक भी है। □

अनुकरणीय जीवन

□ □

श्रीचन्द मेहता

भाई धर्मचन्दजी को मैं सन् १९४६ से जानता हूं। मेरा भी कार्यक्षेत्र बड़ाबाजार था। वे उस समय से ही योगासन, व्यायाम व प्राकृतिक चिकित्सा क्षेत्र मे विशेष रुचि रखते थे। मैं व मेरे साथी सामाजिक क्रान्ति व परिवार नियोजन के कार्यों मे विशेष रुचि रखते थे। उनके निर्विरोध कारपोरेशन के सदस्य चुने जाने से मुझे बहुत खुशी हुई थी।

आज मैं सोचता हूं कि सामाजिक सुधार के कार्यो मे लिप्त रहने के कारण उस समय प्राकृतिक चिकित्सा मे रुचि रखते हुए भी उसमें अधिक समय नहीं दे पाया।

कलकत्ता छोड़ने के पश्चात् श्रद्धेय डा० सरदारमलजी दूगड़ के सम्पर्क मे आया और प्राकृतिक चिकित्सा क्षेत्र मे थोडा काम करने लगा। मैं और मेरी श्रीमतीजी ने एन० डी० (लखनऊ) की परीक्षाएं पास की और अवसर मिलते

ही० डा० दूगड़ साहब की प्रेरणा से अमरीका में डा० शेल्टन के हैल्थ होम में जाकर रहा। डा० शेल्टन व श्री श्रीमती डा० वेटरानो से सम्पर्क बढा। डा० वेटरानो ने भारत आने का वादा किया। भाई धर्मचन्दजी भी डा० शेल्टन के प्रशसकों में थे। लौटने पर उन्होंने मुझसे सम्पर्क किया और डा० शेल्टन के बारे में जानकारी प्राप्त की। उस समय उनके बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ठ शरीर को देखकर मन बड़ा प्रसन्न हुआ। उन्होंने अपने रहन-सहन की प्रत्येक वस्तु का चुनाव बहुत समझदारी व होशियारी से किया था। धर्मतल्ला या एस्प्लेनेड जैसे घनी आबादी वाले क्षेत्र में रहकर वे प्राकृतिक जीवन का आनन्द लेते है। अपने जैन हाउस के शोरूम व आफिस की छत पर टैरेस गार्डन लगा रखा है। दैनिक जीवन बड़ा ही नियमित है। खान-पान शुद्ध व सात्विक ही नही बल्कि पौष्टिक तथा प्राकृतिक चिकित्सा के अनुरूप है। इतने लम्बे समय मे मैंने उन्हें बीमार नही के बराबर ही पाया। "पहला सुख निरोगी काया" का वे अक्षरशः पालन कर रहे हैं। हम दोनों के कई कामन प्लेटफार्म थे जैसे मारवाडी सम्मेलन, युगान्तर क्लब तथा जैन सभा। धर्मचन्दजी सभी सामाजिक व राजनैतिक कार्यों मे रुचि रखते थे तथा अपना व्यवसाय भी देखते परन्तु उनका जीवन प्राकृतिक चिकित्सा के लिए समर्पित रहा और आज भी है।

मैं उन्हें बड़े भाई का आदर पहले तो देता ही था परन्तु अब विशेष आदर प्राकृतिक चिकित्सा के कारण देता हूं।

पैसे वालो के घर में जन्मने तथा सुन्दर व आकर्षक व्यक्तित्व रखने पर भी धर्मचन्दजी ने अपना क्षेत्र सार्वजनिक कार्यकर्त्ता का रखा वर्ना कलकत्ते नगरी मे उन्हें फिसलने के कम अवसर नही आए। मारवाडी व जैनी युवकों के लिए उनका जीवन अनुकरणीय है।

परमात्मा उन्हे स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करें जिससे वे समाज की अधिक सेवा कर सके। □

प्रेरणा स्रोत

□ □

ओंकारलाल बोहरा

देश भर में राजस्थानी समाज का न केवल संख्या की दृष्टि से ही कलकत्ता महत्वपूर्ण केन्द्र है बल्कि राष्ट्रीय, सामाजिक, शैक्षणिक एवं सेवा के क्षेत्र में भी कलकत्ता ने राजस्थानी समाज का गौरव बढ़ाया है।

धर्मचन्दजी सरावगी का नाम एक प्रेरणास्रोत व्यक्तित्व के रूप में सामने आता है। वे पूरे राजस्थानी समाज में पहले व्यक्ति हैं जो २५ वर्ष की आयु में वायुयान "पायलोट" बने और इसी आयु में क्रान्तिकारी देश साम्यवादी रूस की भी यात्रा कर आये। सन् १९२९-३० में सरावगीजी के प्रगतिशील कदम पिछड़े हुए मारवाड़ी समाज की दृष्टि से अपने आप मे बड़ा मूल्य रखते हे। प्रारम्भ से ही सरावगीजी स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़े रहे। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी के माध्यम से मानव सेवा के कार्यो में इनकी भूमिका अनुकरणीय एव सराहनीय रही है।

मैं सन् १९४८ में लोकनायक जयनारायणजी व्यास द्वारा स्थापित (राजस्थानी रियासतों के एकीकरण के लिए स्थापित) रियासती लोकसंघ के मुखपत्र

"रियासती आवाज" का सम्पादन करने कलकत्ता पहुँचा। तब उपरोक्त समाजसेवकों की प्रथम और द्वितीय पंक्ति के सभी अग्रणीय नेताओं और कार्यकर्त्ताओं के निकट सम्पर्क में आने का न केवल अवसर मिला, उनका स्नेह भाजन भी बना।

निस्सन्देह सरावगीजी के सौम्य व्यक्तित्व से भी मेरा प्रभावित होना स्वाभाविक था। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के व्यवस्था-संचालन के दौरान मुझे उनको अधिक निकट से देखने समझने का अवसर मिला। प्राकृतिक चिकित्सा के तो वे प्राण ही हैं। आगे चलकर अ० भा० प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के संस्थापक एवं महामंत्री के रूप में 'पायोनियर' रहे। आनन्दीलालजी जैसे लोकप्रिय कर्मठ नेता के सहयोगी के रूप में सरावगीजी का बड़ाबाजार की राजनीतिक हलचल मे उल्लेखनीय स्थान रहा। वे कलकत्ता नगर निगम के कौन्सिलर रहे। बाद में प० बगाल विधान परिषद् के एम० एल० सी० रहे। यह उस युग की चर्चा है जब राजनीति 'रोटी' का नही "सेवा" का पर्याय थी। इस क्षेत्र में वे ही निमंत्रित होते थे जिनके दामन साफ रहते थे।

सरावगीजी बड़ाबाजार कलकत्ते के शीर्षस्थ कार्यकर्त्ताओं में है। जैन परिवार से सम्बन्धित सरावगी जी का जीवन जैन आदर्शों से अनुप्राणित रहा है। वे शाकाहारी आन्दोलन मे भी गहरी दिलचस्पी रखते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से निरन्तर सजग सरावगीजी न केवल स्वय आदर्श है बल्कि युवा पीढ़ी की निरन्तर प्रेरणा बने हुए है।

कलकत्ता जैसे नगर में प्रारम्भ में जहाँ "श्मशान वैराग्य" की तरह समाजसेवा की लहर उठती है बाद मे सभी धन कमाने की होड़ मे लग जाते है सरावगीजी का मानस इस दृष्टि से भी सन्तुलित रहा। वे अपने आदर्शों पर अडिग रहे। और परिस्थिति के अनुसार किसी न किसी समाज सेवा के कार्य मे अपना नम्र योगदान देते रहे हैं।

कलकत्ता में उनके जैसे शालीन, सौम्य, उदार व्यक्तित्व के धनी समाजसेवी कम ही नजर आते हैं। वे इस आयु में भी युवा हृदय हैं। तन और मन से चिर युवा है। उनके सौम्य, सरस, शान्त व्यक्तित्व से सन्तोष झलकता है। वे शतायु हों। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ नमन। □

अविस्मरणीय

□ □

डॉ० बृजकिशोर भटनागर

लगभग ३० वर्ष से अधिक ही हुए होगे जब मुझे धर्मचन्दजी का परिचय मिला और फिर सम्पर्क हुआ। तब से अब तक उनसे सम्पर्क बना हुआ है। वे बहुत समय से स्वास्थ्य जगत में प्राकृतिक चिकित्सा और योग के प्रचार, प्रसार और प्रगति के लिये, तन, मन धन से सहयोग दे रहे हैं। उन्होने अपनी बहुत बडी जमीन, शायद एक पूरा बागीचा देकर और बहुत धनराशि लगाकर कलकत्ते में प्रकृति निकेतन की स्थापना तो की हो बल्कि सन् १९५५ मे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा की कलकत्ते मे ही नीव डाली और मुझे भी तार देकर यहाँ बुलाया। उसके बाद प्राकृतिक चिकित्सा का एक कालेज जैसा कि उससे पहले कभी नही बना और 'स्वस्थ-जीवन' एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया। यह सब संस्थाए अभी तक सफलता पूर्वक चल रही है और संस्थापक के रूप में वह भी याद किये जाते है। जब तक यह

संस्थाएं चलती रहेंगी उनका नाम भी अमर रहेगा। मैं पहले दिल्ली प्राकृतिक चिकित्सा संघ का अध्यक्ष और मंत्री रहा और बाद में प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की स्थापना के बाद दिल्ली प्रदेश प्राकृतिक चिकित्सा परिषद का कभी अध्यक्ष और कभी मन्त्री रहता रहा हूँ। इसलिये जब भी वह दिल्ली आते हैं तो मुझे साथ अवश्य रखते। मुझे याद है कि कितनी लगन, परिश्रम और धन व्यय करके वह प्राकृतिक चिकित्सा के लिये काम करते थे। रात ११-१२ बजे तक विभिन्न केन्द्रों में जाते और चिकित्सकों से मिलते। चिकित्सकों और चिकित्सालयों को सुविधा और प्रगति के लिये व्यवस्था करते थे। एक बार उन्होने मुझे एक पूरा स्टीम चेम्बर कलकत्ते से उपहार स्वरूप भेजा था। उन्हीं के सहयोग और उत्साहित करने से मुझे इस दिशा में सफलता मिली है। इस समय मैं भारत का एक सुप्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त योग-स्वास्थ्य, शिक्षा एवं असाध्य रोग चिकित्सा, योग-प्रकृति उपचार का विशेषज्ञ हूं और तीन बार इन्ही विषयों पर कार्य करने विदेश भी जा चुका हूं। यह सब धर्मचन्दजी के सहयोग और प्रेरणा से ही हुआ। मैं उनका सदा आभारी रहूंगा। अपने प्रवचनो में अक्सर श्री मोरारजी भाई तथा धर्मचन्दजी जो उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घजीवन के हमारे देश में उत्तम उदाहरण है, बताया करते है। इधर धर्मचन्दजी ने स्वास्थ्य, योग और प्राकृतिक चिकित्सा पर कितने ही उपयोगी प्रकाशन किये है जिनके द्वारा लोगों को स्वास्थ्य लाभ हुआ, ऐसे मेरे पास कितने ही समाचार आते रहते है। मैं भी ७१वाँ वर्ष पूरा कर रहा हूं और चिकित्सा कार्य के अतिरिक्त स्वास्थ्य शिक्षा एव प्रारम्भिक योगाभ्यास के एक-एक सप्ताह शिविरों का संचालन करता हूं और लोगों को स्वस्थ रहने तथा रोगों से बचे रहने का प्रशिक्षण देता हूं। दो बार हिमाचल प्रदेश का दौरा किया है और मध्य प्रदेश का दूसरी बार दौरा करके हाल हो मे लौटा हूं।

मेरी भगवान से प्रार्थना है और मुझे विश्वास है कि श्री धर्मचन्दजी तथा मोरारजी भाई देसाई दोनों ही २१वी सदी मे भी उत्तम स्वास्थ्य तथा दीर्घ जीवन का उदाहरण जनसाधारण की प्रेरणा के लिये उपस्थित करेंगे। □

अच्छे कार्यकर्त्ता

□ □

लक्ष्मी निवास बिरला

धर्मचन्दजी जिन-जिन सस्थाओ में भाग लेते रहे हैं वह तो सर्वविदित ही है। धर्मचन्दजी जैसे कार्यकर्ताओं की आज सख्त जरूरत है। पहले तो कुछ होते भी थे लेकिन अब तो ऐसे कार्यकर्ता मिलना बहुत कठिन है।

धर्मचन्दजी शतायु हों व जनता की सेवा मे कार्यरत रहें यही भगवान से प्रार्थना है। □

वरिष्ठ कार्यकर्त्ता

□ □

प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका

यह जानकर हमे प्रसन्नता है कि बड़ाबाजार के सामाजिक तथा धार्मिक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, अनेक सार्वजनिक सस्थाओं से सबंधित प्रकृति निकेतन के संस्थापक, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के भूतपूर्व मंत्री एवं प्राकृतिक विभाग के सस्थापक धर्मचन्दजी सरावगी अपने स्वस्थ जीवन के इक्यासीवें वष में पूर्ण सक्रिय सहयोग दे रहे है।

धर्मचन्दजी बाल्यकाल से ही सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते रहे है और अभी भी प्रत्येक कार्य विशेषकर व्यायाम सबंधी कार्यों मे दिलचस्पी लेते है।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वे शतायु हों, स्वस्थ रहे और सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने की उनमें शक्ति बनी रहे। □

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचारक

□ □

भगवती प्रसाद खेतान

धर्मचन्दजी के परिवार में देश, समाज एवं धार्मिक सेवा की परम्परा है। मेरे पिताजी जब रांची में जेलर थे तब इनके परिवार से घनिष्ठता हो गई थी और इसी वजह से धर्मचन्दजी के पिता का मेरे प्रति स्नेह था। धर्मचन्दजी ने भी वह स्नेह निभाया और पारिवारिक परम्परा को योग्यता से आगे बढाया। कार्यक्षेत्र अलग-अलग होने से बहुत मुलाकात न होने पर भी जब भी कभी मुलाकात होती है धर्मचन्दजी बड़े प्रेम से मिलते है। जिस समय में ये राजनीतिक क्षेत्र में थे उस समय नेता लोग इनके साथ बड़े आदर का संबंध रखते थे। □

अभिनन्दनीय

□ □

सिद्धराज ढड्ढा

धर्मचन्दजी सरावगी का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक रहा है। वे सिद्धान्त के पक्के तो है ही, पर उनकी विशेषता यह है कि वे अपनी मान्यताओ के अनुसार ही जीवन भी जीते है। सिद्धान्त और व्यवहार की एकरूपता के निर्वाह करने वाले बहुत कम मिलते है।

मेरी और धर्मचन्दजी की मित्रता काफी पुरानी रही है। एक बार तो कलकत्ते में करीब महीने भर मैं उनके और उनके परिवार के साथ उनके घर में ही रहा। उनके नपे-तुले और व्यवस्थित जीवन ने मुझे प्रभावित किया। कट्टरपथी न होते हुए भी ये अपनी आस्थाओं के पक्के है।

धर्मचन्दजी की सार्वजनिक सेवाएँ भी विविधतापूर्ण और उल्लेखनीय रही है। पर अन्य बातों के अलावा प्राकृतिक चिकित्सा, प्राकृतिक जीवन और शाकाहार उनके प्रिय विषय रहे है। राजनीति में भी उन्होंने पर्याप्त हिस्सा लिया है। वे राज्य सभा के और पश्चिम बंगाल विधान सभा के सदस्य भी रहे।

आज ८० वर्ष से ऊपर की उम्र में भी उनमें जवानों की-सी स्फूर्ति है। यह उचित ही है कि वे ७८ वर्ष की उम्र में "बड़ाबाजार युवक सभा" के सभापति चुने गये। व्यायाम उनका प्रिय विषय रहा है। ८० वर्ष की उम्र में लाठी चलाना सीखना आरम्भ किया यह मुझे अभी ही मालूम हुआ।

विविध गुणों और उपलब्धियों से युक्त ऐसे व्यक्ति अभिनन्दनीय हैं। □

समाज के सच्चे सेवक

□ □

सिद्धेश्वर प्रसाद

सरावगीजी ने अपने जीवन मे सदा सेवाभाव से प्रेरित होकर विभिन्न रूपों में समाज की सेवा की। यद्यपि उनका जन्म बिहार में हुआ और उनका कार्य-क्षेत्र मुख्यतः बंगाल रहा फिर भी यह कहने मे मुझे तनिक भी सकोच नही है कि उनमें प्रान्तीयता तथा अन्य प्रकार की सकीर्णता का लेश भी नही है। उन्होने सदा लीक पर चलने से इन्कार किया और जहाँ कही जिस किसी के लिये आवश्यक हुआ उसकी सेवा के लिये चल पड़े। १९३४ के बिहार के उस भयानक भूकम्प में उन्होने भूकम्प पीड़ितों की सेवा कार्य का जिस रूप में संचालन किया उसका स्मरण लोग आज भी करते है।

प्राकृतिक चिकित्सा में आरम्भ से ही उनकी रुचि रही है। देश-विदेश में होने वाले अनेक आयोजनो में उन्होने भाग लिया है। इसीलिए वे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के प्रधान मन्त्री भी चुने गए। तब से आज तक उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार के लिये हर संभव प्रयास करते आ रहे है। □

कोमल हृदय

□ □

कन्हैयालाल सेठिया

धर्मचन्द भाई जी
अति बल युग के भीम,
वज्र देह, कोमल हृदय
उर में स्नेह असीम,

कर्मवीर, सेवाव्रती
मंगल भाव पुनीत,
वीतराग के प्रति सदा
श्रद्धा सहज विनीत,

शत वत्सर तक ज्योतिर्मय
रहे प्राण प्रदीप,
यही कामना मन बसे
प्रभु के चरण समीप। □

एक जिन्दादिल व्यक्ति

□ □

रामनिवास लाखोटिया

प्राकृतिक ढंग से जीवन व्यतीत करके न केवल पूर्ण स्वास्थ्य लाभ ही प्राप्त किया जा सकता है, वरन् एक मनुष्य खूब प्रसन्न एव जिन्दादिल भी रह सकता है, यही नही, जीवन के प्रति पूर्ण सजग भो। जीवन की कला का यह मर्म कम व्यक्तियो में ही मैंने पाया। इस बारे मे जिस व्यक्तित्व ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया उनका नाम है धर्मचन्दजी सरावगी। उनके बारे में निम्न शेर ठीक बैठता है—

'फूल बनकर मुस्कुराना जिन्दगी है, मुस्कराकर गम भुलाना जिन्दगी है।
खुद पूर्ण स्वस्थ हुए तो क्या हुआ, दूसरों का भी स्वास्थ्य बनाना जिन्दगी है।।

अपनी दिनचर्या में योग एवं व्यायाम को तो वे महत्व देते ही हैं लेकिन जिन्दादिली एव सहृदयता तथा हास्य को भी वे उतना ही महत्व देते है। पश्चिम बंग प्राकृतिक चिकित्सा की स्थापना करवाकर उन्होंने इसका प्रथम

सभापति मुझे बनाया और पूर्ण सहयोग दिया एवं मार्ग दर्शन भी, यह बात मैं भूल नहीं सकता। इसी प्रकार प्राकृतिक चिकित्सालय, कोनचौकी की प्रबन्ध समिति का मैं सभापति उनके आग्रह पर बना, तो उन्होंने सभी बैठकों में उपस्थित रहकर हमारा मार्ग दर्शन किया तथा जिन्दादिली से कठिनाइयों का सामना करने के लिए प्रेरित किया। योग, व्यायाम, प्राकृतिक जीवन को रसमय एवं हास्य परिपूर्ण बनाकर किस प्रकार जीवन का आनन्द लिया जा सकता है, यह मैंने उनसे सीखा। प्राकृतिक भोजन भी अति स्वादिष्ट एवं रस से ओत-प्रोत हो सकता है, यह उन्होंने मुझे सिखाया और मैं उसी सीख के कारण इसका यथासंभव पालन करने में सक्षम भी हुआ हूं। युवा पीढ़ी के लिए उत्तम स्वास्थ्य के बारे में आप वास्तव में प्रेरणास्रोत हैं। आप शतायु हों एव हमारा मार्ग दर्शन करते रहें—यही ईश्वर से प्रार्थना है। □

सादा जीवन उच्च विचार

□ □

बजरंगलाल जाजू

मैं सरावगीजी के काफी नजदीक रहा हूँ। वे अपने आप में एक संस्था है। इस तरह के व्यक्ति अपने स्वभाव एव व्यवहार से अनेक लोगों के जीवन में अद्भुत परिवर्त्तन ला सकते हैं। उनका सरल स्वभाव, सादा जीवन, समय की पाबन्दी सराहनीय है। आपा-धापी के इस जीवन में उन्होने जो सेवा व्रत प्राकृतिक चिकित्सा के लिए लिया है, उनका यह योगदान कलकत्ते में ही नहीं सारे देश के लिए भी अनुकरणीय है।

भाई सरावगीजी अपने सरल स्वभाव से छोटे-बड़े सभी के इतने प्रिय हो गये हैं कि लोग भूल जाते हैं कि वे हमसे उम्र, ज्ञान एवं गुणो में कितने ऊँचे हैं। उनका वरदहस्त सबको सब समय सुलभ है। यही समाज एव देश के लिए सौभाग्य का विषय है। □

निष्काम समाज-सेवी

□ □

मौजीराम

निष्काम समाज सेवी, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्राकृतिक चिकित्सा के सुविज्ञ, कर्मठ धर्मचन्दजी सरावगी ने अब तक मानवता की सेवा का कर्तव्यपरायण जो आदर्श भारतीय जन-जन के समक्ष उपस्थित किया है, वे जिस प्रकार धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-फल चतुष्टय की ओर बढ़ते जा रहे हैं, उससे भावी सन्तति के लिए वे मार्गदर्शक और प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं। क्षमता व परिश्रम के मूर्त्तिमान-स्वरूप सरावगीजी ज्योतिर्मय प्रदीप हैं। चिरकाल तक जगमगाते रहें।

अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद द्वारा भारत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री मोरारजी देसाई के प्रधानत्व तथा सरावगीजी के महामन्त्रित्व में जो सेवाएँ की गई, उसके लिए प्राकृतिक-चिकित्सा-जगत आपका सदा ऋणी बना रहेगा। □

एक लगनशील व्यक्तित्व

□ □

हकीम श्याम लाल गोयल

अपने अपूर्व संस्मरण के सन्दर्भ में मेरा पहला साक्षात्कार सरावगीजी से वर्ष १९५७ में अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के लखनऊ अधिवेशन में हुआ तथा उसी समय उन्होने मुझे भी परिषद की कार्यकारिणी का सदस्य मनोनीत कर लिया था। वर्ष १९५६ में सरावगीजी ने समस्त भारत के प्राकृतिक चिकित्सकों व प्रेमियों को जमा करके "अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद" की नींव डाली और स्वयं उसके महासचिव बने। इनका न केवल प्राकृतिक चिकित्सा में विश्वास रहा बल्कि उसके प्रचार-प्रसार की बड़ी भारी लगन रही। इसके पश्चात् परिषद् के प्रत्येक अधिवेशन के अवसर पर मेरी उनसे मुलाकात होती रही। कुछ समय के बाद उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा की शिक्षा के लिए कालेज स्थापित करने की योजना बनाई और कालान्तर में उन्होंने डायमण्ड हारबर पर एक बिल्डिंग बनाकर अपनी योजना

को मूर्त्त रूप दिया और वहाँ प्राकृतिक चिकित्सा के लिए एक कालेज स्थापित कर दिया।

सरावगीजी ने अपने जीवन को प्राय प्राकृतिक चिकित्सा के नियमों के अनुसार ढाल लिया है। सादा भोजन और सप्ताह में एक दिन का उपवास भी वे करते आ रहे हैं। ईश्वर की अनुपम कृपा से वे अब भी, ८० वर्ष की आयु होने पर भी, पूर्ण स्वस्थ है और नौजवानों की तरह व्यायाम करते व मुगदर भांजते हैं।

सरावगी जी की सेवाएं प्राकृतिक चिकित्सा समाज को भविष्य में भी यथावत् मिलती रहे यही कामना है। □

नये प्रयोगों के धनी

□ □

गौरीशंकर डालमिया

धर्मचन्दजी सरावगी को मैं करीब ५० वर्षों से अधिक दिनों से जानता हूँ। मेरा उनसे प्राकृतिक चिकित्सा आदि को लेकर तथा और विभिन्न कार्यों को लेकर बराबर नजदीक का संबध रहा है। मैं भाई बैजनाथजी केडिया के साथ मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, रसायनशाला विभाग का सदस्य होकर काम करता था, उस समय भी मुझे इनसे सम्पर्क रखने का मौका काफी मिलता रहा।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय ये डायमण्ड हारबर के पास अपनी जगह में लोहे की कमी के कारण बांस की पट्टियों, सीमेंट से ढलाई करने का प्रयोग वे कर रहे थे, मुझे ले गये थे। वे बड़े ही हँसमुख, दूसरे की पीड़ा में पड़कर उसे मदद करने वाले हे। □

समाज सेवी

□ □

हरकचन्द जैन

श्री धर्मचन्द सरावगी का अपना विशिष्ठ व्यक्तित्व है। वे समाज सेवी व जनता को प्राकृतिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देने वाले महान व्यक्तित्वों के धनी है।

इनका जन्म बिहार में हुआ। समुचित शिक्षा के बाद व्यवसाय में पूर्ण प्रगति की। मोटर चालक, वायुयान चालक बने, घुड़ सवारी सीखी। पत्नी एवं पिता के साथ रूस यात्रा पर गये। सपत्नीक विश्व भ्रमण किया। अनेक धार्मिक एवं सामाजिक सस्थाओं के आप पदाधिकारी रह चुके है। प्राकृतिक जीवन व्यतीत करना ही आपका पूर्ण लक्ष्य है। अत: अनेक प्राकृतिक चिकित्सा से सम्बन्धित पुस्तकें लिखीं। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दी में समाजोपयोगी लेख लिखे। ८१ वर्ष की उम्र होते हुए अभी भी दैनिक व्यायाम एव प्राकृतिक चिकित्सा में पूर्ण सहयोग देकर समाज एवं राष्ट्र का स्वास्थ्य निर्माण कर रहे हैं।

ऐसे महान् समाज सेवी विशिष्ठ व्यक्तित्व के धनी धर्मचन्दजी जैन का मैं ८१ वर्ष प्रवेश के उपलक्ष में हार्दिक अभिनन्दन करता हूं तथा उनके स्वस्थ दीर्घायु एव गौरवपूर्ण जीवन के लिए मंगल कामना करता हूँ। □

मर्द की जबान एक

□ □

मदन अग्रवाल

करीब २० साल पहले की बात है, बड़ाबाजार युवक सभा का सदस्य बना था एवं वहां पर नियमित रूप से जाने लगा था। कुछ कम उम्र के व्यक्तियों से परिचय हो गया था एव हँसी-मजाक के साथ समय अच्छा गुजर जाता था। एक रविवार को प्रातः करीब ९ बजे गया तो देखा कि मेरे वहां के मित्र एक व्यक्ति से काफी स्तरीय हसी-मजाक कर रहे थे एव वह व्यक्ति जो देखने में हमलोगों से काफी बड़ा लग रहा था, उनके हसी-मजाक में बराबर का साथ दे रहा था। उनके जाने के बाद मेरे मित्रों ने मेरे पूछने पर बताया कि उनका नाम धर्मचन्द सरावगी है। मुझे विश्वास नहीं हुआ। मैंने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, प्राकृतिक चिकित्सा एवं कलकत्ता कारपोरेशन के साथ इनका काफी नाम सुना था। मुझे विश्वास नही हो रहा था कि इतना बड़ा आदमी बात-चीत एवं व्यवहार में इतना साधारण। लेकिन बाद में वहाँ पर इनसे नियमित

मिलने के बाद मेरा वह भ्रम टूट गया। मैंने देखा कि वे *जिस उम्र के व्यक्ति* के साथ बात करते हैं उसी उम्र के बन जाते हैं।

वहाँ पर उनसे प्रत्येक विषय पर खुलकर बातचीत होती थी। चाहे विषय राजनीति हो, धार्मिक हो अथवा शृंगार रस की हो। वह निरोग रहने के काफी सरल एव घरेलू उपाय बताया करते हैं।

इसके कुछ साल बाद लायन्स क्लब में उनके बड़े पुत्र निर्मल सरावगी से परिचय हुआ। जब मैंने उनसे बताया कि मैं उनके पिता से पहले से मित्रवत् परिचित हूँ, तो वह मुझे चाचा कहने लगा और आज तक चाचा कहता है।

निर्मल से परिचय हो जाने के बाद उनके घर काफी आना-जाना होने लगा। मैंने पाया कि धर्मचन्दजी का जीवन काफी नियमित एवं सयमित है। निर्मल की बडी लडकी सगीता की शादी मे उनसे काफी देर तक बात होती रही। उसी समय उन्होने बताया कि डायमंड हार्बर रोड पर एक प्रकृति निकेतन है जो बन्द पड़ा है। उसे चालू करने का प्रयास करना चाहिए। मेरे पूछने पर उन्होंने उसकी पूरी बात बताई। मैंने उसे देखना चाहा उन्होने २-३ दिन के अन्दर ही मेरे साथ जाकर उसे चाव से दिखाया। उसके बाद उस विषय पर हमारी कई बार बैठकें हुई। काफी बार वहाँ पर जाना हुआ उसकी रूपरेखा, बजट एवं चन्दा इकट्ठा करने पर काफी विचार-विमर्श हुआ। हर समय उन्होंने पूरा सहयोग एव मार्ग दर्शन किया। उस समय मैंने महसूस किया कि इनके मन मे प्रकृति निकेतन के प्रति कितनी ममता एव समर्पण है। ये उसके बारे में जब बात करते थे तब ऐसा लगता था कि कोई माँ अपने बेटे के बारे में बात कर रही है।

उम्र के बारे में जब भी उनसे बात होती है ये अपने को उम्र से २० वर्ष कम का बताते है और कहते है कि मैं अपने आपको इतने वर्ष का महसूस करता हूं और जबतक जिन्दा रहूंगा वैसा ही बताऊंगा क्योंकि मर्द की जबान एक होती है।

मेरी परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि मैं इतना स्वस्थ रहूं कि इनके साथ १-१-२००० को नव शताब्दी दिवस समारोह मना सकूं। □

पुरुषार्थी महापुरुष

□ □

मदनगोपाल सारडा

करीब ३५ वर्ष पुरानी बात है, 'विश्वमित्र' में एक लेख छपा था, "कंकड़ों का साग", जिसके लेखक थे धर्मचन्दजी सरावगी। लेख बड़ा रोचक था। एक तेज और होशियार रसोइया लोगों से कहने लगा कि मैं कंकड़ों का साग बनाना जानता हूं। लोगों ने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया और कहा, बनाकर दिखाओ तो तुम्हें पुरस्कार देंगे। उसने पुरस्कार पाने के लिए छोटे-छोटे गोल पत्थर इकट्ठे किये और उन्हें साफ-सुथरा कर उसमें तेल, मसाला वगैरह देकर साग बना दिया। परीक्षा के समय जब भोजन करने वाले बैठे तो भोजन परोसने के साथ ककड़ के साग को परोसा गया। थाली में जब कंकड़ गिरे आवाज हुई, लोगों ने अंगुली से दबाकर देखा वे कड़े के कड़े थे। लोगों ने रसोइया से पूछा इसे कैसे खाएंगे ? रसोइया होशियार था उसने हंसते हुए कहा आपलोग भोजन के समय जो साग खाते हैं तब, साग क्या चीज का है

उसका तो ध्यान नहीं रखते। आपलोग तो मसालों के स्वाद को ही जानते हैं। इसके कंकड़ छोड़ दीजिये मसालों के साथ रोटी खा लीजिये।

भोजन करनेवाले के पास कोई जवाब नहीं था। रसोइए की विजय हुई। लेख का उद्देश्य यह था कि अधिकांश लोग साग-तरकारी उसके मसाले से मापते हैं। वे तरकारी को सही तरीके से नहीं खाते वरन् उसमें दिए मिर्च मसाले-खटाई में लगाकर रोटी खाते हैं। कई वर्षों बाद धर्मचन्दजी से जब परिचय हुआ तब इस विषय पर प्रश्न करने पर उन्होंने बताया कि जहां हरी सब्जियां शरीर को पोषक तत्व देती है, वहां मिर्च-मसाले हमारी पाचन-शक्ति को बिगाड़ते हैं। और इस विचार के पीछे उनका अपना विश्वास और अनुभव था। अपने दैनिक भोजन में भी वे कम मसाले की उबली सब्जियां और अंकुरित अनाज का उपयोग करते हैं।

समाज के प्रति सरल उदारता उनकी एक विशेषता है। जनवरी १६७८ में नॉर्थ कलकत्ता लायन्स क्लब के अस्पताल को उन्होंने करीब पन्द्रह हजार के अवदान से एक इ० सी० जी० मशीन एवं इ० एन० टी० विभाग के लिए कई उपकरण प्रदान किये। इसके पश्चिम बंगाल के मन्त्री श्री प्रसान्त सूर उद्घाटन कर्त्ता थे। जब इस कार्य के लिए सब सरावगीजी की प्रशंसा कर रहे थे तो उन्होने अपने भाषण में कहा कि "प्रशंसा का पात्र तो अवदान लेनेवाली संस्थाएं है। हमें तो इससे यश और पुण्य मिलता है। संस्था के कार्य मुक्का मारकर लाडु खिलाती है। आप लोगों ने जोर देकर यह कार्य करवाया इसके लिए आभारी तो आपका मैं हूं।

देकर आभार स्वीकार करने की हमारी संस्कृति की यह पुनीत विशेषता है। जिसका ज्वलंत उदाहरण धर्मचन्दजी हैं।

बचपन में पढ़ा था, आर्यों की युवावस्था ७५ वर्ष तक होती थी। लगता था यह आदर्श कल्पना है और अपने पूर्वजों की प्रशंसा के लिए एक अलंकार मात्र है। पर एक दिन आया जब यह तथ्य सर्वदा सत्य प्रतीत हुआ। करीब १९८० की बात है "विकास" की हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता "पोद्दार छात्र निवास" में हो रही थी। धर्मचन्दजी सरावगी मुख्य अतिथि थे। उनकी आयु उस

समय ७५ वर्ष की थी। उसी समय 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में उनका चित्र छपा, लिखा था ७५ वर्ष का युवक। जब सरावगीजी का परिचय और प्रशंसा हिन्दुस्तान के लेख के उद्धरण से की गई कि वे ७५ वर्ष की आयु में भी कितने स्वस्थ हैं, तो सरावगीजी ने अपने भाषण में कहा कि 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के इस परिचय ने मेरा अहित ही किया है। मैं देखने में ६० का लगता हूं पर इसने सब जगह मेरी आयु का प्रचार कर दिया। यह उनके मनोबल, खुशमिजाजी, आहार नियन्त्रण और व्यायाम का परिणाम है कि इस आयु मे भी इतने स्वस्थ और चुस्त हैं। जीवन का दृष्टिकोण व्यक्तित्व के निर्माण में बडा महत्वपूर्ण योगदान करता है। और धमचन्दजी का दृष्टिकोण बहुत संयत, आशावादी और उत्साहपूर्ण है। उनको प्रायः लोग कहते हैं कि इस उम्र में कड़ी कसरत नही करनी चाहिए पर वे इसका एक ही उत्तर देते है कि जब मैं सुगमता से यह कर पा रहा हूं तो मुझे इसके बन्द कर देने की क्या आवश्यकता है।

एक दिन मैंने धर्मचन्दजी से पूछा कि क्या आपको बढती हुई उम्र से कमजोरी प्रतीत नहीं हो रही, तो उन्होंने कहा कि सयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन कितना चुस्त और कर्मठ है, मैं उससे केवल ९ वर्ष ही तो बडा हूं। यही जीवन का दृष्टिकोण सरावगीजी को स्वस्थ और युवा बनाए हुए है। ठीक ही है "मन के हारे हार है, मनके जीते जीत"। सरावगीजी मनोबल के जीते जागते प्रतीक हैं।

धर्मचन्दजी एक प्रभावशाली लेखक है जिन्होने प्राकृतिक चिकित्सा, योग आदि पर बहुत-सी पुस्तके लिखी है। उनमें से अधिकांश सर्व सेवा सघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी से प्रकाशित है। एक दिन जब उनसे पूछा : आप इतनी सस्ती कीमतों पर इन पुस्तको को कैसे दे पा रहे है, तो उन्होने कहा कि ये पुस्तके बनिये की बेटो की तरह है। जैसे बेटी को पहना-ओढाकर दायजा देकर विदा करते हैं, वैसी ही हमारी पुस्तकें घर से कुछ न कुछ खर्चा लगाकर लोगों के लाभ के लिए प्रकाशित होती हे। उनका यह विचार एक ऐसी सेवा वृति का द्योतक है जो सहज ही ध्यान में नही आता। पुस्तक को उपादेय बनाने के लिए वे अपनी अनुभूति की बात कहते हे।

योग पर अपनी पुस्तक में योगासनों में उन्होंने अपने चित्र देकर यह प्रमाणित किया है कि केवल सिद्धान्तों में नही वास्तव में ही उनका विषय मे

बहुत प्रवेश और अनुभव है। उस पुस्तक के कुछ प्रयोगों से मुझे भी साइटिका रोग में लाभ मिला है। उनकी पुस्तकों का उद्देश्य समाज का हित है।

लायन्स क्लब की कार्य समिति की बैठकों में कई बार उनके घर जाने का मौका मिला। एक दिन छत पर उनका साधना कक्ष और सुन्दर बगीचा देखा तो आश्चर्य हुआ कि कितने विषयों में उनकी रुचि है। भिन्न-भिन्न प्रकार के पौधे। एक तरफ एक पंखा लगा था पूछने पर पता चला वे विमान चालन में भी सिद्ध हस्त थे और एक अपना छोटा-सा विमान था जो समय के चपेटे में जीर्ण हो गया, उसीका यह पंखा स्मृति स्वरूप रखा है। समाज में अधिकांश लोग ऐसे मिलते हैं जो हर विषय पर धड़ाधड़ उपदेश देते रहते हैं पर अपने जीवन पर उतारे हुए अनुभूत उपदेश देनेवाले महान पुरुष यदाकदा ही मिलते हैं। धर्मचन्दजी सरावगी ऐसे ही एक पुरुषार्थी महापुरुष हैं जिनकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं है। किसी महान दार्शनिक ने कहा था "दूर से अधिकांश व्यक्तित्व मधुर लगते है, पर हम जब पास जाते है तो उनमें पसीने की दुर्गन्ध आती है" पर धर्मचन्दजी का व्यक्तित्व ऐसा है जितना उनके पास जाते है हम आदर्श और यथार्थ के एकात्मा के सौरभ की सुगन्ध पाते हैं। उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एव व्यावसायिक सब क्षेत्रों में स्तुत्य रही है। ऐसे ही व्यक्ति समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं। □

एक अनोखा व्यक्तित्व

□ □

हनुमानमल वर्मा

सन् १९५९ में मुझे कलकत्ता आए लगभग आठ वर्ष ही हुए थे। इस बीच कलकत्ता के सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं से मेरा थोड़ा-बहुत परिचय हो चुका था पर सरावगीजी से व्यक्तिगत परिचय नही हो सका। हां पर स्थानीय समाचार पत्रों एवं प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी लेखों के द्वारा उनके बारे में जानकारी मिल जाया करती थी।

कलकत्ता में अल्पकालीन प्रवास में ही मुझे दमा की शिकायत हो गई थी। एलोपैथिक पद्धति से काफी उपचार करवाया पर लाभ नही हुआ। उस समय प्रवासी मारवाड़ी समाज में डाक्टर किस्टो बाबू काफी प्रचलित थे। मेरी भी उनके प्रति अच्छी धारणा थी कि वे लोभी नहीं है और सही राय देते हैं। उन्होंने कहा कि दमा की बीमारी में लाभ चाहते हैं तो आप राधाकृष्णजी नेवटिया के पास मैदान में चले जाएं। वे योगासन प्राणायाम आदि से उपचार करवाते

हैं। नेवटियाजी से मेरा पहले से ही परिचय ही नहीं था बलिक उनका मुझे बराबर ही स्नेह मिलता रहा है। अतः उनके सान्निध्य में मैंने आवश्यक योगासन व प्राणायाम की जानकारी, कलकत्ता मैदान स्थित यौगिक संघ में, प्राप्त की।

प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी

उन दिनों प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी 'स्वस्थ-जीवन' नामक मासिक पत्रिका कलकत्ते से प्रकाशित होती थी। धर्मचन्द सरावगी उसके प्रबन्ध-सम्पादक थे। वह पत्र बराबर ही घाटे में चलता था जिसकी पूर्ति धर्मचन्दजी अपने निजी प्रतिष्ठानों के विज्ञापन देकर किया करते थे। 'स्वस्थ-जीवन' कार्यालय की व्यवस्था के सम्बन्ध में नेवटियाजी का आदेश था कि मैं उसका कार्यभार सम्भालू। मैं कलकत्ता स्थित रा० ब० विश्वेश्वरलाल मोतीलाल हलवासिया ट्रस्ट में कार्यरत था फिर भी मैं उनके अति स्नेहासिक्त आदेश को नही टाल सका और अशकालीन कार्य करने की स्वीकृति मैंने दे दी। दूसरे दिन ही उन्होंने सरावगीजी से मेरा परिचय कराया। परिचय के समय उनके व्यवहार ने मुझे इतना प्रभावित किया कि मैं अपने कलकत्ता प्रवास तक (१९८२ के मध्य तक) अर्थात् लगभग २३-२४ वर्षों तक उनके यहां सेवारत रहा। कुछ वर्षों बाद जब 'स्वस्थ-जीवन' कार्यालय वाराणसी, नई दिल्ली चला गया तो भी उन्होंने मुझे अपने पास ही अन्य प्रतिष्ठान में लगाये रखा।

सरावगीजी प्राकृतिक चिकित्सा के अनन्य उपासक है। प्राकृतिक चिकित्सा जगत में उस समय उनका कोई शानी नहीं था। जहां प्राकृतिक चिकित्सा थी वहां सरावगीजी थे और जहां सरावगी जी थे वहां प्राकृतिक चिकित्सा थी। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी मे प्राकृतिक चिकित्सा का अलग विभाग सरावगीजी की ही देन है। ये प्राकृतिक चिकित्सा के लिए सदैव तन-मन, धन से तैयार रहते है। अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के जन्मदाता भी सरावगीजी ही हैं जिसका प्रथम अधिवेशन श्री बालकोवा भावे की अध्यक्षता में कलकत्ता में मनाया गया। सरावगीजी अनेक वर्षों तक इस अखिल भारतीय संस्था के महामंत्री के पद पर रहे हैं। प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति उनकी इतनी अधिक आस्था है कि उन्होंने अपने यहाँ से लाखों रुपयों का अपना उद्यान दान देकर प्रकृति निकेतन ट्रस्ट की स्थापना की है। उनकी ऐसी बराबर इच्छा रही कि सरकार उपचार की अन्य पद्धतियों के साथ-साथ प्राकृतिक

चिकित्सा उपचार को भी मान्यता प्रदान करें। यह एक प्रसन्नता की बात है कि सरकार आज प्राकृतिक चिकित्सा के मद में लाखों रुपया खर्च करती है। भारत स्थित अनेक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र को केन्द्रीय सरकार का अनुदान प्राप्त है। सरावगीजी इस दिशा में यहीं पर रुके नहीं बल्कि उनकी ऐसी इच्छा थी कि एलोपैथिक, होम्योपैथिक व अन्य चिकित्सा पद्धतियो के लिए चिकित्सक तैयार करने के लिए जिस प्रकार मेडिकल कॉलेज है उसी प्रकार प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक तैयार करने हेतु एक कॉलेज की स्थापना की जाए। उन दिनों श्री मोरारजी देसाई केन्द्रीय मत्री मण्डल मे थे जो प्राकृतिक चिकित्सा के अनन्य उपासक हैं। उनका भी इस दिशा मे पूरा सहयोग मिला। प्रश्न जब जमीन-भवन व अर्थ का सामने आया तो सरावगीजी तन-मन-धन से कमर कस कर मैदान में आ डटे। इस कार्य हेतु डायमण्ड हार्बर रोड स्थित अपने जैन उद्यान नामक बहुत बड़ी भूमि पर लगे बगीचे को प्रकृति निकेतन ट्रस्ट को कॉलेज स्थापना हेतु अर्पित करते हुए भवन निर्माणार्थ बहुत बड़ी राशि भी दान मे दी। इतना ही नहीं, अर्थ सचय हेतु स्वय भी निकल पड़े। धुन के पक्के तो सदा से ही रहे हैं। जो जच गई उसे पूरा करके ही रहे। आखिर प्राकृतिक चिकित्सा कॉलेज की स्थापना होकर रही जहा चार वर्षीय डिप्लोमा कोर्स अध्यापन की व्यवस्था थी। इस कालेज के साथ-साथ प्राकृतिक चिकित्सालय भी चलता था जहा असाध्य बीमारी के रोगियो की चिकित्सा की समुचित व्यवस्था थी। कालान्तर में सरकार की उदासीनता एवं जन-मानस मे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के प्रति उत्साह के अभाव मे उक्त कालेज बन्द हो गया। सुनने में आया है कि आजकल वहां नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट के नाम से अच्छे ढग का प्राकृतिक चिकित्सालय सुचारू रूप से चल रहा है जो प्रसन्नता का विषय है।

राष्ट्र भाषा प्रेमी

मेरा कुछेक साहित्यिकों व राजनीतिज्ञों से परिचय है जो हिन्दी प्रेमी है पर इस दिशा में जितनी कट्टरता सरावगीजी में है उतनी मैंने किसी में नही देखी। जैन हाउस में घुसते ही मुख्य द्वार से लेकर ऊपर छत तक हम जायेंगे तो हमे ऐसा महसूस होगा कि ये कितने कट्टर हिन्दी प्रेमी है।

सत्य प्रेमी

मुझे इनके पास लगभग २३-२४ वर्षों तक कार्य करने का सौभाग्य मिला। मैंने ऐसा पाया कि ये सत्य भाषियों की कद्र करते हैं। एक बार मेरी थोड़ी-सी

असावधानी से 'स्वस्थ-जीवन' कार्यालय को कई हजार का नुकसान हो गया था। भूल नजर आते ही मैंने उनसे स्पष्ट कहा था कि मेरी असावधानी से ऐसा हो गया है। इन्होंने बिना किसी प्रकार का उलहना दिये कहा कि ठीक है। उनका इस प्रकार का व्यवहार सत्य बोलने की प्रेरणा देता है। वे अपने व्यवसाय एवं अपने जिम्मे सौंपे गये कार्य की इतनी अच्छी देखरेख रखते हैं कि उन्हें ठगना व धोखा देना सरल कार्य नहीं है।

सुलेख प्रेमी

प्राय: सभी चाहते है कि सभी कागजात सुन्दर अक्षरों में हो पर सरावगीजी ऐसा चाहते ही नहीं है अपितु उसका पालन भी करते हैं। वे अपने यहां १-२ कर्मचारी तो केवल स्वच्छ व सुन्दर अक्षर लिखने के लिए ही रखते हैं जो उनके निजी खाता-बहियों, रजिस्टरों आदि को सुन्दर अक्षरों से लिखते है। कोई भी व्यक्ति जो उनके रजिस्टर आदि देखेगा, प्रशंसा किये बिना नहीं रहेगा।

नवीनता-प्रेमी व शौकीन तबियत के

बराबर ऐसी इच्छा रहती रही है कि कुछ नई चीज मेरे घर में हो। ऐसा शौक बचपन से ही है। जब ये छोटे थे तब मन में ऐसा विचार आया कि ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि दरवाजा खुलते ही बत्ती जल जाए व पखा चालू हो जाए। अपने दिमाग और बिजली मिस्त्री के सहयोग से उन्होने उस शौक को पूरा किया। आज भी उनके आवास कक्ष को देखें तो कुछ नवीनता अवश्य ही मिलेगी। एक बार स्व० सुखाड़ियाजी इनके घर चाय पान पर आये। सरावगीजी ने उनको अपना शयन कक्ष एवं बाथरूम दिखाया। पर उन्होने अनुभव किया कि वास्तव में बाथरूम देखने लायक ही है। उन दिनों बेसीन के नल के नीचे हाथ देते ही पानी का आना और सिस्टर्न की जंजीर के खींचते ही गमले में पानी के बहने के साथ-साथ चारों ओर सेण्ट की सुगन्ध, यह अद्भुत ही था। उनका हर कार्य कुछ न कुछ नवीनता लिए हुए होता है।

शौकीन तबियत के व्यक्ति तो है ही। भरपूर जवानी में इनके वस्त्रों की सिलाई कलकत्ते के सर्वश्रेष्ठ दर्जी के यहां होती थी। आज तो वह शौक नहीं है पर इत्र व सेंट तो आज भी लखनऊ से मंगाकर लगाते हैं। सफाई के प्रेमी हैं।

स्वास्थ्य-प्रेमी

प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी अथवा प्राकृतिक चिकित्सा के भक्त तो बहुत से व्यक्ति हैं पर उसका अक्षरशः पालन करना कठिन है। सरावगीजी इसके अपवाद हैं। अपनी प्रत्येक शारीरिक व्याधि को प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से ही दूर करते हैं। इस ८१ वर्ष की अवस्था में भी वे नियमपूर्वक प्रतिदिन व्यायाम शाला जाकर श्रम साध्य व्यायाम करते हैं। व्यायाम के बाद वहीं दुग्ध पान करते हैं। खाने-पीने का नियम भी इनका बड़ा विचित्र है। केवल एक बार भोजन करते हैं। भोजन की तालिका भी इनकी बनी रहती है—प्रतिदिन प्रत्येक प्रान्त का भोजन। इस प्रकार इनके भोजन में प्रतिदिन थोड़ा बहुत परिवर्त्तन होता ही रहता है। भोजन में प्रायः मौसमी फलों का व्यवहार ही होता है, अनाज की मात्रा बहुत थोड़ी। सरावगी लोग धार्मिक दृष्टि से लहसुन नही खाते। हालांकि सरावगीजी मदिर जाते हैं तथा अनेक धार्मिक सस्थाओं से सबधित है पर स्वास्थ्य के मामले में इनका दृष्टिकोण उदार है अर्थात् लहसुन का प्रतिदिन सेवन करते है। खाने के भी सरावगीजी शौकीन है। आइसक्रीम, जलेबी आदि खाने की इच्छा होती है तो अवश्य खाते है। इस प्रकार नियम पूर्वक खान-पान, व्यायाम व प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्तों का पालन करते हुए आज भी वे इस आयु में पूर्ण स्वस्थ है। कभी-कभी कहते हैं कि प्राकृतिक चिकित्सा ने कम से कम मुझे जीना तो सिखाया ही है। पिछले ४० वर्षो से इन्होने किसी प्रकार की औषधि नहीं ली है।

नियतिवादी

सरावगीजी सदा से ही भाग्य मे विश्वास करते आये है। विश्वास ऐसा भी नहीं कि अजगर करे न चाकरी…। क्रियाशील तो प्रारम्भ से ही रहे है पर तदबीर के साथ-साथ तकदीर को भी मानते है। कहते है जहां भी मैंने हाथ दिया, प्रभु ने मुझे दिया ही दिया, जबकि मैंने कई ऐसे क्रियाशील व्यक्तियो को देखा जो निष्ठापूर्वक धघा करते हैं पर उन्हे असफलता ही मिलती है। अत भाग्य पर अविश्वास कैसे हो वे मजाक में कभी-कभी यहां तक भी कह देते है कि मैं तो तकदीर का सांड हूं।

हरफन मौला व मौज-मस्ती वाले

सरावगीजी मस्त तबियत के व्यक्ति हैं। हसी-मजाक प्रिय। साथियों में हमेशा हंसी-मजाक करते ही रहते है। हास्य व शृ गार रस के प्रेमी हैं अतः

जहाँ कहीं भी हास्य रस का कवि सम्मेलन होता सपत्नी वे अवश्य पहुंचते। जीभर कर सुनने के लिए कभी-कभी हास्य रस के कवियों को अपने निवास स्थान पर सादर आमंत्रित कर लेते हैं।

यदि वे चाहें तो २-४ धंधे और भी शुरू कर सकते हैं पर इनका विचार है कि इससे सिवाय मानसिक अशान्ति के लाभ कुछ होने वाला है नही। भगवान ने इतना दे रखा है कि खूब आराम से जीवन यापन कर लेता हूं, किसी बात की कमी नहीं है। अपने लिए यथेष्ठ है तथा बच्चों के लिए भी काफी है फिर किस लिए परेशानी मोल लेनी। कभी मजदूरों का हड़ताल तो कभी मामले बाजी, कभी इनकम टैक्स, सेल्स टैक्स के झंझट…इस प्रकार परेशानी भरा जीवन आखिर क्यों? वर्त्तमान अवस्था में कितना आनन्द है।

इतने वर्षों के सम्पर्क में मैंने यह भी पाया कि इनके कार्य में उतावलापन, हड़बड़ी आदि नहीं है। प्रारम्भ में तो तेज स्वभाव के थे पर जैसा कि वे अक्सर कहते रहे कि बड़े-बड़े व्यक्तियों के सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने सीखा कि क्रोध नहीं करना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने अपने स्वभाव में बहुत बड़ा परिवर्त्तन करके अपने आप को सुखी ही बनाया है।

बालहट

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा कि वे धुन के पक्के हैं। जो बात जंच गई वह करके ही रहते हैं। बालहट की तरह अपनी बात मनवा कर रहते है या करके रहते हैं चाहे उसके लिए कितना ही प्रयास करना पड़ा हो अथवा खर्च करना पड़ा हो। विलायत जाने की धुन सवार हुई तथा वायुयान चालक बनने का शौक हुआ। इकलौते पुत्र होने के कारण इनके माँ-बाप इनकी इन दोनों ही इच्छाओं की पूर्ति से सहमत नहीं थे पर बालहट जो ठहरा, माँ-बाप को मनवा कर रहे और सन् १९२९-१९३० में, जब मारवाड़ी समाज में विरले ही सुसम्पन्न व्यक्ति विलायत यात्रा पर जाते थे और जब मारवाड़ी समाज में एक भी वायुयान चालक नही था तब उन्होंने अपने शौक पूरे किये अर्थात् विलायत यात्रा पर गये और वायुयान चालक बने। यहीं नहीं, उन्होंने निज का वायुयान भी खरीदा जिस पर सपत्नी सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया। निजी वायुयान का एक पंखा आज भी उनके निवास स्थान पर यादगार में सुरक्षित टंगा है।

जिज्ञासु

सरावगीजी क्रियाशील बराबर ही रहे हैं। कुछ न कुछ सीखने की इच्छा हरवक्त रहती है। सर्कस में साइकिल के विभिन्न खेलों को देखकर इनकी इच्छा भी उन्हें सीखने की बलवती हुई और आखिर सीखकर ही रहे तथा समय-समय पर इसका प्रदर्शन भी किया अभी कुछ वर्ष पहले ही इनको चित्रकार बनने का शौक जागृत हुआ। चारों ओर पत्र व्यवहार करके साधनों को जुटा-कर सीखना शुरू किया और अल्प समय में ही चित्रकार बन गए। इनके द्वारा बनाये गये कुछ चित्र इनके निवास स्थान पर जहाँ-तहाँ लगे अवश्य मिलेंगे।

फोटोग्राफी का भी इनको अजीब शौक था। अपने पास अंगुली जितना लम्बा और एकदम पतला एक छोटा-सा कैमरा शायद आज भी विद्यमान है जिससे वे स्वयं फोटो खींचते रहे। अपने बाल्यकाल, यौवनावस्था, सार्वजनिक जीवन, राज-नैतिक जीवन के शायद सैकड़ों ही फोटो होंगे जो अनेकों एलबमों में लगे हुए हैं।

अपने जीवन में इन्होंने अनेकों शौक पूरे करने के साथ-साथ घुड़सवारी, नौका विहार, तैरना आदि भी सीखा। इस अवस्था मे अभी लाठी चलाना सीखना प्रारम्भ किया है। इनके एलबमों को देखने के बाद मैंने पूछा कि आपने कौन-सा शौक पूरा नहीं किया ? उन्होंने हंसकर उत्तर दिया कि दुनिया मे शौक तो बहुत है, कौन सब पूरा कर सकता है पर हाँ जिस शौक की इच्छा हुई उसे प्रभु ने पूरा करने मे मेरा बराबर सहयोग किया। एलबमों को देखने के बाद मेरे मन में एक प्रश्न आया कि सरावगीजी को मैंने राजनैतिक व सार्वजनिक जीवन में अनेक रूपों मे देखा है पर कही भी इनको मैंने एक सगीतज्ञ के रूप में नहीं देखा। शायद इस ओर उनका ध्यान ही नही गया हो अथवा रुचि ही जागृति नहीं हुई हो। सुरीले कण्ठों के अभाव मे, जो एक नैसर्गिक देन है वे एक गायक नही बन सके हों पर किसी भी प्रकार के वाद्य यन्त्र पर अधिकार रखना इस प्रकार के लगन शील व्यक्ति के लिए कठिन नहीं है। इस दिशा में अब भी शौक जागृत हो जाए तो कोई बड़ी बात नहीं।

राजनैतिक व सार्वजनिक कार्यकर्ता

सरावगी जी केवल प्राकृतिक चिकित्सा व स्वास्थ्य प्रेमी ही नहीं है अपितु एक अच्छे राजनैतिक कार्यकर्ता भी रहे हैं। कांग्रेसी कार्यकर्ता के रूप में

कारपोरेशन के कौंसिलर बने, पश्चिम बंगाल विधान परिषद के सदस्य रहे राज्य सभा के सदस्य रहे भी निर्वाचित हुए। राजनीति से तो अब इन्होंने शायद सन्यास ले लिया है। सार्वजनिक क्षेत्र में भी शायद सैकड़ों संस्थाओं से किसी न किसी रूपसे सम्बन्धित रहे हैं। आज भी प्रकृति निकेतन, बड़ाबाजार युवक सभा व अन्य कुछेक सस्थाओं में सक्रिय भूमिका अदा करते हैं। राजनैतिक व सार्वजनिक क्षेत्रों मे तथा प्राकृतिक चिकित्सा जगत में अहम भूमिका निभाते रहने से इनका उच्चकोटि के नेताओं से निकट सम्पर्क हो गया। श्री मोरारजी देसाई, श्री यू० एन० ढेबर, श्री मन्नारायण जैसे नेता जब कभी कलकत्ता आते तो श्री सरावगीजो के यहां ही ठहरते थे। सरावगीजो चाहते तो इस प्रकार के नेताओ के परिचय का व्यापारिक क्षेत्रों में किसी न किसी रूप से लाभ उठा सकते थे पर इन्होंने इन लोगों से कभी भी इस प्रकार के विषय पर चर्चा तक नही की।

श्री मोहन लाल सुखाड़िया धर्मचन्दजी के यहाँ जब अल्पाहार के लिए आये तब धर्मचन्दजी की सफाई, छतका बगीचा, कार्यालय आदि की सुव्यवस्था देखकर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने धर्मचन्दजी को कहा कि राजस्थान के व्यापार मत्रालय की जिम्मेवारी लेने के लिये, व्यापार मत्री बनने की स्वीकृति दे दें तो बाकी का कार्य वह खुद कर लेंगे। पर धर्मचन्दजी ने कहा: मेरे पिताजी अवकाश ग्रहण कर चुके हे। बच्चे दोनों छोटे है। मुझे अपना व्यापार सँभा-लना है। मुझे क्षमा करें।

सरावगीजी एक कार्यकर्त्ता ही नही एक लेखक भी है। इन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा पर अनेकों पुस्तकें लिखी है: 'स्वस्थ जीवन' में तो बराबर ही "डायरी के बोलते पन्ने" स्तम्भ में इनके सुरुचिपूर्ण प्राकृतिक चिकित्सा संबंधी अनुभव व सस्मरण आते रहे है। धर्मयुग, इलस्ट्रेटेड वीकली, साप्ताहिक हिन्दुस्तान आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में इनके यदाकदा स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख प्रकाशित होते रहते है। ये अंग्रेजी, हिन्दी, बगला में अच्छे वक्ता भी हैं।

सरावगीजो बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। इस प्रकार के व्यक्ति के अभिनन्दन का हमें पुनः अवसर मिले यही प्रभु से कामना है। ☐

इक्यासी वर्ष के नवयुवक

□ □

डा० जी० के० सराफ

अस्सी वर्ष की उम्र में किसी व्यक्ति को स्वस्थ देखना एक आश्चर्यजनक बात है। खासकर, मारवाड़ी वर्ग मे ऐसे व्यक्ति को पाना और भी मुश्किल है। धर्मचन्द सरावगी ८१ वर्ष की अवस्था में भी बिल्कुल स्वस्थ हैं और अभी भी प्रतिदिन कठिन व्यायाम और योगासन करते है तथा नवयुवकों की तरह अभी भी सीधे हैं तथा बलिष्ठ भुजाओं के मालिक हैं। वे अपने स्वास्थ्य के प्रति हमेशा अनुशासित तथा सजग रहते हैं तथा उनके लिए उदाहरण है जो अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह रहते है।

श्री धर्मचन्द सरावगी एक भद्र, नम्र और मधुर व्यवहार, कुशल व्यक्तितत्व वाले व्यक्ति हैं, यह भी प्रकृति की ही देन है। नेचर क्योर हास्पीटल, जिसकी स्थापना इन्होंने जोका में की है, देश के इस भाग के व्यक्तियो के लिए एक महान कार्य कहा जायेगा। १९३० मे ये प्रथम मारवाड़ी वायुयान चालक बने। १९३४

में बिहार में भूकम्प-पीड़ितों की सेवा इन्होंने मन लगाकर की। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में महासचिव के रूप में भी इन्होंने सेवा की। अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के महासचिव भी थे। इन्हें एक "आल राउण्डर" की संज्ञा दी जा सकती है, जिन्होंने सभी वर्ग के लोगों के लिए तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाओं के लिए निःस्वार्थ सेवा की। ये एक अच्छे चित्रकार भी हैं। इन्होंने कई बार विश्व-भ्रमण भी किया है। श्री धर्मचन्द सरावगी एक उदाहरण हैं—खासकर मारवाड़ी वर्ग के लिए जहां अधिकतर व्यक्ति सिर्फ पैसा कमाने और भोजन करने में ही व्यस्त रहते हैं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वे स्वस्थ और दीर्घजीवी हों जिससे अधिक से अधिक व्यक्ति उनकी सेवाओं से लाभान्वित हो सकें। □

सौम्यता की प्रतिमूर्ति

□ □

आचार्य हरिगोपाल

चिर युवा श्री धर्मचन्द से मेरा परिचय सन् १९४७ में हुआ जब मैंने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की रसायनशाला के व्यवस्थापक के रूप में कार्य सम्भाला। धर्मचन्दजी उस समय उक्त संस्था के प्रधान मंत्री थे। रसायन-शाला के कार्य की देख-रेख में मुझे सरावगीजी से बड़ा ही सुन्दर मार्ग दर्शन प्राप्त होता था।

सरावगीजी का एक विशेष गुण यह है कि वे कार्यकर्त्ता की बड़ी कद्र व उसका सम्मान करते हैं जिससे उसका उत्साह-वर्द्धन होता है। मैं उनके इस गुण से काफी प्रभावित एवं लाभान्वित हुआ। वे सबके साथ खूब प्रेम से घुलते-मिलते हैं तथा इतने साधन सम्पन्न व उच्च पद प्राप्त करने के बावजूद भी इनमें किसी भी प्रकार का अहं नहीं हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी होने के नाते धर्मचन्दजी से मेरा सम्पर्क घना हुआ। सरावगीजी तो इस पद्धति के पृष्ठपोषक रहे हैं तथा इस क्षेत्र में

इन्होंने काफी अध्ययन व गवेषणा भी की है। जिसके लिए इन्होंने अनेक बार विदेशों का भ्रमण किया एवं इस विषय में अनेक पुस्तकें लिखीं तथा भारत में इस क्षेत्र में कार्य करने वालों को अपनी पुस्तकों के माध्यम से काफी सामग्री प्रदान की जिससे इस प्रणाली से भारत में अपना कार्य सुचारु रूप से चलाने में बड़ी मदद मिली है।

सरावगीजी के ही प्रयास से कलकत्ते में सन् १९५६ में "अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद्" की स्थापना हुई और आप इसके सस्थापक प्रधान मत्री चुने गए। आपको इस संस्था का प्राण भी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। इस सस्था का एक अधिवेशन कलकत्ते में सन् १९६३ में गुजरात के भूतपूर्व राज्यपाल एव सुप्रसिद्ध गांधीवादी स्व० श्रीमन्नारायण अग्रवाल की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ था। उस समय प्राकृतिक चिकित्सा के अनन्य पृष्ठ पोषक श्री मोरारजी देसाई इस सस्था के अध्यक्ष थे। उस अधिवेशन के स्वागत मत्री स्व० श्री मोतीलालजी पोद्दार थे तथा संयुक्त मंत्री का भार मुझे सौंपा गया था। उस अधिवेशन के प्रमुख सूत्रधार सरावगीजी थे तथा आपके मार्ग दर्शन व देख-रेख में वह अधिवेशन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ था।

आपके प्रयास से कलकत्ते में प्राकृतिक चिकित्सा एवं इसके शिक्षण के निमित्त कलकत्ते मे डायमण्ड हार्बर रोड पर जोंका के निकट "प्रकृति निकेतन" की स्थापना की गई जिसके लिए सरावगीजी ने "जैन उद्यान" नामक अपना बगीचा प्रदान कर दिया। जिसमे प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति द्वारा विभिन्न प्रकार के रोगों की चिकित्सा करने व इस पद्धति के चिकित्सकों को शिक्षण व प्रशिक्षण की व्यवस्था है, जिससे काफो संख्या में लोग लाभान्वित होते हैं। इस संस्था का नाम बदलकर अब "नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट" हो गया है तथा सरावगीजी इसके सभापति के रूप में आज तक इससे सलग्न हैं। आप प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार व प्रसार में पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध हैं। ८१ वर्ष की अवस्था में भी आप पूर्ण स्वस्थ हैं तथा नियमित रूप से सभी प्रकार के व्यायाम करते हैं। आप अभी भी युवा है तथा बृद्धावस्था का इन पर कोई प्रभाव नही पड़ा है। इन्हें चिर युवा कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। श्रद्धेय श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका की तरह आप भी युवकों के प्रेरणा स्रोत हैं। आप कलकत्ते की सुप्रसिद्ध व्यायामशाला बड़ाबाजार युवक सभा को बराबर आर्थिक सहयोग देते रहे हैं

तथा आज भी वहां आकर नियमित रूप से व्यायाम करते हैं। तथा वहां आकर व्यायाम करने वालों को मार्ग दर्शन व प्रेरणा प्रदान करते है। सन् १९८३ में आप इस सभा के सभापति भी निर्वाचित हुए थे।

सरावगीजी हिन्दी के बड़े पृष्ठपोषक हैं। अपने व्यवसायिक कार्यों में भी हिन्दी का प्रयोग करते हैं। भगवान से प्रार्थना है कि इस कर्मयोगी चिर युवा एवं सौम्यता की प्रतिमूर्त्ति को दोर्घायु करें ताकि सुदीर्घकाल तक ये सहस्रों युवकों को मार्गदर्शन प्रदान करते रहें व उनके प्रेरणास्रोत बने रहे। यह बड़ी ही प्रसन्नता का विषय है कि सौम्य मूर्त्ति एव सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के पृष्ठपोषक के अभिनन्दन का आयोजन इनकी ८१ वीं वर्षगांठ के अवसर पर कलकत्ते के सुधी-जनों द्वारा किया जा रहा है जो बड़ा ही स्तुत्य है। □

अद्‌भुत त्याग के धनी

□ □

यतीन चक्रवर्ती

सबसे पहले मैंने धमचन्दजी को १६६६ में देखा जब वे पश्चिम बगाल विधान परिषद के सदस्य चुने गए यद्यपि ये हमारी विरोधी कांग्रेस पार्टी की ओर से आए थे और उन्हीं की पंक्ति में बैठा करते थे। इनके बारे में सुना कि १६६४ के चुनाव में राज्यसभा की सीट जीतकर भी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष श्री अतुल्य घोष के कहने पर दूसरे सदस्य के लिए राज्यसभा में बिना शपथ लिए ही अपनी सीट से इस्तीफा दे दिया। ऐसा अद्‌भुत त्याग बहुत थोड़े लोगों में पाया जाता है इसलिए उस वक्त के मुख्यमन्त्री श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन, श्री विजय सिंह नाहर तथा कांग्रेस पार्टी के और सदस्य भी उन्हें बड़ी श्रद्धा से देखा करते थे। हमलोगो ने भी यह बात सुनी तो उनके त्याग के कारण उनके प्रति एक अच्छी भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक था।

धर्मचन्दजी का स्वास्थ्य अच्छा है। वे उस समय अपनी जेब में घर के लगाए हुए पान और खुशबूदार सुपारियां रखा करते थे जिसे पास बैठे हुए सदस्य उनके पहुँचने पर या खुद देरी से आने पर उनके पास बैठकर पान-सुपारी ले लिया

करते थे। जो दूर बैठे रहते थे वे अवकाश के समय जब सब बाहर निकलते तो उनसे पान सुपारी ले लिया करते थे। धर्मचन्दजी मिलनसार व्यक्ति है और अपना समय खत्म होने के बाद फिर वे चुनाव नही लड़े।

धर्मचन्दजी ने अपने मकान के नीचे ही स्टील फर्नीचर की दुकान साथ ही स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तकों की दुकान कर रखी है जिसमें वे खुद संध्या को ५-३० बजे के बाद घण्टे, डेढ़-घण्टे बैठते है। उनकी दुकान में सब चीजों पर दाम लिखे हैं और वे कहा करते हैं कि कोई परिचित आजाए या कोई संस्था वाले आ जाएँ तो हम उसे कुछ दाम अवश्य कम कर देते हैं। और वे यह भी कहा करते हैं कि कोई सस्था वाला दाम देना नही चाहे पर हमारे ट्रस्ट का नाम ली हुई वस्तु पर दाता रूप में लिखने की अनुमति दे तो हम उसे बिना मूल्य दे सकते हैं।

मुझे भी मेरे अन्तर्गत चलनेवाली संस्थाओं के लिए लेने का मौका मिला जिन चीजों का दाम दिए उसमें उन्होने दाम कम कर दिए और जिन चीजों पर हमने उनके ट्रस्ट का नाम लिख दिया उसे बिना मूल्य प्रेमपूर्वक दिया।

उपरोक्त मौके पर जब कई बार उनके यहाँ गया तो उनके अच्छे स्वास्थ्य का राज पूछा तो उन्होंने बड़ाबाजार युवक सभा में जाकर व्यायाम करने की बात बताई। और फिर व्यायामशाला मे शारीरिक प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण के लिए मुझे बुलाया।

यह व्यायामशाला महाजाति सदन के एकदम पीछे है। हमें बराबर महा-जाति सदन जाना पड़ता है पर कभी व्यायामशाला नहीं गए थे। उस दिन वहाँ की सारी व्यवस्था देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। वहाँ अखाड़ा, बास्केटवाल वालीबाल, जिमनास्टिक, टेबुलटेनिस, वेडमिन्टन, योगासन, कराटे, रायफल आदि की सारी व्यवस्था है।

धर्मचन्दजी ने भी यहाँ इस सस्था के उत्थान में काफी धन-राशि दी हैं और १९८३ से इसके सभापति है।

मैंने उनसे एक बार अपनी लीवर की गड़बड़ी के लिए और भोजन के बाद वायु होने की बात बताई। तब उन्होंने अपने जीवन में आजमाए हुए बिना पैसे

के दो नुस्से बताए। लीवर के लिए उन्होंने बताया कि एक चुटकी चावल सुबह-सुबह बिना चबाए निगल जाना चाहिए।

वायु के लिए बताया कि भोजन के बाद सीधे लेट कर आठ लम्बे सास लें और फिर दाहिनो करवट होकर सोलह लम्बे सांस ले फिर बांये करवट होकर ३२ लम्बे सांस ले। जिससे वायु मुंह से या गुदा से निकल जाएगी।

सबसे विशेष बात है कि धर्मचन्दजी ८१ वर्ष की उम्र के बावजूद भी एक नौजवान जितना उत्साह रखता है उससे भी ज्यादा उत्साह रखते हैं। यह इसलिए सम्भव हुआ है कि वे युवा अवस्था से हो ब्रह्मचर्य साधना करते हैं। इतने बड़े व्यवसाई होते हुए भी इनका व्यवहार बहुत ही नम्र है जिसका नई पीढ़ी को अनुकरण करना चाहिए। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वे शतायु हों। □

प्रकृति-प्रेमी पुरुषार्थ

□ □

किशोरीलाल ढांढनियां

सन् १९५९-६० में, मैं जब कलकत्ता कारपोरेशन में डिप्टी मेयर चुना गया तभी से धर्मचन्दजी का सान्निध्य मुझे प्राप्त रहा है। धर्मचन्दजी उस समय निर्विरोध रूप से चुन कर आने वाले मारवाड़ी कौन्सिलर के रूप में विख्यात हो चुके थे। कलकत्ता कारपोरेशन के लिए मैं जब स्थाई आर्थिक स्रोतों की खोज कर रहा था तो धर्मचन्दजी का प्रत्येक कार्य में मुझे सराहनीय सहयोग रहा। बसों और ट्रामों में धूम्रपान-निषेध करवाने में धर्मचन्दजी ने जोरदार भूमिका निभाई थी।

आगे चलकर वे बगाल राज्यसभा के सदस्य चुने गए। इस चुनाव मे कांग्रेस की ओर से तीन सदस्यो का चुनाव होना था। धर्मचन्दजी का स्थान यद्यपि पांचवां था और उनके चुने जाने की कोई आशा नहीं थी। किन्तु जब परिणाम निकले तो सभी चकित रह गए। धर्मचन्दजी इस चुनाव में विजयी हो गए। स्व० अतुल्य घोष उस समय बगाल प्रादेशिक कांग्रेस के अध्यक्ष थे। उनके आग्रह करने पर धर्मचंदजी ने अपनी जीती हुई सीट दूसरे वरिष्ठ कार्यकर्त्ता के लिए छोड़ दी। धर्मचन्दजी ने यह त्याग बिना किसी प्रकार की हिचकिचाहट के, उत्साह और प्रसन्नता से किया। इस असाधारण त्याग के कारण कांग्रेस अधिकारियों की दृष्टि मे धर्मचन्दजी बहुत ऊँचे उठ गए। धर्मचन्दजी के इस अभूतपूर्व त्याग का मेरे मन पर भी गहरा असर पड़ा।

इसके बाद तो धर्मचन्दजी को मैंने अनेक संस्थाओ में काम करते देखा जिसकी भूली-बिसरी यादें समय-समय पर मेरी स्मृति में उभर आती हैं। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के मन्त्री पद पर रहते हुए इन्होंने हिन्दू-मुस्लिम

दंगे के समय गांधीजी के निर्देशानुसार जो राहत कार्य किया वह भुलाया नहीं जा सकता। बाढ़ और भूकम्प के समय में स्वयं घटनास्थलों पर जाकर साहसिक कार्य किया करते थे।

वस्तुतः धर्मचन्दजी का जीवन बहुमुखी रहा है। व्यायाम के प्रति भी इनकी रुचि अद्‌भुत है। आज भी अस्सी की उमर पार कर भी वे नियमित रूप से बड़ाबाजार युवक सभा में व्यायाम करने के लिए जाते हैं। बुढ़ापे और रोग से मुक्त इनका सुगठित सुन्दर शरीर आज भी जवानों को चुनौती देता-सा दिखाई देता है।

इनके स्वस्थ जीवन का राज इनका प्राकृतिक-चिकित्सा प्रेम भी है। अब तो ये सभी कामों से अलग हट कर मात्र प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए ही समर्पित जीवन जी रहे हैं। इस कार्य के लिए इनका त्याग भी अपूर्व है।

डायमण्ड हारबर में इन्होने अपने हरे-भरे बगीचे की भूमि दान देकर वहाँ जिस प्राकृतिक चिकित्सा सस्थान (नेचर क्योर एण्ड रिसर्च इन्स्टीच्यूट) की स्थापना की है वह धर्मचन्द जी का अमर कीर्ति-स्तम्भ बन गया है।

धर्मचन्दजी ने जो यश और सम्पत्ति अर्जित की है वह उनके अथक परिश्रम और अध्यवसाय का ही परिणाम है। वे आज जो कुछ भी है, किसी की कृपा से नही, अपने ही बलबूते पर खड़े है। मानवीय दृष्टि से धर्मचन्दजी में स्वावलम्बन के साथ-साथ सहिष्णुता का गुण भी है। मैंने उनको विपरीत से विपरीत परिस्थितियो मे भी मानसिक सन्तुलन खोते या उत्तेजित होते नहीं देखा। धर्मचन्दजी सभी प्रकार के लोगों को साथ लेकर चलने की क्षमता रखनेवाले व्यवहार-कुशल व्यक्ति है। अपने कारण ये श्री मोरारजी भाई देसाई, श्री श्रीमन्नारायण और श्री ढेबर भाई जैसे भारतविख्यात व्यक्तियों के साथ गहरी आत्मीयता स्थापित कर लेने में भी सफल रहे हैं।

धर्मचन्दजी मेरे विश्वासी मित्र और सबल साथी है। नित्य नए काम करने का गुर और दीर्घकाल तक स्वस्थ जीवन जीने की कला इनसे सीखी जा सकती है। भगवान करे सौ साल बाद भी ये ऐसे ही स्वस्थ और प्रसन्न रहकर समाज को प्रेरित करते रहें। □

विचारवान व्यक्तित्व

□ □

सूरजमल सरावगी

श्री धर्मचन्दजी से मेरा सम्बन्ध चाचा-भतीजा का है, वे मेरे चाचाजी है, अर्थात् उनके पिता श्री बैजनाथजो सरावगी मेरे पिता श्री छगनलालजी के सगे चाचा थे। मेरी उम्र इस समय ६७ वर्ष की है और धर्मचन्दजी की ८१ वर्ष। अत: धर्मचन्दजी मुझसे १४ वर्ष बड़े हैं। मुझे अपने बाल्यकाल से ही उन्हे निकट से जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इनका व्यक्तित्व हमेशा से ही हमारे परिवार के अन्य सदस्यों से भिन्न रहा है। रांची से उनका विशेष लगाव रहा, क्योकि राची ही उनका जन्मस्थान है और उनको जो भी आज प्राप्त है वह पूर्वजों की बदौलत और विशेषकर रांचो की बदौलत है, ऐसा कह सकता हूं। बाद में तो उनका कार्यक्षेत्र बराबर कलकत्ता रहा जो आज भी है। हमारे परिवार के सब सदस्यो से उनका विशेष लगाव रहा जो आजतक उसी भाति बरकरार है।

इसमें किंचित मात्र भी सदेह नही है कि प्राकृतिक चिकित्सा की भावना इनमें कूट-कूट कर भरी हुई है। परिणामस्वरूप हमारे परिवार मे भी प्राकृतिक चिकित्सा-पद्धति ने विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। मेरे पिता श्री छगनलाल

जी स्वयं शत-प्रतिशत प्राकृतिक चिकित्सा के अनुयायी थे और रांची में उन्होंने एक प्राकृतिक चिकित्सा गृह की स्थापना भी की थी जिसका संचालन उन्हीं की देख-रेख में होता था। स्वतन्त्रता सेनानी डाक्टर सचीन्द्रचन्द्र होम मुख्य चिकित्सक थे। एक बार चाचाजी की गर्दन में 'एक्जीमा' (दाद) हो गई थी, तब प्राकृतिक चिकित्सा का अनुसरण करते हुए उन्होंने उसका उपचार किया था और उसे जड़ से हटाया था।

धर्मचन्दजी को मोटर गाड़ियों से विशेष रूप से 'स्टूडी बेकर' गाड़ी से बहुत प्रेम था। एक बार रांची से भी एक नई गाड़ी भेजी गई थी।

उन्होंने प्रथम योरप यात्रा, जैसी मुझे जानकारी है, जलपोत द्वारा की थी। यात्रा की व्यवस्था थामस कुक नामक कम्पनी द्वारा की गई थी। १९४७ की विश्व भ्रमण यात्रा में मेरे पिता श्री छगनलालजी भी उनके साथ थे परन्तु वे लन्दन और फ्रांस की यात्रा तक ही साथ रहे, फिर अकेले हो वापस आ गए थे।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब कलकत्ता पर जापानियों ने बम-वर्षा की थी तब धर्मचन्द जी सपरिवार कलकत्ता छोड़कर राची आ बसे थे और उन्होंने अपना सारा लश्कर राची भेज दिया था। कलकत्ता आना-जाना उनका बना रहता था और काफी समय तक रांची में ही उनका एवं उनके परिवार का निवास रहा।

एकबार वे निजी वायुयान लेकर राची भी आए थे और तब उन्होंने हमलोगों को हवाई उड़ान का आनन्द दिलवाया था।

रांची प्रवास के दौरान भी उनका जैन मन्दिर जाने का कार्यक्रम प्रतिदिन का रहता था। इसके लिए उन्होंने यहां एक बी० एस० ए० साइकिल रख छोड़ी थी जिस पर घर से मन्दिर तक की सवारी किया करते थे।

वे बड़े ही बौद्धिक एव विचारवान व्यक्तित्व के स्वामी हैं। सादगी, सफाई और अनुशासन उनकी उल्लेखनीय विशेषताएं हैं जो मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं। यही कारण है कि वे आज इतने स्वस्थ हैं। वीर प्रभु से प्रार्थना है उन्हें दीर्घ आयु प्रदान करें। □

पर दुःख कातर

□ □

बिमल प्रसाद जैन

धर्मचन्दजी के पिता और मेरे पिता के बीच काफी गाढ़ी मित्रता थी तथा वे दोनों बहुत दिनों तक पारसनाथ में एक साथ रहकर वहां भगवान पारसनाथजी की पूजा, सेवा एव प्रसिद्ध पूज्य सन्तश्री गणेश प्रसाद वनी की देख-रेख में जैनधर्म का अध्ययन एवं पूजा-साधना किया करते थे। मुझे यदाकदा वहां जाने एवं उनसे मिलने का अवसर मिलता था। उनकी सादगी एव मानव मात्र की सेवा भावना देखकर मुझे उनके प्रति श्रद्धा थी।

चार साल पहले मैं धर्मचन्दजी के पास यह सलाह करने के लिए गया कि कलकत्ता में भी बगलोर के जैसा एक प्राकृतिक चिकित्सा का अस्पताल बने। कुछ घण्टों की बातचीत के दौरान ही मुझे पता चल गया कि धर्मचन्दजी अपने पूज्य पिता के वशानुगत मानव की सेवा भावना का गुण ग्रहण कर चुके हैं।

पहली मुलाकात में ही उन्होंने मुझे समझा दिया कि नया अस्पताल बनाने के बदले डायमण्ड हार्बर रोड पर प्रकृति निकेतन नाम का अस्पताल कई वर्षों

से बन्द पड़ा है उसे ही चालू किया जाए। हम दोनों इसपर सहमत हो गए और इस अस्पताल के जीर्णोद्धार के लिए धन इकट्ठा करना शुरू कर दिया। इस अवधि की घनिष्टता में मुझे इस बात का अनुभव हुआ कि वे बहुत ही विशाल हृदय के व्यक्ति हैं दूसरों के दोष देखने के बजाए उसके गुण देखते है तथा दूसरों की सेवा में काफी धन दान करते हैं। पूर्ण मनोयोग से अपना समय भी परोपकार में लगाते हैं। वे सच्चे अर्थों में जैनी है।

पिछले दिनो व्यायामशाला में जाकर देखा वे ८१ वर्ष की आयु में भी बराबर व्यायामशाला जाते हैं और कठिन व्यायाम एवं आसन करते है। खान-पान में जैसी नियमितता ये रखते हैं वैसा शायद ही कोई रख सके। यही उनके स्वस्थ रहने का राज है।

भगवान इन्हें दीर्घ जीवन दे ताकि आने वाली सुनहरी २१वीं सदी की उपलब्धियों का भी वे दिग्दर्शन करें और करा सकें। □

धर्मप्राण धर्मचन्द

□ □

नागरमल जैन

धर्मचन्दजी मेरे सखा हैं, मित्र हैं। मेरा इनके साथ सम्पर्क धार्मिक और सामाजिक कामो को लेकर ही विशेष रहा। धर्मचन्दजी के स्वर्गीय पिता श्री बैजनाथ जी को भी मैंने काफी निकट से देखा है। बैजनाथजी अग्रवाल जैन-समाज में सदा आदरणीय बनकर रहे। ये बड़े निष्कपट, धर्मानुरागी और सेवाभावी व्यक्ति है। बिखरे-बिखरे जैन समाज में एकता की भावना पैदा करने, उनमें धार्मिक अनुराग जगाने, मन्दिरों का जीर्णोद्धार करने तथा महिलाओं और बालक-बालिकाओं में शिक्षा का प्रचार करने में उन्होंने अपना पूरा जीवन लगाया था। ये व्यवसाई होते हुए भी बड़े साधु प्रकृति के व्यक्ति है। धर्मचन्दजी जब मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के मन्त्री थे तब बैजनाथजी प्राय: अस्पताल में मरीजों का कुशल-मंगल पूछने जाया करते थे और बड़े प्रेम से कभी फल, कभी मालाएँ और धार्मिक किताबें उनको भेंट किया करते थे। धर्मचन्दजी की माताजी भी धर्मपरायणा सती-साध्वी महिला थी।

अपने माता-पिता के अलौकिक गुणों की गहरी छाप धर्मचन्दजी के जीवन पर भी पडी। धर्मचन्दजी यद्यपि प्रारम्भिक जीवन से ही युग परिवर्तन और नवीन विचारों के हामी रहे है। पर आज भी ये नियमित रूप से अपनी धर्मपत्नी के साथ मन्दिर मे पूजा करने जाते हैं, धार्मिक कामों में रुचि रखते हैं, सेवा और

लोकोपकारी कामों में पैसा लगाते हैं। ये सब पैतृक संस्कार इन्हें विरासत में मिली है।

नया मन्दिर के जब धर्मचन्दजी मंत्री थे तभी से मेरा उनका साथ हुआ। उस समय मैं भी मन्दिर कमेटी का सदस्य था। बाद में मै मन्त्री बना और ये कमेटी में रहे। इस प्रकार हम लोगों ने मिलजुलकर मन्दिर व्यवस्था को संभाले रखा। दिगम्बर जैन-भवन के आजीवन ट्रस्टियों का जब चुनाव हुआ तो हम दोनों भी ट्रस्टी चुने गए। जैनभवन के रूप-सुधार में धर्मचन्दजी का पूरा सहयोग रहा। इन्होने अपने खर्चे से भवन मे मोजांइक का काम भी करवा दिया। निर्माण-कार्य के लिए चन्दा लेने मैं और धर्मचन्दजी साथ-साथ गये। यह सुखद आश्चर्य ही रहा कि एक दिन घूमने के वाद फिर हमे किसी के पास दुबारा जाने की आवश्यकता नही रही। फिर तो लोग अपने आप ही चन्दा देने आ जाते।

कलकत्ते मे "अहिसा प्रचार समिति भवन" के निर्माण मे भी धर्मचन्दजी का सराहनीय अवदान रहा है। ये इस भवन के सस्थापक सदस्य है।

अपने नए विचारो और क्रांतिकारी कार्यो के कारण धर्मचन्दजी को सामाजिक विरोध का सामना भी करना पड़ता है। फिर भी धर्मचन्दजी समाज से छिटक कर नही समाज के साथ रहकर ही अपना विचार प्रचार करते रहते है। निर्भयता तो धर्मचन्दजी में है ही सहनशीलता भी कम नही है।

प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध मे धर्मचन्दजी द्वारा लिखित अनेक उपयोगी पुस्तको का प्रकाशन हुआ है जिनको पढ़कर हजारो लोग उपकृत हो रहे हैं। अपनी जगह और नगद रुपयों का दान कर कलकत्ते में इन्होने जो प्राकृतिक चिकित्सा सस्थान बनाया है वह इनकी सेवा भावना और प्राकृतिक चिकित्सा प्रेम का अनुपम उदाहरण है।

"पहला सुख निरोगी काया" के रहस्य और महत्व को जैसा धर्मचन्दजी ने समझा है वैसी समझ यदि हम सबको भी आ जाए तो जीवन मे सदा सुखों के दीप जलें और आनन्द के फूल खिलें।

धर्मचन्दजी का सदाबहार जीवन और युवकोचित उत्साह नई पीढी के लिए भी सदा अनुकरणीय है। उन्हें मेरा शतशःवन्दन, अभिनन्दन। □

भारत का वरनर मेकफ्र्डन

□ □

डा० एम० एम० भमगरा

मेरी अभिलाषा है कि हम सभी धर्मचन्दजी के समान ही अपने स्वास्थ्य एव तन्दुरुस्ती पर ध्यान दें। दु:ख है अधिकतर भारतवासी खेलकूद, व्यायाम में खुद भाग लेने के बदले उसे दूसरों को खेलते देखना ज्यादा पसन्द करते है। कभी-कभी इस क्षेत्र मे मानसिक रूप से उत्तेजित भी होते है। दौड़ने एव उछलने का व्यायाम करते है किन्तु इन दोनों से हमे कोई विशेष लाभ नही मिलता क्योंकि हम उसे ठीक रूप से एव नियमित ढग से भी नही करते। हममे से बहुत से ऐसे हैं जो व्यायाम करने की सोचते है पर फिर आलस उन्हें घेर लेता है वे दूसरे कामों का बहाना कर व्यायाम नही कर पाते।

भगवान की दया से धर्मचन्दजी की तरह शारीरिक व्यायाम के शौकिन भी हमलोगों के बीच मे है। हम उन्हें भारत का वरनर मैकफर्डन कह सकते है जो अपनी ८० वर्ष की आयु मे भी हवाई जहाज से पैराशूट से कूदता था और सारे जीवन व्यायाम और खान-पान मे सुधार का प्रचार करता था। उसने बहुत पुस्तकें लिखी प्राकृतिक चिकित्सा की। इनकी तुलना डा० पार्ल वर्ग से करू जो अपनी ८५ वर्ष की आयु में भी शारीरिक व्यायाम, दौड़ इत्यादि करता था। या उडले ह्वाइट से करूँ जो अमेरिका के कई राष्ट्रपतियो के हृदय विशेषज्ञ के रूप में काम करते हुए भी शारीरिक व्यायाम, साइकिल सवारी वगैरह अपने ९४ वर्ष की उम्र पर्यन्त भी करते रहे।

धर्मचन्दजी अपनी ८१ वर्ष की आयु मे व्यायामशाला जाकर कड़े व्यायाम करते है। लाठी चलाते है, कराटे सीखते है। साथ ही प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार करते है। वे स्वस्थ रहकर शतायु हों यही भगवान से प्रार्थना है। □

कर्मवीर

□ □

ताराचन्द बड़जात्या

धर्मचन्दजी कर्मवीर हैं। उनका जीवन सभी लोगों के लिए प्रेरणादायक है तथा वे व्यक्ति बहुत ही भाग्यशाली हैं जो उनके सम्पर्क में है।

प्राकृतिक चिकित्सा के उत्थान के लिए तो उन्होंने अपना जीवन ही अर्पित कर दिया है। और इस क्षेत्र में ये जो कर रहे हैं वह चिरस्मरणीय रहेगा एवं प्रशंसनीय भी। □

मैं जीवन संगिनी बनी

□ □

मोती देवी

समाज में जो अभिनन्दन ग्रन्थ निकले उनमें अनेक पढ़ी-लिखी पत्नियो के संस्मरण पढ़े। मैं साधारण पढ़ी-लिखी हूँ। फिर भी मै लिखने बैठ गई, आज से ४२ साल पहले जब हमारी शादी हुई यानी हम दोनो दु:ख-सुख के साथी बने तब की बाते ध्यान मे आने लगी। पीहर वाले साधारण स्थिति के खाते-पीते बिहार के जैनी है, और ये लोग राजस्थान के पैसे वाले। इनका और उनका कोई मेल नही था। फिर कभी-कभी असम्भव बातें सम्भव में परिवर्तित हो जाती है। मेरे सम्बन्ध की बात मेरे पिताजी के परममित्र सीताराम, पन्नालाल टोपीवाले के द्वारा मेरे पूज्य स्व० पिताजी के पास आई। एक मारवाड़ी लड़का है, लड़के की उम्र २९ साल की है, उसके ४ बच्चे है। सुन्दर सुशील, लड़का अपने माता-पिता का आज्ञाकारी, धर्म में श्रद्धा रखने वाला सुधारक परिवार का है। इन दोनों की जोड़ी अच्छी रहेगी, उम्र तो २९ की जरूर है पर २५ से ज्यादा नही लगता। लड़का विलायत गया हुआ है पर कोई बुरे व्यसन नही है। ये सिर्फ लड़की खोज रहे हैं।

पिताजी को अपने आप पर विश्वास नहीं हुआ कि मेरी उनकी जोड़ी कुछ भी नहीं है और बोले कि आप क्या बोल रहे हैं, कहां राजा भोज मैं गगुवा तेली। मैं गरीब सिर्फ लड़की है, और वे पैसेवाले। पर पन्ना भाई साहब ने समझाया ऐसा सम्बन्ध मिलता नहीं है। सास-ससुर सब धार्मिक वृत्ति के हैं। लड़के का संस्कार अच्छा है। लड़का खुद सुधारक प्रवृति का है। उनको सिर्फ लड़की चाहिए। उनके यहां रहन-सहन मारवाड़ी जैसा नही है। फिर लड़की दिखाने की बात आई। जैनभवन में मेरा परिवार और इनके परिवार के लोग देखने आए। इनके पिताजी ने भक्ताम्भरजी की २-४ लाइन सुनी तब पसन्द कर लिए पर ये लोग हाँ नहीं बोले। फिर सुना कई जगह कानपुर, बनारस, पटना, आरा, लखनऊ, लड़की देखी पर जंची नहीं क्योंकि मेरे जैसा भाग्य किसी और लड़की का नहीं था। फिर इन्होंने अपने परममित्र, गुरू, हितैषी, उचित सलाह देने वालों में जो थे स्व० विष्णुधरजी शुक्ल से सलाह करके हां भर दिया। फिर पिताजी ने मुझसे पूछा और मेरी स्वीकृति मिलने पर सम्बन्ध की बात आगे बढाई।

सगाई के लिए माजरहाट जैनकुंज के मकान में बुलाई गई। वही से सगाई का रस्म हुआ। सगाई के बाद मेरे ससुरजी ने पिताजी को जैनकुंज में मिलने को बुलाया। मेरे ससुरजी से मिलकर वे बड़े प्रसन्न हुए। उनका व्यवहार और सज्जनता देखकर एव घर देखकर वे जब वापस लौटकर आए तब स्पष्ट बातें बताई। अपना चुनाव उत्तम रहा। ऐसा सम्बन्ध तो कोई बिरले को ही मिलता है। माजरहाट में एक छोटा-सा मकान बांस के ऊपर में निर्मित किया हुआ ४-५ कमरों का था। मोजाइक किया हुआ आधुनिक सर्वसाधन उपलब्ध घर था। बड़ी छत, मोजाइक के दोनों तरफ फूलों की क्यारियां जो मन को प्रफुल्लित करती थीं। बीच में एक छोटा-सा चैत्यालय था उसमें धर्मनाथ की सुन्दर-सी प्रतिमा वेदी पर विराजमान थी। यहीं सब लोग पूजन करते थे। नीचे गोदाम था जहाँ रेल से माल गिरता था। बगल में खटाल था जिसमें गाएँ रहती थी। अगल-बगल एक छोटी-सी बाटिका थी जिसमें फूल और थोड़ी बहुत सब्जी आदि होती थी। सौंफ और मकई भी लगा हुआ था। हमारे ससुरजी ने मेरे पिताजी को मकई खाने को कहा। उस जमाने में लड़की के घर पानी पीना पाप समझा जाता था, तब मेरे पिताजी कैसे खाते, ना कर दिया, पर इनके पिताजी भी पीछे हटने वाले नहीं थे, सुधारक थे, बोले लड़की देना पाप नहीं है। अपने भाई

सम्बन्ध बनाया बिगाड़ा नहीं, आप जरूर खाकर देखें। पिताजी ससुरजी के आग्रह को टाल नहीं सके आखिर उन्हें खाना ही पड़ा। मकई खाकर बड़े खुश हुए क्योंकि वह बहुत मीठी मुलायम और स्वादिष्ट थी।

हमलोगों की शादी हुई तब हम हसपोखरिया में रहते थे और ये लोग चोर बगान में। ये सुधारवादी होने के नाते बगैर ताम-झाम के बारात लेकर आ धमके। लोगों के कहने पर कि बारात आ गई नीचे चलने के लिए मां से बोला गया। माँ को विश्वास नहीं हो रहा था बिना गाजा-बाजा एवं बगैर आतिश-बाजी के बारात कैसे आ जाएगी। पर नीचे गई तो वहां पासा उल्टा ही नजर आया। लड़का सादगीपूर्ण ड्रेस में सिम्पल लग रहा था। न जोड़ा-जामा, न सेहरा। मां देखती रह गई अपने होने वाले दामाद को और नेग करके चली आई।

फेरों के वक्त मुझ परदा कर बैठाया गया। उस समय ज्ञानवतीजी लाठ मुझसे मण्डप में बोली, चाची तू परदा करेगी तो दुनिया क्या कहेगी। चाचा परदा विरोधी हैं। हमलोगों का विवाह जैनपद्धति से कराया गया और मुझे इनकी अर्धांगिनी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

जब मैंने पति-गृह में पदार्पण किया, यहां मां तुल्य वात्सल्य से ओत-प्रोत। मां साहब (सासूजी) धर्मपरायणा, पितातुल्य ससुरजी और चार बच्चे थे। शान्ति की सगाई श्री दुर्गादत्तजी के एकलौते पुत्र श्री श्यामलालजी से हो चुकी थी मेरी शादी के ६ महीना बाद उसका विवाह हुआ। बाकी ये ३ बच्चे चि० निर्मल कुमार, चि० लक्ष्मी, चि० चन्द्रकुमार छोटे थे। ये चारों बच्चे हँसमुख सुशील और मिलनसार एव अच्छे सस्कार मे पले हुए थे। छोटे से बड़े, नौकर चाकर सभी को सर्वसाधन रहते हुए भी हाथ से काम करने की आदत थी। ये गांधियन विचार के आदर्शवादी थे। मांसाहब का नित्य देवालय जाना, दर्शन, पूजा-पाठ का नियम था। बगैर दर्शन के पानी नही पीतीं। महीने मे चार यानी चौदस, अष्टमी को निर्जला उपवास करती, रात्रि भोजन का त्याग था ही। घी, आटा, बेसन, सब घर का होता था। वे आटा, बेसन ८० वर्ष होने तक पोस लेती थीं। उनका कहना था चक्की चलाने से तबियत ठीक रहती है। पिताजी धर्म के काम मे आगे रहते। दान देना, मन्दिरो का जिर्णोद्धार करवाना, जो मन्दिर नहीं जाते उनको

मन्दिर आने का नियम बताना, दूसरे के दुःख को अपना मानकर जल्दी से जल्दी दूर करने का प्रयास करना। नित्य पूजा-पाठ की गुटका जिसमें नित्य पाठ करने के नियम थे पढ़ना। रोज सुबह "नेचर क्योर" डिपार्टमेंट मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में फल, सब्जी, मट्ठा, बच्चों को खुश करने के लिए खिलौने आदि बांटना। रोगियों से उनके दुःख-सुख की बातें पूछते यानी घर में रहकर समाज का काम निःस्वार्थ करते। गद्दी से जो रुपया उठाते वह सब गरीबों में बांट देते। अपने पास सिर्फ अपने भाड़ा का पैसा रखते। रोज बेलगछिया मन्दिर दर्शन के लिए जाते। पत्र खूब लिखते धर्म के काम के लिए। जब उनके हाथ का काम पूरा नहीं होता तब रात का कितना ही बजे पूरा करके ही छोड़ते थे।

इनमें भी अपने माता-पिता का संस्कार पड़ा था। सत्य बोलना, धर्म में अनुराग, रात्रि भोजन का त्याग। दूसरों के दुःख को अपना मानना। देश-भक्ति। किसी ने किसी काम के लिए कहा तो उसे जैसे भी हो पूरा करना। छोटी से छोटी चीजों की इज्जत करना एवं यथास्थान रखना। ये अपने हर काम को बड़े सुचारु ढग से यानी खूबसूरती से करते है। कहते है चीज की इज्जत नही करने से चीज क्या इज्जत करेगी। इन्होंने अपने माता-पिता और बच्चों को लेकर छोटा-सा घर बनाकर सुखी संसार बसा रखा था। ये अपने माता-पिता के भक्त रहे। इनको अपनी मां से बहुत लगाव था। मेरी शादी से पहले ६ मास के लिए विदेश गए थे। वहां पर भी अपने नियम का पूरा पालन किया। रात्रि भोजन नहीं करते। काफी, सिगरेट, चाय, शराब, जुआ, मांस को छुआ तक नहीं जहां कि पग पग पर सारी चीजें रहती है। अपने नियम को तोड़ा नहीं यहाँ तक कि क्लब में गये वहाँ का नियम था कि ह्विस्की की बोतल नहीं लेने वालों को बैठने नहीं देंगे। इन्होने खरीदा और खरीद कर दूसरों को दे दिया। इस तरह अपने नियम की रक्षा की। सुबह नित्य पूजा-पाठ का नियम था वह वहाँ भी करते थे। मैं शादी के बाद इनके साथ विदेश गई तब देखा कि अपने नियम की रक्षा किस चतुराई से ये करते हैं। इनको सिर्फ पान का शौक था जिसे भी अब छोड़ दिये हैं। अध्ययन का बड़ा शौक है। रात में १-२ कितना भी क्यों न बजे पूरा करके ही सोते हैं। सुबह जल्दी ५ बजे उठ जाते क्योंकि प्रातः सामूहिक प्रार्थना, महापुरुषों की जीवनी का पाठ एवं मांसाहब और बच्चों सब का सूत कातना यह क्रम काफी दिनों तक चला फिर मन्दिर और व्यायामशाला जाना सो

आज तक चलता आ रहा है। इन्होंने व्यापार में सच्चाई का पालन किया उसमें भी सीमा बनाई। लालच कहीं नहीं की, गलत तरीके से धन उपार्जन नहीं किया। व्यापार में, नाते-रिश्ते, घर में सबसे मधुर व्यवहार और गम खाने का बड़ा गुण रहा। जहाँ देखा बात बढ़ती या मामले-मुकदमें का-सा ढंग वहीं पर बात को समाप्त कर दिया। कभी किसी के लड़ाई-झगड़े में नहीं पड़े। जहां तक बन पड़ा दूसरे का घर बनाया बिगाड़ा नहीं। कभी किसी की आलोचना नही सुनी।

मेरे पीहर वालों का हर तरह से ध्यान रखते है। ये और हमारे बच्चे जरा-सी तकलीफ आराम में तुरन्त पहुँच जाते हैं। बस मालूम पड़ना चाहिए। मेरे पिताजी इनसे बड़े प्रसन्न रहते थे। मुझे आगे बढ़ाने के लिए ये मीटिंगों मे साथ ले जाते। पढ़ाई के लिए शिक्षिका रखी जिससे संगीत, अंग्रेजी तथा हिन्दी पढ़ सकूँ। पर कई कारणों से सीख नहीं पाई। पीहर में, ऐसे परिवार में धर्म की तरफ ज्यादा ध्यान रहा।

इसी प्रकार बच्चों की शादी की। बहुओं को लाए। चुनाव में भी बड़ी सफलता मिली। बड़ी बहू इन्दु और छोटी बहू राजश्री सुशील, मधुर और नम्र मिलनसार स्वभाव की ही मिली।

कई साल पहले जब मैं बीमार पड़ी जीवन से आशा छोड़ चुकी थी। निर्मल, बड़ा लड़का और इन्दु बहू बेटी के रूप में आई, उसने अथक परिश्रम से मौत के मुँह से खीचकर नई जिन्दगी दी व उसने मेरी बीमारी मे रात-दिन एक कर दिया। घर का सारा काम बीमारी के अतिरिक्त सारा भार इनके नाजुक कंधों पर पड़ा। मैं पड़ी-पड़ी यही सोचती कि मैं कितनी भाग्यवान हूँ कि इतनी सुन्दर और सुशील सहनशक्तिवाली बहू मिली। मैं कुछ दिन, करीब एक महीना 'नेचर क्योर' संस्था में रही। तब भी इसने अपने ससुर के खाने-पीने का इन्तजाम बड़े सुचारु ढग से किया। हर तरह से बाहर-भीतर वालों का ध्यान रखती। अच्छे घर की अच्छे संस्कार में पली लड़कियां बहू के रूप में आती हैं तो घर को स्वर्ग बनाती हे।

घर के सुन्दर वातावरण के कारण निर्मल के बच्चों का व्यवहार भी बड़ा मधुर है। भगवान से प्रार्थना है कि इसी प्रकार का जीवन चलता रहे। □

ऐसे हैं मेरे काकोजी

□ □

शान्ति सुरेका

मेरे काकोजी उनके लिए लिखना तो बहुत चाहती हूँ पर समझ नही पाती कि क्या लिखूं और क्या नही।

काकोजी के सोचने और कार्य करने की पद्धति हमेशा अपने समय से १०-१५ वर्ष आगे की रही है। मै उनकी पहली सन्तान हूं उस जमाने में भी उन्होने मुझे लड़कियों की तरह नही पाला। अच्छी शिक्षा की व्यवस्था की। मिशन स्कूल की टीचर आती और मांटेसरी पद्धति से पढ़ाती थी। मारवाडी बालिका विद्यालय में भर्ती करवाया ताकि मेरी शिक्षा का परिवेश भारतीय रहे। मेरे बाबाजी भी स्त्री शिक्षा के ज्यादा ही समर्थक रहे।

घर में गाड़ी रहते हुए भी उन्होने मुझे ट्राम-बस में सफर करना सिखाया। ट्राम में कैसे चढ़ना-उतरना चाहिए यह सब कुछ इन्होने मुझे स्वयं अपने साथ ले जाकर सिखाया। एक बार जब हमलोग नन्दो मल्लिक लेन में रहते थे तब वे मुझे धर्मतल्ले से घर आने वाली ट्राम पर लेकर चढ़े और कैसे टिकट लेनी है, कहाँ उतरना है सारी बातें समझाई फिर पूछा कि यदि मैं उतर जाऊँ तो तुम अकेली घर चली जाओगी क्या? मैंने जोश में हां भर दी और काकोजी हरिसन रोड के पास उतर गए। मेरा मन कुछ देर बाद घबराने लगा और घर करीब आते-आते तो धड़कने लगा पर उपाय भी क्या था। जब मैं ट्राम से उतरने के लिए गेट पर आई और उतर ही रही थी कि देखा काकोजी गेट के पास ही खड़े

देख रहे थे कि मैं सफर ठीक तरह से कर रही हूं या नहीं। उन्हें देखकर मेरी जान में जान आई। मैं रो पड़ी। आखिर पिता के हृदय ने उन्हें ट्राम से उतरने नहीं दिया। आज भी इस घटना को यादकर मैं रोमांचित हो जाती हूं।

जबसे मैंने होश सम्भाला उन्हें हमेशा व्यवस्थित और नियमित पाया। वे जिस चीज को जहां रखते है प्रयोग के बाद दूबारा ठीक उसी स्थान पर रखते हैं यह आदत उन्हें शुरू से है। बचपन में उत्सुकतावश उनका कोई भी सामान छू लेने पर वह तुरन्त समझाते थे। उस समय तो बड़ा आश्चर्य होता था पर आज समझ में आता है कि इसका कारण उनका चीजों को सदैव एक निश्चित स्थान में व्यवस्थित रूप से रखना ही था।

काकोजी ने हम सभी बहन भाइयों को बराबर एक ही शिक्षा दी है कि कभी गलती हो भी जाए तो आदमी को स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए। बच्चे तो गलतियां करते ही है पर उन्होने गलती स्वीकार करने पर हमें नही डाँटा।

परिवार एवं समाज दोनों के प्रति अपना दायित्व समान रूप से निभाते आ रहे हैं समय की पाबन्दी एव नियम का पालन उनका स्वभाव बन गया है।

द्वितीय विश्व-युद्ध के समय हमारा पूरा परिवार रांची में रहा। वे अकेले ही कलकत्ते की गद्दी में रहते थे तब हर शुक्रवार की रात कलकत्ते से रवाना होकर रांची आते एवं दो दिन हम लोगों के साथ बिताकर सोमवार सुबह कलकत्ता पहुँच जाते थे।

अपनी जिम्मेवारी के प्रति सतर्कता हम भाई बहनो को विरासत में मिली है।

मेरा विवाह उस समय की प्रथा के अनुसार १४ वर्ष की उम्र में सुरेका परिवार में हुआ। जहां थोड़े रूप में पर्दा प्रथा थी। पर काकोजी पर्दा प्रथा के विरोधी होते हुए भी मुझे कभी पर्दे के लिए मना नही किया। हमेशा यही कहते थे कि जिसमें तुम्हारे सास-ससुर खुश रहें वही तुम्हें करना चाहिए। भाग्य से मेरी सासुजी एवं ससुरजी का स्वभाव बहुत ही अच्छा था। मैं ससुराल में एकलौती बहु होने की वजह से शादी के बाद बहुत कम ही मायके रह पाई।

पर उन्होंने कभी भी मेरे ससुराल की किसी भी बात में हस्तक्षेप नहीं किया। हम सभी भाई-बहन जब तक छोटे थे तब तक उन्होंने अपनी पूरी जिम्मेदारी समझी। शादी के बाद कभी भी बिना मांगी सलाह नहीं दी और न अपने विचार ही हमलोगों पर थोपे। न ही अपने पोते-पोतियों और दुहतों को झूठे लाड़ में बिगाड़ा।

काकोजी अपनी मां को बहुत ही प्यार करते थे। अभी भी कहते हैं कि मां का बदला कभी भी उतारा नहीं जा सकता है। वे हमेशा उनकी छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखते हैं। मेरी मां भी जबतक दादीजी जिन्दा थीं उनके खाने-पीने का पूरी व्यवस्था अपने हाथ से ही करती थीं। दादीजी हमलोगों को आशीर्वाद भी बहुत ही देती थी। काकोजी अपनी मां की गोद में जब तब लेट जाते थे। उन्हें देखकर ऐसा महसूस होता जैसे मां की गोद में उन्हें बड़ी शान्ति मिलती है।

काकोजी स्वभाव से बड़े ही संवेदनशील हैं। अपनी एकमात्र बहन के स्वर्ग-वास के बाद उन्होंने कभी भी राखी नहीं बन्धवाई। उनकी बहन (हमारी बुआजी) का स्वर्गवास १९४७ में हो गया था।

ज्यादातर लोग समय पाकर स्वभाववश कुछ चिड़चिड़े हो जाते हैं पर अब तो काकोजी बहुत ही सरल हो गये है। हम भाई-बहनो के बच्चों को खेलते देखकर मां के साथ खुश होते रहते है। ऐसा सुखी परिवाद कम ही देखने को मिलता है। मैं भगवान से प्रार्थना करती हूं कि सब लोगों को मेरी मां और काकोजी जैसे माता पिता मिले। ◻

काकोजी

□ □

निर्मल कुमार सरावगी

आदरणीय काकोजी शुरू से ही अनुशासन प्रिय रहे हैं। अनुशासन में हम सबकी परवरिश हुई है। मेरे जीवन में बहुत-सी घटनाएँ है। सबको लिख पाना यहां सम्भव नहीं—याद भी नही। हाँ, उनकी तत्परता व विनयशीलता की कुछ यादे अवश्य है।

हम भाई-बहन छोटे-छोटे थे जब हमारी माँ का देहान्त हुआ। मेरी उम्र ८-९ साल की थी। काकोजी की दूसरी शादी हुई। हम सभी भाई-बहन उनकी बारात में गए थे। पिता की शादी मे बच्चों का बाराती बन कर जाना उस समय के लिए अजीब बात थी मगर काकोजी तो पुरानी रूढ़ियो को तोड़ने वाले है। शादी के बाद नई माँ घर मे आईं और घर के वातावरण में समा गई। कभी-कभी कोई रिश्तेदार आते तो मुझसे पूछते-"मौसी कैसी है। तुमलोगो को ठीक से रखती है या नही।" उस समय मेरी समझ में यह नही आता कि ये माँ को मौसी क्यो कहते हैं। मौसी तो माँ की बहन को कहा जाता है। कैसी है—यह क्यो पूछते हैं। मां जैसी होती है, वैसी ही है। हमलोगों को कभी माँ के नही होने का आभास नही हुआ। माएँ अपने बच्चों को जैसे मानती हैं, लाड़-प्यार करती है, देख-रेख करती है, इस माँ ने उससे ज्यादा ही किया।

यह बात हमारे बचपन की है। उन दिनों हवाई जहाज एक करिश्मा था। सुनते थे काकोजी हवाई जहाज चलाते है और बगाल फ्लाइंग क्लब में जाते हैं। इनके साथ हम भी क्लब में गए और कभी-कभी वहां के जहाज में उड़े। विश्वयुद्ध खत्म हुआ तो डिस्पोजल से उन्होंने १९४७ में एक हवाई जहाज खरीदा। वह छोटा-सा चार सीटों वाला था। उसका नाम "पुष्पक" रखा गया। १९४८ में जब कांग्रेस का अधिवेशन जयपुर में हुआ तो इसी पुष्पक विमान पर हम सभी को बैठा कर वे जयपुर ले गए और वहां उन्होने स्व० पडित जवाहरलाल नेहरू का अभिनन्दन पुष्प वृष्टि करके किया। हवाई जहाज की यात्रा आज की तरह उन दिनों घटे दो घटे की नहीं थी। हमलोग रुक-रुक कर जयपुर पहुँचे थे। छोटे जहाज में रात को चलाने की सुविधा नहीं होती थी और बीच-बीच में तेल भी लेना पड़ता था। अत: हमलोग इलाहाबाद, कानपुर, आगरा रुकते हुए गए थे। यह एक सुखद अनुभव था, कौतूहल था कि जहाज कैसे उड़ता है—इसके लिए हम कभी उनकी बगल की सीट पर जा बैठते थे और उसको चलाने का ढंग देखते थे। वैसे हमारे लिए पीछे की सीट थी। उस समय मन ही मन गर्व भी हुआ था कि हम जैसा कौन होगा, जिसके पिता विमान चालक होगे।

काकोजी का शौक हमेशा नई वस्तुओ की ओर रहा है। वे जब कभी भी देश-विदेश भ्रमण पर जाते थे नई चीजें लाते थे, कलात्मक एवं नवीन आविष्कार। ऐसे ही १९४७ की विदेश यात्रा से एक 'वायर रिकार्ड' लाए थे जिस पर आज के टेप रिकार्डर को तरह आवाज रिकार्ड होती थी। उन दिनों मै हिन्दी हाईस्कूल की आठवीं कक्षा का छात्र था। एक दिन कक्षा में प्रिंसिपल ने पूछा—'किसी ने भी अपनी आवाज स्वयं सुनी है ?' उन दिनों के लिए यह एक अजीब बात थी। टेप रिकार्ड का प्रचलन अपने देश में नहीं हुआ था। अपनी आवाज सुनने के दो ही साधन थे, एक ग्रामोफोन दूसरा आकाशवाणी जो कुछ विशिष्ट लोगो को ही उपलब्ध थी। पूरी कक्षा मे मैंने ही हाथ उठाया। किसी को भो विश्वास नही हुआ। काकोजी के लाए हुए रिकार्डर की बात बताने पर सबको यकीन आया। बाद में कुछ मित्र घर पर आए, अपनी आवाज सुनी, उन्हे बड़ा मजा आया।

श्री अम्बिका सिह जी घर पर मेरे शिक्षक थे। मैं दसवीं कक्षा में था। पेपर बिगड़ने से परीक्षा फल खराब आया। श्री सिंह मुझ पर काफी नाराज हुए।

उन्हें आशंका थी कि उलाहना मिलेगा पर काकोजी ने उनसे कहा—'आपने अपना प्रयत्न किया, सफलता इस बार नहीं मिली फिर मिलेगी।' और मुझसे नहीं कहा। उनका नहीं कहना ही कहने से अधिक कह गया।

हमारे परिवार में सुधार की प्रवृत्ति हमेशा से थी। सामाजिक सुधार के होने वाले आन्दोलनों में काकोजी सक्रिय भाग लिया करते थे। मेरी शादी की समय की बात है। इस अवसर पर कई तरह के नेग-चार होते हैं। जिनमें से कुछ मुझे पसन्द नहीं थे, पर बुजुर्गों के डर से मन में एक द्वन्द्व चल रहा था। मैंने साहस करके एक दिन काकोजी के सामने अपने मन की बात रखी। सहजता से उन्होंने मेरी बात मान ली। बारात निकलने के समय मैं साधारण पोशाक में लोगों के सामने आया तो बुजुर्गो को अचरज हुआ और उन्होंने टोका भी। काकोजी ने उन्हें समझा दिया। इससे मुझे बड़ा सन्तोष हुआ।

१९६३-६४ के आसपास की बात है। काकोजी का सम्पर्क देश के बड़े नेताओं से रहा है। राजनीति में भी काफी जानपहचान रही है। मैं और मेरे छोटे भाई चन्दर ने एक नए उद्योग लगाने की योजना बनाई। बड़े उत्साह व कठिन परिश्रम से प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार की। उनकी दिल्ली यात्रा के समय फाइल उन्हें दे दी कि वे वहाँ इस विषय में बातचीत करें। हम दोनों भाइयों में बड़ा उत्साह था कि उनके सहयोग से काम बन जाएगा। दिल्ली से लौटने पर उन्होंने अपने अनुभव सुनाए पर हमारी योजना का कोई जिक्र नहीं किया। हमारे पूछने पर फाइल देते हुए कहा—'अपने लिए मैंने कभी किसी से आजतक नहीं कहा, इस बार भी बात करना ठीक नहीं लगा। हम पर ईश्वर की कृपा रही है, आवश्यकताएँ पूरी होती रही हैं—और क्या चाहिए।"

मेरे छोटे भाई चन्दर के ब्याह के समय की बात है। चन्दर के ब्याह की बात बम्बई में हमारे परिचित परिवार श्री ताराचन्दजी बड़जात्या के यहां से आई। काकोजी ने कहा कि "परिवार मेरा जाना हुआ है। लड़की चन्दर देख आए और उसे पसन्द आ जाए तो बात आगे बढ़े। चन्दर ने बम्बई से आकर स्वीकृति दे दी। ब्याह की तैयारियाँ होने लगीं। विवाह बम्बई में होना तय हुआ। बारात बम्बई ले जानी थी। बड़ा परिवार होने के कारण बारात कैसे छोटी हो यह समस्या थी पर काकोजी ने तय किया कि घर के लोग ही बारात में

जाएँगे, और समय कम लगे इसलिए रेल से नहीं, हवाई जहाज से जाएँगे। बारात में घर-परिवार के १५ व्यक्ति गये। इनके इस सामयिक निर्णय से सारा काम बड़ी सुविधा से सम्पन्न हो गया।

व्यवस्था इनके जीवन में आरम्भ से रही है। दफ्तर हो या घर, सारी चीजें करीने से रहती हैं। पिछले ५५-६० वर्षों के चित्र, लेख व अन्य प्रमुख घटनाओं के विवरण आज भी सिलसिलेवार इनके पास सुरक्षित हैं जो शायद ही किसी के पास देखने को मिले। इनका कहना है कि "छोटी चीज व्यवस्थित नहीं रहेंगी तो जीवन कैसे व्यवस्थित रहेगा।"

काकोजी का परिवार चलाने का तरीका ऐसा रहा है कि कभी मनमुटाव जैसी स्थिति को प्रश्रय नहीं मिला। उन्होंने कभी निषेधाज्ञा जैसी कोई चीज जारी नहीं की मगर संयम, अनुशासन, सच, स्पष्टवादिता को जीवन में सदा महत्व दिया। घर के बच्चे स्वावलम्बी बने और नए अनुभवों के जानकार हों—इस बात का ध्यान उन्होंने बराबर रखा।

परामर्श देने का तरीका भी अनोखा है। पहले सुनना, फिर शान्त, संयम व ईमानदारी से सलाह देना। चाहे वह सलाह पसन्द आए या न आए। मेरे जीवन में ऐसे अनेक अवसर आए है, जब मन असन्तुलित हुआ है, रुकावटें पैदा हुई है, हौसले पस्त हुए है। हमेशा काकोजी ने मार्ग सुझाया है।

आज भी पिता का स्नेह और आशीर्वाद परिवार के प्रत्येक सदस्य को स्नेह-सूत्र में बांधे हुए हैं।

इनका आशीर्वाद व आदर्श हमारे जीवन में हर पल साथ रहे—ईश्वर से यही प्रार्थना है। □

मेरे पिता

□ □

लक्ष्मी राजगढ़िया

पिताजी के बारे में मैं सोचती हूं तो लगता है उनकी कितनी ही ऐसी चीजें हैं जिन्हें मैं अपने जीवन मे उतारना भी चाहती हूं, पर शायद हममें से किसी भी भाई-बहनों में उनकी जितनी दृढ़ता नही है कि हम जो सोचें उसे पूरा कर ही लें। कई बार तो सोचते ही रह जाते है। वे जिस किसी भी कार्य को शुरू करते है उसे पूरा किए बिना नही छोड़ते। उनके जीवन की पुस्तक में "नहीं हो सकता" शब्द ही नही है। वे किसी भी कार्य को सीखने के लिए उम्र का कोई बन्धन नहीं मानते चाहे वह टेनिस हो, स्केटिंग हो, पेन्टिंग हो या साइकिल पर किए हुए कठिन करतब। उन्हें उन्होंने जब सीखना चाहा ६०,७०,७५ वर्ष किसी भी अवस्था में सीखना शुरू कर दिया तथा उसे सीख कर ही दम लिया। वे यो तो जैनी हैं पर उन्होंने हमें हर धर्म को सम्मान देना सिखाया। उनका कहना है कि मूल बात तो हर धर्म में एक ही है, सच कहो, किसी का दिल मत दुखाओ आदि। गीता के सही मर्म को उन्होंने समझा है और उसे अपने जीवन मे उतारा भी है – अपना कर्म एव कर्तव्य करते जाओ फल की आशा मत करो। फल देना तो ईश्वर का काम है।

वे अपना कार्य दूसरे दिन के लिए बचाकर नहीं रखते थे। रात १२ बजे तक भी बैठकर पूरा करते हैं, दूसरे दिन के कार्यों की फेहरिस्त बना लेते थे परिवार के जिस सदस्य को जो कार्य देना होता वे भी रात को ही लिख छोड़ते थे। सुबह जब सामूहिक प्रार्थना में बैठते थे, तो वे चरखे पर सूत कातते तथा परिवार के दूसरे सदस्य बारी-बारी से रोज किसी भी नामी महापुरुष की जीवनी या उनकी लिखी हुई पुस्तक को पढ़ता था, यों एक पुस्तक पांच-छः महीने में पूरी हो जाती थी। इसके बाद प्रार्थना फिर ये सबको उस दिन का अपना-अपना कार्य समझा देते थे।

मुझे तो उन्होंने जीवन की कितनी गूढ बातें यों ही हँसते-हँसते सिखा दी। उनके साथ शादी के बाद भी करीब ९ वर्षों तक उनकी निजी सेक्रेटरी के रूप में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उस समय कितनी चीजों को जाना एव समझा है। एक बार मैं उनके पास अपनी किसी निजी बात के बारे में सलाह मांगने गई तो उन्होंने अपने पास बैठाकर मेरी समस्या को समझा तथा उसके बारे में मुझे उचित सलाह भी दी तथा फिर कहा, देखो आज तुम मुझसे सलाह मांगने आई हो, पर जब कभी भी ऐसी कोई भी समस्या या उलझन आए तो ठंढे दिमाग से सोचो और जिस कार्य को करने में तुम्हारा दिल दो बार धड़के यानी कि उस काम को करने का मन गवाही न दे उसे बिल्कुल ही मत करो कारण अपने दिल से बड़ा जज कोई नही है। गलत काम के पहले तुम्हें हृदय जोर से धड़क कर सावधान कर देता है। तुम उसकी आवाज न सुनो यह और बात है। इस बात को समझाने के लिए उन्होंने अपनी तिजोरी की चाबी निकालकर दी और मुझे उसे खोलने के लिए कहा, मैंने जब उसे खोला तो उन्होने पूछा, 'क्या तुम्हारा मन डरा, घबड़ाया या धड़का।' मेरे ना कहने पर उन्होने हँस कर कहा 'क्योंकि तुमने मेरी अनुमति से तिजोरी खोली थी, यही तुम छुप कर खोलती यानी कि बिना मेरी अनुमति के खोलती तो तुम्हें घबड़ाहट भी होती और तुम जरा-जरा-सी आहट पर भी चौकती। तुम्हारा दिल धड़कता। तुम अपनी आहट से भो परेशान हो जाती। यही निशानी है सही और गलत कार्य की।' उनकी इस बात का मेरे जीवन पर बड़ा असर हुआ। जब भी मेरे जोवन में कोई समस्या आई या कठिनाइयाँ आई मुझे उनके समाधान के लिए किसी के पास नही जाना पड़ा। मेरा मन जिस कार्य को करने के लिए जरा भी हिचका मैंने उसे नहीं किया।

दूसरी बात जो सिखाई वह थी इन्सान को होड़ यानी (कम्पीटीशन) जरूर करनी चाहिए पर कुछ सीखने के लिए। मैं उनसे अच्छा काम कर सकूं। जलन से नहीं। तुम सुखी तभी रह सकती हो जब तुम्हें यह महसूस हो कि तुम्हें जो मिला है वह बहुतों को नहीं मिला जैसे कि तुम्हारे पास एक कमरे का फ्लेट है तो तुम किसी के बंगले को देखोगी तो शायद तुम्हें असन्तोष हो कि मेरे पास नहीं है पर यह सोचकर देखोगी कि बंगले तो थोड़े आदमियों के पास हैं लाखों इन्सान तो ऐसे हैं जिनके पास अपना एक कमरा भी नहीं है, तो तुम्हें यह संतोष होगा कि ईश्वर की कृपा से मैं लाखों लोगों से अच्छी स्थिति में हूँ। किसी भी चीज में अपने को हीन भावना से ग्रस्त मत होने दो। यदि कोई तुमसे ज्यादा पैसेवाला भी व्यक्ति तुम्हारे घर आता है तुम शरमाओ नहीं। तुम्हारा घर जैसा है वैसा ही रहेगा। वह उसे नहीं बदलेगा फिर सकोच कैसा। अपने व्यक्तित्व को इतना ऊँचा उठाओ कि लोग तुमसे मिलकर खुश हों। इन्होंने जिन्दगी में हर वस्तु को अच्छाई के रूप मे लेना सिखा दिया। गलत रूप से सोचने की आदत ही नही रही। आज हर मित्र, हर रिश्ते, हर इन्सान को समझने एव देखने का मेरा नजरिया ही बदल गया है। मैं हर एक इन्सान के प्लस पाइन्ट ही देखने की चेष्टा करती हूँ।

सबसे बड़ी बात इन्होंने यह सिखाई कि किसी की बुराई न करो, न सुनो। इन्हें ये बात बिरासत में मेरे पूज्य दादाजी से मिली है। मेरे दादाजी के सामने तो कोई भी किसी की जरा-सी भी बुराई नही कर सकता था। वे तुरन्त टोक देते थे तथा कहते थे क्यों गांव का मैल धो रहे हो।

आज से बत्तीस साल पहले मेरी शादी हुई थी तो उन्होंने विदाई के आधे घटे पहले मुझसे कहा था कि आज तक तुम इस घर की इज्जत थी आज के बाद तुम दो घर की इज्जत हो। आज के बाद उस घर की कोई बात हमें मत बताना तथा न ही इस घर की बात वहां। इस परम्परा को ये अपनी तरफ से अभी भी निभाते चले आ रहे है। कभी भी उन्होंने मुझे मेरी ससुराल के कुशल-क्षेम के अलावा कोई प्रश्न नहीं किया चाहे उन्हें मेरी कितनी ही कठिनाइयों का पता या अन्दाजा हुआ। मैं भी उनके आदेशानुसार चुप ही रही। एक बार बहुत साल बीतने पर मैंने पाया कि वे मुझे ही कह रहे थे तुम मेरी परीक्षा में बहुत खरी उतरी हो। मुझे तुम पर नाज है। उस वक्त तो मैं इन

पंक्तियों का मतलब नहीं समझ सकी कि ये मुझसे क्या कहना चाहते हैं पर आज जब सोचती हूं तो उन पंक्तियों का कुछ मतलब सलझ में आता है।

बचपन में हमारी माताजी का स्वर्गवास हो गया था। हमें नई माताजी मिलीं। मैं तो ईश्वर से यही कहूंगी कि माँ मरे नही यदि मरे तो हमारी माँ जैसी सबको माँ मिले। उन्होंने हमें बहुत प्यार दिया है। हमारी बीमारियों में रात-दिन जग कर हमारी हर तरह से सेवा की है। हम नही खाते थे तो वह नहीं खाती थीं। तनमन से हमारे पूरे घर की सेवा में जुटी रहती थी। दादाजी, दादोजी, हम बच्चों एवं बाद में हमारे बच्चों सब की जरूरतों को पूरा करने के लिए वे आधी रात को भी तैयार रहती थी एव अभी भी रहती हैं। मैं तो शायद उसका पच्चीस प्रतिशत भी अपने बच्चों के लिए कर सकूं तो अपनेआप को धन्य समझूंगी। उनकी वजह से पिताजी को कभी भी घर की कोई चिन्ता एवं परेशानी नहीं हुई। मैं तो कहूंगी कि मेरे पिताजी के अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखी होने का बहुत बड़ा श्रेय माँ को भी जाता है। उनसे तो हमने जिन्दगी में पाया ही पाया है। माँ ने हमसे कभी भी कुछ लिया नहीं है। उन्हे खुश करना भी बहुत आसान है उनके पास बैठ कर अच्छी तरह खा लो वे खुश हो जाती है।

जब हम भाई-बहन बड़े हो रहे थे उन्ही दिनों पिताजी की पब्लिक लाइफ, राजनैतिक लाइफ शुरू हो रही थी। ये उसमें भी बड़े व्यस्त रहते थे। पर उन्होने अपने घर, अपने बच्चों को कभी नेगलेट नही किया। वे हमेशा कहा करते थ कि मेरे बच्चे मेरी जिम्मेदारी है इन्हें इन्सान और अच्छा नागरिक बनाना है। वे छोटी से छोटी बात से लेकर बड़ी कोई बात सिखानी होती तो हमें खुद ही सिखाते बताते रहे है। जैसे कि ट्राम में कैसे सही तरीके से चढ़ना उतरना, कैसे रास्ता सही तरीके से पार करना। स्वीमिंग करने जाते थे तो भी स्वीमिंग पुल मे, जहाँ हम भाई-बहन पानी पीना शुरू करने लगते, न जाने कहाँ से उनका कधा हमें सहारा देने के लिए तैयार मिलता था। हर रविवार को हमें कही न कही पिकनीक पर ले जाते वहाँ हमारे साथ हर खेल में शामिल होते रहे हैं।

उनका अपना एक प्लेन था जिसको वे चलाते। उसमें बैठाकर हमे वे आस-पास के शहरों में ले जाते थे। हर काम वे खुद अपने हाथ से करते तथा हमसे

करवाते थे जिससे कि हमें हर काम करने की आदत हो। हमेशा कहते कि इन्सान को कोई भी कार्य करने में शरमाना नहीं चाहिए, चोरी करने में शर्म करनी चाहिए। कभी-कभी गाड़ी तक ठेलवाते थे। मै कोई भी चीज नई बनाती चाहे वो रसोई घर मे बनाई हुई रेसीपी या सिलाई, कढ़ाई कोई भी नया लेस उसे बहुत ध्यान से देखते खाते और बडाई करते थे।

बाद के वर्षों मे भी मैंने देखा वे अपने औफिस मे काम करने वाले दरवान या क्लर्क को जो कि कम पढा-लिखा होता था अपने पास से फीस भरकर रात के स्कूल मे दाखिला दिलवा देते थे नही तो हिन्दी की टाईपिंग सिखवा देते ताकि उसे अच्छी तनख्वाह की नौकरी मिल जाए। अभ्यास के लिए भी आराम से अपने औफिस के टाईपराइटर आदि इस्तेमाल करने देते थे। जब उन्हे अच्छी नौकरी मिल जाती तो बड़ी खुशी होती थी। कई बार तो इधर-उधर अपने मित्रो के यहाँ उन्हे लगवा भी देते थे ! मैं कई बार नाराज होती थी कि अपना आफिस स्कूल है क्या ! कारण कितने जनो को तो मुफ्त ही ट्रेनिंग देनी पड़ती थी तो हँसकर कहते थे तुम्हे भी दुआ मिलेगी।

सच तो यह है कि बचपन में पूरा प्यार और अच्छे सस्कार मिले तो जीवन मे आगे चलकर कोई भी कठिनाई यदि आए तो उसका सामना करने मे कोई भी परेशानी नही होती है, जैसे कि शुरू मे किसी पौधे की अच्छी तरह देख-भाल कर लो तो उसकी जड़े मजबूत हो जाती है। वह एक अच्छे पेड़ की शक्ल लेकर बड़े से बड़े आधी तूफान को सह सकता है। हमे भी उन्होने उसी प्यार और जतन से बड़ा किया और साथ मे जीवन की हर वस्तु का मूल्य भी सिखाया। इन मामलो मे काफी कड़ाई भी बरतते थे और बरतते हैं।

हमारे स्कूल मे हर उत्सव मे वे शामिल होते थे चाहे स्पोर्ट्स दिवस हो या वार्षिक दिवस हो मुझे उसमे भाग लेते देखकर वे बड़ खुश होते थे। मैं भी स्टेज से जबतक उन्हे नही देख लेती थी अशान्त रहती थी। अपने व्यस्त समय में से हमारे लिए समय निकाल ही लेते थे। बाद में तो वे मेरे बच्चों के प्रोग्राम मे भी शामिल होने लगे। बच्चे भी दौड़कर उन्हें अपने जन्म दिन का न्योता दे आते अपने स्कूल के पोग्रामो का न्योता दे आते, वे बिना भूले समय पर मेरी मां के संग मौजूद होते थे।

उनके पास बाद के वर्षों में रहने के कारण उन्हें और करीब से जाना तो पाया अपनी तकदीर पर विश्वास करो तथा किसी भी वस्तु से मोह न करो एक ही मिनट में वे अपना एम० पी० का पोस्ट छोड़कर आ गए। मेरे भाई ने पूछा भी कि घर पर सलाह तो की होती तो उन्होंने तुरन्त कहा अरे इसमें क्या पूछना था पार्टी के लिए छोड़ना था छोड़ दिया। ज्यादा सलाह लेता या सोचता तो दो मत भी हो सकते थे सो मोह कैसा !

लिखना तो बहुत चाहती हूं पर लिखने के लिए पूरे शब्द ही नहीं मिलते हैं। वे सच्चे अर्थों में हमारे पिता, माता, गुरु, एव पथ प्रदर्शक रहे हे तथा मुझे बहुत गर्व है कि वे मेरे पिता हैं।□

नानाजी के प्रति

□ □

राजीव राजगढ़िया

मैं अपने नानाजी के प्रति बहुत ही आभारी हूं कि उन्होंने मेरे जीवन का सबसे बड़ा उपहार मुझे दिया मेरी माता के रूप मे। उन्होंने मेरी माता के जीवन को व्यवहारिक एवं जीवंत बनाया। एक तरह उन्ही के स्वस्थ्य की प्रतीक है। मैं अपने को बहुत भाग्यशाली मानता हूं कि मुझे शैशव काल में उनके संरक्षण मे रहना पड़ा जो समय मेरे व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण का स्वर्णयुग था। यह सच है कि उस समय अपने अपरिपक्व होने के कारण उनके व्यक्तित्व को पूरी तरह नहीं समझ सका फिर भी घुमा-फिराकर उनके व्यक्तित्व, चरित्र, आचरण, कार्य एवं चिन्तन शैली का प्रभाव तो पड़ा ही जिससे मुझे अपनी कार्य शैली एव व्यापार में काफी सफलता मिली।

अपने जीवन का आदर्श उपस्थित कर इन्होंने मुझे सिखलाया कि समाज का एक उत्तरदाई सदस्य होते हुए कैसे एक आदर्श पुत्र, पिता, परम-पिता बन

सकता हूँ। जब वे विदेश भ्रमण पर गए तो ३ बातों से परहेज रखा, शराब पीना, धूम्रपान एवं मांसाहार जो विदेशों में अति प्रचलित हैं। इन्होंने बल्कि वहाँ की खूबियों और अच्छे आदर्शों को सीखा एवं उसे जीवन में व्यवहारिक रूप देने की चेष्टा की। वहाँ इन्होंने देखा कि किस तरह वहां के आदमी अपने बच्चों-स्त्री-परिवार के साथ रहते हुए व्यापारिक व्यस्तता के बावजूद भी समाज के अच्छेकामों में सक्रिय सहयोग देते हैं। अपने जीवन में उसे उतारा। व्यवसायिक व्यस्तता के बावजूद भी ये सामाजिक कार्यों के लिए समय निकाल ही लेते हैं। इतना ही नही खेलकूद, चित्रकला एवं हम बच्चों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों मे भाग लेते रहते है। मैं उनके आदर्शों, विचारों भावों तथा जीवन की व्यावहारिकता के परिप्रेक्ष में उनके कदमों का महत्व देता हूँ। जिससे कोई भी व्यक्ति लाभान्वित हो सकता है। इनका यह विश्वास है कि कमाने की अपेक्षा उसका संयम करना मुश्किल है। धन की अनिवार्यता को ये मानते हैं लेकिन उसके पीछे कभी भी मतवाला नही हुए। उसके पीछे बेतहाशा दौड़े नहीं। जीवन मे अपने आदर्शों के बाद ही धन का महत्व मानते हैं। ये पक्के भाग्यवादी है। एक बार उन्होंने मुझसे कहा कि जो कुछ तुम्हें मिलता है वह मिलेगा ही उसे कोई छीन नहीं सकता तो फिर उसकी प्राप्ति के लिए अनावश्यक भाग-दौड़ क्यों किया जाए। तुम अपना कर्त्तव्य निष्ठा पूर्वक निभाते चलो।

उनकी स्पष्टवादिता की मेरे ऊपर छाप है। इनकी कर्मयोग पर अटूट आस्था है। ये विश्वास करते हैं कि स्पष्टवादी भले ही अपनी स्पष्टवादिता के लिए बदनाम हो पर वह थोड़े समय के लिए ही। आगे चल कर सभी उसकी मान्यता को मानेंगे और स्तुति करेंगे। अपने विचार एवं कार्य बराबर सृजन-आत्मक रखो कभी भी विध्वंसकारी प्रवृत्तियों की ओर अपना झुकाव मत झुकने दो। अपने मन को बराबर सत्संगों में लगाओ।

वे बराबर हमलोगों को शिक्षा देते रहते है कि समय के मुताबिक अपने को किस तरह अच्छे कार्यों में लगाया जा सकता है, समय का सदुपयोग कैसे किया जा सकता है, प्रकृति के साथ सामजस्य कैसे रखा जा सकता है। हमें प्रकृति से शिक्षा लेनी चाहिए। जो चीजें प्रकृति के साथ नही चल सकी वे लुप्त हो गई।

उसी तरह मनुष्य को भी प्रकृति के साथ-साथ अपने को ढालना चाहिए परन्तु अपने मूल सिद्धान्तों की बलि देकर नहीं।

इनके अनुसार मनुष्य की सफलता धन अर्जन से नही आँकी जा सकती है बल्कि उसकी सफलता का रहस्य है समाज, मित्रो एव पारिवारिक लोगो में उसने अपनी कितनी छाप छोड़ी है।

ये बराबर शिक्षा देते रहते है कि दूसरों के कार्यों एव विचार पर अपना निर्णय लेने के पूर्व अपने को उसके स्थान पर रखो और तब विचार करो कि यदि तुम उस स्थान या स्थिति में होते तो क्या करते। इससे दूसरो के साथ न्याय करने में कही गलती नही होगी।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता उसके बोलचाल के ढ ग, उसके विचार तथा उसके व्यक्तित्व का असर दूसरों पर कितना पडता है इससे चलता है।

नानाजी व्यवस्था पूर्वक काम करने के पक्षधर है। मैं अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि मुझे उनके विचार जानने मे कभी भी कठिनाई या उम्र का संकोच नही हुआ। वे विचार इस तरह रखते हैं मानो नानाजी नहीं एक मित्र के विचार हो। उनके (दौहित्र) नाती होकर हम अपने को गौरवान्वित महसूस करते है। इस पुनीत अवसर पर मेरी यही मनोकामना है कि मैं इनके अतीत का नही बल्कि भविष्य का प्रतिस्वरूप बनूँ। □

मेरे नानाजी

□ □

विनीत राजगढ़िया

अपने भइया की तरह मुझे नानाजी के पास ज्यादा दिन रहने का मौका तो नही मिला, परन्तु मम्मी से उनके बारे में जितनी बातें भी जानी है, मुझे तो उनका जीवन सबके लिए मार्ग दर्शनीय और अनुकरणीय लगता है। इतने व्यस्त होने के बावजूद भी वे घर वालों को अपना काफी समय दिया करते हे और देते हे। समाज मे रहने के बावजूद भी वे समाज से कभी नहीं डरे। सन् १९२६ में जब कि विदेश-यात्रा की बात कोई सोच भी नही सकता था, उन्होने विदेश यात्रा की। हालांकि इसके कारण उन्हे अपनी जाति से बाहर कर दिया गया था।

जब मैं सुनता हूं कि इनके पास विमान था और वे उसे खुद चलाते थे तो ताज्जुब होता है। ये हर अच्छी चीज के शौकीन हे। अपने शहर के अच्छे व्यापारी होने के बावजूद अपने व्यस्त जीवन में से अपनी सेहत के लिए पूरा समय निकालते है। आजकल एव उस समय के सेठों को देखें, तो उनके वदन का ढीलाढालापन और तोंद के सिवाय कुछ नही दिखता। वे एक अच्छे तैराक, मोटरबाइक और रेंसिग कार के भी शौकीन थे। वे सारी चीजों को बड़े धड़ल्ले से चलाते थे।

अभी कुछ दिनों पहले मेरे एक करीबी दोस्त ने, जो कि फिल्मों का अच्छा शौकीन है, नानाजी की तस्वीरों का एलबम देखा, और उनकी ६० वर्ष की उम्र में ली हुई तस्वीर को देखकर बोल उठा कि इनकी मसल्स तो जेकी श्रौफ जैसी है।

इस बार वे भइया की शादी में बम्बई आए तो हमारे यहां की लिफ्ट खराब थी। मैं तो देखकर दग रह गया—बड़े धड़ल्ले से बिना रुके वे छः माला चढ़ जाया करते थे। यूं मैं भी कराटे का शौकीन हूँ एवं ब्राउन बैल्ट लिया हुआ है, पर अपने नानाजी के पास बैठने में घबराता हूँ। न जाने कब वे किस गेम के लिए चैलेज कर दें। इनसे मुकाबला करना बहुत ही मुश्किल है। समय की कमी का बहाना इन्होने कभी किसी के साथ किया ही नहीं। इनका सिद्धांत है कि समय किसी के लिए नहीं रुकता, नही गया हुआ वापस लौटता है। उसका जितना सदुपयोग कर सको, कर लो। उन्होंने १९८५ में लाठी चलाना शुरू किया। इस वर्ष कराटे सीखना भी आरम्भ कर दिया है। असल मे उनके बारे में लिखना तो बहुत चाहता हूँ, पर उनकी खूबियाँ अनगिनत हैं, जिसे लिखना मेरे लिए मुश्किल भी हैं। मै तो यही कहूगा कि मुझे गर्व है कि ये मेरे नानाजी है। □

मेरे दादाजी

□ □

संगीता बुधोड़िया

दादाजी से सीखी हुई कई बातें हमारी जिन्दगी से इतनी गहरी जुड़ी हुई हैं कि आज यदि उन्हे शब्दो में लिखना चाहूँ तो बहुत कम होगी। समझ में नहीं आता किस घटना या बात का उल्लेख करूँ क्योंकि सब अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण है। एक तो वे कभी भी पापा, माँ और हम बच्चो के बीच में नहीं बोलते हैं। हमेशा कहते है तुम्हारे पापा समझते है बच्चों के साथ क्या सलूक करना है। इसका मतलब यह नही कि हमलोगों को वे प्यार नही करते पर और दादा, दादियो की तरह हमलोगो को लाड़-दुलार करके बिगड़ने नहीं दिया जैसा कि औरों के बारे में हम सुना करते है।

दूसरा, ये हमेशा कहते हैं 'कोई ले जाएगा तकदीर थोड़े ही ले जाएगा।" बात मेरे मन में बैठ गई है। कोई चीज के खो जाने या कोई चीज के न मिलने पर थोड़ी देर मन में तकलीफ होती है क्योंकि दादाजी की कही बात याद आ जाती है और फिर शान्ति मिलती है।

तीसरा ये हमेशा कहते हैं अपने से नीचे को देखो, ऊपर वाले को नहीं। सुख पाओगे। बचपन में ये बातें अच्छी नहीं लगती थीं। किसी की कोई चीज देखकर इच्छा होती काश हम लोगों के पास भी होती। पर आज बड़े हो गए हैं तो ये सब बाते समझ में आती है और मालूम होता है कि इन बातों में कितनी सच्चाई है और कितना गहरा सार है।

दादाजी के जीवन से सीखने लायक बहुत बाते हैं और यदि उनमें से कुछ बातों को भी हम अपने जीवन मे उतार सकें तो बहुत ही अच्छा हो।

आज ८० वर्ष की उम्र में भी उन्हे हर चीज जानने और सीखने की जिज्ञासा है। ये बहुत सुलझे दिमाग के है। नौ-दस वर्ष पहले की बात है। मैं उस समय पेन्टिग सीख रही थी। दादाजी को लगा यदि संगीता सीख सकती है तो मैं क्यों नहीं सीख सकता। उन्होंने कहा तुम मुझ पेन्टिग सिखाओ मैं तुम्हे गुजराती सिखाऊँगा (वे उस समय गुजराती भी सीख रहे थे)। उस बात से मेरी आँखे खुलीं कि आदमी अपनी छोटों से भी कुछ सीख सकता है। और वे एकदम मन से पेन्टिग मे जुट गए। उनकी बनाई हुई तस्वीरे घर में और सीढियों पर लगी हुई है। उन पेन्टिगों को देखकर याद आ जाता है कि ये कैसे शुरू हुई थी।

दादाजी मुझे बहुत ही प्यार करते हैं और उससे भी ज्यादा मेरी बेटी शुभिका को। यदि उनके लिए बिना मैं कभी उनके पास जाती हूं तो कहते है शुभिका को नहीं लाई—नो इन्ट्री। से मुझे बहुत गर्व है अपने दादाजी पर □

मेरे काकोजी

□ □

चन्द्रकुमार सरावगी

काकोजी अनुशासन प्रिय हैं और भोजन के विषय में तो उनका अनुशासन उनके सिद्धान्त से भी जुड़ा हुआ है, जो हम बच्चों के लिए एक तरह से करेला और नीम चढ़ा जैसा है। हमें बाहर खाना पसन्द था, उन्हे कत्तई नहीं। हम बाहर खाकर आते तो बातें सुनने को मिलती—"मेरा सब कुछ मिलेगा, जमीन, जायदाद, धन, नाम पर बिना व्यायाम किए तथा खान-पान में संयम रखे स्वस्थ शरीर नहीं मिलेगा।" शान्त भाव से सुनाई गई ये फटकार गुस्से की डांट-डपट से भी तीखी लगती थी, गहरे चुभ जाती थी। अब आज इस बात का मोल समझ में आता है। मैं अपना सौभाग्य समझता हूं कि 'नहीं नहीं करते' भी उनकी बार-बार की सीख कुछ तो घर कर ही गई है।

यों तो वे बातों से ही सीख या फटकार देकर चुप हो रहते हैं। उनके जीवन को मैंने हमेशा दूसरों से बहुत भिन्न पाया है। वे अपने प्रति सच्चे हैं, जो ठीक

समझा उसे किया और सबके सामने उसको स्वीकार किया। सच बात कहने से कभी भी डरते नहीं। उनकी स्पष्टवादिता से लोगों में आदर बढ़ा ही घटा नहीं।

सबेरे जल्दी उठना और अपने पूरे दिन की कार्य योजना बना लेना उनकी विशेष आदत रही है। एक कागज पर फेहरिस्त बनती है. पूरे परिवार के हर सदस्य के काम उसमें दर्ज हो जाते हैं। भूलने का कोई प्रश्न ही नहीं। इस योजनाबद्ध तरीके से समय का अपव्यय नहीं होता। घर की हर वस्तु की एक निश्चित जगह है और क्या मजाल जो वहाँ दूसरी रख दी जाएँ। ये बातें छोटी लगती हे पर जीवन में कितना अर्थ है यह आज इस उम्र में समझ में आता है। एक खास बात उनमें पाई और वह है नई चीजे सीखने का शौक। उनका कहना है कुछ भी सीखने के लिए उम्र बाधक नही।

काकोजी के कई सुझाओ मे से एक मैं कभी नही भूल पाऊँगा। कोई भी काम करो—ईमानदारी जरूरी है। मैंने इसे आजमा कर देखा है इससे जीवन में संतोष बहुत मिलता है। आय तो सीमित ही रहेगी। खर्चे कम करना और अपनी इच्छाओं पर लगाम लगाना ही जीवन की समस्याओ को काफी हद तक कम कर सकता है। यह सीख हमेशा याद रहती है।

वे अपने कर्म के पक्के हैं, अपने आपसे सच्चे है, और किसी का अहित करने की सोच ही नही सकते है। जीवन में इतना व्यस्त रह कर भी कार्य के हर क्षेत्र में एक विशिष्टता प्राप्त करने की चेष्टा और मेहनत और सच्चाई से कमाई गई इज्जत को असदिग्ध रखना यह उन्हीं के लिए सम्भव है।□

मेरे जीजाजी

□ □

साधना जैन

जैसा कि पूज्य जीजाजी के बारे में सुना था, मेरी स्वर्गीय पूज्य माताजी एवं पिताजी (सासजी ससुरजी) के मुख से—आदर्शवादी एवं सरल प्रकृति के हैं प्रत्येक चीजों की जानकारी में प्राथमिकता रखते हैं। जो काम कोई बीस साल बाद करे वह बीस साल पहले ही कर दिखाने वाले है। वचन के पक्के, अपने माता-पिता के भक्त, अपने छोटे से परिवार को स्वर्ग बनाकर रखने वाले, आप जो कहते है वह अवश्य करते है। जो नही कर सकते तुरन्त ना कह देते है।

आपके माता-पिताजी अत्यन्त धार्मिक विचार के थे। जीजाजी भी जीजी के साथ हर एक अष्टमी, चतुर्दशी को पूजन करते है। अष्टान्का विधान आपने माता-पिता के साथ सपत्नीक ससमारोह सम्पन्न किया। नित्य मन्दिर जाना आपका नियम है। जब मेरी शादी आसनसोल में हुई तब विदाई के बाद आपके ही साथ, आपकी ही गाड़ी मे हमलोगो को कलकत्त आने का सुअवसर प्राप्त हुआ। रास्ते में आपके मनोविनोद द्वारा मैं रोती हुई आखिर हँस ही पड़ी। हसते देख आपने फिर एक मजाक छेड़ा, बोले "लड़कियाँ अपने मायके की चाहारदिवारी तक तो रो-रो कर नाक मे दम कर देती है और फिर उनका रोना पता नही किधर गायब होकर हसी में परिवर्तित हो जाता है।" उनकी इस बात से मैं शर्म से गड़ गई।

आप बच्चों के साथ बच्चों की तरह उनसे खूब घुलमिलकर बातें कर लेते हैं। बच्चों को अच्छी शिक्षा देना जैसे पेन्टिंग, गाछ लगाना, लेख लिखना, नृत्य, गाना इत्यादि में अपनी रोचकता दिखाकर उन्हें आगे बढ़ने में उत्साहित करते हैं। आपके सहयोग द्वारा ही आज हमारे बच्चे कई कलाओं में दक्ष निकल गए। अच्छे संसर्ग से अच्छी बुद्धि आती हैं, यह सही कहावत हैं। मेरो ननदजी भी अच्छे ससर्ग में रहने के कारण जब हमारे घर आती है, हमलोगों को भो अपने ही घर जैसी शिक्षा बराबर देती हैं तथा आज हमारे घर में सुख-शान्ति का साम्राज्य है। इसका श्रेय भी प्रत्यक्ष रूप से मेरी ननदजी तथा परोक्ष रूप से मेरे जीजाजी को ही है।

स्वावलम्बी बनने को प्रेरणा आपसे मुझे निरन्तर मिलती रही। कई बार आपकी प्रेरणा द्वारा मेरी भी स्वयं कुछ काम करने की इच्छा हुई किन्तु कुछ पारिवारिक उलझनों से मैं इसे कार्यान्वित न कर सको। किन्तु हां, इतनी अवश्य आदत हो गई कि अपना घरेलू कार्य ही निपटा लेने की क्षमता रखती हूँ। आप सपरिवार अपने हाथो से सूत कात कर कपड़ा तैयार कर पहनते है। आपकी वृद्धा माताजी भी निरन्तर सूत कात कर अपना समय उसी में ज्यादा व्यतीत करती थीं। देश के प्रति भक्ति और अपने देश की चोजों के प्रति अधिक आस्था रखते हैं।

एक बार की बात हैं आपकी छोटी लड़की (लक्ष्मी) टाइफाइड के ज्वर से सन्तप्त थी। हालत नाजुक हुई जा रही थी परन्तु आप अपने विश्वास, अपनी आस्था पर ही अडिग रहे। अपनी चिर-परिचित प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा उन्हें स्वस्थ कर दिया।

जब मेरे ससुरजी रिटायर्ड हुए और उन्हें सामूहिक धन-राशि आफिस से मिली तब उनकी इच्छा उन रुपयों से मकान खरीदने की हुई। ससुरजी के मन में आया जब कलकत्ते में रहना है तो क्यों न अपना मकान लिया जाए। जैसे ही जीजाजी को यह बात मालूम हुई, तो दलालों से बात करना, खुद जाकर देखने के बाद बाबूजी को लेजाकर दिखाना इत्यादि काफी दौड़-धूप की। अन्त में आपकी मेहनत सफल हुई। आपने बाबूजी के स्वप्न को साकार बनाकर दम लिया। पिताजी आपसे बहुत श्रद्धा करते थे। उनकी नजरों में अपने बेटों से आपका स्थान कम नहीं था।

आपने निरन्तर रश्म-रिवाजों का विरोध किया। जिसमें युग-युगान्तर से हमारा समाज पिस रहा है। पुराने रीति-रिवाजों को आपने बिल्कुल नहीं अपनाया। आपने खुद अपने बच्चों की शादी में हमारे यहां से भात नहीं लिया। हमलोगों से सिर्फ चंदरी ओढ़ाने का नेग करवाया। आप हर त्योहारों पर हमारे घर पर आते, तिलक कराते, किन्तु सिर्फ नारियल से, रुपयों से नहीं।

अपने बच्चों की शादी भी बड़े सुचारू ढग से आदर्शपूर्ण ढंग से की—एक दिन की शादी, कम से कम नेगचार। अच्छे वातावरण का प्रभाव बच्चों पर भी पड़ना स्वाभाविक है। आपके सभी छोटे-बड़े बच्चे भी अत्यन्त मृदुभाषी, आज्ञाकारी एव शिष्टाचारी है। हमारे सभी सुख-दुःख में आपके सम्पूर्ण परिवार का पूरा सहयोग रहता है।

मैं तो यही कहूँगी कि जीजी ने पूर्व जन्म में बहुत पुण्य किया था कि सर्वगुण सम्पन्न सुन्दर, स्वस्थ, आदर्शवादी, मृदुभाषी एव धार्मिक सास-ससुरजी मिले। अच्छे जीजाजी का सहवास मिला। पुण्य कर्म के उदय से उनके सभी बच्चे भी कर्मठ एव सर्वगुण सम्पन्न है।

हम सब की यही कामना है कि आपका यह उत्साह आपके सहवास में निरन्तर बना रहे। यह ८१ दीपकों का समूह अपने परिवार एव मेरी जीजी के जीवन पथ को प्रज्वलित करता रहे। □

एक जाग्रत जीवन्त व्यक्तित्व

□ □

सरदारमल बुगड़

सन् १९५६ में मैंने प्राकृतिक चिकित्सा का हैदराबाद में प्रशिक्षण लेने के बाद जब राजस्थान के नागौर नगर में प्राकृतिक चिकित्सा का कार्य प्रारम्भ किया, उसी समय यह समाचार मिला कि कलकत्ता में पूरे भारत के प्राकृतिक चिकित्सकों एवं चिकित्सा-प्रेमियों का एक सम्मेलन हो रहा है। मैं उस समय कलकत्ता नही जा सका। इस सम्मेलन के आयोजन में धर्मचन्दजी सरावगी का प्रमुख हाथ रहा और सम्मेलन में वे प्रधान मन्त्री भी चुने गए। उनके प्रयासों से प्राकृतिक चिकित्सा का सार्वजनिक रूप से एक स्थाई सगठन बना।

सन् १९५८ मे अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के हैदराबाद सम्मेलन में नागौर से गया। वहां सरावगीजी से विशेष सम्पर्क बना। प्राकृतिक चिकित्सा के कार्य के प्रति उनकी रुचि, उत्साह, सक्रियता, जागरूकता, तन-मन-धन से सहयोग देने की वृति देखकर मुझे भी विशेष प्रेरणा मिली और मैंने भी राजस्थान में राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् का गठन करने और प्राकृतिक चिकित्सा को प्रान्त में प्रचारित और प्रसारित करने

का संकल्प लिया। सन् १९५९ में राजस्थान के अजमेर नगर में अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर मैंने राजस्थान के सभी परिचित प्राकृतिक चिकित्सकों एव प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमियों को अजमेर 'राजस्थान प्राकृतिक चिकित्सा परिषद्' के गठन करने हेतु आमन्त्रित किया। ४० प्रेमी और १० चिकित्सक पधारे थे। अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की कार्यकारिणी की बैठक भी उस समय अजमेर मे हुई। कार्यकारिणी के सदस्य भी उस बैठक में पधारे। धर्मचन्दजी सरावगी की उपस्थिति में सारी कार्यवाही हुई। उस समय उन्होंने मुझसे राजस्थान प्रान्तीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद का मन्त्री बनने का आग्रह किया और समुचित मार्ग दर्शन किया।

सरावगीजी वर्षों तक अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् के प्रधान मन्त्री रहे। सम्मेलनो के अवसर पर उनसे सम्पर्क होता रहा। उनके मन्त्रीत्व काल मे परिषद का कार्य बराबर प्रगति करता रहा। परिषद् की ओर से धर्मचन्दजी के सम्पादन में 'स्वस्थ जीवन' पत्र भी निकलने लगा। कार्य की प्रगति से अनेक लोगों में इर्ष्या भाव भी जागा, सम्मेलनों मे आपसी झगडे भी होते रहे पर सरावगीजी के धैर्य, सूझबूझ व्यवसायिक बुद्धि एव समझौते की वृति से सारा वातावरण शान्त हो जाता और कार्य सुचारु रूप से चलता रहा।

इस बीच अनेक बार कलकत्ता जाना हुआ, जैन दाउस ८।१, एस्प्लानेड ईस्ट, फोन करके मिलने जाता। उनके यहां का सारा वातावरण ही स्वास्थ्यप्रद नजर आता। ऊपर चढ़ते समय सीढ़ियो पर स्वास्थ्यप्रद चित्र, सतुलित आहार के चार्ट, फलों के चार्ट, उनके गुणों के वर्णन के चार्ट आदि देखते-देखते कोई भी स्वास्थ्य के बारे में सहज में काफी कुछ जानकारी प्राप्त कर सकता है। उनके रहन-सहन का ढंग भी स्वास्थ्य के प्रति चेतना से ओत-प्रोत दिखाई देता।

सरावगीजी का उद्योगशील होते हुए भी उनका साहित्य प्रेम भी उल्लेखनीय रहा है। 'स्वस्थ जीवन' का सर्वोतम प्रकाशन किया साथ में प्राकृतिक चिकित्सा के अनेक विषयों पर पुस्तकें लिखकर छपवाई।

सन् १९७५ मे पुन: कलकत्ता जाना हुआ। वहां विपश्यना साधना का एक शिविर लगा था। मैं भी उस शिविर में सम्मिलित हुआ। जोधपुर प्राकृतिक

चिकित्सा केन्द्र से लाभ लेने वाले परिवारों को मेरा शिविर का पता मालूम नहीं था। उनमें से एक परिवार अपने बच्चे को डिफ्थेरिया हो जाने से मेरी राय लेना चाहते थे। उन्होंने सीधे सरावगीजी को फोन कर दिया। सरावगीजी ने स्वयं तो उन्हें मार्ग दर्शन दिया ही साथ ही फोन का संदेश देने मेरे शिविर का पता लगाकर स्वयं पधारे और सारी जानकारी दी। इतने बड़े आदमी होकर भी उन्होने स्नेह और सहयोग की वृत्ति के कारण अपना समय निकालकर पधारने की कृपा की।

कलकत्ते में प्राकृतिक चिकित्सा के कार्य में आपका बड़ा सहयोग हर समय रहा है। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खुलवाने और देख-रेख करने के लिए एक बड़ा केन्द्र भी कलकत्ता से कुछ दूरी पर खुलवाने तथा अखिल भारतीय स्तर का प्राकृतिक चिकित्सा का शिक्षण विद्यालय अच्छे स्तर का खुलवाने व संचालन करने मे आपका पूरा योगदान रहा है।

सरावगीजी ने एक सम्मेलन में आए सभी प्राकृतिक चिकित्सकों के चित्र स्वयं अपने निजी कैमरे से सबको बुला-बुला कर खींचे और वे चित्र "स्वस्थ जीवन के प्राकृतिक चिकित्सा इतिहास विशेषांक में ब्लाक बनाकर छापे। हर काम को योजना पूर्वक करने का यह एक नमूना है। सफल जीवन के लिए आपका जीवन प्रेरणादायक है। सरावगीजी जब अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद के मन्त्री थे तब मैंने अपनी ओर से यह प्रस्ताव भेजा कि भारत के प्राकृतिक चिकित्सकों में जो चिकित्सा का आपसी मतभेद है प्राकृतिक चिकित्सा जो एक सपना नही है और प्राकृतिक चिकित्सकों में जो कमजोरियां और कमिया है उनको दूर करने के लिए प्राकृतिक चिकित्सकों के ही रीफ्रेशर कोर्स का शिविर प्रतिवर्ष लगाया जाए। चिकित्सकों को अध्ययनपूर्ण जानकारी से बराबर अवगत रखा जाए पर ऐसा कुछ प्रयत्न नहीं हो पाया।

सरावगीजी का कलकत्ता में अच्छा व्यवसाय है। अपने व्यवसाय के साथ वे अपने कार्यालय में प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी देशी-विदेशी पुस्तकों को भी रुचि रखने वाले लोगों को उपलब्ध कराने के लिए व्यवस्था कर रखी है और उस पर बराबर ध्यान रखकर अच्छा स्तरीय साहित्य रखा जाता है और मांग आने पर साहित्य भेजा जाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा केवल उनकी रुचि का विषय ही नही है जीवन का अंग भी है। वे स्वयं अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक तो हैं ही अपने सम्पर्क में आने वाले लोगो को भी बराबर जागरूक करते रहते हैं। उनका रहन-सहन, आहार-विहार सभी प्राकृतिक स्वास्थ्य विज्ञान के दृष्टिकोण से प्रभावित है। उन्होंने डा० सेल्टन की पुस्तक "फास्टिग केन सेव योर लाइफ" का अपने द्वारा भावानुवाद 'उपवास' से जीवन रक्षा' नाम से सर्वसेवा संघ वाराणसी से प्रकाशित करवाया है। यह पुस्तक उपवास के बारे मे अपने ढंग की अनूठी पुस्तक है।

मैं सरावगीजी के स्वस्थ शरीर और दीर्घ आयु की कामना करता हुआ मंगल मैत्री की भावनाएँ प्रेषित करता हूँ। □

तपस्वी पुरुष

□ □

पुष्करलाल केडिया

श्रद्धेय धर्मचन्दजी सरावगी का नाम जन-स्वास्थ्य एवं प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में हमारे देश में ही नहीं, विदेशों में भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है। भारत में प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के प्रचार-प्रसार एव विकास का इतिहास जब भी लिखा जाएगा उसमें उनके दीर्घकालीन रचनात्मक कार्यों की चर्चा एक पृथक अध्याय में की जाएगी।

धर्मचन्दजी से मेरा प्रथम परिचय सन् १९५२ ई० में हुआ, जब वे कलकत्ता कारपोरेशन के कौंसिलर चुने गए थे। मैं उन दिनों नागरिक स्वास्थ्य संघ का सचिव था। संघ की स्थापना हम स्काउटों ने स्वास्थ्य शिक्षा एव नागरिक-ज्ञान के प्रचार तथा नगर स्वच्छता की चेतना जनसाधारण मे जगाने के उद्देश्य से की थी। सस्था के उद्देश्यों को सफल बनाने के लिए हमें अनुभवी एव प्रबुद्ध पथ प्रदर्शकों की तलाश थी। मेरा ध्यान धर्मचन्दजी जैसे कर्मठ और स्वनामधन्य व्यक्ति की ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक ही था। उन्होंने उस समय सघ के कार्यों में बहुत सहायता की। उनका सहयोग भुलाया नहीं जा सकता। आगे चलकर मुझे उनके साथ बैठकर, प्राकृतिक चिकित्सा, वृद्धों के लिए

आवास व्यवस्था आदि विविध विषयों पर चर्चा करने तथा उनका अमूल्य परामर्श प्राप्त करने के अनेक अवसर मिले। मैंने सदा उन्हें एक ऐसे तपस्वी के रूप में देखा है, जिसका स्वस्थ क्रियाशील जीवन सबके लिए प्रेरणा और प्रकाश का स्रोत है।

स्वास्थ्य और दीर्घ आयु प्राप्त करने की व्यावहारिक कला यदि किसी को सीखनी हो तो वह मोटी-मोटी पुस्तकों का अध्ययन किए बिना ही धर्मचन्दजी से सीख सकता है। सयमित और सात्विक जीवन कितना महान और उज्ज्वल होता है, इसकी जीवन्त छवि उनके व्यक्तित्व में देखने को मिलती है।

धर्मचन्दजी ने सेवा को जीवन धर्म के रूप मे अपनाकर, अनेकानेक पीड़ित मानवो की सेवा की है। मारवाडी रिलीफ सोसाइटी मे प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खोलने का श्रेय उन्हीं को है। इसके अतिरिक्त उन्होने सोसाइटी की प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पूर्वजों का यह कथन अक्षरशः सत्य है कि सयमी और शुद्ध आचार-विचार वाले व्यक्तियों के निकट बुढापा कभी आता ही नहीं। धर्मचन्दजी को आज भी युवकों के समान स्वस्थ और फुर्तीला देखकर मेरे मन में इस पुरानी मान्यता की पुष्टि होती है। अस्सी वर्ष की आयु में जिसे लाठी चलाने का कौशल और कराट सीखने की इच्छा हो, उसे वृद्ध कहने का साहस भला कौन कर सकता है ?

मै तो कहूंगा कि हमारी नई पीढी को उनके पदचिन्हो पर चलने का संकल्प लेना चाहिए और सदा याद रखना चाहिए कि स्वास्थ्य और चरित्र, दो ऐसे अमूल्य रत्न है, जिनके अभाव मे जीवन निर्धन और निस्तेज प्रतीत होता है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि धर्मचन्दजी दीर्घजीवी हों और उनसे स्वस्थ-सबल राष्ट्र के निर्माण का स्वप्न देखनेवालों को प्रेरणा मिलती रहे। उन्हे मेरा नमन।□

मेरे बचपन के साथी

□ □

दुर्गादत्त लोहिया

धर्मचन्दजी सरावगी के बारे मे लिखने का मौका मिला इसे गौरव मानता हूँ। बचपन में हमलोग ५-७ लड़के एक साथ पढ़ते थे। उस समय १६० सूतापट्टी, जिसका नाम फतेहद्वारी कोठी था, उसमे एक तल्ले के ऊपर ३०-३५ गद्दियाँ तथा दो तल्ले पर कई बासे थे। ऊपर ठाकुरबाड़ी भी थी। जिसमें श्रावण महीने में और जन्माष्टमी के दिन हर साल श्री कृष्ण भगवान का झूलनोत्सव मनाया जाता था। मुझे याद है कई सज्जनों के साथ श्यामलालजी धरनीधरका को झूलन सजाने का बहुत शौक था। उस समय बाहर के लोगों की, झूलनोत्सव देखने की, भीड़ लगी रहती थी।

धर्मचन्दजी सरावगी के पिता का नाम स्व० बैजनाथजी था। उनके फर्म का नाम जोखीराम बैजनाथ पड़ता है। श्री बैजनाथजी बहुत ही धार्मिक प्राणी थ और मिलनसार थे। यह फतेहद्वारी कोठी में उस समय व्यापार के लिए रहते हुए भी जैसे एक परिवार के लोग-सा रहते थे। वे सारे कार्य में एक परिवार की तरह हर के सुख-दुख में सभी का साथ देते थे।

उस समय धर्मचन्दजी पुरूषोत्तमजी केड़िया, नन्दलालजी जालान, कन्हैयालालजी तथा हरिरामजी मोदी और हम प्रायः एक ही स्कूल में पढ़ते थे। श्री मूलचन्दजी अग्रवाल ने उस समय माहेश्वरी विद्यालय से अलग होकर हुक्कापट्टी

में एक स्कूल खोला था उसमें हम सभी साथी आ गए थे। जहां तक याद है उसमें क्लास ८ से ७ में ७ से ६ में, ६ से ९ में यानी उस समय फर्स्ट क्लास को मैट्रीक कहा जाता था। बाद को श्री मूलचन्दजी ने 'विश्वमित्र' अखबार निकालना शुरू किया। हम सभी आपस में बहुत ही प्रेम से लिखते-पढ़ते और खेलते थे। सूतापट्टी की कोठी छोड़ने के बाद भी जब १७३ हरीसन रोड में कुछ गद्दियां आईं तब भी धर्मचन्दजी सरावगी के साथ सम्बन्ध बना ही रहा। स्कूल में पढ़ते समय भी हमें याद आता है सत्य के ऊपर कविता बनाकर हम लोगों ने कुछ परचे छपवाकर बांटे थे।

बचपन बीतने पर सारे मित्रों का इधर-उधर होना स्वाभाविक है लेकिन धर्मचन्दजी का साथ आज भी बना है। मुझे याद है कि दमदम फ्लाइंग क्लब में कोई उत्सव था उन्होंने वहां निमन्त्रण पत्र देकर कई-कई साथियों को बुलाया जहाँ हवाई जहाज उड़ाने का इनका कौशल देखने को मिला। उस समय कितना आश्चर्य हुआ जब कि जैसे जमीन पर हम लोटते हैं वैसे ही हवाई जहाज का दृश्य उन्होंने दिखाया।

धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक चिकित्सा एवं व्यायाम का अध्ययन ही नहीं किया बल्कि प्राकृतिक चिकित्सा पर किताबें भी लिखीं और वे जनसेवा का बहुत कार्य भी करते आ रहे हैं। व्यायाम व प्राकृतिक चिकित्सा को अपने निजके जीवन में भी अपना लिया है। इसके लिए उनका स्वास्थ्य आज भी ठीक है। प्राकृतिक चिकित्सा के प्रेमी श्री मोरारजी देसाई जब वे प्रधान मन्त्री थे उनसे मिलकर इन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा महाविद्यालय की कोणशिला भी लगवाई।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें दीर्घायु प्रदान करें जिससे वे और भी जनसेवा कर सकें। □

समाज की सम्पत्ति

□ □

भूवेन्द्रनाथ राय

धर्मचन्दजी एक अद्भुत व्यक्तित्व के पुरुष हैं। उनकी सादगी मिलने वालों पर प्रभाव डाले बिना नहीं रहती। कभीकभार की थोड़े समय की मुलाकात ही मित्रता में बदल जाती है। प्राकृतिक चिकित्सा के अध्ययन एवं अनुभव के लिए संसार के विभिन्न भागों में स्थित प्राकृतिक चिकित्सा के केन्द्रों का उन्होंने दौरा किया। वहां से लौटकर साथ ही महात्मा गांधी से आशीर्वाद प्राप्त कर मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल में प्राकृतिक चिकित्सा का अप्रवेशित विभाग खुलवाया। ३५ वर्ष के बाद जब मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल में अप्रवेशित विभाग बन्द हो गया तो धर्मचन्दजी ने डायमण्ड हार्बर रोड पर "नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट" नामक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र चालू किया। थोड़े समय के अन्दर ही इस अस्पताल ने लोकप्रियता प्राप्त की कि वहां के कोटेज एवं केबिन में प्रवेश पाने के लिए रोगियो को नम्बर लगाना पड़ता है।

धर्मचन्दजी ने विभिन्न रोगों पर प्राकृतिक चिकित्सा की प्रायः २५ पुस्तकें भी लिखी हैं एवं बिना किसी रायल्टी के उन पुस्तकों का प्रकाशन अधिकार उन्होंने स्वर्गीय बिनोवाजी के द्वारा स्थापित "सर्वसेवा संघ" को दे दिया है। मैने उनकी पुस्तकों में से एक पुस्तक देखी। उसे पढ़कर बहुत ही प्रभावित हुआ। मेरा लड़का भी उससे इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपने एक मित्र को, जिनका प्रेस था, इस पुस्तक का बंगला सस्करण छापने को तैयार कर लिया किन्तु ब्लाक वगैरह जबतक बने, कागज के दाम बढ़ जाने के कारण उन्होंने बगला संस्करण छापने से इनकार कर दिया पर हम हिम्मत नही हारे है। भविष्य में मुझे आशा है यदि यह पुस्तक बंगला या अंग्रेजी मे छप जाए तो बहुत लोगों को इससे लाभ होगा।

अभी धर्मचन्दजी प्रतिदिन सबेरे ६ बजे कर्जन पार्क में जाकर लाठी चलाने का अभ्यास करते हैं। बहुत आदमी वहां घूमने तथा व्यायाम इत्यादि करने आते है किन्तु धर्मचन्दजी एक ऐसे व्यक्ति हैं जो इस उम्र में वहां लाठी चलाने का अभ्यास करते हैं। जबकि उनके लड़के और नाती की उम्र के युवक ही इसका अभ्यास उनके साथ करते है। इस उम्र में भी सरावगीजी में काफी कार्य क्षमता एवं ताजगी है तथा उन्हें हमने कभी भी बीमार पड़ते नहीं देखा। ब्रह्मवर्त्त पुराण का एक श्लोक उनके जीवन पर लागू होता है जिसका अर्थ है—जिस तरह "गरुड़ पक्षी" को देखकर सर्प भाग जाते है उसी तरह संयमी पुरुष से रोग एवं बुढ़ापा दूर रहता है।

धर्मचन्दजी जैसे व्यक्ति समाज की सम्पति है एवं भगवान से उनके दीर्घ जीवन के लिए मैं प्रार्थी हूं। □

स्वास्थ्य सजग

□ □

डा० डी० एन० खुशलानी

बहुत दिन पहले जब उन्होंने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में प्राकृतिक चिकित्सा का विभाग खुलवाया था तब उनसे मेरा परिचय हुआ क्योंकि मैं भी जन साधारण का इलाज बिना दवा-दारू एवं इन्जेक्सन के ही करता था। वे भी हमारी संस्था के संरक्षक बन गए और हमारे नेहाटी स्थित केन्द्र का निरीक्षण करने आए। धर्मचन्दजी को नई चीजों को सीखने का शौक है और अच्छी चीजों का व्यवहार भी वे चाव से करते हैं। चुम्बक चिकित्सा के अध्ययन के बाद उन्होने चुम्बक पानी पीना भी शुरू किया है। एकुप्रेशर चिकित्सा का अध्ययन करने के बाद उन्होंने अपने मालिश करने वालों को सिखाया कि कैसे हाथ एवं पांव की तलहटी पर मालिश किया जाता है। उनके जीवन क्रम के विषय मे जो मुझे जानकारी प्राप्त हुई है वे इस प्रकार है।

१—वे सबेरे ५ बजे उठते है और एक चुटकी कच्चा चावल मुंह में डालकर पानी से निगल जाते हैं (चबाते नही)। इससे यकृति (लीवर) ठीक रहता है। इस विधि को इन्होंने बहुतों को बताया और जिन्होंने इसे किया वे लाभान्वित हुए।

२—उसके बाद वे उषापान करते हैं यानी एक लीटर ताजा पानी पीते है जिससे पेट साफ हो जाता है। शौच खुलकर आ जाता है जिससे २४ घण्टे में फिर दुबारा शौच नहीं जाना पड़ता है।

३—शौच से निवृत होकर वे सरसों तेल और नमक का चूर्ण मिलाकर दांत साफ करते हैं। इससे उनके दाँत के मसूड़े मजबूत रहते हैं और पायरिया इत्यादि दांतों की बीमारी भी नहीं होती है। वे किसी तरह का टूथपेस्ट दांतों को साफ करने के लिए व्यवहार नहीं करते। उसके बाद ठंढे पानी से स्नान करते हैं। मोटे तौलिए से शरीर मलते हैं साबुन का व्यवहार नहीं करते।

४—अपने नेत्रों की ज्योति ठीक रखने के लिए वे आँखों को प्रतिदिन सुबह हर आंख को ठंडे पानी के २५ बार छींटे देकर धोते हैं। जिस पानी से आँख धोते हैं उसे १८ घण्टा ताम्बे के लोटे में पहले रखा जाता है। इसके बाद त्रिफला के पानी से आँख धोते है। पहले उन्हें अलग-अलग कामों के लिए अलग-अलग चश्मे की जरूरत पड़ती थी। जैसे गाड़ी चलाने के लिए अलग, सिनेमा देखने के लिए अलग, पढने और कागजातों पर हस्ताक्षर करने के लिए अलग। किन्तु अब उन्हें इसकी जरूरत नहीं पड़ती है।

मैं एक बार बड़ाबाजार युवक सभा चुम्बक चिकित्सा पर व्याख्यान देने गया। वहाँ देखता क्या हूँ कि धर्मचन्दजी इस ८१ वर्ष की उम्र में भी बहुत कठिन व्यायाम जैसे, पैरलल वार, वाल प्रेस, रिंग, चिनिंग, वेंच प्रेस तथा यौगिक आसन कर रहे हैं।

अपने मकान की छत पर उन्होंने फल एवं सब्जियों का उद्यान लगा रखा है जिसमें स्वयं परिश्रम करते है ताकि स्वास्थ्य ठीक रहे। हमें मालूम है कि वे अब अपने ९ दशक में प्रवेश कर चुके हैं और इस अवस्था में भी वे अब कर्जन पार्क में जाकर लाठी चलाने का अभ्यास कर रहे हैं जहां उनके सम आयु के क्या उनके लड़के एवं नाती की हो उम्र के नवयुवक आते और अभ्यास करते है। इस साल वे बड़ाबाजार युवक सभा में करांटे सीखना भी आरम्भ किये हैं।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आयु दिनोंदिन वृद्धि करतौ जाए ताकि वे नई पीढ़ी को स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष जानकारी से अवगत कराते रहें।□

गहराई तक जाने वाले

□ □

माणकचन्द काला

आदरणीय धर्मचन्दजी सरावगी से मेरा सम्पर्क प्रायः २८ वर्षों से है। उत्कृष्ट समाज-सेवा की भावनावश ये सदा ही कुछ न कुछ सेवा कार्य करते रहते हैं। ये सेवा तन, मन व धन से करते है उसका विवरण भी रखते हैं।

सफेद दाग की चिकित्सा कई एक वर्षों से करते आए है। ये आयुर्वेद औषधि का प्रयोग कराते हैं। प्रत्येक मगलवार को रोगियों को नियमित रूप से समय देते है। प्रत्येक रोगी की फाइल रखते है जिसमें उसका फोटो रखते है और उसकी प्रगति का फोटो भी रखते है जिससे कि नए रोगी को आत्मविश्वास एवं उस चिकित्सा के प्रति विश्वास पैदा हो।

मुझसे कुछ वर्षों पहले इन्होंने इच्छा जाहिर की कि ये अपने पूज्य पिताजी श्री बैजनाथजी सरावगी के नाम से सचालित ट्रस्ट से असमर्थ बूढ़ों को दांत

प्रदान करना चाहते हैं ताकि उनको खाने-पीने की सुविधा हो सके तथा चेहरा भी सुन्दर लगे। मैंने इनके इच्छानुसार एक महिला दंत चिकित्सक व निर्माण-कर्त्ता से व्यवस्था करवा दी थी जिसका कि उपयोग इन्होंने कुछ वृद्धजनों को दांत प्रदान करने में किया।

ये चुम्बक चिकित्सा भी एक होमियोपैथ को अपने यहां नियमित रूप से बैठाकर करवाते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा में तो वर्षों से इनकी रुचि है ही जिसका प्रमाण तो जगजाहिर है मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का प्राकृतिक विभाग। मेरा परिचय इनसे उन दिनों ही हुआ था जबकि ये अपने विभाग की देखभाल करने सोसाइटी नियमित रूप से आया करते थे। उन दिनों ये मासिक पत्र "स्वस्थ जीवन" का सम्पादन भी किया करते थे।

इनसे सम्पर्क व व्यवहार से जो मेरा विचार इनके बारे में बना वह है— मितव्ययी, मृदु एवं मिष्ठाभाषी। ये नियमित व्यायाम करके स्वस्थ व नियमित जीवन जीने वाले मित्र निर्माण करने वाले ही नहीं हैं बल्कि निर्वाहक भी हैं। हर स्तर के व्यक्ति से सम्पर्क व व्यवहार बनाए रखने वाले (साधारण से लेकर प्रधान मन्त्री तक) सदा मृदु मुस्कान के साथ अपनी आँखों से स्नेह-प्रदान करने वाले एक विशेष आकर्षक व्यक्तित्व हैं। □

श्री धर्मचन्द सरावगी द्वारा लिखित पुस्तकों की सूची

	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	भूमिका/लेखक	महीना	साल	संख्या	सं०	पृ०सं०	मूल्य
(१)	योरप में सात मास	हिन्दी पुस्तक एजेन्सी।		नवम्बर	१९३५	१०००	प्रथम	३४४	३.००
(२)	स्वस्थ रहना ही हमारा			अप्रैल	१९६३	१०००	प्रथम	९४	२.००
	जन्म सिद्ध अधिकार है	एक्मे एण्ड कम्पनी।		नवम्बर	१९६४	१०००	द्वितीय	९४	२.००
(३)	स्वस्थ रहना सीखें	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय।			१९६४	२०००	प्रथम	१२०	१.००
(४)	पचास साल बाद	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय।			१९६५	२०००	प्रथम	९४	१.००
(५)	आहार शुद्धि	भारत जैन मडल प्रकाशन।		नवम्बर	१९७४	५२००	प्रथम	३४	७५
(६)	कब्ज की प्राकृतिक चिकित्सा	पश्चिम बग प्राकृतिक चिकित्सा परिषद।			१९७५	१०००	प्रथम	५६	२.००
(७)	चर्म रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन।	गंगा प्रसाद गौड़ "नाहर"	अप्रैल	१९७२	३०००	प्रथम	७८	१.५०
					१९६९	१५०००	प्रथम	१६६	२.००
(८)	प्राकृतिक इलाज	हिन्द पाकेट बुक।			१९६५	१०००	प्रथम	६४	१ ००
(९)	यह कलकत्ता है	दिगम्बर जैन भवन।			१९६७	१०००	द्वितीय	६४	१.००
					१९७२	२०००	तृतीय	६४	१.००
					१९७७	३०००	चतुर्थ	५८	२.००

पुस्तक का नाम	प्रकाशक	भूमिका/लेखक	महीना	साल	संख्या	सं०	पृ०सं०	मूल्य
(१०) तन्दुरुस्त रहने के उपाय	सस्ता साहित्य मण्डल			१९६४	२०००	प्रथम	६४	१.२५
				१९६८	३०००	द्वितीय	६४	१.५०
				१९७७	३०००	तृतीय	६०	२.००
				१९८३	३०००	चतुर्थ	६०	३.५०
(११) सरल योगासन	सस्ता साहित्य मण्डल	श्री मोरारजी देसाई		१९६१	२५००	प्रथम	६०	३.००
				१९६३	८०००	द्वितीय	६०	२.५०
				१९७१	२०००	तृतीय	५८	२.५०
				१९७४	३०००	चतुर्थ	५८	३.००
				१९७७	३०००	पचम	५८	४.००
				१९७८	३०००	षष्टम	६०	४.००
				१९८१	३०००	सप्तम	६०	६.००
				१९८६	३०००	अष्टम	६०	६.००
(१२) घरेलू प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन	श्री भगवान दास केला	अगस्त	१९६८	३०००	प्रथम	४८	०.७५
			दिसम्बर	१९७१	३०००	द्वितीय	४८	०.७५
			नवम्बर	१९७४	३०००	तृतीय	४८	१.५०
			सितम्बर	१९७७	५०००	चतुर्थ	४०	१.२५
			दिसम्बर	१९८०	५०००	पंचम	३२	१.५०
			जनवरी	१९८३	५०००	षष्टम	३२	१.५०
			अक्टूबर	१९८६	५०००	सप्तम	३२	२.००

पुस्तक का नाम	प्रकाशक	भूमिका/लेखक	महीना	साल	संख्या	सं०	पृ०सं०	मूल्य
(१३) उपवास से जीवन रक्षा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन		नवम्बर	१९६७	२०००	प्रथम	१७०	३.००
			मई	१९७२	२०००	द्वितीय	१७०	३.००
			दिसम्बर	१९७५	३०००	तृतीय	१७०	४.००
			नवम्बर	१९८०	३०००	चतुर्थ	१६८	६.००
			जनवरी	१९८४	३०००	पचम	१६८	७.००
(१४) दमा का प्राकृतिक इलाज	सर्व सेवा सघ प्रकाशन	श्री विजय सिंह नाहर	जनवरी	१९७१	२०००	प्रथम	११०	२.००
			अप्रैल	१९७६	३०००	द्वितीय	११०	२.५०
			अप्रैल	१९८०	३०००	तृतीय	१०२	४.००
			नवम्बर	१०८२	३०००	चतुर्थ	९४	४.००
			अक्टूबर	१९८६	३०००	पचम	९४	४.००
(१५) ब्लड प्रेसर की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन	श्री रंगनाथ दिवाकर	अप्रैल	१९७२	३०००	प्रथम	७०	१.५०
			अक्टूबर	१९७४	३०००	द्वितीय	७८	२.००
			फरवरी	१९७७	३०००	तृतीय	८०	२.२५
			फरवरी	१९७९	५०००	चतुर्थ	७२	२.२५
			सितम्बर	१९८१	५०००	पचम	६६	२.५०
			दिसम्बर	१९८४	३०००	षष्टम	६४	३.००
(१६) हृदय रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा संघ प्रकाशन	श्री रतन कुमार साध	अप्रैल	१९७३	२०००	प्रथम	९५	२.००

पुस्तक का नाम	प्रकाशक	भूमिका/लेखक	महीना	साल	संख्या	सं०	पृ०सं०	मूल्य
			जनवरी	१९७६	३०००	द्वितीय	८२	२.००
			जुलाई	१९७९	३०००	तृतीय	८७	२.५०
			,,	१९८२	३०००	चतुर्थ	७२	३.००
			अप्रैल	१९८६	३०००	पचम	७२	४.००
(१७) पथरी रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन	श्री राधाकृष्ण नेवटिया	अप्रैल	१९७३	२०००	प्रथम	६८	१ ५०
			नवम्बर	१९७५	३०००	द्वितीय	७६	२.००
			मई	१९७९	३०००	तृतीय	७६	२.५०
			मार्च	१९८२	३०००	चतुर्थ	७२	२.५०
			दिसम्बर	१९८५	३०००	पचम	७२	३ ५०
(१८) मोटापा की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा सघ प्रकाशन		जून	१९७६	३०००	प्रथम	६३	१.७५
			जुलाई	१९७८	३०००	द्वितीय	६८	२.००
			जून	१९८०	३०००	तृतीय	६४	२.००
			जनवरी	१९८२	३०००	चतुर्थ	६४	२.००
			दिसम्बर	१९८३	३०००	पचम	६४	२.५०
			अक्टूबर	१९८५	३०००	षष्टम	६४	३.००
(१९) लकवा की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा संघ प्रकाशन	श्री खुशीराम शर्मा	जून	१९७६	३०००	प्रथम	५९	१ ७५
			दिसम्बर	१९७८	३०००	द्वितीय	६७	२.००

पुस्तक का नाम	प्रकाशक	भूमिका/लेखक	महीना	साल	संख्या	सं०	पृ०सं०	मूल्य
			फरवरी	१९८२	३०००	तृतीय	५६	२.५०
			फरवरी	१९८५	३०००	चतुर्थ	५६	३.००
(२०) बवासीर की प्राकृतिक चिकित्सा	,,		अगस्त	१९७६	३०००	प्रथम	५७	१ ५०
			जून	१९७८	३०००	द्वितीय	६४	१.५०
			मार्च	१९८०	३०००	तृतीय	६०	२.००
			सितम्बर	१९८०	५०००	चतुर्थ	५६	२ ५०
			अगस्त	१९८६	३०००	पांचवां	३००	
(२१) एपेण्डिसाइटिस की प्राकृतिक चिकित्सा	भाषा भवन,		अक्टूबर	१९७७	२०००	प्रथम	५६	१.५०
			अगस्त	१९८१	२०००	द्वितीय	४८	१.५०
(२२) अनिद्रा की प्राकृतिक चिकित्सा	सर्व सेवा संघ, प्रकाशन		अप्रैल	१९७९	३०००	प्रथम	६८	२.५०
			मई	१९८२	३०००	द्वितीय	७२	२.५०
			दिसम्बर	१९८५	३०००	तृतीय	७२	३.००
(२३) हर्नियां की प्राकृतिक चिकित्सा	,, ,	डा० हीरालाल	दिसम्बर	१९८५	३०००	प्रथम	५६	३.००
(२४) संधीवात की प्राकृतिक चिकित्सा	,, ,,	डा० भरतनारायण पाण्डेय	नवम्बर	१९८६	३०००	प्रथम	५६	३.००
(२५) प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार	जनस्वास्थ्य प्रकाशन,	डा० हीरालाल	नवम्बर	१९८६	२०००	प्रथम	९०	८.००

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, कविता, यात्रा, संस्मरण

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
१	धीरज का फल	खडेलवाल जैन हितेच्छु	८-४-३१
२	तप फल	विजय	११-१०-३१
३	यूरप भ्रमण	अग्रवाल	६-६-३१
४	,, ,,	,,	१२-८-३१
५	शान्ति नाथ बन्दना	वीर	२३-१२-३१
६	यूरप भ्रमण	जैन मित्र	३०-१२-३१
७	,, ,,	,,	६-१२-३१
८	,, ,,	,,	२३-१२-३१
९	,, ,,	अग्रवाल	६-१२-३१
१०	इटली	विजय	१३-१२-३१
११	हवाई जहाज	बानर	९-१-३२
१२	विज्ञापन के उपाय	अग्रवाल	९-१-३२
१३	भारत मे लोहे का व्यवसाय	विशाल भारत	९-२-३२
१४	यूरप और भारत के मेवे वाले	बासुरी	९-३-३२
१५	भारत बनाम यूरप की रेलवे	रेलवे समाचार	२८-३-३२
१६	भारत मे लोहे का व्यवसाय	बासुरी	,,
१७	यूरप भ्रमण	अग्रवाल	१६-५-३२
१८	कौन सुखी	,,	,,
१९	लुबरीकेटिंग तेल का वर्तमान सभ्यता से सम्बन्ध	उद्योग धंधा	६-६-३२
२०	यूरप भ्रमण	जैन मित्र	२२-६-३२
२१	,, ,,	अग्रवाल	,,
२२	मोटर टायरों की निर्माण कला	,,	३-७-३२

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
२३	यूरप भ्रमण	जैन मित्र	२४-७-३२
२४	,, ,,	,,	१-८-३२
२५	मुसद्दीगिरी	अग्रवाल	९-८-३२
२६	यूरप के सात मास	बानर	८-८-३२
२७	सर हरबर्ट आस्टीन	अग्रवाल	२-९-३२
२८	यूरप के सात मास	बानर	५-९-३२
२९	,, ,,	,,	५-१०-३२
३०	विनय	खडेलवाल जैन हितेच्छु	२९-१०-३२
३१	वायुयान यात्रा	लोकमान्य	२९-१०-३२
३२	लोहे की आत्म कथा	भारत मित्र	...
३३	कामना	अग्रवाल	३-११-३२
३४	लडन से हिन्दुस्तान	लोकमान्य	७-११-३२
३५	लडन से हिन्दुस्तान	,,	१४-११-३२
३६	यूरप के सात मास	बानर	२२-११-३२
३७	सुधार या विगाड	अग्रवाल	२९-११-३२
३८	नापने के फीते के कारखाने पर एक दृष्टि	,,	,,
३९	जार्ज ईस्टमैन	उद्योग धन्धा	४-१२-३२
४०	एक सामाजिक दृश्य	दिगम्बर जैन	२५-११-३२
४१	यूरप के सात मास	बानर	५-११-३२
४२	व्यापार से मशीनें	विश्वमित्र	७-१-३३
४३	प्रकाश और नवीन युग	अग्रवाल	८-१-३३
४४	मेरी आत्मकथा	बानर	१०-१-३३
४५	भविष्य के भवन	अग्रवाल	८-२-३३
४६	ल्यूब्रिकेटिंग तेल और वर्तमान समस्या	टिस्को रिव्यू	६-२-३३
४७	सिगरेट	,,	,,
४८	स्वर्गीय जार्ज इस्टमैन	,,	,,

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
४९	यूरप के सात मास	बानर	१८-३-३२
५०	नवयुवक का सुधार	जैन मित्र	३०-४-३३
५१	भारत में नवीन उद्योग धंधों का भविष्य	विश्वमित्र	१-९-३३
५२	कम पूंजी के धन्धे	अग्रवाल	१-८-३३
५३	विज्ञापन कला	टिस्को रिव्यू	२१-९-३३
५४	सिगरेट का आविष्कार	ओसवाल नवयुवक	९-११-३३
५५	स्वर्गीय जार्ज इस्टमैन	,, ,,	,,
५६	वर्तमान व्यापारिक समस्या	भारत मित्र	२४-१०-३३
५७	तिब्बत की स्त्रियो की विचित्र स्थिति	अग्रवाल	१६-११-३३
५८	कौन सुखी	वीर	१५-१२-३३
५९	उत्तर बिहार मे ध्वंस-लीला	विश्वमित्र	१-३-३४
६०	यूरप के सात मास	बानर	......
६१	दीपक	टिस्को रिव्यू	१६-३-३४
६२	व्यापार से मशीनें	हस	१०-४-३४
६३	मोतीहारी की दुर्दशा	विश्वमित्र	२-२-३४
६४	,, ,, ,,	,,	७-२-३४
६५	भूकम्प पीड़ित प्रदेशों का आखो देखा दृश्य	वीर	१-४-३४
६६	वर्तमान व्यापारिक समस्या	अग्रवाल	१-६-३४
६७	टाइपराइटर	हंस	६-६-३४
६८	भविष्य के मकान	टिस्को रिव्यू	१८-६-३४
६९	कम पूजी के नवीन व्यापार	गंगा	१९-६-३४
७०	यूरप के कुजड़े	सुधा	२०-६-३४
७१	समाज सुधार पर लोगो की भावना	राष्ट्रबन्धु	२५-६-३४
७२	कमी	,,	१-७-३४

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
७३	लन्दन के सिनेमा के सस्मरण	सिनेमा ससार	१-८-३४
७४	भारत के दूसरे छोर पर	सरस्वती	९-८-३४
७५	भूकम्प के बाद	जागरण	२०-८-३४
७६	सुधार	राष्ट्रबन्धु	१५-८-३४
७७	यूरपीय रेलवे	हस	२४-८-३४
७८	नवीन उद्योग-धन्धे	युगान्तर	१०-९-३४
७९	मोटर-टायर	टिस्को रिव्यू	१५-९-३४
८०	रेशम	चाद	१९-९-३४
८१	कलकत्ते मे हिन्दी की हत्या	विशाल भारत	४-१०-३४
८२	आधुनिक व्यापार मे यन्त्रो का उपयोग	स्वतत्र भारत	७-११-३४
८३	युवक का भविष्य	राष्ट्रबन्धु	२९-११-३४
८४	मोटर टायरों के कारखाने एक दिन	सुदर्शन	९-१२-३४
८५	रूसी महिला की शिष्टता	चाद	२९-१-३५
८६	कलकत्ते मे हिन्दी की दुर्दशा	काव्य कलाधर	५-२-३५
८७	विज्ञापन के साधन	वीणा	१३-२-३५
८८	वर्तमान व्यापार मे यन्त्रो का उपयोग	बेकार सखा	१४-३-३५
८९	नापने के फीते के कारखाने मे एक दिन	टिस्को रिव्यू	२०-३-३५
९०	फ्रांस की प्रसिद्ध मदिरा	हस	२६-५-३५
९१	टाइप राइटर	टिस्को रिव्यू	१४-८-३५
९२	सीमा प्रान्त की यात्रा	,, ,,	१८-१२-३५
९३	नकली रेशम	अग्रवाल	८-९-३५
९४	दो शब्द	मा० रिली० सो०	१-३-३६
९५	फारवर्ड	,, ,,	,,
९६	,,	,, ,,	,,

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
९७	निवेदन	मा० रिली० सो०	१-४-३६
९८	हमारी कामना	,, ,,	४-४-३६
९९	शुभ कामना	,, ,,	१०-५-३६
१००	स्वस्थ जीवन ही सच्चा सुख है	,, ,,	१५-५-३६
१०१	निवेदन	,, ,,	२२-५-३६
१०२	हमारे बच्चो का स्वास्थ्य	,, ,,	१८-७-३६
१०३	बर्लिन मे एक सप्ताह	अग्रवाल	१९ ७-३६
१०४	वायुयान चालकों के अनुभव	मारवाडी	१०-८-३६
१०५	व्यायामशालाएँ	मा० रिली० सो०	२२-८-३६
१०६	हमारी गृह देवियों का स्वास्थ्य	,,	१०-१०-३६
१०७	वायु विमान चालकों के अनुभव	टिस्को रिव्यू	१६-१०-३६
१०८	देरी क्यों	वीर	१३-१०-३६
१०९	आलम्पिक खेल	मा० रिलीफ सो०	१०-११-३६
११०	स्वास्थ्य डायरी	,,	१२-११-३६
१११	वायु विमान चालकों के कौतूहलपूर्ण अनुभव	टिस्को रिव्यू	१५-११-३६
११२	स्वीडेन की गोटर नहर	विश्वमित्र	१-२-३७
११३	कुछ कौतूहलपूर्ण सरनामे	चाद	१२-३-३७
११४	हमारा स्वास्थ्य (सम्पादकीय)	मार० रिलीफ सो०	२०-३-३७
११५	निवेदन	मार० रिलीफ सो०	२८-३-३७
११६	स्वीडन की गोटा नहर	वीर	१३-३-३७

१-४-६७ से ३०-६-४६ तक में ११७ से २७० तक के लेखों की फाईल खो गई है

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
२७१	बर्मा की अवस्था	आदर्श	८-७-४६
२७२	समाज मे कार्यकर्त्ताओ की कमी	समाज सेवक	१-४-४७
२७३	प्राकृ० चिकि० के अनुभूत प्रयोग	जैन मित्र	१७-४-४७

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
२७४	हमारी विदेश यात्रा	विश्वमित्र	१५-५-४७
२७५	,, ,, ,,	वीर	२४-५-४७
२७६	क्वीन एलिजावेथ	वीर भूमि	...१-४७
२७७	प्राकृतिक चिकित्सा	सहयोगी	७-३-४८
२७८	प्राकृतिक चिकित्सा	लोकमान्य	२-५-४८
२७९	प्राकृ० चिकि० के कटु अनुभव	,,	४-९-४८
२८०	प्राकृतिक चिकित्सा	विश्वमित्र	२१-६-४८
२८१	हमारा स्टैण्डर्ड	समाज सेवक	दीपावली ४८
२८२	वायुयान चालको के विचित्र अनुभव	सन्मार्ग	३०-१०-४८
२८३	अमेरिका का एक जवान बूढा	विश्वमित्र	३०-१०-४८
२८४	प्रान्तीयता का विष	सन्मार्ग	२६-११-४८
२८५	प्राकृतिक चिकित्सा के कुछ नये अनुभव	सन्मार्ग	१८-१-४९
२८६	,, ,, ,,	सहयोगी	७-२-४९
२८७	,, ,, ,,	जैन मित्र	माघ वी स० २४७५
२८८	हमारे स्वास्थ्य के लिये चीनी	सन्मार्ग	९-५-४९
२८९	प्राकृतिक चिकित्सा	जैन जगत	,,
२९०	,, ,,	सहयोगी	२७-२-५०
२९१	,, ,,	विश्वमित्र	२०-२-५०
२९२	विद्यार्थी और उनका स्वास्थ्य	जैन जगत	मार्च-५१
२९३	प्राकृतिक चिकित्सा से लाभ	विश्वमित्र	२५-५-५१
२९४	विदेशो मे निरामिष आहार	समाज सेवक	,,
२९५	प्रा० चि० की अमोघ शक्ति	सहयोगी	१४-७-५१
२९६	गलत धारणा	वीर वाणी	अगस्त-४१
२९७	जैनी बीमार क्यों पड़े	ज्ञानोदय	१-९-५१
२९८	शाकाहार	,,	२८-४ ५२
२९९	स्वास्थ्य धाम की यात्रा	,,	१४-९-५२

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
३००	प्राकृतिक जीवन	ज्ञानोदय	१४-९-५२
३०१	प्रा० चि० से लाभ	,,	,,
३०२	प्रा० चि० में बिलम्ब क्यों	,,	,,
३०३	जले पर प्राकृतिक चिकित्सा	सन्मार्ग	,,
३०४	धर्म और स्वास्थ्य	,,	२२-९-५२
३०५	प्रार्थना और उपवास मे रोगनाशक शक्ति	,,	४-१२-५२
३०६	सरजू महाराज को चिकित्सा से लाभ	विश्वमित्र	१९-१-५३
३०७	प्रा० चि० से लाभ	,,	२२-२-५३
३०८	जब एक ही अनेक हो जाता है	ज्ञानोदय	१९५३
३०९	दश लाक्षणी पर्व पर उपवास की महिमा	,,	७-४-५३
३१०	कैंसर-एक भयानक रोग	,,	१-७-५३
३११	गर्मी में करने योग्य व्यायाम और भोजन	विश्वमित्र	२२ ७-५३
३१२	परोपकार से स्वास्थ्य	जीवन साहित्य	,,
३१३	,, ,, ,,	सन्मार्ग	२४-७-५३
३१४	बालो की रक्षा	विश्वमित्र	५-९-५३
३१५	दातों की रक्षा	,,	१२-९-५३
३१६	घरेलू चिकित्सा	,,	,,
३१७	नित्य नया भोजन	,,	१९-९-५३
३१८	कोला से लाभ या हानी	,,	,,
३१९	सर्जरी का अध्ययन	,,	२५-९-५३
३२०	दवा एक बहाना मात्र	,,	३०-१०-५३
३२१	रात्रि के पहले भोजन से लाभ	,,	१०-१०-५३
३२२	एक दिन रसोइया ने जब ककड़ का साग बनाया था	,,	,,

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
३२३	क्या चीनी हमारे स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद हैं	विश्वमित्र	२४-१०-५३
३२४	प्राकृतिक चिकित्सा की चर्चा	,,	१५-११-५३
३२५	मनुष्य को विश्राम की आवश्यकता	,,	५-१२-५३
३२६	समाज का स्वास्थ्य खराब क्यो	,,	३१-१२-५३
३२७	मेला और स्वास्थ्य	,,	१-१-५४
३२८	लदन मे हिन्दू मदिर और धर्मशाला	,,	१७-१-५४
३२९	विदेशो में मासाहार का विरोध	,,	२१-१-५४
३३०	कोमेट हवाई जहाज मे	नया जीवन	फरवरी-५४
३३१	बवासीर और उसका इलाज	विश्वमित्र	२०-२-५४
३३२	समाज का स्वास्थ्य खराब क्यों	भविष्य	मार्च-५४
३३३	४० से ८५ वर्ष के युवको का क्लब	ज्ञानोदय	,,
३३४	स्वास्थ्य का लेखा जोखा	विश्वमित्र	२०-४-५४
३३५	साफ कलकत्ता	सन्मार्ग	१३-८-५४
३३६	स्कूली बच्चो का जलपान	विश्वमित्र	३०-१०-५४
३३७	टोन्सिल कटाने से पुरुषत्व की कमी	सन्मार्ग	३-१-५५
३३८	बाढ के कारण उडिसा की दुर्दशा	लोकमान्य	१६-५-५५
३३९	उडिसा बाढ का आँखो देखा हाल	विश्वमित्र	,,
३४०	प्राकृतिक चिकित्सा से पुरुषो को लाभ	,,	२६-११-३५
३४१	पढने वाले बच्चो का जलपान	,,	२९-१०-५५
३४२	कैंसर की प्राकृतिक चिकित्सा	...	...
३४३	स्वास्थ्य के लिए निरामिष भोजन	सन्मार्ग	१०-२-५६
३४४	स्वास्थ्य के लिये नीद आवश्यक	विश्वमित्र	,,
३४५	कसाईखाने को बन्द कर कारपोरेशन जल व व्यायामशाला की व्यवस्था करें	सन्मार्ग	४-४-५६
३४६	कलकत्ता कारपोरेशन के बजट पर	लोकमान्य	४-४-५६
३४७	हैजे का कारण, लक्षण और निवारण	विश्वमित्र	८-५-५६
३४८	स्वर्गीय श्री मूलचन्द्रजी	,,	७-११-५६

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
३४९	मोटापा का मोह	विश्वमित्र	२७-११-५६
३५०	प्राकृतिक चिकित्सा	,,	२६-११-५६
३५१	व्यायाम-साधना	स्वस्थ जीवन	जुलाई-५६
३५२	भोजन क्यों और कैसे	,,	अगस्त-५६
३५३	विद्यार्थियों का भोजन	,,	सितम्बर-५६
३५४	पेट	,,	नवम्बर-५६
३५५	मोटापा कम करने का उपाय	,,	जनवरी-५७
३५६	स्वास्थ्य की नींव दृढ़ कीजिये	,,	मार्च-५७
३५७	पिताजी तब और अब	,,	अप्रैल-५७
३५८	हमारी बड़ी आँत	,,	मई-५७
३५९	मेरे जीवन दाता हैं	,,	जुलाई-५७
३६०	प० नेहरू की चुस्ती का रहस्य	,,	अगस्त-५७
३६१	मुरे रोज शाकाहारी है	,,	सितम्बर-५७
३६२	व्यायाम और भोजन	,,	अक्टूबर-५७
३६३	मेरा दस दिन का उपवास	,,	नवम्बर-५७
३६४	चीनी हानिकारक क्यों	,,	फरवरी-५८
३६५	योगाभ्यास और नेहरूजी	,,	मार्च-५८
३६६	आदरणीय रामदेवजी चोखानी	विश्वमित्र	...
३६७	सक्षिप्त कार्य विवरण	स्वस्थ जीवन	मई-५८
३६८	मालिश के कड़वे-मीठे अनुभव	,,	जुलाई-५८
३६९	एक धनकुबेर से प्रा० चि० के संबंध मे बातचीत	,,	अगस्त-५८
३७०	एनिमा या सिनेमा	,,	,,
३७१	मेरा दस दिन का उपवास	जैन जगत	,,
३७२	मोटापा कम करने का उपाय	विश्वमित्र	...
३७३	जलने पर उपचार	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-५८
३७४	रक्तचाप की प्रा० चि०	,,	नवम्बर-५८
३७५	जनाना और मर्दाना भोजन	,,	दिसम्बर-५८

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
३७६	हृदय रोग	स्वस्थ जीवन	जनवरी-५९
३७७	मैं होश में रहता तो यह इलाज न कराता	,,	मार्च-५९
३७८	न रिश्तेदारी न पुत्र का सरक्षण	,,	अप्रैल-५९
३७९	हाथ का दर्द, आँख का दर्द, खाँसी	,,	मई-५९
३८०	फोडे, फुन्सी ज्वर (बुखार)	,,	जून-५९
३८१	आसाम की बाढ़	विश्वमित्र	९-७-५९
३८२	आसाम के बाढ पीडितों के लिए सोसाइटी द्वारा सेवा कार्य	,,	१०-७-५९
३८३	असम की भयानक बाढ	सन्मार्ग	,,
३८४	आन्त्रक्षय (इन्टेस्टाइन टी बी)	स्वस्थ जीवन	अग० सित०-५९
३८५	स्वास्थ्य चाहने वालों का भोजन	,,	अक्टूबर-५९
३८६	सिनेमा गृह, ट्राम और बसो मे धूम्रपान बदी	,,	नवम्बर-५९
३८७	सूर्य नमस्कार	कल० म्यूनि० गजट	२३-३-५९
३८८	स्कूल के बच्चो का जलपान	जैन जगत	जनवरी-६०
३८९	ढेबर भाई का वर्क फास्ट	स्वस्थ जीवन	,,
३९०	हार्निया के कारण और उपचार	,,	,,
३९१	अधिवेशन मे नया अधिवेशन	,,	फरवरी-६०
३९२	फल नही खाऊँगा क्योकि फायदा हो जायेगा	,,	मार्च-६०
३९३	निसर्गजीवी बाबू धर्मनारायणजी	,,	,,
३९४	रोग एक : उपचार दो	,,	अप्रैल-६०
३९५	विश्व-विजयी गामा-अप्राकृतिक भोजन	,,	,,
३९६	चतुर्थ वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट का परिचय	,,	मई-६०
३९७	प्राकृतिक चिकित्सा और राजा बलदेवदास	,,	जून-६०

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
३९८	सस्था के भवन का शिलान्यास	स्वस्थ जीवन	जुलाई-६०
३९९	क्या प्रा० चि० महगी है	,,	अगस्त-६०
४००	अकल से काम न लेकर आज नकल से काम लेते हैं	,,	,,
४०१	दांत कैसे निकलते हैं	,,	सितम्बर-६०
४०२	जवानी का पौधा	,,	,,
४०३	खुजली के लिए मिठाई बन्द	,,	अक्टूबर-६०
४०४	मुझे कोई जडी दें	,,	नवम्बर-६०
४०५	महात्मा का मन्त्र-प्राकृतिक चिकित्सा का दोष	,,	दिसम्बर-६०
४०६	बालों का खिजाब-दांत कहाँ बनवाये	,,	जनवरी-६१
४०७	सूरजमुखी-एक पौष्टिक आहार	नवनीत	,,
४०८	औषधियो के संस्कार	स्वस्थ जीवन	फरवरी-६१
४०९	खानपान मे परिवर्तन	,,	मार्च-६१
४१०	हमारी शारीरिक अस्वस्थता एक अभिशाप	नाग० स्वा० सघ	,,
४११	बादाम के हलुवे से ताकत के बनिस्वत बीमारी	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-६१
४१२	दिया तले अँधेरा	,,	,,
४१३	ताकत का मोह	,,	मई-६१
४१४	व्यायाम और भोजन	मा० पु० पत्रिका	,,
४१५	प्रा० चि० का विकास-क्रम	स्वस्थ जीवन	जुलाई-अगस्त-६१
४१६	जर्मनी मे प्रा० चि० की स्थिति	,,	सितम्बर-६१
४१७	आम नुक्सान करते हैं	,,	,,
४१८	अमरूद नुक्सान करते हैं	,,	,,
४१९	प्रा० चि० के चक्कर मे क्यों फँसे	,,	अक्टूबर-६१

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
४२०	पेट के दर्द के लिए आसन	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-६१
४२१	बसन्त नेचर क्योर अस्पताल	,,	नवम्बर-६१
४२२	फोडों ने शिकायत की	,,	दिसम्बर-६१
४२३	जले का इलाज पानी	,,	जनवरी-६२
४२४	प्राकृतिक चिकित्सा का जादू	,,	फरवरी-६२
४२५	भागलपुर मे प्रा० चिकित्सा-केन्द्र का उद्घाटन	,,	मार्च-६२
४२६	भागलपुर मे जवाहरलालजी	,,	,,
४२७	खूब गुजरेगी जब मिल बैठेंगे दीवाने दो	,,	अप्रैल-६२
४२८	तब और अब	,,	मई-६२
४२९	सूर्य किरणो से शक्ति	सन्मार्ग	१५-५-६२
४३०	दो तस्वीरे	स्वस्थ जीवन	जून-६२
४३१	हैजे की प्रा० चिकित्सा	विश्वमित्र	११-६-६२
४३२	,, ,, ,,	सन्मार्ग	१९-६-६२
४३३	डा० राय के सस्मरण	विश्वमित्र	४-७-६२
४३४	नए-पुराने अन्धे विश्वास	नया जीवन	जुलाई-६२
४३५	मिट्टी तेरे यह ठाट	स्वस्थ जीवन	,,
४३६	इन्फ्लूएन्जा से आराम कैसे	प्राकृ० जीवन	,,
४३७	डा० राय के सस्मरण	स्वस्थ जीवन	अगस्त-६२
४३८	गलत धारणाएँ	,,	,,
४३९	आँखो की रक्षा कीजिए	जैन जगत	,,
४४०	रक्तचाप	सन्मार्ग	१३-८-६२
४४१	मोटापा एक रोग	विश्वमित्र	२०-८-६२
४४२	पिताजी की बीमारी	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-६२
४४३	रूस मे प्राकृतिक चिकित्सा	,,	,,
४४४	जब धूम्रपान मे रोक लगी	,,	अक्टूबर-६२
४४५	धूम्रपान और कैंसर	,,	,,

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
४४६	राजा का हवा से इलाज	स्वस्थ जीवन	नवम्बर-६२
४४७	कब्ज दूर करने के उपाय	,,	,,
४४८	मिर्गी का हाल	,,	दिसम्बर ६२
४४९	गाजर का महत्त्व	सन्मार्ग	२९-१२ ६२
४५०	रथ यात्रा का हाल	स्वस्थ जीवन	जनवरी-६३
४५१	स्वास्थ्यप्रद भोजन का चुनाव	जैन जगत	,,
४५२	मोरारजी भाई का सादा जीवन-क्रम	स्वस्थ जीवन	फरवरी-६३
४५३	एक्जिमा पर प्रा० चि० का प्रयोग	सन्मार्ग	२०-२-६३
४५४	मोरारजी भाई का सादा जीवन-क्रम	भूदान यज्ञ	२२-२-६३
४५५	१९६३ मे हम क्या करें	स्वस्थ जीवन	मार्च-६३
४५६	समझाने का ढग-आंख और मिट्टी	,,	,,
४५७	सुख की नीद	आरोग्य	,,
४५८	बालो को गिरने-झडने से रोकिए	जीवन साहित्य	,,
४५९	बग प्रादेशिक हि० सा० सम्मेलन—चतुर्थ अधिवेशन	...	...
४६०	गाजर का महत्व	प्राकृ० जीवन	,,
४६१	गाजर खाइये . स्वस्थ रहिये	नया जीवन	,,
४६२	सडको पर दौडने वाली मौत	हमारा मन	,,
४६३	धूम्रपान से कैंसर (गुज०)	कल्याण यात्रा	अप्रैल-६३
४६४	दिल्ली दुग्ध योजना—बीकानेर से दूध	गो सवर्धन	अप्रैल-६३
४६५	मोरारजी भाई टीके लेने के विरोधी	स्वस्थ जीवन	,,

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
४६६	मसूढ़ो की मालिश	स्वस्थ जीवन	मई-६३
४६७	मोटापा का कारण—दूर करने का उपाय	प्राकृ० जीवन	,,
४६८	धूम्रपान से बचिये	जैन जगत	,,
४६९	हिन्दी के तार	विश्वमित्र	२२-५-६३
४७०	गंजेपन से बचिये	,,	२४-६-६३
४७१	स्त्री शिक्षा और प्राकृ० चिकित्सा	,,	जून-६३
४७२	अच्छे स्वभाव के भी व्यक्ति रोगी क्यो	,,	,,
४७३	दवाओ से बचिये	कल्याण	जुलाई-६३
४७४	श्री मोरारजी भाई का भोजन प्राकृ० भोजन	स्वस्थ जीवन	,,
४७५	भोजन आग पर न पकाये	,,	,,
४७६	शारीरिक श्रम के प्रति हमारी उपेक्षा	स्वस्थ जीवन	अगस्त-६३
४७७	सकटकालीन स्थिति और राष्ट्र का स्वास्थ्य	सन्मार्ग	६-८-६३
४७८	जहा पानी की अपेक्षा दूध आसानी से बिकता है	,,	२७-८-६३
४७९	दवाओ से बचियें	प्रकृति	अगस्त-६३
४८०	पीठ का दर्द	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-६३
४८१	स्टेनली लीफ के अनुभव	,,	,,
४८२	गोपालन मे एक नया प्रयोग	गोसम्वर्धन	,,
४८३	पोटेन्शियालिटीज आफ नेचर क्योर इन इण्डिया	नादर्न इण्डिया प०	,,
४८४	ब्रोंकियल एलमेन्ट्स	कल० यूनी० मैग०	,,
४८५	सत्व चिकित्सक जिन्हें अपने पर ही विश्वास नही है	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-६३

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
४८६	गजेपन से बचिये	स्वस्थ जीवन	नवम्बर-६३
४८७	डायरिया का स्वानुभूत नुस्खा	,,	,,
४८८	दवाएं नहीं, प्रकृति स्वास्थ्य प्रदान करती है	जीवन साहित्य	,,
४८९	,, ,, ,,	जैन गजट	१४-११-६३
४९०	लकवा और उसकी चिकित्सा	सन्मार्ग	२३-११-६३
४९१	अमेरिका मे प्रा० चि० की प्रगति	विश्वमित्र	२२-१२-६३
४९२	लकवा	प्रकृति	दिसम्बर-६३
४९३	शक्ति राजू से भक्ति राजू	स्वस्थ जीवन	,,
४९४	सोयाबीन की उपयोगिता	,,	,,
४९५	गामा को बिठाकर मैंने हवाई जहाज चलाया	धर्मयुग	५-१-६४
४९६	अमेरिका मे प्रा० चिकित्सा की प्रगति	स्वस्थ जीवन	जनवरी-६४
४९७	डायरी-लकवा की चिकित्सा	,,	,,
४९८	धूम्रपान छोडने के कुछ उपाय	,,	फरवरी-६४
४९९	डायरी—"फ्लू"	,,	,,
५००	हिन्दी के सा० पत्रकार— स्व० प० विष्णुदत्त शुक्ल	सन्मार्ग	२९-२-६४
५०१	सच्ची शिक्षा	जीवन साहित्य	मार्च-६४
५०२	डायरी—कैन्सर	स्वस्थ जीवन	,,
५०३	गहरी नीद सोइये	,,	,,
५०४	हमारे विचारो पर स्वास्थ्य का प्रभाव	,,	,,
५०५	डायरी—माथे मे सीग	,,	अप्रैल-६४
५०६	डायरी—दवाओं के भक्त	स्वस्थ जीवन	मई-६४
५०७	गाजर का रस	,,	,,

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
५०८	डायरी—मुड़ा घुटना	स्वस्थ जीवन	जून-६४
५०९	डायरी—मुह के छाले	,,	जुलाई-६४
५१०	शरीर को सुगठित बनायें	,,	,,
५११	कौतूहलपूर्ण सरनामे	विश्वमित्र	१२-७-६४
५१२	जब मेरी ससुराल वालो ने मेरे असली दांतो को नकली समझा	धर्मयुग	१९-७-६४
५१३	मुझे आश्चर्य होता है कि लोग बीमार क्यो पडते हैं	नया जीवन	जुलाई-६४
५१४	दमा और उससे बचने के उपाय	विश्वमित्र	२४-८-६४
५१५	डायरी—भोजन तालिका	स्वस्थ जीवन	अगस्त-६४
५१६	हमारे भोजन मे विटामिन और खनिज लवण का सतुलन	,,	,,
५१७	प्राकृतिक चिकित्सा से उपचार जल्दी	,,	सितम्बर-६४
५१८	जन्म के समय मोटे बच्चे	,,	,,
५१९	जयपुर की बाढ़	विश्वमित्र	७-९-६४
५२०	,, ,,	सन्मार्ग	,,
५२१	सफेद बाल से काले	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-६४
५२२	प्राकृ० चिकि० उसका वरदान	,,	,,
५२३	नीद स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है	,,	नवम्बर-६४
५२४	डायरी—सोहन हलुवा	,,	,,
५२५	गाजर खाइये	,,	दिसम्बर-६४
५२६	पांच-सात वर्ष बडा हू	,,	,,
५२७	खनिज लवण	,,	जनवरी-६५
५२८	डायरी—भोजन एक बार	,,	,,
५२९	मोटापा कम करने के उपाय	,,	फरवरी-६५
५३०	डायरी—कैन्सर	,,	,,
५३१	डाव की उपयोगिता	,,	मार्च-६५

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
५३२	जलने पर पानी का प्रयोग	स्वस्थ जीवन	मार्च-६५
५३३	"भू" से छेड़छाड़	धर्मयुग	११-४-६५
५३४	अपनी सुन्दरता को बढाइये	नया जीवन	अप्रैल-मई-६५
५३५	डायरी—छूत की बीमारी	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-६५
५३६	डायरी—एक लक्ष्य दो मार्ग	स्वस्थ जीवन	मई-६५
५३७	डायरी-भूत पिशाच और टायफायड	,,	जून-६५
५३८	आजकल के अस्पताल एक व्यापार हैं	,,	,,
५३९	रोगो को दूर करने मे उपवास का महत्व	विश्वमित्र	२१-६-६५
५४०	मधुमेह का कारण और बचने का उपाय	जैन जगत	जुलाई-६५
५४१	डायरी—एक्जिमा	स्वस्थ जीवन	,,
५४२	पीठ का दर्द	,,	अगस्त-६५
५४३	मसाजर का विज्ञापन	,,	,,
५४४	रोगो को दूर करने मे उपवास का महत्व	जीवन साहित्य	,,
५४५	इण्डियन सेज वेजटेबुल्स की टु हेल्थ	पेट्रियाट	७-८-६५
५४६	डायरी—हाथ के चोट	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-६५
५४७	गठिया का दर्द गया	,,	अक्टूबर-६५
५४८	भारत मे प्राकृतिक चिकित्सा	,,	नवम्बर-६५
५४९	गाजर खाइये—स्वस्थ रहिये	सम्यक दृष्टि	,,
५५०	बिना जमीन की खेती	सन्मार्ग	३-११-६५
५५१	डायरी—दूध का दुरूपयोग	स्वस्थ जीवन	दिसम्बर-६५
५५२	डायरी—कान का नासूर	,,	जनवरी-६६

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
५५३	दवाएं नही-शरीर ही अपने को रोग-मुक्त कर सकता है	सन्मार्ग	९-१-६६
५५४	डायरी—प्राकृतिक चिकित्सा का अधिवेशन	स्वस्थ जीवन	फरवरी-६६
५५५	कलकत्ता अधिवेशन मे परिषद के मत्री श्री धर्मचन्द सरावगी	स्वस्थ जीवन	फरवरी-६६
५५६	दस अस्पताल बनाने से एक व्यायामशाला बनाना अधिक उत्तम	रांची एक्सप्रेस	१३-२-६६
५५७	पुरानी हवाई यात्राए चन्द यादे	धर्मयुग	२०-२-६६
५५८	डायरी–उपवास द्वारा स्वास्थ्य	स्वस्थ जीवन	मार्च-६६
५५९	झुर्रियो से बचिये	सा० हिन्दुस्तान	२०-३-६६
५६०	डायरी—प्राकृतिक चिकित्सा का चमत्कार	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-६६
५६१	लन्दन मे प्राकृतिक चिकित्सा	सन्मार्ग	२४-४-६६
५६२	डायरी– गठिया	स्वस्थ जीवन	मई-६६
५६३	सुख की नीद सोने के उपाय	सन्मार्ग	१६-५-६६
५६४	डायरी—गुड और चीनी	स्वस्थ जीवन	जून-६६
५६५	डायरी—साइटिका	,,	जुलाई-६६
५६६	स्वास्थ्य के लिए उपवास और प्रा० जीवन	भूदान यज्ञ	१०-६-६६
५६७	ब्रिटेन मे प्राकृतिक चिकित्सा	स्वस्थ जीवन	अगस्त-६६
५६८	डायरी—इन्जेक्शन	,,	,,
५६९	लन्दन मे एक चिकित्सा केन्द्र में	नया जीवन	जुलाई-६६
५७०	क्या चेचक का टीका अनिवार्य है	अपरा	अगस्त-६६
५७१	डायरी—गठिया	स्वस्थ जीवन	दिसम्बर-६६
५७२	विदेशो मे उपवास का सफल प्रयोग	,,	,,
५७३	ब्रिटेन मे प्राकृतिक चिकित्सा	,,	,,
५७४	डायरी—गरम टब का जादू	,,	अक्टूबर-६६

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
५७५	ब्रिटेन में प्राकृतिक चिकित्सा	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-६६
५७६	,, ,,	,,	नवम्बर-६६
५७७	डायरी—पेट का ट्यूमर	,,	,,
५७८	डायरी—गठिया	,,	दिसम्बर-६६
५७९	आजकल के सौंदर्य-प्रसाधन	जैन जगत	जनवरी-६७
५८०	प्राकृतिक चिकित्सा की ओर रूस की प्रगति	स्वस्थ जीवन	,,
५८१	भोजन पचाने का नुस्खा	,,	,,
५८२	डायरी—हार्निया	,,	मार्च-६७
५८३	चोट लगने पर रक्त चढ़ाना जरूरी है या उपवास	भा० प्रा० वि०	६८
५८४	चोट का इलाज	स्वस्थ जीवन	मई-६९
५८५	आधुनिक चिकित्सा के नाम पर होने वाली अनावश्यक चीरफाड़	भा० प्रा० वि०	...
५८६	प० नेहरू की चुस्ती का रहस्य	स्वस्थ जीवन	नवम्बर-७०
५८७	सुख की नींद सोने के उपाय	भा० प्रा० वि०	... ७०
५८८	मैक्रोवायटिक	,,	... ७०
५८९	डायरी—हृदय रोग	प्राकृ० जीवन	अगस्त-७१
५९०	डायरी—उपवास	,,	अक्टूबर-७१
५९१	डायरी—हार्निया	,,	नवम्बर-७१
५९२	डायरी—प्राकृतिक भोजन	,,	दिसम्बर-७१
५९३	डायरी—प्राकृतिक जीवन की अनभिज्ञता	प्रा० जीवन	जनवरी-७२
५९४	डायरी—प्राकृतिक चिकित्सा सस्ती या मेंहगी	स्वस्थ जीवन	जुलाई-७२
५९५	डायरी—बड़ी उम्र मे भी व्यायाम का महत्व	,,	अगस्त-७२
५९६	डायरी—केवल संयम चाहिए	,,	सितम्बर-७२

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
५९७	स्वास्थ्यवर्द्धक चना	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-७२
५९८	आँख है तो जहान है	,,	नवम्बर-७२
५९९	गेंदे के गाछ के रस का चमत्कार	,,	दिसम्बर-७२
६००	गरम ठंडे का जादू	निसर्ग अ० आरो०	अक्टूबर-७२
६०१	खाड का महत्व	,,	सितम्बर-७२
६०२	पश्चिम को पूर्व से प्रकाश की आशा	स्वस्थ जीवन	जनवरी-७३
६०३	प्राकृतिक चिकित्सा सस्ती या मँहगी	सा० विमल	...
६०४	सिडनी में प्रा० चि० सम्मेलन	स्वस्थ जीवन	फरवरी-७३
६०५	मोटापा का कारण और दूर करने का उपाय	स्मा० माहे० व्या०	,,
६०६	व्यायामशाला ने मेरा कितना उपकार किया	,, व० ब० यु०	मार्च-७३
६०७	डायरी—कुदरती उपचार	निसर्ग ओ आरो०	फरवरी-७३
६०८	डायरी—प्राकृ० चिकि० की चर्चा	स्वस्थ जीवन	मार्च-७३
६०९	व्यायाम के सम्बन्ध मे गलत धारणायें	प्रा० जीवन	मार्च-७३
६१०	डायरी—स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-७३
६११	डायरी—मौसम की बाते	,,	मई-७३
६१२	माटी तारो या ख्वाब	नि० अ० आरो०	जून-७३
६१३	दवा न लें आराम करें	स्वस्थ जीवन	,,
६१४	गजेपन से बचिये	,,	जुलाई-७३
६१५	डायरी—फ्लू	नि० अ० आरो०	,,

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
६१६	एडीथी चोटली सुधीनो इलाज	नि० अ० आरो०	अगस्त-७३
६१७	शरीर की सफाई	,,	सितम्बर-७३
६१८	डायरी—हृदय रोग	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-७३
६१९	सप्ताह मे एक उपवास	नि० अ० आरो०	नवम्बर-७३
६२०	आठ सोलह और बत्तीस	,,	दिसम्बर-७३
६२१	टान्सील कटाने से पुरुषत्वकी कमी	स्वस्थ जीवन	जनवरी-७४
६२२	डायरी—एक इन्जेक्शन ने सारी जीवन पद्धति बदल दी	नि० अ० आ०	फरवरी-७४
६२३	डायरी—श्रद्धा वगर पण लान	,,	मा० अ०-७४
६२४	गलगोटा फूलनी डाली योना रसनो चमत्कार	,,	जुलाई-७४
६२५	डायरी—हृदय रोगनी बीमारीना बेचियो	,,	अगस्त-७४
६२६	हार्निया	नि० अ० आ०	सितम्बर-७४
७२७	भोजन मे परिवर्तन	,,	अक्टूबर-७४
६२८	गठिया का इलाज	,,	नवम्बर-७४
६२९	हवा खाओ	,,	दिसम्बर-७४
६३०	चिकित्सा का भूत	,,	जनवरी-७५
६३१	पहले ही प्रयोग मे मुझे और मेरे परिवार वालों को प्रा० चि० का कट्टर भक्त बना दिया	भारतीय प्राकृतिक विद्यापीठ पत्रिका	...
६३२	भोजन का चुनाव कैसे करे	,,	७३-७४
६३३	गाजर का रस	स्वस्थ जीवन	जनवरी-७६
६३४	गेहू के रोगनाशक गुण	विश्वमित्र	१०-५-७६
६३५	हार्ट फेल से बचने के उपाय	,,	२९-७-७६
६३६	पण्डित नेहरू की कर्मन्यता	स्वस्थ जीवन	नव० दिस०-७६
६३७	७७ मे स्वस्थ रहने के लिये २५ सूत्री कार्यक्रम	विश्वमित्र	१७-१-७७

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
६३८	शुभकामना	स्वस्थ जीवन	जनवरी-७७
६३९	हार्ट फेल से बचने के उपाय	,,	फरवरी-७७
६४०	प्राकृ० चिकि० के अनुभूत नुस्खे	,,	अप्रैल-७७
६४१	हमारे प्रधान मन्त्री श्री मोरारजी भाई का आहार	,,	मई-७७
६४२	मोरारजी भाई क्या खाते हैं	प्रकृति वानी	अप्रैल-७७
६४३	स्वस्थ रहने के लिये २५ सूत्री कार्यक्रम	माहेश्वरी	मई-७७
६४४	आरोग्य पचीसी	स्वस्थ जीवन	जून-७७
६४५	दवाइयो का जाल	,,	जुलाई-७७
६४६	निरोग रहने का रहस्य	,,	अगस्त-७७
६४७	शुद्ध वायु का उपयोग	राजस्थानी वीर	जुलाई-७७
६४८	,, ,, ,,	गोधन	,,
६४९	बिना पैसे का टानिक	जैन जगत	अगस्त-७७
६५०	प्रसाद बाँटकर खाये	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-७७
६५१	बिना खर्च का टानिक	प्राकृ० पत्रिका	,,
६५२	इस धनी से मजदूर अच्छा	स्वस्थ जीवन	अक्टूबर-७७
६५३	आरोग्य पचीसी	म० पा० चि० स्यारि०	नवम्बर-७७
६५४	निरोग रहने के लिए उपयुक्त आहार लेना सीखे	प्रा० पत्रिका	दिस-जन०-७८
६५५	बवासीर से कैसे बचे	स्वस्थ जीवन	फरवरी-७८
६५६	स्कूल कालेजो मे बच्चो को भी सीखाना चाहिए	प्रा० पत्रिका	मार्च-७८
६५७	दमे का इलाज	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-७८
६५८	चुम्बक चिकित्सा के प्रयोग	,,	मई-७८
६५९	बवासीर के कारण	,,	जून-७८
६६०	दमे का इलाज	प्रा० पत्रिका	अगस्त-७८
६६१	जनाना मर्दाना आहार	स्वस्थ जीवन	सितम्बर-७८

क्रमांक	शीर्षक	पत्र का नाम	दिनांक
६६२	जब मरना ही है तो छूरिया खाकर भी क्यों मरे	,,	अक्टूबर-७८
६६३	खून के दस्त ठीक हुए	,,	नवम्बर-७८
६६४	७० वर्षनी उमरे जुवान	नि० अ० आ०	दिसम्बर-७८
६६५	लकवा भी बरदान	स्वस्थ जीवन	दिसम्बर-७८
६६६	प्रा० चि० तब ओर अब	,,	जनवरी-७९
६६७	प्राकृतिक नुस्खे	धर्मयुग	फरवरी-७९
६६८	निरोग रहने के लिए उपयुक्त आहार लेना सीखें	जैन जगत	जनवरी-७९
६६९	पहले ही प्रयोग ने मुझे और मेरे परिवार वालो को प्रा० चि० का कट्टर भक्त बना दिया	प्रा० चिकित्सा	फरवरी-७९
६७०	योगासन तब और अब	स्वस्थ जीवन	फरवरी-७९
६७१	निरोग रहने के लिये उपयुक्त आहार लेना सीखें	राजस्थानी वीर	फरवरी-७९
६७२	पहले ही प्रयोग ने मुझे और मेरे परिवार वालों को प्रा० चि० का कट्टर भक्त बना दिया	प्रा० जीवन	अप्रैल-७९
६७३	हार्टफेल से बचने के उपाय	हेल्थ हेरल्ड	विन्टर-८१
६७४	शिवाम्बु चि० तब और अब	स्वस्थ जीवन	फरवरी-८१
६७५	अति भोजन	स्वास्थ्य चेतना	सितम्बर-८१
६७६	हरस, मसा भगदर	निसर्ग० अने० आरो०	दिसम्बर-८१
६७७	दीर्घायु मे लोगों को स्वस्थ रहने का नुस्खा	बड़ाबाजार युवक सभा हीरक जयती	२८-३-८४
६७८	ब्रिटेन मे प्रा० चि० प्रसार	स्वस्थ जीवन	अप्रैल-८४
६७९	हाऊ टू सेभ योरसेल्फ फाम हर्टट्रबुल	प्रकृति निकेतन स्मारिका	अप्रैल-८४
६८०	हार्टफेल से बचने का उपाय	जैन जगत	मई-८४
६८१	मेरे स्वस्थ रहने का राज	हिन्दुस्तान साप्ताहिक	१०-८-८६
६८२	मेरे स्वस्थ रहने का राज	सोसाइटी	मई, जून, जुलाई-८६

□

पायरिया दूर करनेवाला दाँतों का मंजन

मेरे मकान में डाक्टर नियोगी नाम के सुप्रसिद्ध दन्त चिकित्सक रहते हैं। कलकत्ते में उनकी काफी प्रसिद्धि है। शहर के धनिक, मिल मालिक, व्यापारी, विदेशी दूतावास के लोग, मिनिस्टर आदि प्रायः इनके चिकित्सालय मे आते रहते हैं। अपने हुनर में चूंकि यह सिद्धहस्त हे इसलिए फीस भी बड़ी लम्बी लेते हे। सौभाग्य से कहिए या दुर्भाग्य से, हमारे परिवार में पिताजी और माताजी के अलावा और किसी को भी इनकी सेवा की आवश्यकता नहीं पड़ी। वैसे भी ये बड़े मिलनसार और शिक्षित व्यक्ति हे। सन् १९५४ में जब श्री सिद्धवा एडिनबरा से प्राकृतिक चिकित्सा सीखकर आए और हमारे यहां ठहरे तो श्री नियोगी ने दन्त चिकित्सकों की एक गोष्ठी में उनका व्याख्यान कराया था।

कई वर्षों बाद १९७० में अपने दाँतों के लिए नियोगीजी के पास गया, तो वह कहने लगे कि दांत में जो थोड़ा बहुत दर्द होता है, उसका कारण सिर्फ यह है कि लोग कुछ खाने के बाद मुँह साफ नहीं करते केवल रूमाल से मुँह पोछ लेते हैं तथा सुबह भी मसूढ़ों की मालिश नहीं करते। ब्रश से केवल सामने के दांत वे साफ कर लेते हे पर यदि महीन नमक और कड़वा तेल मिलाकर ब्रश से मंजन करने के बाद या उसके बदले मसूढ़ों को उंगली से मला जाए

और दांतों को साफ किया जाए तो दांत मजबूत होते हैं। इसके अलावा भोजन में गाजर का प्रयोग दांतों के लिए लाभप्रद है। चीनी, चाय, काफी, आदि का उपयोग बन्द कर देना चाहिए। ये चीजें दांतों के दुश्मन हैं।

इस कथन के बाद उन्होंने मुझ से कहा, यदि आप कहेंगे तो मैं ३२) रुपये फीस लेकर बड़े आराम से आपका दांत उखाड़ दूंगा। पर यह कार्य आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। धीरे-धीरे एक के बाद एक, कई दांत निकलवाने पड़ेंगे या थोड़ी देर के लिए दर्द मिटाने की कीमती दवा भी लिख सकता हूं, पर उसका असर स्थायी नही होगा। यह मेरे जीवन का अनुभव है कि यदि किसी रोगी को मैं कम कीमत का देशी नुस्खा बताता हूँ तो वह समझता है कि मुझे आधुनिक दवाओं का ज्ञान ही नही है और बुद्धू हूँ। इसलिए अपनी व्यापारिक प्रतिष्ठा रखने के लिए इच्छा न रहते हुए भी, लोगों को कीमती औषधियां बतानी पड़ती हैं।

मैंने डाक्टर नियोगी के बताए हुए तरीके से अपने भोजन में गाजर का उपयोग आरम्भ किया। चीनी, चाय, काफी तो वर्षों से मैं उपयोग करता ही नही। ब्रश से मंजन करने के बदले कड़वे तेल और नमक से मसूढ़ों को और दांतों को मलना शुरू कर दिया, परिणामस्वरूप कुछ ही दिनों में दांत का दर्द जाता रहा और जहां पानी पीने तक में कष्ट का अनुभव होता था वहां अब कड़ी चीजें खा लेता हूँ। यह प्रयोग कई लोगों को बताया जिन्होंने किया उनका पायरिया तक ठीक हो गया।□

जले का इलाज पानी

प्राकृतिक चिकित्सा का भक्त होने से पहले जलने पर स्याही, पिसा हुआ कच्चा आलू, तथा अन्य कितनी ही दवाईयों के प्रयोग मैंने सुन रखे थे। साथ ही यह भी सुन रखा था कि जलने पर पानी पड़ने से फफोले पड़ जाते है। पर प्राकृतिक चिकित्सा का साहित्य पढ़ने से मालूम हुआ कि जलने पर जले हुए स्थान को तुरन्त ठंठे पानी में डुबा देना चाहिए और इतनी देर तक उसे डुबोए रखना चाहिए कि जबतक जलन शान्त न हो जाए। यदि शारीरिक गर्मी से पानी गरम हो जाये और उसके कारण रोगी को पुन: जलन मालूम देने लगे तो उस गरम पानी को ठडे पानी से बदल देना चाहिए या उसमें बरफ डाल देना चाहिए। जले हुए स्थान पर कपड़ा हो और वह ढीलाढाला हो तो उसे उतार देना चाहिए। और यदि कसा हो तो उसे फाड़कर हटा देना चाहिए। शरीर रक्षा के लिए कपड़े का मोह नही करना चाहिए। आग से शरीर या उसका कोई भाग जितना अधिक जले उतने ही समय तक उसे पानी में रखना चाहिए। यह बात मुझे आरम्भ मे बड़ी अटपटी और नयी सी लगी, परन्तु जब अपने परिवार में तथा अन्य जगहों में मौका मिलने पर इस प्रयोग को आजमाया तो प्रयोग को सोलहो आने सही पाया। अर्थात जलने वाले को इस प्रयोग से बहुत शीघ्र आराम मिला और शरीर पर जलने का निशान भी न पड़ा।

१९५३ में जब मैं योरप गया, उस समय एडिनबरा के श्री थामसन से मेरी बातचीत हुई। उन्होंने इस सम्बन्ध में अपना एक अनुभव सुनाया।

एक बार श्री थामसन अपने एक मित्र के साथ, जो फायरब्रिगेड के अफसर थे, एक पिकनिक में गए हुए थे। वहां मित्र महोदय का हाथ जल गया। मित्र दवा-दारू के घोर पक्षपाती थे। लगे दवा ढूंढ़ने। मगर जगल में दवा कहां? तब डा० थामसन ने कहा अपने हाथ ठंडे जल में डूबो दीजिए। पहले तो उन्होंने इस बात का मजाक उड़ाया, मगर जब कोई दवा न मिली तो डा० थामसन का कहना मानकर अपना जला हाथ जल में डाल दिया और कुछ देर उसी में रखे रहे। ऐसा करने से उन्हें आश्चर्यजनक लाभ हुआ। फिर तो वह इस चिकित्सा के इतने बड़े भक्त हो गए कि अपने फायरब्रिगेड में यह आदेश दे दिया कि जब कभी कहीं आग बुझाने जाना हो तो प्रत्येक व्यक्ति अपने साथ एक बोतल ठंडा पानी और थोड़ा कपड़ा अवश्य ले जाया करे। □

जले की प्राकृतिक चिकित्सा

घटनाएं छोटी होती हैं, किन्तु कभी-कभी वे जिन्दगी को नया मोड़ दे देती हैं। मनुष्य के जीवन पर कभी-कभी छोटी घटनाएं अपना स्थाई प्रभाव छोड़ जाती हैं। पेड से फल गिरते सभी देखते हैं पर इस नगण्य घटना ने महान् वैज्ञानिक न्यूटन के सामने एक नया सिद्धान्त ही उपस्थित कर दिया—पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत।

कुछ वर्षों पहले मैं भागलपुर गया था। वहां एक मित्र के यहां बातें चल रही थी। तभी किसी बच्चे के चीखने की आवाज आयी। दौडकर उसके पास पहुंचे। देखा मित्र का एक पांच वर्ष का बच्चा खेलते-खेलते चूल्हे की आग से अपना हाथ जला बैठा है। बच्चे का जला हाथ देखकर मित्र घबरा गए। बच्चा दर्द के मारे चीख रहा था। मित्र बड़े आदमी थे नौकर से बोले, "दौड़कर जल्दी से डाक्टर को बुला ला।"

साथ बैठे एक दूसरे सज्जन ने कहा, 'बच्च को गाड़ी में बैठाकर फौरन अस्पताल ले चलना चाहिए। डाक्टर यहां आएगा, दवा इन्जेक्सन मगायेगा, तब तक तो बहुत देर हो जाएगी।'

बच्चे के जले हाथ की प्राकृतिक चिकित्सा मैं बताने ही जा रहा था कि तब तक हमारे मित्र का बड़ा लड़का पहुँच गया। काफी पढ़ा-लिखा है, किन्तु अभी सौ फीसदी आधुनिक शिक्षित नहीं हो गया है, अर्थात वह जो भी काम करता है सोच-समझकर करता है। वहां पहुँचकर उसने एक बार मेरी ओर अर्थ-पूर्ण दृष्टि से देखा, फिर बोला, 'बच्चे को अस्पताल ले जाने की जरूरत नही और न डाक्टर को ही बुलाने की जरूरत है।'

'तब' ? अचरज मे आकर लोगों ने पूछा। उत्तर में वह एक बाल्टी ठंडा पानी उठा ले आया, और लोगो के मना करते रहने पर भो बच्चे के जले हाथ को उस पानी में डुबो दिया। लोग मना करते ही रह गए कि पानी मे जला हाथ डालने से उसमें फफोले पड़ जाए गे। किन्तु लड़का न माना और उसने जो ठीक समझा किया। पानी की शीतलता से बच्चे के हाथ की जलन कुछ कम हुई। थोड़ी देर मे रही-सही जलन भी जाती रही और बच्चे के मुंह पर मुस्कराहट आ गई।

लड़के के इस उपचार पर उसके पिता और अन्य लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि उनकी धारणा थी कि डाक्टर, दवा और इन्जेक्शन के बिना कोई रोग दूर ही नही हो सकता। किन्तु मुझे तो पता ही था कि जलने का सही उपचार लड़के ने किया है।

मैंने लड़के की ओर प्रशंसा भरी नजर से देखकर पूछा, "बेटे उपचार की यह पद्धति तुमने कहां सीखी ?" हँसकर उसने कहा, "चाचाजी, उपचार की इस पद्धति को मैंने 'स्वस्थ जीवन' मे पढा था। तत्पश्चात इसे २-४ बार मैंने रोगियों पर आजमाया भी था, आश्चर्यजनक लाभ हुआ था। तभी से मेरा विश्वास इस उपचार पर बैठ गया है।"

मैंने पूछा, "अभी तो बच्चे का हाथ थोडा ही जला था। यदि जलकर घाव हो गया होता तो तुम क्या करते ?"

"तो भी मै डाक्टर को न बुलाता। गिली मिट्टी को उबालकर घावपर बांध देता और बार-बार बदलता और उससे लाभ हो जाता।"

लड़के की इस सूझ-बूझ पर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। □

पेट की वायु (गैस) निकालने का नुस्खा

आठ, सोलह, बत्तीस

मेरे एक मित्र हैं जिनकी आयु लगभग ६० वर्ष की हो गई है, स्वास्थ्य पर बहुत ध्यान देते हैं। उनका स्वास्थ्य है भी अनुकरणीय। एक दिन मैं उनसे मिलने गया। उनके सोने वाले कमरे के दरवाजे के पीछे लिखा था, सीधे आठ, दाहिने सोलह, बायें बत्तीस। अच्छी स्थिति के व्यक्ति हैं। मैंने हंसते हुए पूछा, "क्या तिलस्मी उपन्यासों की तरह आपने भी इन्कम टैक्स वालों से बचने के लिए नोटों की गड्डियां जहां छिपा रखी हैं वहां का निशान यहां लिख रखा है ?' वे कहने लगे, "दरवाजों पर लगे इन वाक्यों को देखकर आप ही की तरह दूसरे लोग भी ऐसा प्रश्न करते हैं। दरअसल ये वाक्य मेरे खजाने के ही तिलस्मी शब्द हैं, पर नोटों के स्थान को बताने के बजाए ये स्वास्थ्य को ठीक रखने का उपाय बताते हैं।'

पूरी बात मेरी समझ में नहीं आई। पहेली समझाने के लिए कहने पर वे कहने लगे, "भोजन के उपरान्त यदि मनुष्य सीधे होकर ८ लम्बे सांस लें, फिर दाहिने करवट लेकर १६ लम्बे सांस ले, और अन्त में बाएँ करवट लेकर ३२ लम्बे सांस लें, तो किया हुआ भोजन यथास्थान पहुंच जाता है और वायु

(गैस) मुँह द्वारा डकार के रूप में या गुदा द्वारा अपान वायु के रूप में उसी समय निकल जाता है।

यह छोटा-सा नुस्खा एक वयोवृद्ध विद्वान प्राकृतिक चिकित्सक ने अनुभव के आधार पर लगभग ७-८ वर्ष पहले मुझे बताया था जिसे मैं भोजन के उपरान्त नित्य उपयोग में लाता हूँ। बाएँ-दाएँ की संख्या में या उसे करने में भूल न हो इसलिए दरवाजे पर लिख दिया है।

इसके बाद मैंने ये नुस्खा गुजरात के गवर्नर श्रीमन्नारायण और पश्चिम बंगाल के गवर्नर श्री धवन को भी बताया जिसको उन्होंने आजमाया और जब मिलते थे तब बड़ी सराहना करते थे।

कुछ वर्षों पहले वायु हटाने के लिए आठ-सोलह—बत्तीस के नुस्खे को पश्चिम बंगाल के मन्त्री श्री यतीन चक्रवर्ती को बताया। उन्होंने इसका प्रयोग किया। जब भी मिलते है तो धन्यवाद देते है। □

अतिसार में रामबाण जामुन के पत्ते

साधारण जीवन में जानकारी के अभाव में हमारे सामने तिल की ओट में पहाड़ छिपा रहता है। जो बीमारियां साधारण घरेलू प्रयोगों, भोजन सुधार तथा आसानी से मिलने वाली अनुत्तेजक जड़ी-बूटियों एव फल-फूल आदि द्वारा आनन-फानन में ठीक हो जाती है, उनके लिए बडे-बड़े डिग्रीधारी चिकित्सको को बुलाकर उनसे इन्जेक्शन पर इन्जेक्शन लेकर हम बड़ी भूल करते है। कैसी विडम्बना है कि जो डाक्टर जितनी अधिक दूर से मगवाई हुई दवाइयों का उपयोग बताता है, उसे उतना ही अधिक ज्ञानवान समझा जाता है।

एक बार जब मैं दिल्ली में ही था तो श्रीमन्जी से बहन मदालसा के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चर्चा होने लगी। उन्होने बताया कि मदालसाजी को अभी हाल मे डायरिया यानी अतिसार की भयकर शिकायत हो गई थी। मदालसाजी को औषधियों पर आस्था नहीं के बराबर है। खासकर एलोपैथी की तो वह कट्टर विरोधिनी है। इसलिए श्रीमन्जी ने अपना आजमाया हुआ नुस्खा उन्हें काम में लेने को कहा।

अतिसार के भयंकर से भयंकर दौरे पर जामुन के पेड़ की ढाई पत्तियां, जो न ज्यादा मोटी हों और न ज्यादा मुलायम, लेकर कूट लें, फिर उसमें जरा-सा संधा नमक मिलाकर उसकी दो गोलियां बना लें, इन गोलियों में से एक गोली सुबह और दूसरी शाम को खा लेने से अतिसार तुरन्त बन्द हो जाता है। □

गरम-ठंडे का जादू

पुराने जमाने से लोगों की गलत धारणा जमी हुई है कि एक साथ गरम ठंडे का प्रयोग करने से नुकसान होता है। आज भी अक्सर लोगों को यह कहते सुनता हूँ, बाहर घूम कर आया, शरीर गरम था, पानी पी लिया, सर्दी लग गई, तथा धूप में घूमकर आया, एयर कंडीशन कमरे में घुसा, खांसी आने लगी या ज्वर आ गया, आदि। उन भोले व्यक्तियों की बातें सुनकर हँसी आती है।

जिस प्रकार पुराने विचारों के लोगों की उपर्युक्त बातें सुनकर हमें हँसी आती है, उसी प्रकार हम जब प्राकृतिक चिकित्सा के नियमों के अनुसार किसी को गरम-ठंडा सेंक या गरम-ठंडी पट्टी या गरम-ठंडा कुल्ला करने की राय देते हैं तो वे आश्चर्यचकित हो हमारी भी बातों पर हँसते हैं और हमारे मुँह की ओर देखने लगते हैं। कुछ लोग तो साहस कर यह भी पूछ बैठते हैं कि ऐसा करने से कोई हानि तो नहीं होगी? फिर भी कुछ समझदार लोग बिना किसी शंका के उन उपचारों का प्रयोग करते हैं और लाभ उठाते हैं। नीचे कुछ अनुभूत प्रयोग दे रहा हूँ। इनसे मालूम हो जाएगा कि गरम-ठंडे में कितना जादू भरा है।

(१)

एक व्यक्ति के बाईं आंख के नीचे की पलक में छोटी-सी एक फुंसी हो गई। फुंसी का रंग आस-पास में लाल और बीच में सफेद था। आंख में काफी वेदना थी। एक-दो दिन तकलीफ उठाने के बाद उसने मुझसे सलाह ली। मैंने उसे गरम-ठंडे का प्रयोग बताया। उसने गरम पानी में गमछा भिगोकर और निचोड़ कर उसे फुंसी पर रखा और ५ मिनट के भीतर २-३ बार सहता-सहता गरम सेंक किया। फलत: फुंसी आधी रह गई। सेंक के बाद उसने ठंडे पानी में भीगा हुआ गमछा रखा। लाभ और अधिक हुआ, फिर तो उसका विश्वास जम गया। दोपहर और सध्या को भी उसने यही प्रयोग किया। इस तरह विना औषधि अथवा इन्जेक्शन के ही उसकी फुंसी ठीक हो गई।

(२)

एक मित्र का दाहिना अण्डकोष फूल गया था। उन्होंने बताया, अण्डकोष मे वेदना है, और वह साधारण नाप मे सवाया बड़ा भी हो गया है, साथ ही स्थान का रंग कुछ लाल भी है। मैंने उनसे भी ३ मिनट गरम और एक मिनट ठंडा प्रयोग की बात कही। दो दिनों बाद मिलने पर उन्होने बताया कि गरम ठंडे का प्रयोग उन्होंने केवल चार-पांच बार ही किया और उससे ही उनका अण्डकोष साधारण अवस्था मे आ गया।

(३)

एक मित्र को गुदा के पास एक फुंसी निकली। वे घबड़ाए। क्योंकि उनके कई मित्रों को भगंदर की बीमारी हो चुकी थी और डर रहे थे कि कही वह बीमारी उनको भी न हो जाए। अत. वह मुझसे चिकित्सा पूछने आए। मैंने गरम ठंडे की बात उनसे भी कही। पहले तो वह चिकित्सा उन्हे नही जची। फिर बाद को उन्होंने सोचा इस चिकित्सा मे खर्च तो कुछ लगता नहीं करने मे क्या हर्ज है ? यदि लाभ न भी हुआ तो दवा फरोश और सर्जन कही जाते थोड़े ही हैं। किसी तरह उन्होंने मेरी बात मान ली और दो-तीन दिनो तक गरम-ठंडे का प्रयोग किया। फिर जब मिले तब कहने लगे कि, "भाई साहब गरम-ठंडे का प्रयोग सचमुच जादू का-सा काम करता है।" □

स्वस्थ रहने का राज

एक बार एक मित्र के लड़के की शादी में बांकुड़ा गया। लौटते समय एक प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी मित्र से बातें होने लगी। मित्र की उम्र सत्तर से अधिक है। पर वे लगते हैं पचास से कम ही कैं। जो भी नया आदमी उनसे मिलता है वह अपनी उम्र उसे पचास ही बताते हैं। खान-पान में उन्होंने काफी नियंत्रण कर रखा है। चौबीस घन्टों में आध छटाक से लेकर एक छटाक तक अन्न रोज खाते हैं। कहा करते हैं अन्न तो मैंने गरीबों के लिए छोड़ दिया है और उन्ही के आशीर्वाद से आज मैं स्वस्थ हूँ। मेरी ही तरह यदि दूसरे लोग भी अन्न का उपयोग कम करें तो वे स्वय स्वस्थ रहने के साथ-साथ भारत की अन्न समस्या को हल करने में भी सहायक होगे। और तब हो सकता है भारत को विदेशों से अन्न मंगाना ही न पड़े।

वह नित्य व्यायाम भी करते है। चाहे वह रेल में यात्रा करते हों या हवाई जहाज में। उनका यह क्रम कभी नहीं टूटता। समय निकाल कर कुछ व्यायाम कर ही लेते हैं। लोगों के पूछने पर कहते है आज के सभ्य समाज के लोगों को यदि खुलेआम सिगरेट, शराब आदि पीने में लज्जा नहीं आती तो मैं अच्छा काम करने में लज्जा क्यो करूँ? मेरा शरीर भी कोई आधुनिक सीकिया पहलवान की तरह नहीं है, सीना भी चिकेन चेस्ट नही कि व्यायाम करते समय मेरे मन में हीन भावना की उत्पत्ति हो।

आगे उन्होंने बताया, मुझे सबसे अधिक आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि कुछ मित्र जो मेरे रहन-सहन, खान-पान की आलोचना करते है, वे ऐसे व्यक्ति हैं जो औषधियों पर जीते हैं और जिन्हें कोई न कोई बीमारी लगी रहती है। कुछ तो ऐसे भी हैं जो वस्तुतः मुझसे उम्र में कम हैं किन्तु मुझसे अधिक वयस्क दिखलाई पड़ते हैं। इसलिए मैं उनकी आलोचनाओं को एक कान से सुनता हूं और दूसरे से निकाल देता हूँ। और अपने जीवन क्रम पर, जिससे मुझे लाभ है, चलता रहता हूँ। फलतः कई वर्षों से मैं कभी बीमार पड़ा ही नहीं। मैं सुबह व्यायाम करने के बाद कच्चा दूध बिना चीनी मिला, तीन-चार केले, चार खजूर और कुछ नारियल के टुकड़े लेता हूं। खजूर के साथ नारियल खाने में वह बड़ा स्वादिष्ट लगता है। नारियल द्वारा शरीर को पूरी चिकनाई मिल जाती है। और वह पेट को साफ भी खूब करता है। खजूर खून बढ़ाता है। केले और दूध का मेल बढिया होने के कारण वह पूरा-पूरा सतुलित भोजन बन जाता है। दो पहर को आधी छटाक से एक छटाक अन्न रोटी तथा चावल आदि के रूप में लेता हूँ। साग तो लेता ही हूँ, कच्ची तरकारियां भी खाता हूँ। जिनमें मुख्यतः उस खास ऋतु की ही तरकारिया होती है। जैसे गाजर, गोभी, टमाटर, खीरा आदि। इसके अलावा गन्ने के मौसम में गन्ना चूसता हूँ। कच्ची तरकारी खाने से और गन्ना चूसने से दांत बहुत मजबूत बने रहते है। सध्या को दूध और मौसम के फल जैसे सन्तरा पपीता, आम, लीची, सफेदा, बेल, नासपाती, खरबूजा, तथा सूखे मेवे आदि में से कोई एक या दो चीजें लेता हूँ। मैंने अबतक जो स्वास्थ्य सम्बन्धी साहित्य पढ़ा है उससे मालूम हुआ है कि चालीस से अधिक उम्र वाले व्यक्तियों को स्वस्थ रहने के लिए सध्या समय दूध-फल का हलका भोजन करना चाहिए। मेरा कहना मानकर मेरे कई मित्रों ने भी अपना संध्या का भोजन, साधारण प्रचलित भोजन की जगह, दूध, फल ही कर लिया है। इससे उन्हें काफी लाभ हुआ है।

मैंने उनकी सारी बाते सुनी तो कहा, "आप और मैं दोनों एक ही पथ के पथिक हैं।" इसपर वह हंसकर बोले, "इसी से तो हम दोनों एक साथ मोटर में बैठकर कलकत्ते चल रहे हैं। किसी कवि ने सच कहा है। गुजरेगी खूब जब मिल बैठेंगे दीवाने दो।" □

मिट्टी तेरे यह ठाट

बहुत पुरानी बात है। उन दिनों हमारे यहां दबाइयों का दौर-दौरा था। मेरे एक परिचित व्यक्ति के शरीर पर मकड़ी ने मूत दिया। हम उन्हें अपने पारिवारिक डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर हमारी बात सुन कर हँसने लगे और बोले, 'लोगो में कितनी गलतफहमी है। मकड़ी को क्या मूतने के लिए कोई और स्थान नही मिला जो उसी स्थान पर मूतने आई। यह तो चर्म रोग है। मैं दवाई देता हूँ, ठीक हो जाएगा। लोग बिना समझे-बूझे रोग का चाहे जो नाम रख देते हैं और दूसरे लोग उसे मान भी लेते है। खैर, उनकी दवाई लाई गई और कई दिनों बाद मकड़ी के मूत का असर दूर हुआ।

आजकल हमारे यहां मिट्टी का बोलबाला है। मेरे दोहते संजीव के मुँह और हाथ पर छोटी-छोटी पानी भरी फुन्सियां हो गईं थीं। पहले वाली बात होती तो मलहम और इन्जेक्शन आरम्भ हो गए होते पर अब तो इसके लिए हमारे यहां ठण्डी-ठण्डी मिट्टी की पट्टियां ही लगाई जाती हैं। संजीव की फुन्सियों पर भी वही मिट्टी की पट्टी दिन में दो-तीन बार लगाई गई। आध-आध घन्टे के लिए। इससे वहां की फुन्सियां तो दूर हो गई पर दूसरी जगह वे फिर निकल आई अतः उसे नीम के पानी का एनिमा दिया गया और फलों पर

रखा गया। दो-एक दिनों में ही सारी फुन्सियां गायब हो गईं। नए लोगों को फुन्सियों पर मिट्टी की पट्टी देने से उसमें सेप्टिक हो जाने का डर रहता है। ऐसे लोगों को मालूम होना चाहिए कि जो कुछ भी हम खाते हैं या हमारा शरीर जिस चीज से बना है वह सब मिट्टी ही तो है। यह सावधानी अवश्य रखनी चाहिए कि जो मिट्टी काम में लें वह साफ-सुथरी हो।

कुछ वर्षों पहले की बात है। माताजी के दांतों में दर्द उठा। गरम-ठंडे कुल्ले किए गए, सेंक किया, पर दर्द जा नहीं रहा था। दवाई के पक्ष में तो वे थीं नहीं आखिर एक प्राकृतिक चिकित्सक को बुलाया गया। मिट्टी से दांतों को मलने के लिए कहा। पहले तो वे राजी नहीं हुईं, पर जब डाक्टर ने जोर दिया और समझाया कि आप करके देखें, क्या नुकसान है? यह उपचार कई रोगियों पर आजमाया हुआ है, जादू का-सा काम करता है। तब वह राजी हुईं और मिट्टी का मंजन किया गया। पहले तो दर्द के स्थान पर थोड़ा और दर्द हुआ जो स्वाभाविक था। पर उन्होंने उसकी परवाह न कर मंजन करना जारी रक्खा और दांत का दर्द एक बार के मजन करने से ही कम हो गया। फिर तो उन्हें उस पर थोड़ा विश्वास हुआ और पहले दिन ही उन्होंने दिन में तीन बार मिट्टी का मजन किया, जिससे दर्द आधा रह गया। उसके बाद लगातार दो-तीन दिनों तक उसी प्रकार दिन में तीन बार मिट्टी का मंजन करने से दर्द बिल्कुल दूर हो गया अब जब कभी इसका जिक्र हम अपने परिवार में करते है तो आश्चर्य होता है।

आजकल कई प्राकृतिक चिकित्सक मिट्टी की छोटी छोटी टिकिया बनाकर रखते हैं जिसे मिट्टी के पेड़े कहते है और दातून और टूथ पेस्ट की जगह सुबह इन्हें मुँह में रखकर मजन करने की सलाह देते हैं। □

स्व० राजा बलदेव दास बिड़ला का उपदेश

आजकल थोड़ी ही उम्र में लोगों का स्वास्थ्य खराब हो जाता है। इस सम्बन्ध में एक विवाह से लौटते समय एक मित्र से बातचीत हो रही थी, तभी उन्होंने कहा कि लोग धन कमाने के पीछे इतने अधिक व्यस्त रहते है कि वे स्वास्थ्य की ओर ध्यान ही नहीं देते जिसका फल यह होता है कि उनका स्वास्थ्य जल्दी ही जवाब दे जाता है। धन कमाने के बाद सुख देने के नाम पर लोग शरीर को इतना नाजुक बना लेते है कि फिर औषधियों के बल पर ही वह चलता है।

इसी सिलसिले में मित्र ने स्वर्गीय राजा बलदेवदासजी बिड़ला का एक संस्मरण सुनाया। उन्होंने कहा—"सस्मरण की घटना छोटी-सी ही है और बात भी अधिक नही है। जिस प्रकार हमारे ऋषि-मुनियों ने अपनी विद्वता के प्रभाव से छोटे-छोटे सूत्रों में जीवन का सार रख दिया है यानी गागर में सागर भर दिया है उसी प्रकार राजा साहब द्वारा कही गई स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें स्वास्थ्य चाहने वालो के लिए बड़ी ही ज्ञानवर्द्धक और उपयोगी है।"

जब ज्योतिषियों ने राजा साहब को बताया कि उनकी मृत्यु ५० वर्ष की ही उम्र में हो जाएगी तो अपने जीवन के अन्तिम क्षण भागीरथी के किनारे बाबा

विश्वनाथ के चरणों में बिताने के लिए वे काशी रहने लगे और अन्न की जगह फल का सेवन शुरू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि दिनों दिन उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा और मृत्यु का क्षण टल गया। तब उन्होंने अपने जीवन के कार्यक्रम में अन्य नियमों के साथ-साथ नित्य घूमने का भी नियम चालू किया। एक दिन धूप में जब वह घूम रहे थे तो कलकत्ते के एक प्रतिष्ठित शिक्षित व्यक्ति ने कौतूहलवश उनसे कहा, "राजा साहब, आप धूप में घूमते हैं ? नहीं घूमना चाहिए। शायद इससे नुकसान हो।" इसपर वह हँसने लगे और मुस्कुराते हुए बोले, "भाई, तुम शरीर के नियम को नहीं जानते। इसका यह नियम है कि जो इसे कष्ट देता है, उसे यह सुख पहुंचता है और जो इसे आराम देता है और इसके वश में हो जाता है उसे यह कष्ट पहुँचाता है। इसलिए, यदि तुम थोड़ा-सा भी सुख चाहते हो तो शरीर को कष्ट देते रहो। ऐसा करने से यह तुम्हारे वश में रहेगा।" कलकत्ते वाले मित्र उनके सामने तो कुछ नहीं बोले, पर उसका फल यह हुआ कि आज वे अस्वस्थ हैं।

आज का आधुनिक युग उनकी बात को दकियानूसी विचार समझ कर उस पर कुछ ध्यान नहीं देता।

स्वास्थ्य चाहने वाले व्यक्तियों को राजाजी के सूत्ररूपी उपर्युक्त शब्दों का पूरा अर्थ निकाल कर शरीर से यदि काम लेना है तो बिस्तर पर पड़े-पड़े शरीर को आराम न देकर सुबह तड़के ही दूर तक घूमने निकल जाना चाहिए। आसन करना चाहिए या व्यायाम करना चाहिए तथा स्वाद पर आश्रित होकर चटपटी चीजों का व्यवहार न कर उत्तम स्वास्थ्य के लिए स्वास्थ्यकर चीजों का ही व्यवहार करना चाहिए। □

अन्न के कम प्रयोग से स्वास्थ्य में सुधार

आफिस में बठा था। फोन की घंटी बजी। राव श्री युधिष्ठिर जी अग्रवाल ग्रांड स्मिथ वर्क्स के मालिक का फोन था। इनसे काफी वर्षों से परिचय है। मुझे यह भी मालूम है कि वर्षों से इनके परिवार में प्राकृतिक चिकित्सा अपना चमत्कार दिखाती आ रही है। साधारण बातचीत के बाद मैंने उनसे फोन करने का कारण पूछा। उन्होंने कहा, "आपसे मिलकर स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कुछ सलाह लेनी है। छः महीने पहले साधारण सर्दी लगी और मैं दवा के चक्कर में पड़ गया। काफी समय और रुपया बर्बाद हुआ। पर लाभ कुछ भी नही हुआ। दशा वैसी ही रही, बल्कि और बदतर हो गई जैसा कि इस कहावत में कहा गया है 'मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की।' विचार किया, आप तो घर के ही हैं। मौका पड़ने पर घरवालों को ही कष्ट दिया जाता है।" मैंने कहा—"आप तकलीफ न करें। मैं खुद ही आपके यहां आ जाऊंगा।" उन्होंने नही माना और आफिस में मिलने का समय तय करने के लिए कहा।

मैंने अपने सुविधानुसार उनसे मिलने का समय निश्चित किया। वे आफिस में आए और बातें कीं। सारी बातों को सुनने के बाद मैंने उन्हें राय दी कि "जिन लोगों की आर्थिक स्थिति ठीक है, उन्हें आज के इस अन्नसंकट के जमाने में अन्न का

भोजन कम कर देना चाहिए। मैंने आज से २२ वर्ष पूर्व बंगाल के अकाल के समय अन्न के अभाव में गरीबों को मरते देख और अन्न को एक समय ही लेने का संकल्प लिया था। समय जाते देर नहीं लगती। २२ वर्ष बीत गए। कम अन्न खाकर भी मेरा स्वास्थ्य पहले से अच्छा ही है।"

उन्हें मेरी बात जंची और वह मेरे भोजन का चाट ले गये।

कई महीनों बाद उनके ही एक रिश्तेदार रतनलालजी सुरेका अपने लड़के की शादी की खुशी में दी गई पार्टी मे मुझसे मिले। मैंने उनसे स्व० युधिष्ठिरजी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया, वे अब बिल्कुल ठीक हो गए। सुबह-शाम दूध-फल खाते हैं, दोपहर को एक बार अन्न खाते हैं। सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई। उनसे टेलीफोन पर टाइम निश्चित कर मैं उनके घर पर गया। वे बड़े प्रसन्न दिखाई पड़ रहे थे और सतुष्ट थे। वह कहने लगे, "मुझे आश्चर्य होता है कि जो अच्छी स्थिति के लोग है वे अधिक अन्न खाकर साधारण और गरीब लोगों के लिए अन्न संकट क्यों पैदा करते है? साथ ही बीमार पड़ कर देश के लिए कार्य करने के घंटों में कमी क्यों कर देते है? ऐसे लोग परिवार वालों के लिए चिन्ता तो खड़ी कर ही देते हैं, इसके उपरान्त वे व्यर्थ की कड़वी दवाइयों और इन्जेक्शनों द्वारा कष्ट तो उठाते ही है, साथ-साथ धन भी गँवाते है। उनकी बनिस्पत यदि वे मेरी तरह सुबह-शाम दूध-फल खाने लगें और केवल दोपहर को ही अन्न-भोजन करने लगे तो उनका स्वास्थ्य बढ़िया बना रहे।' □

आंख उठने पर मिट्टी की पट्टी

मेरे बड़े पुत्र निर्मल की छोटी सवा वर्ष की बच्ची की आंखे अचानक थोडी-थोडी लाल होनी आरम्भ हुई और सुबह उठने पर वह कुछ फूली-हुई-सी और चिपकी-चिपकी दिखती थी। पर अभी बहुत कीचड़ निकलना शुरू नही हुआ था।

उसकी आँखों को ठंडे पानी से धोया जाता था। पर जो लाभ होना चाहिए, नही हो रहा था। मैंने उसकी आंख पर ठडी मिट्टी की पट्टी चढ़ाने को कहा। उसकी मां और मेरी पत्नी ने जब दो-एक बार पट्टी चढ़ाने का प्रयत्न किया तब वह रोने लगी और पट्टी को आंखों से हटा दिया करती थी। फलतः वे हिम्मत हार गई।

एक दिन मेरे पूछने पर कि उसकी आँखों पर मिट्टी की पट्टी क्यों नही चढ़ाई जाती, व्यर्थ में यह इतने दिनों से तकलीफ पा रही है, तो उन लोगों ने बताया कि वह पट्टी रखने ही नहीं देती है और उतार कर तुरन्त फेक देती है। मैंने कहा जब वह दिन में सो जाए तो मेरे पास लाना, मैं अपने हाथों उसकी आँख पर पट्टी रखूंगा।

भोजन के उपरान्त जब वह दो पहर को सोई तो उसे मेरे पास लाया गया। मैंने उसकी आंख पर मिट्टी की ठंडी पट्टी रखी। एक बार आंखों पर ठंड लगने पर वह जरा चौंकी, परन्तु पहली ही नींद थी, जरा सा थपथपा देने से वह पुन: सो गई और आधे घन्टे तक बड़े मजे से मिट्टी की पट्टी उसकी आंखों पर लगी रही। अब घरवालों को विश्वास हो गया कि मुन्नी बिना कष्ट के आंखों पर मिट्टी की पट्टी ले सकती है।

दो दिनों तक लगातार दिन में दो बार उसे यह पट्टी दी गई। जिसकी वजह से उसकी आंखों की लाली कट गई, सूजन हट गई और आंख का चिपकना भी बन्द हो गया। मुझे याद है पुराने जमाने में जब बच्चों की आंखें उठती थीं तो माताएँ लाल रंग, दूध की मलाई, अफीम का लेप आदि न जाने कौन-कौन-सी महंगी-सस्ती औषधियां काम में लिया करती थीं और हफ्तों बल्कि महीनों बच्चों को कष्ट उठाना पड़ता था। उनकी जगह मिट्टी और पानी का यह सरल उपचार इस काम के लिए कितना सस्ता और सहज है।□

औषधियों के संस्कार

सोसायटी से लौट ही रहा था कि सीढ़ी के पास ही एक कार्यकर्त्ता साथी मिले। उनकी एक आंख कुछ लाल थी जिसे वह मल रहे थे। पूछने पर बताया कि आँख में साधारण-सी चोट लग गई है। कष्ट हो रहा है। मैंने कहा आंख में साधारण-सी चोट लगी है तो किसी स्पेशलिस्ट के चक्कर में न पड़ें, बल्कि घर पर रहकर एक दिन आराम कर लें और जख्मी आंख पर गीली मिट्टी की पट्टी बांधे। मिट्टी की पट्टी से जैसी कि आपलोगों की धारणा है, जख्म के सेप्टीक होने का कोई भय नहीं है। पर मिट्टी शुद्ध और साफ होनी चाहिए। सफाई और सुविधा के लिए मिट्टी को सीधे आँख पर न रख उसे कपड़े में रख कर ३-३ इन्च मोटी बना कर रखें। यह सुनकर वह कुछ बोले नहीं जिससे मुझे लगा शायद वे मेरे इस सस्ते नुस्खे से काम न लें। फिर जब पन्द्रह-बीस दिनो बाद उनसे मेरी मुलाकात हुई, तो मैंने उनसे उनकी आंख और उसके इलाज के बारे में पूछा। वह हंसकर बोले, महाराज, आपके चक्कर में पड़ता तो क्या इतनी जल्दो ठीक होता। मैं सीधे एक आई स्पेशलिस्ट के पास गया और उससे उसके लिए औषधि ली। उनकी बात सुनकर मुझे हंसी आ गई और पन्द्रह वर्ष पहले की एक और घटना याद हो आई। मैंने कहा, आपही की तरह मेरे एक

मित्र थे। एक बार उनकी आँखें लाल हो गई और दर्द शुरू हुआ। मैंने उन्हें दो-तीन दिनों तक आराम करने और मिट्टी की पट्टी लगाने की सलाह दी। परन्तु उनके घरवालों तथा अन्य मित्रों ने उन्हें घबरा दिया और कहा, आँख है तो जहान है, आंख नहीं तो कुछ नहीं। अतः किसी आंख के स्पेशलिस्ट को दिखलाओ।

कमाई चल रही थी। वह शहर के एक बड़े स्पेशलिस्ट के पास गए, जिसने बत्तीस रुपये फीस के लिए और आध घण्टे तक कई यन्त्रों द्वारा आंखें देखी, फिर कागज पर दो-तीन दवाइयां लिखते हुए कहा, आपने बहुत अच्छा किया जो आ गए बरना यह एक बड़ी भयंकर बीमारी है। इस बीमारी से तो लोगों की आँखें फूट गई है। जो दवाएँ मैंने लिख दी है उनका प्रयोग कीजिए। सात दिनों तक घर से बाहर न निकलिए और एक हरा चश्मा भी ले लीजिए तथा आठवें दिन मुझसे मिलिए। बेचारे क्या करते, चश्मे के १०) रु० और औषधियों के १६) रुपए दिए और सात दिनों तक घर मे पड़े रहकर आठवें दिन चिकित्सक महोदय से मिले। इसबार भी उसने उनसे बत्तीस रुपये रखवाए और आंखों का परीक्षण करने के बाद कहा पहले से बहुत ठीक है, पर अभी खराब होने का डर है, इसलिए दूसरी औषधि लिख देता हूँ। अब इसका प्रयोग करें साथ ही एक सप्ताह और घर पर रहकर आराम करें और आठवें दिन एक बार फिर आजाएँ। आंखों का मामला है, लापरवाही नही करनी चाहिए। वे चुपचाप घर आए और ८ दिन बाद जब वह पुनः डाक्टर के पास पहुंचे तो उन्हे एक फीस और देनी पड़ी तब आख के ठीक होने का सर्टिफिकेट उन्हे मिला जिससे वह सन्तुष्ट हुए। उसके बाद मैं जब कभी उनसे मिलता हूँ तब हँसे बिना नहीं रहता। मेरे कहने से वह दो-तीन दिन भी आराम करने के लिए तैयार नहीं हुए, पर सौ-डेढ़ सौ रुपया डाक्टर को देकर एकबारगी पन्द्रह दिनों तक घर में बैठने के लिए राजी हो गए।

वही दशा मेरे कार्यकर्त्ता मित्र की हुई। इसमें ऐसा दोष नहीं। लोग आज इतने मेडिसिन माईंड के हो गए हैं कि छोटी से छोटी बीमारी, जो साधारण उपचार से ठीक हो सकती है के लिए भी डाक्टर के पीछे दौड़ते हैं और औषधियों का व्यवहार करते हैं।□

जनाना और मर्दाना भोजन

मेरे एक मित्र काफी हंसोड़ हैं। कभी-कभी वे मजाक मे पते की बात कह दिया करते हैं। एक दिन वह अच्छे मूड में थे। मजाक होने लगा। कहने लगे दुनिया का नियम है कि मनुष्य जिसकी संगति करता है, धीरे-धीरे स्वयं भी वैसा ही हो जाता है। जवान रहते हुए भी उसमें ताजगी नहीं रहती। जवानों का साथ करनेवालों में जवानी बनी रहती है। इसी तरह यदि कोई झगड़ालू आदमी की सगति करता है तो कुछ समय बाद वह स्वयं भी झगड़ालू हो जाता है। साधु और शान्त प्रकृति के व्यक्तियों के साथ रहनेवालों के विचार में परिवर्त्तन हो जाता है। वे भी उसी तरह के हो जाते हैं। जो लोग व्यापारियों के साथ रहते हैं संगति के असर से कुछ समय बाद वह भी व्यापारी हो ही जाते हैं। जो जुआड़ियों की सगति करते है, धीरे-धीरे वे भी जुवा खेलना शुरू कर देते हैं। राजनीतिज्ञों के साथ करने वाले राजनीति सीख जाते हैं। संगति का असर तो जरूर पड़ता है। आज के नव-जवान अधिकतर जनानी हरकतें किया करते हैं। जनानों की तरह नजाकत का पहनावा, उसी तरह का बनाव शृंगार, यहाँ तक कि खाने-पीने में भी जनानी चीजें ही खाते हैं। उनमें मर्दानगी और पुरुषत्व कहाँ से आए ?

उनकी बाते सुनकर लोग गम्भीर हो गए। उनकी अबतक बातें तो समझ में नहीं आ रही थी, लेकिन भोजन की बात सुनकर लोगों के मुंह में पानी आ गया। एक मित्र से नहीं रहा गया। बोले : आप भी कभी-कभी बे-सिर पैर की बातें करते हैं। भला खाने-पीने में जनानी और मर्दानी चीजों का क्या सवाल? मेरे मित्र ने हंसते हुए कहा, मैं जानता था कि इस बात का असर आप लोगों पर भी पड़ेगा। इसलिए पहले से ही चौक रहे है। ठहरिए, आपलोगों की पोल खोलता हूं। यह सुनकर पूछनेवाले सज्जन भी कुछ सकपकाए। दूसरे लोगों ने भी मेरे मित्रसे उस बात को बताने का आग्रह किया। वह बोले : "अच्छा तो सुनिए। लोग भोजन में सुबह से शाम तक स्त्रीलिंग वाचक वस्तुएं ही अधिकतर उपयोग में लाते हे। जैसे चाय, मठरी, कचौड़ी, पकौड़ी, पूरी, चटनी, मलाई, मिठाई आदि। परन्तु पुलिंग सूचक चीजें जैसे—केला, टमाटर, गाजर, नारियल, खीरा, सन्तरा, बादाम, दूध, तथा मट्ठा आदि नहीं खाते। फिर लोगों में मरदानगी आए तो कहाँ से आए? उनकी इस लाजवाब सूझ पर सभी लोग ठहाका मारकर हसने लगे। □

खाँसी रोकने की अद्भुत प्रक्रिया

छोटे बच्चे जब सोए सोए खांसते हैं तब माताएं उसकी छाती पर हाथ फेरती है जिससे उन्हें आराम मिलता है। उसी तरह जब बड़े बच्चे या बड़े आदमी को जब खांसी आती हो तो गले से नीचे छाती तक हाथ फेरने से खाँसी बन्द हो जाती है। यदि खांसी अधिक आती हो तो दोनो हाथों मे ४-५ बून्द पानी लेकर हथेलियों को वापस रगड़ लिया जाए और उसे, जिससे खांसी हुई है, उसे गले, छाती, पसली और पीठ के भाग को ऊपर से नीचे की ओर मालिश की जाए यह मालिश एक-दो मिनट करने से वह स्थान लाल हो जाएगा। यह क्रिया दिन में २-३ बार कर ली जाय तब खांसी एकदम ठीक हो जाएगी और इस तरह काम करेगी जिस तरह आधुनिक जमाने में बीमारियों पर पेन्सिलिन काम करती है। पर यह पेन्सिलिन बिना पैसे की होगी। यह क्रिया मैंने तीस-चालीस वर्षों में कई बार अपने पर और अपने परिवार के अन्य छोटे-बड़े सदस्यों पर आजमाई हैं। जो सफल रही है।□

चुटकी भर चावल का कमाल

स्वस्थ रहने के लिए कोई भी चीज चाहे वह खान-पान में परिवर्तन हो, एक्यु प्रसर हो, चुम्बक हो मुझे बताए जिसे मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहे या आती हुई बीमारी चली जाए तो मैं उसे तुरन्त अपना लेता हूँ।

कुछ वर्ष पहले की बात है, प्रकृति निकेतन में मुझे एक बयोवृद्ध बंगाली सज्जन मिले। उनसे यकृत यानी लीबर के सम्बन्ध में चर्चा चलने लगी तो उन्होंने कहा कि बंगाल मे पुराने जमाने से माताएँ अपने बच्चों को सुबह पहले एक चुटकी चावल यानी अंगूठे और उसके पास की अंगूली मे जितने चावल आए अपने हाथ से बच्चे के मुँह में रख कर सुबह पहले ठडे पानी से निगलवाती थीं। ठंडे यानी साधारण ठंडा फ्रिज का नही। चावलों को चबाए नहीं। इससे लीबर बहुत मजबूत होते हैं। यह शिक्षा बच्चों को मिलती थी और वे अपने जीवन भर निभाते थ जिसे उनकी लीबर बराबर स्वस्थ रहती थी। पर आजकल लोगों को यह शिक्षा नहीं मिलती। बड़े होकर लोग सुबह उठते ही बेड टी लेते हैं जिससे उनका स्वास्थ्य ठीक नही रहता है।

मुझे उनकी बात बड़ी अच्छी लगी और मैंने उसे अपने पर आजमाया। साथ ही बहुत से मित्रों को बताया जिन्होने उसे आजमाया और उन्हें भी बड़ा फायदा हुआ। पर जिनलोगों ने मुफ्त का सलाह समझ कर एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल दिया उन्हें कोई लाभ नहीं मिला।□

उपवास के चमत्कार

इंगलैण्ड से प्रकाशित होने वाले एक मासिक पत्र मे स्टेनली लीफ के प्राकृतिक चिकित्सा-अस्पताल के बारे में एक महिला ने एक उपयोगी लेख लिखा है जिसे हम नीचे दे रहे हैं। यह महिला उनके साथ काम कर चुकी है।

प्रथम विश्व महायुद्ध के पहले, स्टेनली लीफ शिकागो के इन्टर नेशनल कालेज आफ ड्रगलेस फिजिक्स के छात्र थे। इस कालेज की स्थापना बर्नर मैकफेडन ने की थी और इस कालेज के अधिकांश प्राध्यापक डाक्टर थे जो दवाओं की अनुपयोगिता को अच्छी तरह समझ गए थे। इसी कालेज मे पढ़ कर स्टेनली लीफ ने स्वास्थ्य और रोग के वास्तविक अर्थो एव शरीर की पुनर्निमाण की महान सक्ति को समझा। इस शिक्षा को वे कभी न भूले। इसलिए रोगों को दूर करने के लिए उन्होंने अन्य पद्धतियों के बारे में कभी नहीं सोचा और रोगों को दूर करने के लिए उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा विशेष कर उपवास को ही अपनाया।

प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी सम्यक ज्ञान-प्राप्ति के लिए उनके हृदय में असाधारण पिपासा थी। इसके लिए उन्होंने विदेशों की अनेक बार यात्राएं भी की।

स्टेनली लीफ ने कठिन से कठिन रोगों का इलाज उपवास द्वारा ही किया। बर्लिन की श्रीमती स्मिथ को पेट की एक भयंकर बीमारी थी। उनके चिकित्सकों

ने जवाब दे दिया था। लेकिन स्टेनली लीफ ने उन्हें ३९ दिनों का उपवास कराकर ठीक कर दिया। यहां तक कि पहले जहां वह बिलकुल चल फिर भी न सकती थी वहां उन्होंने अपने लड़की के विवाह में सक्रिय भाग लिया। इसी तरह बेलफास्ट की रहने वाली जेंकसन अक्सर मूच्छित हो जाया करती थी, उनका भी इलाज स्टेनली लीफ ने उसी प्रकार किया।

एक नर्स मिस मैकफार्ड को एक प्रकार का भयानक चर्म रोग था, जिसको चिकित्सको ने असाध्य घोषित कर रखा था। लेकिन स्टेनली लीफ ने उससे १५५ दिनों का लम्बा उपवास कराया और वह पूर्ण स्वस्थ हो गई।

इन घटनाओं का स्टेनली लीफ स्वयं उल्लेख नहीं करते थे। वह कहते थे, लोग इनपर सहज ही विश्वास नहीं करेंगे। इसी तरह मैनचेस्टर के मिस्टर प्रोविस को भयानक रक्तल्पता की बीमारी थी। स्टेनली लीफ ने उनसे ३० दिनों का उपवास कराकर ठीक कर दिया। यह समाचार पत्र-पत्रिकाओं में भी छपा था। पर सम्बाददाताओं ने इसपर विश्वास नही किया। उनकी समझ में तो रक्त की कमी की बीमारी में तो और अधिक भोजन की दरकार होनी चाहिए, भोजन त्याग देने से यह कैसे ठीक हो सकती है ? लेकिन श्रीमती फोसन ने इसकी गवाही दी है और कहा, वे इस घटना को व्यक्तिगत रूप से जानती हे।

स्टेनली लीफ के एक भाई अफ्रीका में रहते थे। उनके पैर मे एक विषाक्त फोड़ा निकला। चिकित्सकों ने उसका एकमात्र इलाज आपरेशन बताया। स्टेनली लीफ ने उन्हें भी उपवास कराया। उपवास के एक सप्ताह बाद ही उनकी दशा में इतना सुधार हुआ कि आपरेशन की सलाह देनेवाले चिकित्सक ने कहा यह तो आश्चर्यजनक रूप से सुधर रहा है। यह तो जादू है।

स्टेनली लीफ ने उपवास द्वारा कितने ही रोगियों को लम्बे उपवास कराकर स्वस्थ किया। जब मैं सन् १९५३ में योरप की यात्रा पर गया था, तो उनसे मिलने लन्दन गया जहां एक ऐसे रोगी को देखा जिसने एक सौ दिनों का उपवास किया था। सयोग की बात जिस दिन मैं उससे मिला उसी दिन उसने कमला नीबू के रस से अपना लम्बा उपवास तोड़ा था। लीफ ने उससे मेरा परिचय कराया। मैंने उस व्यक्ति से पूछा जब आप प्राकृतिक चिकित्सा कराने यहां

आए थे तो आपको कौन कौन सी बिमारियां थी ? उसने हँसते हुए कहा यह पुछिए कि कौन-कौन-सी बीमारियां नहीं थी, क्योंकि उस समय मेरा शरीर लगभग सभी बीमारियों का घर बना हुआ था।

यहां भारत में जब कभी मैं चिकित्सकों और रोगियों से मिलता हूँ तो मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। क्योंकि उनके मन में दो-तीन दिनों के ही उपवास की बात बहुत तहलका मचा देती है। वे समझते हैं, उपवास करने से उनकी मौत जल्दी हो जाएगी। लेकिन सही बात यह है जिस मौत से वे इतना डरते हैं, वह अधिक और अनियमित भोजन के कारण ही जल्दी आती है।●

उपवास से लाभ

मेरे बचपन में हमारे परिवार में वैद्यों और डाक्टरों का बोल बाला था। पिताजी रहन-सहन और कपड़े-लत्ते आदि पर विशेष खर्च नहीं करते थे पर परिवार मे यदि कोई बीमार पड़ जाए तो चिकित्सकों के लिए थैली का मुँह खोल देते थे। डाक्टरों और वैद्यों की मोटी मोटी फीस की परवाह न कर, जहां डाक्टर को दिन मे एक बार बुलाने से काम चल जाता, वहां उसे दिन में दो-दो बार तीन-तीन बार बुला लेते और कभी-कभी तो दो-दो तीन-तीन चिकित्सकों को एक साथ बुला लेते थे। इस विषय में कोई उन्हे सुझाव देने की हिम्मत न करता।

परिवार में डाक्टरों के बराबर आते रहने के कारण उनसे छूत की बीमारियां फैलती है यह बात मेरे मस्तिष्क में घर कर गई थी। किन्तु प्राकृतिक चिकित्सा की ओर रुझान होने के बाद जब भयंकर से भयकर बीमारी वाले रोगियों को देखने का और उनकी सेवा करने का मौका मिला तो मैं यह मानने लगा कि छूत से बीमारियां नहीं फैलती, पर छूत की तरह मनुष्य के विचार अवश्य फैलते हैं। मैं लगभग ४० वर्षों से दिन में एक बार अन्न खाता हूँ। सुबह-शाम केवल फल दूध पर रहता हूँ। फलतः मेरा स्वास्थ्य बढ़िया रहता है लेकिन साल में एक-दो बार सर्दी, खांसी तथा बुखार आदि का चक्कर लग जाता है। बीमार पड़ना मनुष्य शरीर का धर्म है, यह मानकर संतोष कर लेता हूँ। रोगावस्था में जब कोई

प्राकृतिक चिकित्सक मिलता तो वह कहता, अच्छा हुआ आपके शरीर का विकार निकल रहा है।

गत ३६ वर्षों से यानी जब से श्री मोरारजी भाई के विशेष सम्पर्क में आया और उन्हें सप्ताह में एक दिन उपवास कर नीरोग देखा तो उससे मुझे भी प्रेरणा मिली।

अब मैं गत ३६ वर्षों से सप्ताह में एक बार मंगलवार को १२ घन्टों का उपवास करता हूँ। बुधवार की सुबह व्यायाम करने के बाद साढे आठ-नौ बजे केवल फल-दूध लेता हूँ। इस बीच मंगलवार को भी व्यायाम करता हूँ और अपने नित्य के सारे काम-काज भी करता हूँ। उपवास के दिन-दिन भर फल दूध और भोजन के स्थान पर केवल सादा पानी पीता हूँ। इन १२ घन्टों में मेरा वजन १-२ पौण्ड कम हो जाता है किन्तु बुधवार के बाद ६ दिनों तक शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है। और ६ दिनों में, घटा हुआ वजन पुनः बढ़ जाता है।

इस उपवास से सबसे बड़ा लाभ मुझ यह हुआ कि इन ३६ वर्षों में मुझे कोई भी बीमारी नहीं हुई। मेरे उपवास करने के लाभ को देख कर मेरे मित्र तथा मेरे परिवार के अन्य लोग भी उपवास की ओर आकर्षित हुए। हमलोगों के देखा-देखी हमारे यहां काम करने वाला बीस साल पुराना सेवक सोनी राम भी मंगल-वार का उपवास करने लगा।□

चीनी छोड़ी, खुजली मिटी

सुबह का समय था। मैं व्यायाम की तैयारी कर ही रहा था कि टेलीफोन की घन्टी बजी। एक परिचित सज्जन का टेलीफोन था। यों तो वे बड़े साहसी हैं, परन्तु बीमारी आदि होने पर बहुत जल्दी घबड़ा जाते हैं। मैंने पूछा, कहिए कैसे तकलीफ की ? बोले एक लड़का खुजली से परेशान है, वह क्या परेशान है कहना चाहिए, उसकी वजह हमलोग सब परेशान हे। डाक्टरों का इलाज करते-करते आजीज आ गए है। सूइयां लेते-लेते लड़का भी तग हो गया है। अब तो वह डाक्टर की शक्ल मात्र से खौफ खाता है। यहां कई आदमियों से जिक्र हुआ, तो वे आपका नाम लेते हे। इसीलिए मैंने आपको तकलीफ दी है। कृपया बताइए क्या उपाय किया जाए ?

"मेरे पास तो केवल एक उपाय है जिसे मैं अमोघ मानता हूँ।" आप अब अधिक झंझट में न पड़ कर सीधे प्राकृतिक चिकित्सा पर आ जाइए।" वे भी शायद इसके लिए तैयार ही बैठे थे। कहने लगे, "जो आप कहेंगे वही करूँगा।"

मैं व्यायामशाला से फुरसत पाकर जब उनके पास पहुँचा तो लड़के की हालत पर तो दुःख हुआ ही, उससे अधिक दुःख घर की दुर्व्यवस्था देख कर हुआ। घरका सारा सामान अस्त-व्यस्त पड़ा था तथा सफाई का ठीक प्रबन्ध नहीं था। मैंने उन्हें सर्वप्रथम सफाई से रहने की सलाह दी। उसके बाद बातचीत के सिलसिले में यह मालूम हुआ कि लड़के को टाफो चाकलेट आदि काफी खिलाया जाता रहा है। मैंने अक्सर देखा है कि हमलोग अंग्रेजों की अच्छी बातें चाहें न सीखें पर

उनकी बुरी बात सीख लेते हैं। टाफी आदि का रिवाज अपने यहां कब रहा है ? मगर अब इसका रिवाज बहुत बढ़ गया है।

मैंने उन महाशय को बताया कि मिठाई खाने से खुजली का होना स्वाभाविक है। अतः शीघ्र ही इसका मिठाई का नास्ता बन्द कर दीजिए और इसे प्राकृतिक चिकित्सा की शरण में जाने दीजिए। मेरी बात उन्होंने मान ली। उनसे रोगी की दिनचर्या के सम्बन्ध में पूछा तो मालूम हुआ कि लड़के को व्यायाम की आदत बिलकुल नहीं है। मैंने उन महाशय से कहा जो इलाज होगा, वह फिलहाल लड़के को खुजली को तो दूर कर देगा, किन्तु यदि आप चाहते हों कि लड़का आगे भी स्वस्थ रहे तो आपको दो-एक बातें और करनी पड़ेगी। पहले तो आप अपने घर में सफाई का प्रबन्ध कीजिए ईश्वर की कृपा से आपको किसी प्रकार की कमी नहीं है, कमाते-खाते हैं, तो सफाई के नाम पर कुछ खर्च क्यों नहीं करते ? दूसरे लड़के को मिठाई खिलाना बन्द कर दीजिए और तीसरे उससे नियमित रूप से व्यायाम कराइए।

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि उन्होंने मेरी बताई हुई सब बातों पर अमल किया और अपने परिवार में सुबह चाय, बिस्कुट, टोस्ट, मठरी, पकौड़ी आदि के स्थान पर नारियल, केला, खजूर, अमरुद, गाजर, टमाटर, मट्ठा, दूध आदि चीजों में से दो-एक चीजें जो जिसे पसन्द हो दीं। और आज उनका परिवार सुखी और नीरोग है। अभी उस दिन जब वे मिले तब बताया कि अब उनके लड़के और परिवार के सबलोग स्वस्थ हैं। मुझे सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं चाहता हूँ कि सभी परिवार इसी तरह की दिनचर्या बना लें तो समाज से रोग समूल नष्ट हो जाय।□

फ्लू दरवाजे तक आकर लौट गया

'स्वस्थ जीवन' के दफ्तर में वर्माजी कई वर्षों से काम करते थे और प्राकृतिक चिकित्सा के नुस्खे और चुटकुले बराबर सुना करते थे। कुछ दिन बाद उनके मनमे दवाइयों की गुलामी से निकलने के लिए पुराने संस्कारों के जंजीर तोड़ने का विचार आया। होनहार कहिए या सयोग की बात, उन्हीं दिनों शहर में चारों ओर जोरों से फ्लू फैला और कोई घर ऐसा न बचा जिसमें दो-एक फ्लू के मरीज न हों।

एक शुक्रवार को वर्माजी दफ्तर से घर गए तो तबियत सुस्त मालूम दी। भोजन करने की इच्छा नहीं हुई। पत्नी ने उन्हें सुस्त देख कर कारण पूछा वर्माजी खुद नहीं जानते थे कि सुस्ती का कारण क्या है।

पत्नी ने खाना खाने के लिए आग्रह किया। वर्माजी ने खाना मंगाने के पहले मन में सोचा कि खाना खाऊँ या नहीं। उस समय उन्हें 'स्वस्थ जीवन' में पढ़ी हुई वह सूक्ति याद आई कि मन में यदि विचार उठे कि खाना खाएँ या न खाएँ तो उस समय नहीं खाना ही ठीक है। अतः उन्होंने तुरन्त निश्चय करके दृढ़ता पूर्वक पत्नी से खाना न लाने के लिए कहा'।

उस रात वर्माजी ने बिना नमक या चीनी मिला हुआ केवल नीबू का पानी पीया। दूसरे दिन पहले से तबीयत कुछ ठीक थी, पर बिलकुल साफ नहीं हुई थी वे काम पर गए पर दिन भर कुछ नहीं खाया। केवल नीबू का पानी ही लेते रहे पत्नी के घबड़ाने पर उन्होंने उसे समझाया कि शहर में फ्लू फैला है, यदि खान-पान में मैं जरा भी गड़बड़ी करूँगा तो कम से कम एक सप्ताह तक बीमारी भुगतनी पड़ेगी।

यदि हम किसी मेहमान को अपने यहां बुलाना न चाहें तो उसकी आवभगत और खातिरदारी नहीं करनी चाहिए। उसी तरह जब बुखार आता हुआ दिखाई दे तो उसे उपवास रूपी लाल झण्डी दिखानी चाहिए, जिससे वह उस व्यक्ति को कंजूस और खतरनाक समझ कर उसके पास नहीं फटकेगा।

इस डेढ़ दिन के उपवास से हो सकता है वर्माजी के शरीर में थोड़ी कमजोरी आई हो, पर आर्थिक नुकसान न होने से उनकी पाकेट कमजोर नहीं हुई। पर यदि फ्लू का आक्रमण उनपर हो जाता तो एक सप्ताह तो अवश्य ही घर पर बैठा देता। और तब आर्थिक नुकसान भी होता ही। साथ ही दवा का खर्च लगता सो अलग, और सबसे बुरी बात तो यह होती कि फ्लू की वजह से शरीर अधिक निर्बल हो जाता।

रविवार को वर्माजी ने आराम किया। सोमवार को जब काम पर गए तो हंसते हुए बोले, 'इस बार मेरे दरवाजे तक फ्लू आकर लौट गया।' □

वायु और सूर्य किरण सबसे अच्छी औषधियां

राजा का इकलौता बेटा बीमार पड़ा। राज्य के चिकित्सक ने पूरी साव-धानी से उसका इलाज किया। फलतः कुछ ही दिनों में लड़का स्वस्थ हो गया।

इस घटना से राजा के मन में यह विचार आया कि जिस तरह अपने लड़के के बीमार होने पर मुझे बड़ा दुःख हुआ था, उसी प्रकार मेरी प्यारी प्रजा के लड़के-बच्चे जब बीमार होते होंगें तो उन्हें भी अवश्य ही दुःख होता होगा। यह सोचकर उसने अपने राज्य के सभी चिकित्सकों को बुलाया और उनसे कहा कि कोई ऐसा उपाय बताओ जिससे मेरे राज्य से रोग दूर हो जाए। अर्थात् आज से मेरे राज्य में कोई बीमार ही न पड़े।

एक वृद्ध और अनुभवी चिकित्सक से उन्होंने सलाह की। उस चिकित्सक ने कहा, "ऐसी दवा संसार में है और वह है शुद्ध वायु और सूर्य की किरण। इनका उपयोग वहीं किया जा सकता है, जहाँ ये मिले, इन्हें रुपये-पैसों से खरीदा भी नहीं जा सकता। अतः अपनी प्रजा में यह प्रचार कराएँ कि वे शुद्ध वायु और सूर्य किरण का अधिक से अधिक उपयोग करें। □

जले पर पानी के प्रयोग को मान्यता

पृष्ठ ३१ और ३२ पर जले पर पानी के अनुभूत प्रयोग के विषय में चर्चा की गई है और यह कहा गया है कि लोगों की यह धारणा गलत है कि जले पर पानी पड़ने से फफोले बनते हैं। विभिन्न प्रकार की दवाओं के बजाए जले पर पानी का प्रयोग सर्वोत्तम इलाज है। अब तो भारत सरकार ने भी इस बिधि को मान्यता प्रदान कर दी है। अभी कुछ दिनों पहले दिवाली के अवसर पर चार-पाँच दिनों तक दूरदर्शन पर चन्द मिनटों की एक लघु फिल्म दिखाई गई, जिसमें ओमपुरी दर्शकों को बताते है कि दिवाली में पटाखे, फुलझड़ी आदि आतीशबाजी आप चलाएंगे। मगर फुलझड़ी या पटाखों से जल जाने पर दवा लगाने के बदले फौरन घाव पर खूब ठण्डा पानी डालना चाहिए।□

भारत में प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र

अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की स्थापना होने के पहले पूर्व, पश्चिम, उत्तर,दक्षिण में प्राकृतिक चिकित्सा के लगभग १०-१५ केन्द्र ही थे किन्तु परिषद को स्थापना के बाद इस चिकित्सा पद्धति में देश के विशिष्ट व्यक्तियों, राजनेताओं, मन्त्रियों, जैसे गांधोजी, मुरारजी देसाई, श्रीमन्ननारायणजी और देबर भाई आदि के प्रयत्नो से एवं सरकारी सहयोग से इसका प्रचार-प्रसार इतना बढ़ा कि आज देश के विभिन्न १३ प्रान्तों में १८३ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र चल रहे है, जिसको सूची हम पाठको की सुविधा के लिए यहां प्रकाशित कर रहे है :

महाराष्ट्र-१

१. कमल आरोग्य मन्दिर यवतमाल
यवतमाल

२. शान्तिकुटी प्रा० चिकित्सालय
गोपुरी, वर्धा

३ प्रा० चिकित्सा केन्द्र,
महानगरपालिका,
सदर नागपुर

४. श्रीराम प्रा० चिकित्सालय,
तुमसर, भण्डारा

५. श्रीमती काशीबाई कोठारी
आरोग्य धाम, गोरक्षणी रोड
अकोला

६. राठी निसर्गोपचार व होम्यो-
पैथिक केन्द्र, श्रीकृष्णपेठ अमरावती,

७. आरोग्यधाम डा० ट्राल स्मृति
निसर्गोपचार अनुसन्धान रुग्णालय
हेड काटेज, अपर प्लैंटो, चिफलदरा
अमरावती

८. निसर्गोपचार केन्द्र
कानलदा, जलगाव

९. निसर्गोपचार योगाश्रम
१७, ओंकारनगर पेठ, जलगाँव

१०. सानेगुरूजी निसर्गोपचार केन्द्र
साने गुरूजी विद्यालय, भीकोवा,
पाणरेमार्ग, दादर, बम्बई-२९

११. योग चुम्बक निसर्गोपचार केन्द्र
गुजराथ कोलोनी, कोथरुण
पूणें-२९

१२. निसर्गोपचार आश्रम,
ऊरूली कांचन, पूणे

१३ निसर्गोपचार केन्द्र
आगरा रोड, धुलिया

१४. योग निसर्गोपचार सलाह केन्द्र
नादेड कोआप. हाउसिंग सोसाइटी
नांदेड

१५. निसर्गोपचार आरोग्य धाम,
चैतन्यबाड़ी, बुलठाणा

१६. योग व निसर्गोपचार केन्द्र
समर्थवाड़ी, औरंगाबाद

१७. निसर्गोपचार केन्द्र
२९/९० बीलल्लू भाई पार्क रोड
नं० २ अन्धेरी वेस्ट, बम्बई-५८

१८. महारानी प्रा० चिकित्सालय
कामीकोस लेन, आनन्द भवन
घाट कोपर, बम्बई-८६

१९ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र
नेनबाई निवास, नेहरू रोड,
मुलुन्द, बम्बई-८०

२०. नेचर क्योर क्लिनिक कैम्पसफार्मर
सुनाया हाउस, उ रा माला
बम्बई-२६

२१. प्रा० चिकित्सा सलाहगार केन्द्र
जे० आर० ए० क्लब रोड,
बम्बई-८

२२. प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र,
१६, भारत महल, ८६ ररीनड्राइव
रोड, उ रा माला, बम्बई-२

२३. प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र,
चाल सी० ५, रूम नं० ४
भद्रनगर, मलाड वेस्ट, बम्बई-६४

२४. निसर्गोपचार सलाह केन्द्र टाइप II
२५४ ओसर टाउनशिप, नाशिक

२५. योग निसर्गोपचार मार्गदर्शन केन्द्र
बी० १५६/४ एन ११ बड़को,
औरंगाबाद

२६. प्राकृतिक आरोग्य आश्रम,
शिवरेकुड़ी देगलूर, नन्मेड

२७. प्राकृतिक चिकित्सा आश्रम
मु०-पोस्ट आत्मानुसंधान अध्याल
टेकुड़ी ता० ब्रह्मपुरी, चन्द्रपुर

२९. निसर्गोपचार केन्द्र
चन्दनवाड़ी मिरज, सांगली

गुजरात-२

१. गुजरात कुदरती उपचार मंडल
हरिजन आश्रम, अहमदाबाद-२

२. वसन्त नेचरक्योर हॉस्पीटल
नवरंगपुरा, अहमदाबाद-९

३. निसर्गोपचार केन्द्र,
सरदार पटेल कालोनी,
अहमदाबाद-१४

४. निसर्गोपचार केन्द्र,
भुंज, कच्छ

५. निसर्गोपचार केन्द्र, सर्वोदय आश्रम
माडी, महेसाणा

६. कुदरती उपचार केन्द्र
जलालपोर, बलसाड

७. निसर्गोपचार केन्द्र, स्मार्त फलीया
गोपीपुर, सूरत

८. निसर्गोपचार केन्द्र, कंचनविला,
होपपुल के पास, सूरत

९. निसर्गोपचार केन्द्र,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली, सूरत

१०. गुजरात कुदरती उपचार मंडल,
निसर्गोपचार केन्द्र, बीतम नगर
सोसाइटी रेसकोर्स रोड, बड़ोदरा

११. कुदरती उपचार केन्द्र,
विनोबा आश्रम, गात्री, बड़ौदरा

१२. कुदरती उपचार केन्द्र, एलेम्बीक,
रेसकोर्स रोड, माटीकोरल,
बड़ौदरा

१३. कुदरती उपचार केन्द्र,
पुनित आश्रम,
मोटीकोरल, बड़ौदरा

१४. अंबालालमुंशी निसर्गोपचार केन्द्र
बल्लभ विद्यानगर, खेडा

१५. कायाकल्प जैन मर्चेन्ट सोसाइटी
पासे पीलड़ी, अहमदाबाद ७

१६. निसर्गोपचार केन्द्र
शारदा ग्राम, जूनागढ़

१७. निसर्गोपचार केन्द्र
कुतियाणा, जूनागढ़

उत्तर प्रदेश-३

१. आनन्द निकेतन प्रा. चिकित्सालय,
नकाटिया, बरेली

२. प्राकृतिक चिकित्सालय, मगरवारा
उन्नाव, कानपुर

३ प्राकृतिक चिकित्सालय आश्रम
गगाधर उन्नाव, कानपुर

४. श्री तत्वज्ञान आश्रम, गजरौला
मुरादाबाद

५. प्राकृतिक चिकित्सालय,
टाउनहाल के सामने, मैनपुरी

६. आनन्द जीवन कार्यालय, दाल मंडी
बुलन्दशहर

७. अनुरागी आरोग्य आश्रम, मधुवन
मोटहा, पो०-हमीरपुर

८. प्राकृतिक चिकित्सालय, महुडर,
बस्ती

९. मुक्ति तीर्थ, सिकन्दराराऊ,
अलीगढ़

१०. श्री कृष्ण नेचरक्योर हॉस्पीटल,
झांसी रोड, उरई, रामनगर

११. प्राकृतिक चिकित्सालय
१२८/१४६ एच-किदवई नगर
कानपुर

१२. भास्कर प्राकृतिक चिकित्सालय,
आरोग्य कुंज, खेरागढ़, आगरा

१३. कानपुर प्राकृतिक चिकित्सालय,
गोलघाट, छावनी, कानपुर

१४. प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र
काटनमिल, चौकाघाट, वाराणसी

१५. आरोग्य मन्दिर,
आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर

१६. जीवन निर्माण केन्द्र, आरोग्य-
आश्रम, छोटी पांचली, मेरठ

१७. देव अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र
मोतीझील, कानपुर

१८. प्राकृतिक चिकित्सालय, खेरागढ
आगरा

१९. कानपुर स्वास्थ्य इन्स्टीटयूट,
१२२/६२७, शास्त्री नगर, कानपुर

२०. महर्षि दयानन्द प्राकृतिक योग-
प्रतिष्ठान, रामघाट रोड, अलीगढ़

२१. कपिल इन्स्टीटयूट आफ नेचरोपैथी-
योगिक साइन्सेज
दीपलोक, खजांची नगर,
देहरादून
२२. आरोग्य सदन, गहलौता भवन,
पो० प्रासकाबाद चमन, बिजनौर
२३. योग साधना सेन्टर, साकेत, मेरठ
२४. श्री जगन्नाथ प्रसाद नेचरोपैथी,
कोड़ा जहानाबाद, फतेहपुर
२५. प्राकृतिक चिकित्सा आश्रम
झिन्जाना रोड, शामली,
मुजफ्फरनगर २४७७७६
२६. गढ़वाला प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र
लैन्सडोन, पौड़ीगढ़वाल
२७. प्राकृतिक चिकित्सा सस्थान,
सोहनलाल गली

राजस्थान-४

१. प्राकृतिक चिकित्सालय, बापू नगर,
जयपुर
२. राजस्थान प्रा० चिकित्सालय केन्द्र
गगाशहर रोड, बीकानेर
३. सोभाग नेचुरो योगिक ट्रीटमेंटकम
रिसर्च सेंटर
कोढ़ा धर्मशाला, अजमेर
४. राजकीय प्राकृतिक चिकित्सालय,
उदयपुर
५. राजकीय प्रा० चिकित्सालय,
हनुमानगढ, श्री गंगानगर
६. प्रा० चिकित्सालय, चोपासनी रोड
कमला नेहरू नगर, जोधपुर
७. प्रा० चि० स्वास्थ्य परामर्श केन्द्र,
नागौर
८. श्री हाडोती प्रा० चि० परिषद-
एवं योग संस्थान,
बारां कोटा
९. जोधपुर नगर प्रा० चि० परिषद
परामर्श केन्द्र
ई-३२, मरुधर औद्योगिक क्षेत्र,
वासनी, जोधपुर
१०. योगाश्रम प्रा० किकित्सा केन्द्र,
चुरू

दिल्ली-५

१. अखिल भारतीय प्राकृतिक-
चिकित्सा मिशन,
ए-१ ब्लाक, जनकपुरी
२. प्राकृतिक चिकित्सालय,
दिल्ली गांधी स्मारक निधि,
पटपड़गज, दिल्ली
३. नेचरक्योर क्लीनिक,
गड़ोदिया मार्केट, खारी बावली
४. आनन्द स्वास्थ्य निकेतन,
चूणामण्डी, पहाड़गंज
५. नेचरोपैथी हैल्थ होम, शोरा कोठी,
शब्जी मण्डी, घटाघर
६. नेचरक्योर क्लीनिक,
डब्लू जेड ६-बी, नारायण
७. नेचरक्योर सेन्टर,
सी-४३७, निर्माण विहार
८. प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र,
बी-१/१८६, लाजपत नगर

९. नेचरक्योर सेन्टर,
४५/४३, ईस्ट पटेल नगर

१०. नेचरक्योर सोसाइटी दिल्ली
सी-४३७, निर्माण बिहार

११. गांधी स्मारक प्राकृतिक चिकित्सा-
समिति, १५, राजघाट कालोनी

१२. अखिल भारतीय प्राकृतिक-
चिकित्सा परिषद
१५, राजघाट कालोनी

१३. नीप प्रा० चिकित्सा एवं योगकेन्द्र,
३४२/१ मण्डावली, फाजलपुर

१४ केन्द्रीय अनुसन्धान परिषद योगा-
एवं प्रा० चिकित्सा, भारत सरकार,
अशोक रोड

१५. नेचरक्योर हैल्थ होम,
२ दयानन्द मार्ग, शकरपुर

हरियाणा-६

१. प्रा. चिकित्सालय स्वाध्याय आश्रम,
पो० पट्टी कल्याणा, करनाल

२. हरियाणा प्राकृतिक चिकित्सालय,
चांग रोड, भिवानी

३. प्राकृतिक योग चिकित्सालय,
महम रोड, चिड़ियाघर के पास,
भिवानी

४. सनातन धर्म प्राकृतिक चिकित्सालय
एस० डी० कालेज रोड़,
अम्बाला छावनी

५. प्राकृतिक चिकित्सालय,
गांधी स्मारक भवन,
सैक्टर १६-ए, चण्डीगढ़

६. काया कल्प आश्रम
सोहना, गुड़गांवा

७. दयानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय,
सोहना रोड, पलवल

८. हरियाणा प्रा० चि० परिषद
द्वारा श्री कृष्ण आदर्श, गऊशाला
सभालका मण्डी, करनाल

पश्चिम बंगाल-७

१. नेचरक्योर एण्ड योग रिसच-
इन्स्टीच्यूट, प्रकृति निकेतन
डायमंड हार्बर रोड, विष्णुपुरा
२४ परगना, पश्चिम बगाल

२. मारवाड़ी रीलिफ सोसाइटी-
अस्पताल (प्राकृतिक चिकित्सा
विभाग)
रवीन्द्र सरणी कलकत्ता-७

३. प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र
पो० प्रधान नगर सिलीगुड़ी,
पश्चिम बंगाल

मध्य प्रदेश-८

१. प्राकृतिक चिकित्सालय
आनन्दनगर, रायपुर

२. प्राकृतिक चिकित्सालय
माधव नगर, पदमनाभपुर, दुर्ग

३ विश्व सखा प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र
बिष्ठान मार्ग, खरगोन, नीमाड़

४. प्रा० चि०
६४ त्रिवेणी कालोनी, इन्दौर

५. आरोग्य भवन, सिरपुर तालाब, इन्दौर
६. अहिओम योग केन्द्र यूनियन-हास्पिटल, धार रोड, इन्दौर
७. प्रा० चि०, तानसेन रोड, ग्वालियर
८. सर्व चिकित्सा सेवा संस्थान, विरलानगर, ग्वालियर
९. युग निर्माण प्रा० चि० ट्रस्ट, सुरजपुर, सुरगुजा
१०. प्रा०चि०, अम्बिकापुर सुरगुजा
११. प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र, सागर
१२. प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र, गुना
१३. प्रा० चि०, छोटी मस्जिद के पीछे
१४. शिव आरोग्य सदन, साठ खेड़ा गरोठ, मन्दसौर
१५. प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र, पटरीतराई रायपुर
१६. प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र, छतरपुर
१७. प्रा० चि०, बैरागढ़, भोपाल
१८. शासकीय योग केन्द्र, टी० टी० नगर, भोपाल
१९. प्रा० चि०, अशोक कालोनी कटनी जबलपुर
२०. प्रा० चि० सदन, १९६ गौतम मार्ग, उज्जैन
२१. प्रा० चि०, मन्दिर, टीकमगढ़
२२. प्रा० जीवन शिक्षान केन्द्र रतलाम
२३ स्वास्थ्य केन्द्र रूपखेड़ा, रतलाम
२४. प्रा० चि० केन्द्र, सरस्वती निकेतन छतरी चौक, उज्जैन
२५. प्रा० चि० महदीपुर रोड, उज्जन
२६. ओमानन्द योग साधना केन्द्र, हरसूद देवास
२७. प्रा० स्वास्थ्य केन्द्र चौगुणापुल रतलाम
२८. राजेन्द्र योग केन्द्र, रतलाम

उड़ीसा-९

१. नेचरक्योर हॉस्पीटल जी/३, सेक्टर-२, राउरकेला-८
२. नेचरक्योर हॉस्पीटल भुवनेश्वर, उड़ीसा

करनाटक-१०

१. इन्स्टीच्यूट ऑफ नेचरोपैथी यौगिक साइस, जिन्दल नेचरक्योर हॉस्पीटल, १६वां के एम एस तुमकुर, बंगलोर-५६७०७३
२. नेचरक्योर हॉस्पीटल ९ मेन, ३रा ब्लाक, जयनगर बंगलोर-५८००११
३. नेचर क्योर हास्पीटल, बंगेरी, हुबली-५८००२३

केरल-११

१. नेचर क्योर हॉस्पीटल, वरकला, गर्वनमेंटरन
२. वट्टापाड़ा नेचरक्योर सेंटर त्रीवेन्द्रम-८
३. वेचनी नेचरक्योर सेंटर नलनचेरी, त्रीवेन्द्रम

४. कल्लाज नेचरक्योर सेंटर
वलीसाडा, त्रीवेन्द्रम
५. अंजली नेचरक्योर सेंटर
सुभाषनगर
६. त्रीवेन्द्रम नेचरक्योर सेंटर
नन्हुवरियम, त्रीवेन्द्रम
७. प्रसान्ती नेचरक्योर सेंटर
ओरुलोन
८. प्राकृतिक चिकित्सालयम्
मूजीकुलम, अमागमली, कोचीन
९. गांधी नेचरक्योर सेंटर
कन्नीमंगलम, त्रीचूर
१०. महात्मा गांधी नेचरक्योर हॉस्पी-
टल, मजूर साउथ, कोट्टयाम
११. कल्पका नेचरक्योर नरसिंग होम
कक्कोडी, कालीकट
१२. वल्या नेचरक्योर हॉस्पीटल
त्रीचूर
१३. प्राकृतिक चिकित्सा सेंटर
नवकथारा, हरप्पाड
१४. करथिका नेचरक्योर सेंटर
अम्यांथोले, त्रीचुर

तमिलनाडू-१२

१. शर्मा नेचरक्योर सनेटेरियम
गणेशनगर, पुडोक्कोटाई
पिन कोड-६२२००१
२. नेचरक्योर हास्पीटल
३०, २ रा मेन रोड कट्टूरवन्नागर
अड्यार, मद्रास-६०००२०
३. नेचरक्योर सेनेटोरियम
कृष्णा ले आउट
कोयम्बटूर-६४१००६
४. नेचरक्योर सेंटर नं० १ (कोमर)
जयराम चेट्टीयर रोड
थिरूवन मीयूर, मद्रास-६०००२४
५. नेचरक्योर हॉस्पीटल
१०५ तिरूचेन्दूर रोड,
पलयमकोट्टाई-६२२०००७,
तिरूनेलवेली
६. थानगम नेचरक्योर हॉस्पीटल
सिरसाबाई इलम
११२ सी राजावेधी, कंचीपुरम
६३१५०२, चिंगलवट

आंध्र-१३

१. नेचरक्योर हॉस्पीटल
स्वरुपिल्लाई, हैदराबाद
२. नेचरक्योर हास्पीटल
बेगमपेट, हैदराबाद-१६
३. प्रकृति योगा आरोग्य केन्द्रम
कतुरीबारी स्ट्रीट,
विजयवाड़ा ५२०००१
४. प्रकृति चिकित्सालयम्
गांधीघर, पनमालुरा, कृष्णा
५. ग्रमीना प्रकृति चिकित्सालयम्
कुड्डापट्ट, अपरपल्ली
६. प्राकृथी आश्रम, डक के निकट,
काकीनाडा-६३३००१
७. ककतीया नेचरक्योर हॉस्पीटल
फोर्ट रोड, वरंगल-५०६००२

स्वस्थ रहना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है

- एक व्यायामशाला दस अस्पतालों के बराबर है।
- बिना स्वास्थ्य के शिक्षा ऐसी है
  जैसे बिना रुपये-पैसे के खाली मनीबैग।
- जिसे व्यायाम के लिए समय नहीं मिलता
  उसे बीमारी के लिए समय निकालना पड़ता है।
- स्वास्थ्य एक बहुमूल्य रत्न है जिसका मूल्य
  मनुष्य उसे खोने के बाद आंकता है।
- जीने के लिए खाएँ, खाने के लिए न जीएँ।
- दूध पीने से ताकत आती, दूध पीएँ बीमारी जाती।
  उत्तम, बढ़िया मीठा ताजा दूध सभी भोजन का राजा।

स्वस्थ रहने के लिए

नित प्रति जो कसरत करे, प्रातः समय या शाम ।
आलस तन लागे नहीं, स्वास्थ्य बने बिनु दाम ।।

तेल खायें नहीं तो उसे, मलिये सारे शरीर ।
काया सुन्दर होयगी बन जाओगे वीर ।।

सुबह शाम कसरत करो, जो चाहो सुख चैन ।
बिन कसरत नहीं तन बने, सुनो हमारे बैन ।।

विधिवत नियमित शक्ति भर, कसरत करना ठीक ।
अनियमित करने से भला, ना करना ही ठीक ।।

सयन शौच नियमित करे, भोजन काम आराम ।
स्वास्थ्य हेतु नित चाहिए करना नित व्यायाम ।।

स्वास्थ्य का माप-दण्ड

- क्या आपको निर्विघ्न नींद आती है ?
- क्या आपको दस्त साफ होता है ?
- क्या आपको भूख लगती है ?
- क्या आपको सारे दिन काम करने में उत्साह रहता है ?
- क्या आपका पेट छाती से ४-६ इन्च छोटा है ?
- क्या आप सभी से मीठे बोलते हैं ?
- यदि नहीं तो आप। रहन-सहन, खान-पान में परिवर्तन करें।
- अपने विचारों को बदलें कुछ व्यायाम अवश्य करें।
- स्वस्थ जीवन के लिए औषधियों से दूर रहें।
- किसी प्राकृतिक चिकित्सालय में चिकित्सा कराएँ।

स्वास्थ्य रक्षा के नियम

- ☐ प्रति दिन दो ही बार खायें।
- ☐ प्रतिदिन कम से कम दो सेर पानी पियें।
- ☐ प्रतिदिन एक घटा व्यायाम करें।
- ☐ प्रतिदिन एक समय प्राणायाम करें।
- ☐ सप्ताह में एक दिन उपवास करें।

स्वास्थ्य-सूत्र

स्वास्थ्य हेतु भोजन निमित
होत न धन दरकार।
केवल संयम चाहिए,
और आचार-विचार ।।
और आचार-विचार,
स्वाद के लिए न खाओ।
नष्ट करो मत खाद्य,
न तन में रोग बढ़ाओ ।।

धन दौलत की खोज में,
लेत न बिल्कुल चैन।
लहू पसीना एक करि,
धन जोड़े दिन रैन ।।
धन जोड़े दिन रैन,
स्वास्थ्य हित खरच करें जब।
अन्त समय मिले कफन,
और कुछ न मिले तब ।।

मिट्टी की महिमा

पहला सुख निरोगी काया, यह जग मिट्टी की माया ।।
औषधि करती नहीं सफाया, केवल देती रोग दबाया ।।
पेड़ू पर मिट्टी बंधवाया, रोग जड़ से करे सफाया ।।
जिसने इसे नहीं अपनाया, स्थिर स्वास्थ्य कभी नहीं पाया ।।

अगर कभी हैजा हो जावे, या ज्वर आकर तुम्हें सतावे ।।
पेड़ू पर मिट्टी तुरत चढ़ावे, दस-दस मिनटों पर बदली जावे ।
हैजा तुरत ठीक हो जावे, मिट्टी पट्टी दूर भगावे ।।

यदि दाँतों में कष्ट सतावे, डाक्टर दाँतों को उखड़ावे ।।
अच्छी मिट्टी तुरत मंगावें, उसे धूप में खूब सुखावें ।।
पेड़े के आकार बनावें, सुबह-शाम दो बार लगावें ।।
मीठी चीनी कभी न खावें, खूब मजे से चना चबावें ।।

चोट, घाव, अरु जल जाने पर, फोड़ा फुन्सी दाद खाज पर ।।
दर्द एकजीमा सिर में चक्कर, बिच्छू बर्रे सभी कष्टों पर ।।
अच्छी मिट्टी तुरत मंगाकर, ठण्डे जल से उसे मिलाकर ।।
कष्ट भाग पर उसे बांधकर, दस-दस मिनटों बदल-बदल कर ।।

भोजन के कमरे में लगाने योग्य

- आपको भूख लगी है ?
- आपने मुँह आँख और हाथ पैर धो लिए हैं ?
- जल पीना हो तो एक घण्टे पहले पीयें या
  भोजन के एक घण्टा बाद पीयें ।
- ध्यान रखें ढेंकी कुटे पूर्ण चावल का ही उपयोग करें,
  और उसका माँड़ न निकालें ।
- छिलके सहित साग का उपयोग करें ।
- भोजन बिना मिर्च, कम मसाले का खायें ।
- हाथ चक्की का चोकर सहित आटा ही व्यवहार में लावें ।
- मीठे के लिए चीनी के स्थान पर गुड़ का प्रयोग करें,
  इससे खनिज लवण नष्ट नहीं होते ।
- भोजन के बाद मुँह, आँख और हाथ अवश्य धोवें ।
- धीरे-धीरे खूब चबाकर भोजन करें,
  दाँतों का काम आँतों से न लें ।
- अचार-पापड़ की जगह मौसम के फल खायें
  इससे भोजन के बाद ही पानी पीने की इच्छा भी न होगी,
  और दाँत मजबूत होंगे ।

विभिन्न रोगों की दवाएँ

जहां तक काम चलता हो गिजा से
वहां तक चाहिए बचना दवा से।

यदि मेदे में होवे जब गिरानी,
तो पी नीबू या अदरक का पानी।

यदि खून कम बने, बलगम ज्यादा,
तो खा गाजर, चना, शलगम ज्यादा।

जिगर के बल पे है इन्सान जीता,
जिगर कमजोर हो तो खा पपीता।

जिगर आंतों में गर्मी हो, दही खा,
अनार और सन्तरे के रस को पी जा।

थकान से है यदि अंग ढीले,
तो फौरन दूध गर्मागर्म पीलें।

यदि ज्यादा दिमागी है तेरा काम,
तो खा ले, तू शहद के साथ बादाम।

स्वास्थ्य के नियम

करो चाह मत चाय की, या काफी की मीत।
नीबू भी जल गरम में, लेत रोग सब जीत ॥
फल या सब्जी सूप का ही करिए व्यवहार।
मध्य दिवस तक इस तरह, करें न ठोस आहार ॥

चोकरयुक्त रोटी तथा छिलकायुक्त हो दाल।
यह भोजन दोपहर का, तजि दो मिर्चा लाल ॥
सब्जी हरी, सलाद को, तिगुना रखिये तात।
इससे सारे देह के, रोग दूर होई जात ॥

बातें निम्न विशेष करि, रखिए चित में ध्यान।
खूब चबा के खाइये पाचन हो आसान।

दो बार भोजन करें, रक्खें इसका ध्यान।
सुखद स्वास्थ्य के लिए है यह सूत्र महान ॥

शाकाहरी बनें सदा, तजिए अण्डा-मांस।
बिना भूख मत खाइये, जब तक तन में श्वांस ॥
हप्ते में फिर एक दिन, कर लीजै उपवास।
जिससे तन-मन रोग सब, कभी न आवे पास ॥

स्वस्थ रहने के लिए

- प्रातःकाल सोकर उठते ही मैं एक गिलास ठंढा पानी पीता हूं
ठढा से तात्पर्य है—ताजा, बरफ डाला या फ्रिज में रखा नहीं।

- भोजन के समय सम्भव हो तो पहले सन्तरे या टमाटर का रस पीयें।

- भोजन के एक घंटा बाद एक-दो गिलास पानी पीयें।

- जब अपच मालूम हो, बहुत धीरे-धीरे एक गिलास पानी पीयें।

- यदि पेशाब रंगीन दिखाई दे तो पानी पीने की मात्रा बढ़ा दें।

- कब्ज की किंचित शिकायत होने पर पानी अधिक पीयें अमरूद और त्रिफला का उपयोग करें।

किन पदार्थों में कौन विटामिन मिलेंगे।

ए मक्खन, दूध, गोभी, पके आम,

बी-एक टमाटर, मूली, गेहूँ, चावल, दाल

बी-दो दूध, बाजरा, जौ, मक्का, गाजर

सी आलू, शक्करकन्द, कमला नीबू, स्ट्राबेरी, अमरूद

डी अनन्नास, नासपाती, सूर्य की धूप, मक्खन, छेना

क्या आप जानते हैं

दिल २४ घण्टे में १,०३,६८६ बार धड़कता है।

ख़ून २४ घण्टे में १,६८,८००,००० मील आपके शरीर में सफर करता है।

श्वांस २४ घण्टे में २३,०४० बार ली जाती है।

भोजन २४ घण्टे में ३-७५ पौंड तक किया जाता है।

गैस २४ घण्टे में ७५८ पौंड शरीर से बाहर निकलती है।

स्वास्थ्य रूपी धन कमाने के उपाय

एक घण्टे चिन्ता मत करें, बदले में एक घण्टे अधिक हँसें

एक दावत के मोह को छोड़ें, बदले में घर का सादा भोजन करें

एक दिन रात्री की गोष्ठी छोड़ें, एक दिन अच्छा साहित्य पढ़ें

एक घण्टे बिजली में कम रहें, एक घण्टे हल्की सूर्य किरण में अधिक रहें

एक घण्टे मोटर में कम चढ़ें, एक घण्टे पैदल चले

एक प्याली चाय कम पिएँ, एक प्याली दूध बिना चीनी का पिएँ

एक बार अन्न खाना छोड़ दें, एक बार फलाहार करें

सप्ताह में एक दिन का, उपवास अवश्य कर

जीवन को ऊँचा उठाना है तो,

योगी बनो पर रोगी नहीं
स्वस्थ बनो पर मोटे नहीं
बलवान बनो पर दुष्ट नहीं

खरे बनो पर खारे नहीं
धीर बनो पर सुस्त नहीं
सरल बनो पर मूर्ख नहीं
सावधान बनो पर वहमी नहीं
उत्साही बनो पर जल्दबाज नहीं
न्यायी बनो पर निर्दयी नहीं
चंगे बनो पर हठी नहीं
दृढ़ बनो पर दुर्बल नहीं
प्रेमी बनो पर पागल नहीं

समालोचक बनो पर निन्दक नहीं
नम्र बनो पर चापलूस नहीं
स्पष्ट बनो पर उद्दण्ड नहीं
चतुर बनो पर कुटिल नहीं
मितव्ययी बनो पर कंजूस नहीं
गम्भीर बनो पर मनहूस नहीं

सिगरेट की महिमा

मै दयालु सिगरेट, न मुझसे भय खाओ तुम भाई।
हानि रहित मुझको बतलाते, विज्ञापन सारे भाई ॥ १ ॥

वे तुमसे कहते, मै हूँ अति सुन्दर मित्र तुम्हारी।
झूठ बात होने पर भी, वह लगती तुमको प्यारी ॥ २ ॥

वे कहते सन्तुष्ट तुम्हें, करती उमग भर तन में।
अब मेरे शिकार बन जाओ, हिचक न जाओ मन में ॥ ३ ॥

अपने इस सुन्दर होठों के, बीच दबाकर मुझको।
बस बिलकुल आधुनिक दिखाई दोगे, फिर तुम सबको ॥ ४ ॥

शायद जरा दिखाओ पहले, तुम मुझ पर नाराजी।
मुझे न चाहो, किन्तु शीघ्र ही जीतूंगी मैं बाजी ॥ ५ ॥

तुम देखोगे, मेरे बिना न काम तुम्हारा चलता।
मुझको पी लेने से मानो, नूतन जोश उमड़ता ॥ ६ ॥

एक बार मेरे फन्दे में, जो मानव आ जाते।
जीवन भर के लिए सुनो, वे मेरे ही हो जाते ॥ ७ ॥

जब हम मिली, तभी से तुमने खो दी निज आजादी।
मैंने अपनी धाक तुम्हारे मन में खूब जमा दी ॥ ८ ॥

रग तुम्हारे गोरे गोरे गालों का मुरझाया।
पड़ी तुम्हारी अगुलियों पर, मेरी काली छाया ॥ ९ ॥

अब जपते हो मुझसे छुटकारा पाने की माला।
किन्तु भाई, तुमको तो मैंने कड़ी कैद में डाला ॥ १० ॥

गलत राह दिखलाकर मैंने, तुम्हें बहुत भटकाया।
दृष्टि मन्द हो गई तुम्हारी, सूख गई है काया ॥ ११ ॥

स्वास्थ्य नष्ट हो गया और कफ, भी तुमको आता है।
तुम तो टी० बी० के मरीज हो, डाक्टर बतलाता है ॥ १२ ॥

फिर कहता है ज्यादा जीने की, तुम छोड़ो आशा।
कैंसर तुम्हें हो गया है, सिगरेट ने तुमको फांसा ॥ १३ ॥

अवसर तुमने गंवा दिया, अब क्या रोना पछताना।
अपनी कब्र खोद ली तुमने, तब मुझको पहचाना ॥ १४ ॥

मेरी एक साथिन भी है, जिसे "मृत्यु" सब कहते ॥
वही तुम्हें लेने आयगी, अच्छा चलूं नमस्ते ॥ १५ ॥

हँसने के लिए

एक प्राकृतिक चिकित्सक व्याख्यान देते समय कहने लगे कि तम्बाकू से मेरा गला नहीं खराब होता। सुनने वालों की आंखें उन्हें आश्चर्य से देखने लगीं। किन्तु सब लोग हसने लगे जब उन्होंने कहा कि मेरे गले को तम्बाकू इसलिए असर नहीं करती कि मैं उसे छूता ही नहीं।

———

एक ९० वर्ष के व्यक्ति सभा में व्याख्यान देने के लिए खड़े हुए। उन्हें उस बैठक का विषय मालूम नहीं था। जिज्ञासा भरी दृष्टि से जब इधर-उधर देखने लगे तो पास ही में बैठी एक मनचली लड़की ने स्लिप भेजी कि अपने बुढ़ापे के अनुभव सुनाइये। उन्होंने भाषण आरम्भ करते हुए कहा कि मेरी तो अभी जवानी चल रही है, जवानी के अनुभव सुना सकता हूं। बुढ़ापे के पास तो मैं आया ही नहीं, उसको कैसे बता सकता हूँ।

———

एक व्यक्ति ने तालाब में डूबते हुए एक डाक्टर को बचाया। निकलने के बाद डाक्टर ने बचानेवाले को धन्यवाद दिया और कहा—मेरे पास इस समय कुछ रुपये-पैसे नहीं हैं जो दूं, लेकिन उससे भी बहुमूल्य चीज देता हूं कि बराबर डाक्टरों से दूर रहो। इनसे पैसे भी बचेंगे और जान भी बचेगी।

———

एक मोटे व्यक्ति ने अपने मोटापे से तंग आकर चिकित्सक से कहा कि मैं अपना मोटापा दूर करने के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हूं। पर मिठाई, तली हुई चीजें, आलू छोड़ने के लिए तैयार नहीं। फल तो मैं खा ही नहीं सकता।

चिकित्सक ने हंसते हुए कहा—आपका मोटापा भगवान ही दूर कर सकता है।

———

जीवन शक्ति की रक्षा के उपाय

यह समझना भूल है कि ठंडी हवा से सर में दर्द हो जाता है और सर्दी, जुकाम हो जाता है। सर्दी-जुकाम तो अधिक खाने से, खास करके स्टार्च वाले पदार्थ ज्यादा खाने से होता है। इसके प्रमाण में यह आसानी से कहा जा सकता है कि जाड़े के दिनों में लोग गर्मी के दिनों से अधिक खाते हैं, और कहते हैं कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जाड़े में ज्यादा खाना आवश्यक है, पर जब सर्दी जुकाम होती है तो जाड़े का बहाना करते हैं।

यदि हम जीवन शक्ति की सतर्कता पूर्वक रक्षा करें और शरीर को मशीनरी को सतुलित रखें तो हम स्वस्थ रहेगे इसके विपरीत जाने पर हम अस्वस्थ और दु.खी रहेंगे।

अस्वस्थ लोगों को प्रकृति के सम्पर्क में ले आना चाहिए। कमजोर और निराश रोगी यदि प्रकृति के सम्पर्क में आए और घर के बाहर प्राकृतिक वातावरण में रहे तो आश्चर्यजनक उन्नति होगी।

जब कोई आग में हाथ देता है तो हाथ जल जाता है—यह प्रकृति का नियम है। इसी तरह जब व्यक्ति प्रकृति के नियमों का उल्लघन करता है, तो वह अपना स्वास्थ्य गँवा बैठता है।

औषधियों से रोग को दबाना ठीक वही क्रिया है जैसे किसी के माथे पर बैठी मक्खी को कुल्हाड़ी की चोट से भगाना।

शरीर की रोग निरोधक शक्ति को नष्ट करने में जितने कारण होते हैं उस सबसे प्रधान कारण भोजन की गल्तियां हैं।

एक मोटे आदमी ने एक लम्बे उपवास के बाद कहा—आज जीवन में पहली बार मैं पालथी मार कर बैठ सकता हूं और खड़ा होने पर अपने पैरों को देख सकता हूं।

तीन आवश्यक बातें

तीन की कामना करो	स्वास्थ्य संतोष मित्रता
तीन को नियम से करो	भजन व्यायाम भोजन
तीन के लिए प्रयत्न करो	स्वतंत्रता आत्मनिर्भरता प्रसन्नता
तीन को सदा मान दो	माता पिता गुरु
तीन से घृणा करो	निर्दयता परनिन्दा अभिमान
तीन की सराहना करो	परिश्रम समय की पाबंदी सहनशीलता
तीन में दृढ़ रहो	साहस प्रेम सज्जनता
तीन पर नियन्त्रण करो	क्रोध व्यवहार जिह्वा
तीन पर दया करो	दुर्घटनाग्रस्त भटका यात्री विधवा
तीन का संग छोड़ो	मिथ्यावादी व्यभिचारी जुआरी
तीन को हृदय से निकाल दो	राग द्वेष मोह
तीन की हँसी मत उड़ाओ	बूढ़ा पागल अपंग
तीन की प्रशंसा करो	स्वाभिमान मधुर व्यवहार ईमानदारी
तीन से सदा बचो	हिंसा झूठ चोरी
तीन आंसुओं को पवित्र मानो	प्रेम के करुणा के सहानुभूति के

प्राकृतिक चिकित्सा के अनुभूत प्रयोग जो पेन्सिलिन की तरह कार्य करते हैं।

लीवर को मजबूत करने के लिए

सुबह खाली पेट एक चुटकी चावल मुँह में रखकर
बिना चबाये पानी से निगल जाना।

हाई ब्लडप्रेशर कम करने के लिए

नमक का उपयोग बिलकुल बन्द कर दे या बहुत कम कर दें।

चोट लगने पर

ठंडे पानी की पट्टी बाँधना।

दांतों को मजबूत करने के लिए

कड़ुवे तेल में नमक मिलाकर मंजन करने से
दांत मजबूत होते हैं, पायरिया तक ठीक होता है।

भोजन के बाद पेट से वायु या गैस निकालने के लिए

सीधे सो जाएं, आठ लम्बे सांस लें,

फिर दाहिनी करवट हो कर सोलह सांस लें,

अन्त में बायीं करवट लेकर बत्तीस सांस लें,

इससे वायु मुंह से या गुदा से निकल जाती है।

शरीर में कहीं भी फुन्सी हो तो

तीन मिनट गरम और एक मिनट ठंडा सेंक दें।

एक दो बार करने से फुंशी खतम हो जाएगी और

बड़े फोड़े का रूप नहीं लेगी।

घुटनों के दर्द के लिए

भोजन में खीरे का उपयोग करें और एकपोतिया लहसुन खाएं।

जलने पर

जले हुए स्थान को तुरन्त पानी में डुबा दें और

जबतक जलन नहीं मिटे उसी में रहने दें।

उससे फफोला नहीं होगा तथा दाग नहीं पड़ेगा ●

सर्वोत्तम वाक्य

सर्वोत्तम छः शब्द :—मैं स्वीकार करता हूं, मुझसे भूल हुई।

पांच शब्द :—आपने एक अच्छा काम किया।

चार शब्द :—आपकी क्या राय है ?

तीन शब्द :—यदि आप चाहें।

दो शब्द :—बहुत धन्यवाद।

एक शब्द :—हमलोग।

अभिनन्दन समारोह : एक विवरण

९ नवम्बर १९८६, रविवार। दोपहर से घिरे बादलों की घटा में लुक-छिप कर संध्या उतरी कि बादल छँट गए। मोयरा स्ट्रीट के उत्तर-दक्षिण की सरणी मोटरों की कतार से भर गई। 'विद्यामन्दिर' का बाह्य द्वार गंदे की पीताभ झालरों का पीताम्बर ओढ़े प्रकृति की अपार महिमा का स्मरण करा रही थी। सभागार के मुख्य द्वार, प्रांगण व मंच पुष्पो से सुसज्जित ! मच पर पीछे झूलता बोध पट्ट : 'विशिष्ट समाजसेवी धर्मचन्द सरावगी अभिनन्दन समारोह'। यहाँ से वहाँ तक डायस श्वेत वस्त्र से आवृत, जिस पर कतार से रखे थे नाम-पट्ट समारोह के विशिष्ट अतिथियो के।

सध्या छ बजा कि सभाकक्ष सुधि-श्रोताओं व कलकत्ते की विभिन्न संस्थाओं के सभासदो से खचाखच भर गया। वातावरण में यहाँ से वहाँ तक सम्मान की उच्छसित भावना लहरा उठी। उद्घोषक श्री भँवरलाल सिंघी ने आज के कार्यक्रम की उद्घोषणा के साथ स्वागत अभिनन्दन सहित मंच पर आह्वान किया अभिनन्दन समारोह के अध्यक्ष श्री राधाकृष्णजी कानोड़िया का। इसके साथ ही उन्होंने मंच पर आसन ग्रहण करने का अनुरोध किया सौम्य और विशिष्ट सेवाओ के प्रति आभार प्रदर्शन हेतु सवश्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, विजयसिंहजी नाहर, राधाकृष्णजी नेवटिया, बजरंगलालजी लाठ, कलकत्ता के शेरीफ पद्मश्री डा० जी० के० सराफ, प्रो० हीरालालजी चोपड़ा व भगवतीप्रसादजी खेतान और आज के अभिनन्दनीय धर्मचन्दजी सरावगी से। तत्पश्चात कार्यक्रम के शुभारम्भ की घोषणा करते हुए मंगल गीत के लिए नगर की स्वर साधिका श्रीमती कल्पना बांठिया से मंगलगीत प्रस्तुत करने का आग्रह किया गया।

और शांत सभागार में स्वरगरिमा की लहर लहरा उठी :

"सत्य समता के तटों से योग ही उन्मुक्त धारा।
उस सनातन युगपुरुष को कोटिशः वन्दन हमारा।।"

इस वन्दना के साथ आज के समारोह के अध्यक्ष श्री राधाकृष्ण कानोड़िया का माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन किया अभिनन्दन समिति के मन्त्री श्री दीपचन्दजी नाहटा ने। इस माल्यार्पण के क्रम में कलकत्ता के शेरिफ पद्मश्री डा० जी० के० सराफ को श्री मदन अग्रवाल, श्री विजयसिंहजी नाहर को श्री दीचन्दजी नाहटा, श्रीराधाकृष्ण नेवटिया को सुन्दरलालजी टांटिया, श्री बजरंगलालजी लाठ को श्री दीपचन्दजी नाहटा, श्री दीपचन्द नाहटा को हिम्मतसिंहजी जैन, श्री भगवतीप्रसादजी खेतान को कृपाचन्दजी सुराणा, डा० हीरालालजी चोपड़ा को कमलकुमारजी जैन तथा रामकृष्ण जी सरावगी को कमलकुमारजी जैन ने माल्यार्पण किया। इसी के साथ उद्घोषक की ओजस्वी वाणी गूँजी कि और अब अभिनन्दन समिति के अध्यक्ष से निवेदन है कि वे इस आयोजन के मुख्य केन्द्र श्री धर्मचन्दजी सरावगी को माल्यार्पण करें—तालियों की गड़गड़ाहट के साथ।

करतल ध्वनि मंच व सभाकक्ष में एक लय एक स्वर में गूँज उठी।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि आज के समारोह के दो अतिथि लोक कल्याण मन्त्री यतीन चक्रवर्ती एवं कारपोरेशन के उप-मेयर श्री मणिसान्याल विलंब से आए थे। उनके आते ही मंच पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई थी। क्योंकि ये मंत्री और उप-मेयर मात्र नही थे पर मंच पर आसीन महानुभावों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर देश हितार्थ काम करने वाले संगी-साथी थे।

श्री रामकृष्ण सरावगी

अभिनन्दन के इन क्षणों में अभिनन्दन समिति के अध्यक्ष श्री रामकृष्ण सरावगी ने समिति के गठन, उद्देश्य और प्रेरणा की चर्चा के क्रम में अभिनन्दन के और अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रेरक श्री विजयसिंह नाहर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने कहा 'जब धर्मचन्दजी सरावगी अपना ८२वाँ जन्म दिवस मना रहे हैं उस समय आप और हम एकत्रित हैं उनका अभिनन्दन करने के लिए।'

'धमचन्दजी अपनेआप में एक व्यक्ति नहीं, एक सस्था है। जिस क्षेत्र में वे गए उस क्षेत्र में न केवल आशातीत सफलता प्राप्त की बल्कि उन्होंने अपने आपको पूरी तरह उस कार्य में समर्पित किया। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रधान सचिव के रूप में और उसके साथ अनेक वर्षों तक

जुड़े रह कर एक अन्यतम कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने जो अपनी सेवाएँ दीं, सोसाइटी का इतिहास इस बात का साक्षी है कि, उनकी वे विनम्र सेवाएँ इस प्रमुख सेवा संस्था के लिए काफी उपयोगी रहीं। राजनीति के क्षेत्र में वे आए, कलकत्ता कारपोरेशन के कौंसिलर चुने गए। कलकत्ता कारपोरेशन का अपना एक इतिहास रहा है। बगाल की राजनीति में जो भी आया है, डा० विधान चन्द्र राय, जनाब फजलुल हक, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, देशबन्धु चितरंजनदास, कलकत्ता कारपोरेशन के नाम के साथ ये सभी नाम उभर आते हैं, और उसी क्रम में कौंसिलर हुए श्री धर्मचन्द सरावगी। एक काम जो उन्होने बहुत ही महत्वपूर्ण किया—कलकत्ता कारपोरेशन में उन्होंने एक प्रस्ताव रखा कि कलकत्ते के किसी भी ट्राम या बस में चलने वाला कोई भी व्यक्ति धूम्रपान नहीं कर सकेगा। आज शायद उस बात को ३२-३३ वर्ष बीत गए लेकिन श्री धर्मचन्दजी के द्वारा बनाया गया, रखा गया यह प्रस्ताव आज भी कानून के रूप में अमल में लाया जाता है। पश्चिम बगाल कांग्रेस कमेटी ने धर्मचन्दजी को राज्य-सभा का मनोनयन-पत्र दिया, धर्मचन्दजी ने उसमें जयलाभ किया और जब कांग्रेस के हाई-कमान ने कहा कि हम आपको बंगाल मे रखना चाहते है, राज्य-सभा के सदस्य चुने जाने के दूसरे दिन ही उन्होने राज्यसभा का पद छोड़ दिया और थोड़े ही दिनों बाद वे पश्चिम बगाल विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। राजनीति से वे जुड़े रहे, किन्तु कभी भी राजनीति उनके लिए पेशा नही बनी। एक आदर्श के रूप में, एक सेवक के रूप में उन्होने बंगाल की सेवा की। फिर उनके जीवन का क्रम चला मनुष्य को प्रकृति के निकट ले जाने का। आज के युग में जबकि मनुष्य प्रकृति से दूर हटता चला जा रहा है, धर्मचन्दजी ने यह प्रयास किया कि मनुष्य को, इन्सान को प्रकृति के निकट ले जाएँ। उन्होंने यहां प्राकृतिक निकेतन नामक एक संस्था की स्थापना की और आज भी यह सस्था डायमण्ड हारबर में बहुत अच्छे रूप से व्यक्ति को प्रकृति के निकट ले जाने की चेष्टा में रत है। वगैर किसी आकांक्षा के, बगैर किसी पद के। ८१ वर्ष की आयु प्राप्त कर धर्मचन्दजी आज भी उतने ही सक्रिय है जितना कि आज से ४० या ५० वर्ष पहले थे। हम जैसी उम्र वालों के लिए ये ईर्ष्या के पात्र हैं। हमलोग बराबर यह चेष्टा करते हैं कि धर्मचन्दजी से कुछ सीखें और धर्मचन्दजी ने हमलोगों को बहुत कुछ सिखाया भी है। आज इस अभिनन्दन समारोह के अवसर पर जब मैं आप सबका स्वागत करने के लिए खड़ा हुआ हूँ,

अभिनन्दन समिति की ओर से, तो हो सकता है कि हमारे आयोजन में त्रुटियां रही हों, त्रुटियां रहनी स्वाभाविक है। किन्तु हमने एक चेष्टा की है कि हमलोगों से पहले की पीढ़ी का जो भी व्यक्ति हमारे बीच में उपस्थित हैं, देश और समाज के लिए उसने अपनी विनम्र सेवाएं अर्पित की है उनका समादर करने की। आज हम अभिनन्दन उनका नहीं करते, धर्मचन्दजी का अभिनन्दन नहीं करते, हम अभिनन्दन करते हैं उनके कार्यों का, उस प्रेरणा का जिस प्रेरणा से धर्मचन्दजी ने प्रेरित होकर अपने जीवन में इतने बड़े काम किए। आज के इस स्वागत समारोह में हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि देश सेवा का, समाज सेवा का और मनुष्य को प्रकृति के निकट ही नही, निकटतम ले जाने का जो प्रयास धर्मचन्दजी ने किया है, आनेवाली पीढ़ी उस प्रयास को कायम रखे और मै समझता हूँ कि यही धर्मचन्दजी का वास्तविक अभिनन्दन होगा।"

डॉ० जी० के० सराफ

पद्मश्री कलकत्ता के शेरिफ डा० जी के० सराफ ने आठ दशकों के इतिहास से जुड़े धर्मचन्दजी का अभिनन्दन करते हुए कहा—मैं अभिनन्दन धर्मचन्दजी का नहीं बल्कि अभिनन्दन करना चाहता हूं सुन्दर स्वास्थ्य का। स्वास्थ्य की उस कल्पना का जिसमें मनुष्य पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर सुन्दर जीवन व्यतीत कर सकता है, दीर्घायु हो सकता है। संयम, व्यायाम, प्राकृतिक चिकित्सा से कैसे स्वस्थ रहा जा सकता है। आज यह कितना बड़ा एक सबूत है कि ठीक संयम के साथ रहकर, ठीक भोजन करके व्यक्ति ८२ वर्ष की अवस्था मे भी इतना स्वस्थ, इतना सशक्त हो सकता है। आज वे मन से भी पूर्ण जागरूक हैं वे शारीरिक, मानसिक और विचार शक्ति सभी में पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं। जो दिशा उन्होंने दिखाई कि व्यक्ति कैसे स्वस्थ रह सकता है, यह बहुत आवश्यक है, विशेषकर हमारे मारवाड़ी समाज मे जहां पर अधिकतर लोग खाना अधिक खाते है और अधिक भोजन करके बीमार पड़ते हैं। कम भोजन करके बीमार पड़ने वाले दूसरे वर्गों में होगे, हमारे समाज में लोग अधिकतर बीमार इसलिए पड़ते हैं कि वे अधिक खाते हैं और अधिक कमाना, अधिक भोजन करना, व्यायाम न करना, हाथ पैर न हिलाना यह कितनी शर्म की बात है, जिसके कारण हमारे समाज के स्वास्थ्य का स्तर बहुत नीचा

है। धर्मचन्दजी सरावगी का उदाहरण केवल मारवाड़ी समाज के लिए नहीं, पूरे देश के लिए, मैं कहूँगा पूरी मानव जाति के लिए एक आदर्श है। अनुकरण हम करें और उनसे लोग सीखें कि कैसे स्वास्थ्य ठीक रखा जा सकता है। आज जितनी दवाइयों का दुरूपयोग होता है। जितनी बीमारियां बढ़ती जा रही है, डाक्टर बढ़ते जा रहे हैं और दवाइयां बढ़ती जा रही है। विदेशी कम्पनियों कि जो दवाइयां दुनियां में कहीं नही बिकतीं, जो जहर है, जैसे नोवलजीन है—यह सिद्ध हो चुका है कि नोवलजीन से आदमी मर सकता है, मैक्साफार्म उससे आदमी अन्धा हो सकता है, वे सारी दवाइयां आकर इस देश में बिकती है। थर्ड वर्ल्ड में जितनी कूड़ा करकट दवाइयां है उन सबका यहाँ संग्रह-विक्रय होता है और लोग उसको भोजन की तरह खाते हैं। दवाइयों का विक्रय तभी बन्द होगा जब हम इन दवाइयों से दूर हों। हम व्यायाम करके, कसरत करके ठीक ढंग से जीकर अगर अपना स्वास्थ्य बना सकें तो वही स्वास्थ्य होगा। दवाइयों से लिया हुआ स्वास्थ्य उधार का स्वास्थ्य है। टिकता नहीं, बहुत जल्दी टूट जाता है। धर्मचन्दजी ने जो २१ बीघा जमीन जोका मे देकर इतना सुन्दर प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र बनाया, यह दान सचमुच बहुत सराहनीय है। लोग वहां जाकर, बहुत से लोग लाभ उठाते हैं लेकिन मैं चाहता हूँ कि आज उनके इस अभिनन्दन समारोह के बाद एक ऐसा काम हो जिसमें और अधिक से अधिक लोगों को स्वास्थ्य की सिक्षा दी जा सके और आदर्श के रूप में लोग धर्मचन्दजी को देखकर उनसे प्रेरणा लें, उनसे सीखें रहने का ढग, जीने की कला और भोजन, सयम, व्यायाम सब। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि धर्मचन्दजी सरावगी का स्वास्थ्य इसी तरह बना रहे, वे शतायु हों और हम फिर उनसे बार-बार हर वर्ष प्रेरणा लेते रहे। धन्यवाद।

श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका

सरावगीजी का अभिनन्दन करते हुए वयोवृद्ध प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका ने बड़ाबाजार युवक सभा के अपने साथी धर्मचन्दजी की व्यायाम निष्ठा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा :

धर्मचन्द सरावगी का जो अभिनन्दन आज हो रहा है बहुत ही उचित है। मैं धर्मचन्दजी को बहुत दिनों से जानता हूँ, खास करके हम लोगों का सम्बन्ध बड़ाबाजार युवक सभा के लिए काफी घनिष्ठ रहा है। बड़ाबाजार युवक सभा

की स्थापना के समय से ही मेरा सम्बन्ध रहा है। धर्मचन्दजी सरावगी वहां व्यायाम करने के लिए नियमित रूप से उपस्थित होते थे। शरीर चर्चा के विषय में बराबर ही इन्हें प्रीति रही है और वे इसमें काफी दिलचस्पी ले कर व्यायाम करते थे, खासकर वजन उठाने में वे बराबर ही अपनी परीक्षा देते रहते थे। ८० पौंड का वजन जिसे बेंचप्रेस कहते हैं आसानी से करते थे। बल्कि मैंने आज भी कहा उनसे कि इस उम्र में और इतना भारी वजन उठाना अच्छा नहीं है। वे बहुत कर्मनिष्ठ हैं और काफी पब्लिक के कामो में दिलचस्पी रखते हैं। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे दीर्घायु प्राप्त करें और समाज का और देश का काम अच्छी तरह से करते रहें।

श्री मणि सान्याल

तत्पश्चात् भूतपूर्व पार्षद व वर्तमान में कलकत्ता कारपोरेशन के उप-मेयर श्रीमणी सान्याल ने अपने उस साथी का जिसके साथ १९५२ से १९५७ तक पार्षद रहे अभिनन्दन किया। कहा :

माननीय सभापति, उपस्थित सज्जनवृन्द। कलकत्ता कारपोरेशन में धर्मचन्द जी के साथ काम करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। हम दोनों एक साथ एक ही समय में लम्बे अरसे तक कौंसलर के रूप मे काम करते रहे है। उस समय काम करते हुए कलकत्ता महानगरी की उन्नति की परिकल्पना के विभिन्न कार्यों में उनका विचार एवं प्रयत्न जो हमने देखा वह मुझे सदा स्मरण रहेगे। इस शहर को वे प्राणों से भी अधिक प्यार करते है। इस शहर की उन्नति अवनति के प्रति उनकी चिन्ता-भावना का अन्त नही है। आज उसी दृष्टि से इस शहर के एक अधिवासी के रूप में तथा आज फिर से पौर सभा से युक्त होने के खातिर मैं धर्मचन्द सरावगी को इस शहर के अधिवासियों की ओर से, कलकत्ता कारपोरेशन के सदस्य होने के नाते ही नहीं बल्कि इनके बहुविध जन सेवा में लगे रहने के कारण उनका अभिनन्दन करता हूँ। समाज सेवा, दरिद्रजनों की सेवा ही इनका जीवन धर्म रहा है। इसके अलावा इनका एक और परिचय है, वह है, इनका प्राकृतिक चिकित्साविद होना और कि प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध मे ये केवल आग्रही ही नहीं हैं बल्कि इस चिकित्सा पद्धति की उन्नति तथा जनसाधारण में इसके प्रचार-प्रसार के लिए भी इनकी चेष्टाओं का कोई अन्त नहीं है। धर्मचन्दजी जैसे कर्मठ पुरुष, जो ८१ वर्ष पार कर आज ८२ वें प्रवेश कर रहे हे अभिनन्दनीय हैं।

डॉ० हीरालाल चोपड़ा

मनुष्य के जीवन का लक्ष्य यह है कि वह अपने लिए ही नहीं बल्कि दूसरों के वास्ते भी जीता है और दूसरों के वास्ते जीने के लिए उसको अपने स्वास्थ्य को बरकरार रखना जरूरी है। प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में मुझे स्वयं कुछ ऐसा अभ्यास है। ऐसा देखा गया है कि इस प्राकृतिक चिकित्सा से बहुत पुरानी बीमारियां भी फौरन दूर हो जाती रहीं हैं। मेरे पिताजी ने एक टी० बी० का सैनीटोरियम बनाया था डाक्टरी को छोड़कर उसे प्राकृतिक चिकित्सा की तरफ मोड़ा। ठीक है, उस वक्त सारे डाक्टर भी हँसते थे कि यह भी क्या कोई डाक्टरी है लेकिन बाद में पता चला कि गांधीजी ने भी अपनी आत्मकथा में इसका जिक्र किया है कि किस प्रकार से ये चीज हमेशा के लिए इन्सान को तन्दुरूस्त बना देती है। मगर प्राकृतिक चिकित्सा ने हमको यह बता दिया है कि इन्सान सौ साल तक रह सकता है। हमारे प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका जैसे बुजुर्ग ने सिद्ध कर दिया है कि किस प्रकार हम जिन्दगी को ऊपर बढ़ा सकते हैं और धर्मचन्दजी ने यह बता दिया है कि इतना जीवन व्यतीत करते हुए हम किस प्रकार से कार्यरत रह सकते हैं। इस दुनियां के अन्दर यह नही कि जगल मे बैठकर, बल्कि सोसाइटी के अन्दर काम करेंगे। इसलिए ऐसे लोगों के वास्ते तो उम्र कोई बाधा नही होती। यह तो नौजवान हैं, ८२ सालां नौजवान। भगवान करे कि ये और भी बहुत ज्यादा दिनो जिए। और हम इनसे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने की कोशिश करें। हमारी आनेवाली पीढी इनको अपना ध्येय बनाकर इनके साथ चलने का प्रयत्न करे और अपने जीवन को सादा स्वस्थ रखने के लिए इनका अनुकरण करे।

श्री भगवती प्रसादजी खेतान

मेरा तो धर्मचन्दजो के साथ पारिवारिक सन्बन्ध है। मेरे पिताजी के साथ इनके पिताजी की दोस्ती थी। और ये दोस्ती अब भी बरकार है। इनके बारे मे मैं क्या कहूँ। ये जब भी मिलते है, बड़े प्रेम से मिलते है, इनके समाज सेवा के बारे मे, और सबके बारे में तो आप सब सुन ही चुके हैं. मैं यह कह सकता हूँ कि ये सब तरह से मिलनसार और अच्छे आदमी हैं और अपने सिद्धान्त के पक्के हैं।

श्री विजयसिंह नाहर

ऐसे तो प्रकृति निकेतन, प्राकृतिक चिकित्सा प्राकृतिक तरीके में उनका बहुत विश्वास है। स्वयं करते हैं, सिखाते हैं। उस सम्बन्ध में उन्होने बहुत-सी

पुस्तकें भी लिखी हैं और लोगों को देते हैं। 'स्वस्थजीवन' पत्रिका भी निकालते थे। नियमित व्यायाम करते हैं, व्यामशाला रोज जाते हैं और वहां पर हर तरीके का व्यायाम करते हैं, और अभी भी, इस उम्र में भी व्यायाम सीखते हैं। आपलोगों को सुनकर खुशी होगी कि अभी इन्होंने लाठी चलाना सीखना शुरू किया है, कराटे सीख रहे हैं नये तरीके से। वे कहते हैं कि बुढ़ापा कुछ नहीं, उम्र कुछ नहीं, हमारे शरीर में फुर्ती है, हम सब कुछ सीखेंगे। और ऐसे तो वे एरोप्लेन चलाना भी जानते हैं और स्पोट्स हैकिट का शौक रहा है। सेवा के हिसाब से उन्होंने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी और अनेक प्रतिष्ठानों के साथ युक्त है और सेवा बराबर करते आए हैं। राजनीति में भी उन्होने कुछ दिन सक्रिय अंश लिया, कारपोरेशन के कौंसिलर तो थे ही और बगालकौंसिल में अपर हाउस में भी बहुत-साल मेम्बर रहे हे। अभी बताया कि दक दफे उन्हें राज्यसभा में कांग्रेस की तरफ से मनोनीत किया गया था और वे जीत भी गए पर कितना त्याग उनके अन्दर था कोई लोभ नहीं था जो एक अन्य सदस्य जिनको भेजना जरूरी था, वे बेचारे उस बार हार गए और उनके हारने से धर्मचन्दजी से निवेदन किया गया कि आप बगाल में ही रहिए, दिल्ली जाकर क्या कीजिएगा, इनका जाना जरूरी है इसलिए इस पद को आप छोड़ दीजिए। जिस दिन इनका निर्वाचन हुआ, उसके दूसरे ही दिन उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया।

इतना बड़ा एक दृष्टान्त उनके जीवन का हमारे सामने है—प्रकृति निकेतन बहुत बड़ी जमीन है, उनका सुन्दर एक बगीचा बनाया हुआ था, हम उस बगीचे में उनके साथ भी गए है और उन्होंने बड़ी खुशी के साथ उसको दान दे दिया, उतनी बड़ी जमीन, कई लाख रुपये उसका दाम भी होगा, परन्तु उन्हें खुशी है कि उनके उस जमीन में प्रकृति निकेतन एक सुन्दर संस्था बन गई है। और इन्होंने बहुत मेहनत और खर्च करके उसे बनाने में पूरा हाथ बँटाया। उनकी बार-बार यह कोशिश रही है कि नए-नए काम करते रहे, आज भी नया ज्ञान है। उनको बगीचे का शौक था, वहाँ पर जोका में तो बगीचा बनाया था, किन्तु वह जब दे दिया तो अपने घर में ही छत पर एक बगीचा बनाया और आज भी देखेंगे कि छत के ऊपर एक नारियल का पेड़ लगा हुआ है, जिसमें नारियल होता है और उसका ये व्यवहार करते हैं। ऐसे ये बराबर रहे हैं, किसको क्या मदद करते हैं उसका प्रचार कभी नहीं करते, अखबारों में नाम नहीं छपवाते।

सबसे बड़ी बात है कि ये बराबर हँसते रहते हैं। आज उनका जो अभिनन्दन हो रहा है, हम तो कहेंगे, उनकी उम्र के हिसाब से, उनके चलन के हिसाब से बच्चे हैं। वे शतायु हों, खुशी रहें और सेवा भावना का आदर्श ले कर धर्म का, समाज का, लोगों की सेवा करते रहें—यही प्रार्थना मैं करता हूँ, धन्यवाद।

श्री राधाकृष्ण नेवटिया

१६२९ की बात है, मैं अपने मकान से अपनी गद्दी जा रहा था, रास्ते में इनकी गद्दी पड़ती है। धर्मचन्दजी के पिता से मेरा पुराना परिचय था। देखा गद्दी के नीचे ५०-६० आदमी खड़े हैं। धर्मचन्दजी के पिताजी ने मुझसे कहा—नेवटियाजी मेरा धर्मा विलायत से आया है। इसको मन्दिर में ले जाना है। फिर मैंने कहा—मन्दिर में क्यों ले जाना है ? तो कहने लगे मन्दिर वाले इसे घुसने नही देते, इसलिए अभी अपने को साथ चलना है। मैंने कहा धर्मा क्या कोई डकैती करके आया है। जो मन्दिर में घुसने नही देते। वह तो भगवान का मन्दिर है। वे बोले—यही तो बात है, कुछ सामाजिक लोगों ने भगवान का ठेका ले रखा है, मन्दिर के अन्दर जाने नहीं देते इसलिए चलना है सबको। तो ऐसा सामाजिक बंधन था उस समय कि विलायत जाना भी पाप था और आ करके मन्दिर में घुसना भी। कुछ ऐसे सामाजिक व्यक्ति हैं जो भगवान को ताला लगा कर रखते है। इस ताले को तोड़ने में अगर क्रान्तिकारी कदम किसी ने उठाया तो वह धर्मचन्दजी ने ही उठाया। वे बोले मन्दिर में जाएँ या न जाएँ, पर विलायत एक दफे नहीं बीस दफे जाएँगे। ये उनकी कितनी सहन शक्ति और कितना उत्साह है कि वे पुरानी रूढियो और परम्पराओं को तोड़ने में सबसे आगे रहे: हवाई जहाज में लोगों का जाना, आप जानते हैं कितना साहस का काम था उस समय, आज से ६० वर्ष पहले कौन उड़ता था ! धर्मचन्दजी हवाई जहाज के बिना जाते ही नही थे कहीं। इतना साहस था कि वे जहाज में ही जाते थे। तो मैं आपको एक कथा सुनाऊँ—पाइलट यानी हवाई जहाज चलाने वाले जैन समाज में दो ही व्यक्ति थे—बृजलाल लोहिया और धर्मचन्दजी सरावगी। ये पाइलट बने तो इन्होंने अपना जहाज खुद चलाया और अपने परिवार को ले गए। जहाज रास्ते में खराब हो गया, तेल भी खत्म हो गया, पर धर्मचन्दजी का साहस देखिए, इन्होंने जहाज को एक खेत

में उतार दिया। लेकिन इन्होंने हिम्मत हारी नहीं, सब परिवार को लेकर आ गए। कितनी ताकत है इनके मन में। तो इनके जीवन से हमें यह प्रेरणा लेनी है कि छोटेपन से कितना साहस से काम करना चाहिए। इसी तरह इन्होंने गाँधीजी से प्रेरणा ली। गाँधीजी का कहना था कि मनुष्य जीवन में किस तरह से सुखी रह सकता है, बीमार पड़े तो किस तरह से स्वयं ठीक हो सकता है इसके लिए प्राकृतिक चिकित्सा से बढ़कर और कोई चिकित्सा नहीं हो सकती। गांधीजी की प्रेरणा से मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी मे प्राकृतिक चिकित्सा का केन्द्र खोला। और लोगों से चिकित्सा के लिए रुपये मागे तथा वार्ड भी खोल दिया। इनडोर, आउटडोर भी खोल दिया। इतने में ही नही सीमित रहे, धर्मचन्दजी ने कहा कि भारतवर्ष के कोने-कोने में, गांव-गाँव में प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार हो और उसके लिए जितना भी धन और जितनी भी आवश्यकताएँ हो उसके लिए मैं तैयार हूँ। और उन्होंने कहा कि एक अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा सम्मेलन बुलाना चाहिए। और धर्मचन्दजो ने अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा सम्मेलन किया और ढेबर भाई जो कांग्रेस के प्रेसिडेन्ट थे, उनको सभापति बनाया। और बालकोवा भावे बिनोवा भावे के भाई थे उनको स्वागताध्यक्ष बनाया। मैं मत्री बना और अखिल भारतर्वीय प्राकृतिक चिकित्सा का कलकत्ते में सम्मेलन हुआ। उसमें हजारों व्यक्ति एकत्रित हुए। यह उनकी प्रेरणा है कि आज तीस वर्षो से लगातार भारत में सम्मेलन होता है यहां पर कलकत्ते में एक आदर्श प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र खुलना चाहिए। इसके लिए २२ बीघा जमीन डायमण्ड हार्बर पर धर्मचन्दजी ने प्राकृतिक निकेतन को दे दिया और ट्रस्ट बनाया। उनकी प्रेरणा से भारतवर्ष में आज सैकड़ों प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र खुल गए। इतना कर्मठ जीवन है कि जिस काम में ये लग जाते हैं उसे पीछे छोड़ते नहीं हैं। इसलिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं—हमारे सस्कृत में है जीवम् शतम् सुखम् मनुष्य सौ वर्ष तक जिए ही, परन्तु कैसे जिए—आँखो से देखे, कानों से सुने, पैरों से चले। ऐसा जीवन जो है, ओ धर्मचन्दजी बिता रहे हैं और भविष्य में बिताएँ—यही मेरी शुभकामना है।

श्री यतीन चक्रवर्ती

बहुत खुशी की बात है कि धर्मचन्दजी के ८१ साल पूर्ण होने के कारण उनका अभिनन्दन समारोह किया जा रहा है। हमारा यह सौभाग्य है कि

मुझे इस जलसे में भाग लेने का मौका मिला। १९६६ से धर्मचन्दजी से हमारा परिचय है। उस वक्त मैं भी लेजिसलेटिव कौन्सिल में था। धर्मचन्दजी भी वहाँ एक सदस्य बने थे। छः साल तक लगातार एक साथ हमने काम किया। और हमने यह देखा कि धर्मचन्द सरावगी एक आदर्श लेकर चलते हैं, वे चाहते हैं कि अपने मुल्क के नौजवानों को ऐसी तालीम देनी चाहिए कि हिन्दुस्तान की भारत की जो सांस्कृतिक परम्परा है, व्यायाम, योग व्यायाम वह आगे बढ़े। यह आदर्श लेकर ८२ साल के नौजवान लगातार वह काम कर रहा है। यहाँ जो नेता लोग मौजूद हैं, वह क्रिकेट टीम के बराबर हैं। एक है हिम्मतसिंहकाजी ९८, दो साल और बाकी है सेंचुरी करने के लिए, और वह सेंचुरी भी नाट आउट। कानोड़िया जी हैं, खेतान जी है, हमारे विजय दा हे ८२ के, नाट आउट। इसके बराबर करीब-करीब धर्मचन्दजी भी ८२ के हैं। ये शाकाहारी निरामिष हैं और खुशी की बात है कि इनकी तालीम से हम भी शाकाहारी हो गए हैं और वे भी जो व्यायाम करते हैं वह मुझे सिखलाया करते हे। हमारी उम्र है ७६ लेकिन अपने मन्त्रिमण्डल में हम सबसे ज्यादा जोरदार मिनिस्टर है। आज तक हम काम करते हैं और हमारे खिलाफ जो खड़े होते हैं उनको पटक देते हैं। आज खुशी की बात है शाकाहारी होना और हमारे भारत की जो परम्परा है, वह योग व्यायाम है, जिसे सीखकर हमारे नौजवान आगे बढ़े ताकि हमारे हिन्दुस्तान की, पश्चिम बंगाल की जो आज मौजूदा हालत है उसे सुधार सकें। अब दुर्भाग्य है कि आज पश्चिम बंगाल के नौजवान दूसरे देश से सभ्यता उधार लेते हैं, संस्कृति और दूसरी चीजें भी मगर यहाँ सबूत है, एक नमूना है यह धर्मचन्दजी। आज यह शुभकामना हम जाहिर करते हे, शुक्रिया अदा करते हैं कि मुझे आज यह मौका मिला।

श्री बजरंगलाल लाठ

आज सुबह भी हमलोगों ने अभिनन्दन एक मित्र का किया है, आज संध्या को फिर दूसरा अभिनन्दन हो रहा है, यह हमारे समाज की परिपाटी है। हम लोगों ने बहुत अभिनन्दन किए। सर्वप्रथम हमको याद आता है आज के सभापति जो रामकृष्णजी सरावगी हैं, जिनके पिता के नेतृत्व में पदमराजजी जैन का अभिनन्दन किया था। पदमराजजी जैन समाज के एक शेर थे। जैसे ही वक्ता और वैसे ही लेखक। जो गांधीजी को कह सकता था कि 'बापू आपके भी

मतभेद हैं, मेरा नम्बर पहला था और आपने दो नम्बर में मुझको बुलाया।" वे चौंक गए। ऐसे व्यक्ति का जब अभिनन्दन किया और उनके घर पर गए मूलचन्दजी के नेतृत्व में फूल वगैरह सब लेकर, तो वे रोने लगे। बोले, मुझे यह मालूम नहीं था कि समाज मुझको इस दृष्टि से देखता है, इतना सम्मान करता है। उसके बाद तो अनेक अभिनन्दन किए। ऐसे अभिनन्दन का अपना महत्व है। कलकत्ते के मैदान में सबकी स्टेचू लगी हुई है, सब राजनीतिज्ञों को। गोष्ठो पाल का स्टेचू भी आप देखेंगे, कितना सुन्दर फुटबाल किक मारते हुए। उस गोष्ठो पाल का अभिनन्दन हमने किया। १०,००० रु० की थैली अतुल्य बाबू के सभापतित्व में उनको प्रदान किया। अभिनन्दन इसलिए नहीं कि उस व्यक्ति की तारीफ करें, अभिनन्दन इसलिए नहीं कि उन्होंने ये किया वो किया। हम इस प्रवृत्ति का अभिनन्दन करना चाहते हैं, जिसके करने से हमलोगों ने देखा है बहुत लाभ हुआ है। धर्मचन्दजी में एक विशेषता है जिसके कारण वे इस स्थान पर पहुँचे। आज गोपाष्टमी का मेला है, धर्मचन्दजी गोपाष्टमी का महत्व समझते हैं, वे गोपाष्टमी के दिन अपनी जन्म-तिथि मनाते हैं। गायों के लिए दान देते हैं। आज के दिन भगवान कृष्ण ने नंगे पैर गायों को चराने का काम शुरू किया था। मेरे लिए बड़ी समस्या हो गई भाइयों ने कहा कि आप गोपाष्टमी के मेले में नहीं चलेंगे, यह कैसे होगा। मैंने उन भाइयों से कहा कि जबसे मैंने होश संभाला है, मैं गोपाष्टमी के मेले में जाता हूँ और आज मैं नहीं जाऊँगा इसका मुझे खेद है। मुझको धर्मचन्दजी के प्रति श्रद्धा है, उनमें जो नम्रता है, सस्थाओं में, बड़ी-बड़ी संस्थाओं में उनके साथ काम किया है; सोसाइटी में, प्रकृति निकेतन में, लेकिन इनके अन्दर मोह नहीं है। ये जो काम करते हैं, करते हैं, छोड़ दिया, छोड़ दिया।

धर्मचन्दजी का स्वागत इसलिए हो रहा है कि इन्होंने अपने माता-पिता के प्रति अपार श्रद्धा दिखाई है। मुझको खुशी है, बड़ा हर्ष है कि ये जो हमलोगों ने अभिनन्दन का नियम बनाया है, इसका बड़ा भारी अर्थ है, यह व्यर्थ की चीज नहीं। खुशामद की चीज नहीं, प्रचार की चीज नहीं। इस प्रवृत्ति का इतिहास।"

और आज के इस आयोजन के विशष अतिथि श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन अस्वस्थता के कारण पधार नही सके। उनकी शुभकामना पढ़ी गई।

PRAFULLA CHANDRA SEN

Sri Dharamchand Saraogi Abhinandan Samiti
Calcutta.

Dear Friend,

I am extremely happy to learn that Sri Dharamchand Saraogi Abhinandan Samiti is observing his eighty second Birthday on 9th November at 6 p.m. at Vidya Mandir, 1 Moira St., Calcutta. I know Shri Dharamchand intimately. He is a social worker. He is an educationist and is an enthusiastic supporter of Nature Cure. He is recognised as a selfless benevolent worker He is admired by all concerned and has no enemies. I wish him my regard and love and a long healthy life so that he can devote his selfless service for many many years to come. As I am not well I have to deny myself the pleasure and honour to congratulate him personally. Sri Dharamchand's services are responsible for the good health of many persons. I regret for my inability to attend the abhinandan function. Hoping to be excused. Shri Radhakrishna Kanoria is a well-known and eminent social worker and I am sure under his guidance the abhinandan function will be a great success.

तत्पश्चात सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री राधाकृष्ण कानोड़िया ने श्री सरावगीजी को माल्यार्पण के साथ ही अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

जिसका समिति के मंत्री श्री दीपचन्दजी नाहटा ने पाठ किया।

अभिनन्दन-पत्र

श्री धर्मचन्द सरावगी के कर-कमलों में सादर-समर्पित

श्रद्धेय श्री सरावगीजी

आज आपके ८२वें जन्म-दिवस पर आपका सार्वजनिक अभिनन्दन करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। आधी सदी से भी अधिक समय से आप कलकत्ते के सार्वजनिक जीवन से जुड़े रहकर समाज के बहुमुखी विकास में अपना योग-दान करते आ रहे हैं। आपकी सतत् सेवाओं को स्वीकार करते हुए हम सब आपके आभारी हैं।

नव क्रान्ति के अग्रदूत

अति अल्प आयु में ही आपने रूढ़ि-ग्रस्त समाज द्वारा उपस्थित बाधाओं का सामना करते हुए योरप भ्रमण किया तथा विदेशो में होने वाले ज्ञान-विज्ञान तथा बौद्धिक विकास का संदेश दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों द्वारा समाज तक पहुंचाया। इतना ही नहीं जैन समाज में प्रथम हवाई जहाज चालक बन कर युवकों को साहसिक अभियानों के लिए प्रेरित किया। अपने निजी हवाई जहाज द्वारा जयपुर कांग्रेस में स्व० पंडित जवाहरलाल नेहरू का अभिनन्दन आपने पुष्प-वृष्टि द्वारा किया।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

जीवन का कोई क्षेत्र आपकी कार्य-साधना से अछूता नही रहा। तैराकी, चित्रकारी, खेलकूद और व्यायाम की विविध विधाओं के विशेषज्ञ के रूप में आप कई बार पुरस्कृत और सम्मानित होते रहे है।

लेखन, सम्पादन, कला-साधना सभी क्षेत्र आपके सक्रिय सहयोग से अनु-प्राणित है। सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक और राजनैतिक कार्यों में आप सदा संलग्न रहे हैं।

कलकत्ता कारपोरेशन में कौंसिलर रहकर आपने सिनेमाघरों, ट्रामों एवं बसों में धूम्रपान निषिद्ध कराया। पश्चिम बग विधान परिषद तथा गो-संवर्धन कौन्सिल के सदस्य रहकर आपने देश-सेवा और गो-सेवा की दिशा में स्तुत्य कार्य किया।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के प्रधानमन्त्री-पद पर रहकर बाढ़, भूकम्प और दगों के समय आपके द्वारा किया गया राहत कार्य कभी भुलाया नही जा सकता। जनस्वास्थ्य के लिए राष्ट्रपिता गांधीजी के आशीर्वाद से सोसाइटी में आपने प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खुलवाया।

चिर युवा प्राकृतिक चिकित्सा-प्रेमी

जीवन-यात्रा के आठ दशक पार कर, आज भी आपका सुदर्शन व्यक्तित्व सुगठित और स्वस्थ शरीर, युवकोचित गरिमा से प्रदीप्त है। शालीनता, उदारता और परिहास-प्रियता के कारण आप सर्वत्र सम्मानित है।

आपका पूरा जीवन प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार और विकास के लिए अर्पित है। अपने उद्यान की भूमि तथा लाखों के अनुदान से कलकत्ता में आपने जिस 'नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट' की स्थापना की है वह आपके प्राकृतिक चिकित्सा प्रेम का अमर प्रतीक बना रहेगा।

आपका अभिनन्दन। शतशः वन्दन॥

हम हैं।

रामकृष्ण सरावगी सभापति	राधाकृष्ण कानोड़िया अध्यक्ष	प्रफुल्लचन्द्र सेन प्रधान अतिथि

दीपचन्द नाहटा
मन्त्री

श्री धर्मचन्द सरावगी अभिनन्दन समिति

कलकत्ता, दिनांक ९ नवम्बर, १९८६

हर्षोल्लास के साथ पश्चिम बंग के लोककल्याण मंत्री श्री यतीन चक्रवर्ती ने उन्हें तालियों की अविराम गड़गड़ाहट के मध्य दुशाला भेंट की। इसके बाद कलकत्ते के शेरिफ, पद्मश्री डा० गोपालकृष्ण सराफ़ ने इस अवसर पर प्रकाशित 'धर्मचन्द सरावगी : प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी' ग्रन्थ उन्हें समर्पित किया।

अब संस्थाओं की ओर से माल्यार्पण का कार्य प्रारम्भ हुआ। इस क्रम में कलकत्ते की सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक विशिष्ट सार्वजनिक संस्थाओं की ओर से प्रदत्त मालाओं से सरावगीजी ढँक से गए। जिन संस्थाओं की ओर से माल्यार्पण किया गया उनकी सूची इस प्रकार है :

नागरिक स्वास्थ्य संघ—श्री गोपालदासजी आचार्य
दिगम्बर जैन युवक समिति—श्री जुगराजजी जैन
प्राकृतिक निकेतन—श्री आनन्दीलालजी गोयनका
पश्चिम बंग प्राकृतिक चिकित्सा परिषद—श्री गणेश प्रसाद सराफ
बड़ाबाजार युवक सभा—श्री प्रमोद रोहतगी

श्री जैन सभा—श्री सरदारमलजी कांकरिया
माहेश्वरी व्यायामशाला—श्री श्रीलालजी बिन्नानी
माहेश्वरी सभा—श्री माणिकचन्दजी दम्माणी
मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी—श्री चिरंजीलालजी केजड़ीवाल
मालवीय पुस्तकालय—श्री पवनकुमारजी जैन
अनन्य मित्र—श्री बिहारी भाई शाह और श्री प्रवीनभाई शाह
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा—श्री कृपाचन्दजी सुराना जैन
युवासंगठन (बंगाल, बिहार, उड़िसा) दिगम्बर जैन क्षेत्र—श्री कमलकुमारजी जैन
राजस्थान युवक संघ, अ० भा० दिगम्बर जैन युवा परिषद—श्री देवेन्द्र जैन
नवजीवन सघ—श्री अशोक धवले
भारतीय पुस्तकालय—श्री रामदेवजी उपाध्याय
श्री दिगम्बर जैन अग्रवाल समाज—श्री राजकुमारजी जैन
श्री दिगम्बर जैन भवन ट्रस्ट—श्री प्यारेलालजी जैन
आराधना—श्री हनुमान दारूका
कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन—श्री आत्मारामजी तोदी
नेचर क्योर एण्ड योगा रिसर्च इन्स्टीच्यूट—डा० बी० एन पाण्डय
श्री दिगम्बर जैन रथयात्रा कमेटी—श्री हिम्मतसिंहजी जैन
लायन्स क्लब आफ नार्थ कलकत्ता—श्री आर० एन० बागची
श्री सरावगी प्रतिष्ठान के कार्यकर्ता—श्री सत्यनारायण वर्मा
पागल बाबा सन्त कमेटी—श्री महेन्द्र कुमार सरावगी
फतेहपुर जैन समाज—श्री महावीर प्रसादजी जैन
माहेश्वरी भवन समिति—श्री रमाशकरजी बागड़ी।
ओसवाल नवयुवक समिति तेरापन्थो युवक परिषद—श्री भंवरलाल सिंघी

माल्यार्पण के हर्षोल्लासमय वातावरण में अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करने के लिए मंच पर सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाजसेवी श्री राधाकृष्ण जी कानोड़िया खड़े हुए। सभा कक्ष धीर-गंभीर। उल्लषित हृदय से अभिनन्दन स्वर गूंजा :

श्री राधाकृष्ण कानोड़िया

माननीय प्रभुदयालजी, जीतन बाबू, बहनों एवं भाइयों। आज मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि भाई धर्मचन्दजी का अभिनन्दन हम कर रहे हैं। धर्मचन्द

अभिनन्दन समारोह के अवमर पर धर्मचन्द जी को दुशाला ओढाते हुए प० बगाल के मन्त्री श्री यतीन चक्रवर्ती । पीछे परिलक्षित है अभिनन्दन ममिनि के मत्री श्री दीपचन्द नाहटा और प० बगाल के भूतपूर्व मत्री तथा अभिनन्दन समिनि के अध्यक्ष श्री रामकृष्ण सरावगी ।

समारोह के अध्यक्ष प्रमिद्ध उद्योगपति व दानी श्री राधाकृष्ण कनोडिया धर्मच-द जी को
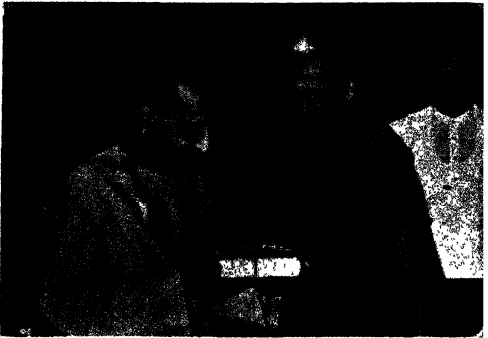
कलकत्ते के शेरिफ पद्मश्री डाक्टर गोपालकृष्ण सराफ धर्मचन्द जी को "श्री धर्मचन्द सरावगी प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी" नामक ग्रन्थ भेंट करते हुए। पीछे परिलक्षित है श्री रामकृष्ण सरावगी।
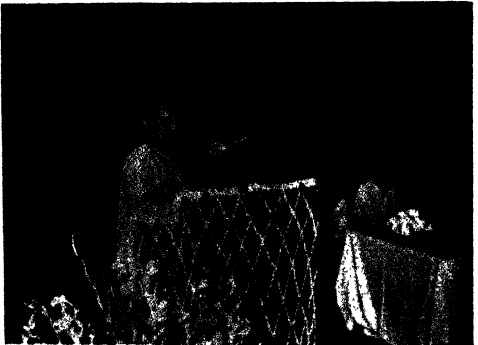
जी ने जो कार्य किए, उसके लिए इनका अभिनन्दन करना जरूरी था और धर्मचन्दजी को अभी जो मालाएं पहनाई गई इससे मैं देखता हूं कि लोगों की इनके ऊपर कितनी श्रद्धा है, बहुत प्रेम है। धर्मचन्दजी सदा से ही सबके प्रेमी रहे और सदा से ही इनके विचार बड़े अच्छे रहे। अपने विचारों में ये सदा पक्के रहे। प्रथम यात्रा जब इन्होंने विदेश की की थी उस समय बहुत आदमियों ने कहा कि आप मत जाइए, इनके पिताजी भी डगमगा गए थे कि इनको भेजें या नहीं भेजें। लेकिन सब बन्धुओं के कहने से वे राजी हो गए और धर्मचन्दजी गए। प्रथम यात्रा करके आए तो उस वक्त थोड़ी तकलीफ हुई, पीछे कोई बात नहीं थी तकलीफ की। पीछे तो सब जैसे आते हैं, जाते हैं वैसे ही धर्मचन्दजी बहुत दफे विदेश गए और बहुत छोटी उम्र में ही इन्होंने एरोप्लेन चलाना भी सीखा। जब ये सीख रहे थे तब हमलोगों के साथी बात करते थे कि धर्मचन्दजी इसमें सफल होंगे ये हमलोगों को सन्देह है। जब धर्मचन्दजी इसमें सफल हो गए तो सबलोगों ने इनका स्वागत किया। और हमारे समाज के दो-चार आदमी ही उस वक्त विमान चलाना सीखे थे और कोई नहीं चला पाए थे। धर्मचन्दजी खान-पान में सदा ही ऐसे रहे जिससे कि सदा आदमी स्वस्थ्य रहे। धर्मचन्दजी को व्यायाम में सदा ही रुचि रही। बड़ाबाजार युवक सभा में जब मैं सभापति था उस समय धर्मचन्दजी को मैं देखता था कि रोज आकर व्यायाम करते हैं, और करते ही नहीं दूसरे लोगों को सिखाते भी हैं। जब मैं बड़ाबाजार युवक सभा में था उस समय धर्मचन्दजी ने युवक सभा की छत पर एक बगीचा बनवाया था उसमें योगाशन और टाइकानडो की शिक्षा दी जाती थी। अभी भी धर्म चन्दजी बराबर ही दान करते है और यह (प्राकृतिक निकेतन) बगीचा वाला दान तो बहुत बड़ा दान है, आज इसकी तो बहुत बड़ी कीमत है। मैं मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में जब सभापति था उस समय धर्मचन्दजी मेरे साथ कमेटी मे थे और धर्मचन्दजी की सलाह इतनी अच्छी लगती थी कि उस सलाह से जो काम होता था वह बहुत ही सुन्दर होता था। धर्मचन्दजी सलाह देने में बड़े होशियार और चतुर थे। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी एक ऐसी संस्था है जिसके द्वारा सेवा होती है और सेवा मनुष्य का बहुत बड़ा धर्म है।

बिहार के भूकम्प में धर्मचन्दजी ने जो काम किया वह सराहनीय काम था। कलकत्ता कारपोरेशन में धर्मचन्दजी जब गए तो कारपोरेशन में बहुत काम

किया। उस वक्त कारपोरेशन में यह नियम लगवा दिया कि ट्राम में, बस में कोई बैठे वह सिगरेट नहीं पी सकता। वह नियम आज भी चालू है। धर्मचन्दजी स्वीमिंग भी बहुत अच्छा जानते हैं, जानते ही नहीं सिखाते भी हैं। मैं स्वीमिंग करना कम जानता था, मुझे भी धर्मचन्दजी ने स्वीमिंग करना सिखाया था। धर्मचन्दजी वैसे तो उम्र में मुझ से एक साल छोटे हैं लेकिन स्वीमिंग के काम में ये मुझ से बड़े थे। आज धर्मचन्दजी का हम स्वागत नहीं कर रहे हैं। हम तो अपना निज का ही स्वागत कर रहे हैं। मुझे इससे प्रसन्नता है कि धर्मचन्दजी आज ८२ वर्ष के हैं तब इनका समाज स्वागत करता है, ये सौ साल के हों तो हमलोग फिर इनका स्वागत करें। समाज धर्मचन्दजी की सब चोजों को ग्रहण करे और धर्मचन्दजी से भी ऊँचा बने यही मेरी कामना है। जय हिन्द।

आज के अभिनन्दनीय व्यक्तित्व स्वस्थ और दीर्घायु जीवन के मंगल प्रयत्न में सलग्न सरावगीजी ने सभी गुरुजनों और अभिनन्दन समिति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए अपने जीवन के उन पृष्ठों को रेखांकित किया जिनमें उनकी प्रेरणा सन्निहित थी। उन्होंने समारोह को सम्बोधित किया—

आज आपने मेरा जो स्वागत किया—मेरी यह मान्यता है कि यह कार्य-कर्त्ताओं का और जिनलोगों ने मुझे सहयोग दिया या, जिन लोगों की प्रेरणा से मैं इसमें आया, उनलोगों का स्वागत किया। मैं कहा करता हूँ कि किसी व्यक्ति के पास कोई चीज नही होती है, अभाव होता है और जब वह आती है तो उसका मूल्य समझता है। मेरी भी स्थिति इसी तरह की थी। मेरे पिताजी बड़े धार्मिक व्यक्ति थे, सामाजिक कार्यकर्त्ता थे, मैं उनका एकमात्र पुत्र था और आज से ७५ साल पहले खान-पान का ज्ञान मुझे तो होना ही क्या था, बच्चा था, माताजी को भी नहीं था। उनका लाड़-प्यार मुझे इतना मिला कि गलत खान-पान की वजह से मैं बराबर बीमार रहता था। यहां तक कि मेरे ताऊजी वगैरह कहा करते थे कि बैजनाथ का लड़का इस तरह बीमार चलता है, यह भविष्य में क्या करेगा! इस तरह की स्थिति में, मैंने सबसे पहले गंगाजी जाना शुरू किया और गंगाजी जाने के बाद तैरना शुरू किया। वह भी एक अजीब परिस्थिति थी। संयोग से मेरी माताजी को एक ही भाई था और एक ही लड़का। जिस स्त्री का भाई तालाब में डूबकर मर जाए और उसी का

लड़का यदि तैरना सीखे उसकी क्या परिस्थिति होगी। तो इसलिए जबतक मैं तैर कर नहीं आता था, तो बेचारी खाना नहीं खाती थी। उसके बाद मैंने १९२० में माहेश्वरी व्यायामशाला के अखाड़े में कुश्ती लड़ना शुरू किया। उस जमाने में समृद्ध परिवार में कुश्ती लड़ना अच्छा नहीं माना जाता था। आस-पास के लोग अपने बच्चों को कहा करते थे कि इसकी संगत मत किया करो।

संयोग से मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का सेक्रेटरी बना और भाग्य से गांधीजी के साथ नोआखाली जाने का काम पड़ा। वहाँ मुझे यह ज्ञान हुआ कि बिना औषधि के मनुष्य स्वस्थ रह सकता है। उसमें सिर्फ जरूरत है खानपान बदलने की, उपवास करने की और व्यायाम करने को। उनके आशीर्वाद से मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खुला मैं लोगो से कहा करता हू कि प्राकृतिक चिकित्सा तो जीने की कला है, साथ ही साथ यह एक प्रकार का भूत है। जिसको लग जाता है उसको छोड़ता नहीं। मैंने देखा कि मुझको जब पकड़ा इसने तो मैं आज इतने वर्ष हो गए इससे छुटकारा नही पा सका। लाभ मुझको जरूर हुआ मैं यह मानता हूँ कि मुझे और मेरे परिवार में आज ४०-४५ वर्षों में एपेण्डि-साइटिस, एक्जीमा, हार्निया और कई बीमारियाँ हुई और सारी की सारी बिना औषधि के, बिना आपरेशन के ठीक हुई। आज हमारे परिवार के लोगों को भी धीरे-धीरे, जो कहिए गलत धारणाएँ बनी हुई थी कि ये चीज नहीं खानी चाहिए यह नही, यह भी मिट गई।

जब यह आम आता है गर्मी के दिन में आता है, लीची आती है गर्मी के दिन में आती है। लोगों की धारणा है कि ये गर्म करती है, नहीं खाना चाहिए और मैं सन्तरा खाता हूँ, जो जाड़े के दिनों में आता है, प्रकृति इसे जाड़े के दिनों में बनाती है और लोग कहते हैं कि सन्तरा खाएँगे तो सर्दी हो जाएगी। मैं यह आपको बताऊँ, आपको ताज्जुब होगा कि आज ४० वर्षों से मैं रात्रि में सन्तरा खाकर और दूध पीकर सोता हूँ। कभी सर्दी का कोई सवाल नहीं है। धीरे-धीरे परिवार के लोगों के भी दिमाग में यह बात जमगई कि यह जो धारणा हमलोगों की है, बिलकुल गलत है।

व्यायामशाला में कठिन व्यायाम करता हूँ। आज भी मुझे बुजुर्गों ने कहा कि तुम्हें कठिन व्यायाम नहीं करना चाहिए। मैं ८० पौंड लेकर बेंच प्रेस करता

हूँ जब कि मेरे पोते के उम्र के लड़के उसे १० दफे २० दफ उठाते हैं। मैं ७० दफे उठाने की सेट करता हूँ, ८० की उठाने की दूसरी सेट करता हूँ और फिर ७० तीसरी की सेट करता हूँ। यानी कि १५० से २०० बार मैं उठता हूँ। कोई तकलीफ नहीं होती। हमारे हिन्दुस्तान में, कुछ ऐसी धारणा है कि ४०-५०-६० के बाद लोगों को यह नहीं करना चाहिए, लेकिन विदेशों में, आज अमेरिका के राष्ट्रपति श्री रीगन ७६ के हैं, मेरे पास अखबार की कटिंग है, वे आज भी बेंच प्रेस करते हैं। मैं अपने बुजुर्गों से सुनता हूँ कि कठिन व्यायाम नहीं करना चाहिए। जरूर वे अच्छी भावना से कहते हैं लेकिन मैं देखता हूँ कि जबतक मुझे कष्ट नही है, कोई तकलीफ नहीं हैं, इस क्रम को चलता रहूँ। मेरा यह विश्वास है कि जिस दिन मैं छोड़ दूँगा शायद मुझे लकड़ी लेकर चलना पड़े। इसलिए मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि लकड़ी लेकर न चलना पड़े। आज मेरा ८१ खत्म होकर ८२ शुरू हुआ है, तो मैं बड़ाबाजार युवक सभा, प्राकृतिक निकेतन और संस्थाओं की वजह से और आपलोगों की शुभकामनाओं की वजह से खड़ा हूँ। इसलिए नम्रतापूर्वक ८२,०००-०० रुपए, इसमें ५५०००-०० रुपए बड़ाबाजार युवक सभा में एक हेल्थ क्लब के लिए (होटलों में आपलोगों ने देखा होगा, बहुत-सी मशीनें वगैरह रख के हेल्थ क्लब चलाते हैं, बड़ाबाजार युवक सभा में भी एक हेल्थ क्लब बना रहे हैं और उसमें इन्सट्रूमेंट वगैरह मंगा लिए हैं) देना तय किया है। प्राकृतिक निकेतन में केबिन्स हैं, उनका इम्प्रूवमेंट हो रहा है, उसमें भी ११,०००-०० रु० देना तय किया है और बाकी का जैन मन्दिर के जीर्णोद्धार के लिए। इस प्रकार मैं नम्रतापूर्वक यह ८२,०००-०० रुपये अपने ८२ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर देना तय किया है।

दर्शकदीर्घा में पुनः तालियों की गड़गड़ाहट और अभिनन्दनीय धर्मचन्दजी सरावगी के प्रति श्रद्धाविनत वातावरण में श्री कमल कुमारजी जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया उन महत व्यक्तित्वों के प्रति जिन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी से प्रेरणा के द्वार खोले, जिन्होंने सक्रिय सहयोग प्रदान कर आज के कार्यक्रम को गौरव प्रदान किया और धर्मचन्दजी सरावगी के प्रति इसलिए कि उन्होंने अपने ८२ वे वर्ष प्रवेश पर बयासी हजार रुपये की धन राशि प्रदान करने की घोषणा की। अन्त में उन्होंने विनम्र अनुरोध किया कि यहाँ धर्मचन्दजी सरावगी को

धर्मपत्नी उपस्थित हैं। किसी भी मनुष्य का कोई भी महत कार्य बिना सहधर्मिणी के सहयोग के सफलता की ऊँची चोटो पर नहीं पहुँचता। इसलिए आज इस अवसर पर उनका अभिनन्दन करना चाहिए।

मंच पर पधारी श्रीमती सरावगी मोती देवी - नमन, सौम्य स्वरूपा। दर्शकों ने हर्षविभोर होकर करतलध्वनि से उनका अभिनन्दन-वन्दन किया। सम्पूर्ण वातावरण में मानो गूंज रहा था: अभिनन्दन शत-शत वन्दन सर्व समर्पण का।□